बच्चन के काव्य में
जीवन दर्शन और कला

(गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की पी एच० डी० उपाधि के लिए प्रस्तुत शोधप्रबन्ध)

निर्देशक

डा० विष्णुदत्त राकेश
पी एच० डी०, डी० लिट्०
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रस्तुतकर्त्री

श्रीमती प्रतिभा शर्मा
एम० ए०

१९८५

(गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

MAHINDRA
BOOK BINDING WORKS
19, CIVIL LINES
ROORKEE-247667

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

C05165

पुस्तकालय, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ।

दिनांक- 27.9.94

आचार्य एंव उपकुलपति महोदय की स्वीकृति दिनांक- 27.9.94 के अनुसार श्रीमती प्रतिभा शर्मा का शोध प्रबन्ध " बच्चन के काव्य में जीवन दर्शन और कला " की तृतीय प्रति प्राप्त की । एंव प्रथम प्रति प्रकाशन हेतु बदले में दी गई ।

§ डा० जगदीश विद्यालंकार §
पुस्तकालयाध्यक्ष ।

प्रतिमा शर्मा

स्वीकृत
राम प्रसाद वेदालंकार
27.9.94

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सेवा में,

पुस्तकालयाध्यक्ष जी,
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार ।
द्वारा उचित माध्यम

महोदय,

निवेदन है कि मेरे शोध प्रबन्ध "बच्चन के काव्य में जीवन दर्शन और कला" की मूल प्रति आपके पुस्तकालय में है। मै शोध प्रबन्ध को प्रैस में देना चाहती हूँ। मेरे पास तृतीय प्रति है जो कि प्रैस में देने के लिये उपयुक्त नही है। कृपया इस प्रति को पुस्तकालय में रख लें और मूल प्रति (प्रथम प्रति) मुझे देने की कृपा करें।

धन्यवाद।

भवदीया
प्रतिमा शर्मा

(प्रतिमा शर्मा)

स्वीकृत
राम प्रकाश वेदालंकार
21.9.94

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

5135

बच्चन के काव्य में
जीवन दर्शन और कला

(गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की पी एच० डी० उपाधि के लिए प्रस्तुत शोधप्रबन्ध)

DUPLICATE

निर्देशक

डा० विष्णुदत्त राकेश
पी एच० डी०, डी० लिट्०
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रस्तुतकर्त्री

श्रीमती प्रतिभा शर्मा
एम० ए०

Th93,ohj
5135

Th
वा
शर्मा-ब

१९८५

(गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

5135

बच्चन के काव्य में
जीवन दर्शन और कला

(गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की पी एच० डी० उपाधि के लिए प्रस्तुत शोधप्रबन्ध)

DUPLICATE

निर्देशक

डा० विष्णुदत्त राकेश
पी एच० डी०, डी० लिट्०
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रस्तुतकर्त्री

श्रीमती प्रतिमा शर्मा
एम० ए०

Th93,ohj
5135

Th
वा
प्रमो-ब

१९८५

(गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बच्चन के काव्य की

वैचारिक तथा कलात्मक पृष्ठभूमि

विषय सूची

विषय प्रवेश - बच्चन विषयक हिन्दी का आलोचना साहित्य-इतिहास ग्रन्थों में उल्लिखित टिप्पणियां - शोध निरपेक्ष आलोचना ग्रन्थ - गवेषणात्मक ग्रन्थ - प्रस्तावित शोध की उपादेयता । ... i - v.

प्रथम अध्याय - छायावादोत्तर हिन्दी काव्यधारा और बच्चन - भगवती चरण वर्मा - नरेन्द्र शर्मा - रामेश्वर शुक्ल अंचल तथा आरसी प्रसाद सिंह के परिपार्श्व में बच्चन की काव्य चेतना का विवेचन । बच्चन मुल प्रकृतक कवि । ... 1 - 66

द्वितीय अध्याय - बच्चन की काव्य धर्मिता - व्यक्तित्व निक्षेप की अवधारणा बच्चन के काव्य में व्यक्तित्व निक्षेप - कारण और दिशाएं - क्या भूलूं क्या याद करूं, नीड़ का निर्माण फिर - तथा बसेरे से दूर और प्रवास की डायरी के आधार पर बच्चन की काव्य रचनाओं का व्यक्तित्व निक्षेप मूलक अध्ययन । 67 - 157

तृतीय अध्याय - बच्चन के काव्य की वैचारिक पृष्ठभूमि - युगबोध और बच्चन - बच्चन की काव्य रचनाओं का क्रमिक विकास - तेरा हार । 32 ।, बच्चन के साथ क्षणभर । 34 ।, मधुशाला । 35 ।,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मधुकलश । 36 ।, मधुबाला । 36 ।, निराला निमन्त्रण । 38 ।, एकान्त संगीत । 39 ।, आकुल अन्तर । 43 ।, प्रारम्भिक रचनाएं भाग 1-2 । 43 ।, सतरंगिनी । 45 ।, बंगाल का काल।46 ।, हलाहल । 46 ।, सूत की माला । 48 ।, खादी के फूल । 48 ।, मिलन यामिनी । 50 ।, सोपान । 53 ।, प्रणय पत्रिका । 55 ।, धार के इधर उधर । 57 ।, आरती और अंगारे । 58 ।, बुद्ध और नाचघर । 58 ।, त्रिभंगिमा । 61 ।, आधुनिक कवि भाग-7 । 61 ।, चार खेमे चौसठ खूंटे । 62 ।, अभिनव सोपान । 64 ।, दो चट्टानें । 65 ।, उक्त रचनाओं का प्रेरणा - प्रयोजन और परिवेश मूलक अध्ययन ।सांकेतिक कृतियों में बच्चन का जीवन दर्शन - भारतीय और भारतीयेत्तर प्रभाव । । ... 158 - 354

चतुर्थ अध्याय - बच्चन के काव्य की कलात्मक पृष्ठभूमि - भाव संवेदना - भाव मूर्ति विधान - नियतिवादी दृष्टिकोण - हीनत्व और निस्सहायता - प्रतिमा निर्माण या बिम्ब विधान - रसों के परम्परित उदाहरण ... 355 - 400

पंचम अध्याय - बच्चन की काव्य भाषा - रीति - प्रतीक योजना - संगीतात्मकता - प्रकृति चित्रण - अलंकरण । ... 401 - 435

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भूमिका

बच्चन जी की रचनाओं का शोध सापेक्ष और निरपेक्ष अध्ययन करने के बाद मुझे लगा कि बच्चन के काव्य का विकास उनके जीवन के समानान्तर हुआ । इस दृष्टि से उनके जीवन में निहित उनके व्यक्तित्व के सूत्रों को पकड़ कर उनकी रचनाओं का उनके जीवन के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाना चाहिये । वैचारिक दृष्टि से भी उनके काव्यों में भारतीय और अभारतीय विचारों का समन्वय हुआ है उनकी काव्य चेतना में भी दोनों काव्य प्रवृत्तियों का प्रभाव दिखाई पड़ता है । अत: बच्चन के काव्य में जीवन दर्शन और कला की खोज को मैंने शोध का विषय बनाया । बच्चन जी की आत्मकथा के अंशों के प्रकाशन के बाद मेरी उक्त धारणा और भी दृढ़ हो गई ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध सात अध्यायों में विभाजित है । विषय प्रवेश में बच्चन विषयक हिन्दी के आलोचना साहित्य का सर्वेक्षण करते हुए विभिन्न आलोचकों के मन्तव्यों का उल्लेख किया गया है तथा प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है ।

प्रथम अध्याय में छायावादोत्तर हिन्दी काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए बच्चन की काव्य-चेतना का विवेचन किया गया है और उनके उस प्रस्थान को भी स्पष्ट किया गया है जो उन्हें उनके समान धर्मा कवियों से पृथक करता है ।

द्वितीय अध्याय में व्यक्तित्व की धारणाओं को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि कविता में व्यक्तित्व का निक्षेप उसे प्रभावी बनाता है । उनकी आत्मकथा के प्रकाशित चार खण्डों के आधार पर उनके काव्य के क्रमिक विकास को स्पष्ट किया गया है तथा उन घटनाओं का उल्लेख किया गया है जिनकी प्रेरणा से कविता विशेष का निर्माण हुआ ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तृतीय अध्याय में बच्चन के काव्य की वैचारिक पृष्ठभूमि पर विचार किया गया है । युग बोध की स्वीकृति और उसका काव्य में प्रतिफलन बच्चन का लक्ष्य रहा है । सन् 32 में प्रकाशित "तेरा हार" से लेकर 65 में प्रकाशित "दो चट्टानें" रचनाओं तक का प्रवृत्तिमूलक अध्ययन, प्रेरणा, प्रयोजन और परिवेश की दृष्टि से किया गया है । यह भी बताया गया है कि उन पर कितना भारतीय और भारतीयेतर प्रभाव है । इस आक्षेप का भी उत्तर दिया गया है कि वे व्यक्तिवादी कवि हैं और राष्ट्रीय आन्दोलन से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है ।

चतुर्थ और पंचम अध्याय में क्रमशः बच्चन के काव्य की कलात्मक पृष्ठभूमि और काव्य भाषा का अध्ययन करते हुए बताया गया है कि हिन्दी कविता को छायावादी जटिल रचना विधान से निकालकर किस तरह उन्होंने सामान्य जनजीवन के साथ जोड़ा उनकी शिल्प प्रक्रिया पर विचार करते हुए सुखात्मवादी और दुखात्मवादी संवेदनाओं के संदर्भ में उनकी काव्य चेतनाओं का विश्लेषण किया गया है । रस, बिम्ब, प्रतीक, अलंकार आदि का भी विवेचन किया गया है । बच्चन हिन्दी के एक श्रेष्ठ गीतकार के रूप में हमारे सामने आते हैं ।

षष्ठम अध्याय में बच्चन की गीत-योजना पर विचार करते हुए उनके छन्द प्रयोगों का अध्ययन किया गया है तथा शास्त्रीय और लोक परम्परागत विविध छन्दों के प्रयोग में उनकी दक्षता पर प्रकाश डाला गया है, मुक्त छन्द और मात्रा बद्ध छन्दों में लय योजना का समावेश कर उन्होंने गीत के क्षेत्र में अभिनव प्रयोग भी किये हैं ।

सप्तम अध्याय में उपसंहार के रूप में बच्चन की उन विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है जिसके उन्हें साहित्यिक युग का निर्माता कहा जा सकता है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रचना श्रद्धेय डा० विष्णुदत्त राकेश, प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष हिन्दी-विभाग के निर्देशन में हुई है। उनके विद्वतापूर्ण पथ-प्रदर्शन के लिये मैं हृदय से उनका ना घिर आभार स्वीकार करती हूं। महाकवि बच्चन जी से उनके दिल्ली-स्थित आवास सोपान पर उनसे भेंट करने का सुअवसर प्राप्त हुआ और विचार विनिमय में कुछ आवश्यक तथ्यों का ज्ञान प्राप्त हुआ इसके लिये मैं उनकी घिर कृतज्ञ हूं। अपने पूज्य ज्येष्ठ तथा स्वतन्त्रता सेनानी श्री विष्णुदत्त वैद्य तथा अपने पूज्य पिता पं. मदन मोहन पाठक, तदस्य आयुर्वेद शंकर पंजाब विश्वविद्यालय को मैं इस अवसर पर किन शब्दों में याद करूं जिन्होंने मुझे निराशा के क्षणों में बार-बार प्रोत्साहित किया।

अन्त में उन सभी विद्वानों के प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूं जिनके ग्रन्थों का उपयोग मैंने अपने इस अध्ययन में किया है। भूलचूक के लिये सुधी विद्वानों से क्षमा याचना करती हूं।

प्रीतमा शर्मा

प्रतिमा शर्मा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय प्रवेश

महाकवि बच्चन पाठ्य ग्रन्थों में निर्धारित न होकर भी जन कवि के रूप में जनमानस में प्रतिष्ठित रहे हैं। हिन्दी के आलोचकों ने उन्हें हालावाद का प्रवर्तक मानकर उनका अवमूल्यन भी किया पर अपनी असाधारण प्रतिभा और काव्य चेतना के बल पर छायावादोत्तर हिन्दी कवियों में दिनकर के बाद वही एक ऐसे कवि हैं जो संवेदना, कला और दर्शन की दृष्टि से युग कवि सिद्ध होते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने स्वच्छन्द काव्यधारा के कुछ प्रमुख कवियों में उनकी गणना की है। शुक्ल जी ने मधुबाला, मधुशाला, तेरा हार, एकांत संगीत और निशा निमंत्रण की चर्चा भी की है।[1] इन समष्टि कवियों की एक विशेषता की ही ओर शुक्ल जी इंगित करते है कि इन्हें छायावाद के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता।

प्रौढ़ इतिहासकारों में डा० नगेन्द्र द्वारा सम्पादित इतिहास में बच्चन को व्यक्तिवादी गीति कविता के अन्तर्गत स्थान दिया गया है। डा० रामदरश मिश्र ने लिखा है – "बच्चन इस धारा के सर्वोत्तम कवि हैं। इस धारा की समस्त संभावनाएं और सीमाएं बच्चन में पुंजीभूत हैं। बच्चन मूलतः आत्मानुभूति के कवि हैं इसलिये उनकी जिन कृतियों में आत्मानुभूति की सघनता है वे कृतियां अपने प्रभाव में तीव्र और मर्मस्पर्शी हैं। जिन कृतियों में आत्मानुभूति के साथ अवधारणाओं का संयोग होता चला है उनमें प्रभाव की अन्विति टूट टूट गयी है। लगता है कवि अपनी बात कहने के बाद उसे जनरलाइज्ड करने लगता है। निशा निमंत्रण, एकांत संगीत और मिलन यामिनी के गीत इस दृष्टिकोण से वहाँ गीत काव्य की उपलब्धियाँ हैं वहाँ अवधारणाएं अनुभूतियों के रंग में भीग गई हैं। अपनी धारा के अन्य

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, अठारहवाँ पुनर्मुद्रण, पृ० 488.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवियों से बच्चन इस बात में अलग है कि जहाँ और लोगों ने बाद में अपने को दुहराया है वहाँ बच्चन ने निर्मम भाव से अपनी जानी पहचानी दुनियाँ छोड़कर यथार्थ की नयी दुनिया में प्रवेश किया है और उसके अनुकूल भाषा की तलाश की है।"[1]

डा० मिश्र का निष्कर्ष संतुलित है पर त्रिभंगिमा आदि रचनाओं के मध्य-शिल्प तथा भाषा-विधान की विशेषता पर विचार नहीं हुआ। इतिहास होने के कारण यहाँ विचार का अवकाश था भी नहीं। बच्चन ने छायावादोत्तर भाषा को जो रूप दिया उसका उल्लेख होना अपेक्षित था।

आचार्य शुक्ल की पकड़ को लेकर परवर्ती इतिहासकारों ने उनका भाष्य करते हुए कहा- "स्वच्छन्दता के नाम पर परम्पराओं के प्रति जो जेहाद हिन्दी कविता में बोला गया "बच्चन" का स्वर उसमें सबसे ऊँचा रहा। कुल मिलाकर बच्चन का काव्य मिलन काल में बिछुड़न की आशंका और नारी के स्थूल एवं मांसल सौन्दर्य की अतृप्ति से ओतप्रोत है। विषय एवं स्वरूप को लेकर कविता के क्षेत्र में इधर जो नये नये प्रयोग किए जा रहे हैं, उसका प्रभाव बच्चन की बाद में लिखी जाने वाली कविताओं पर भी पड़ा है।"[2]

तात्पर्य यह कि बच्चन आज तक सर्जना के आयामों से जुड़े रहे।

डा० हरिश्चन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित इतिहास में लिखा गया है कि बच्चन ने बदलते हुए युगीन प्रतिमानों को तीव्रता से अपने व्यक्तित्व में आत्मसात किया। इन्होंने कवि के यथार्थ के विषय में स्वयं कहा है - "कवि का यथार्थ उसकी दृष्टि का, उसकी मन:स्थिति का यथार्थ है।

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 626.
2. हिन्दी साहित्य, डा० त्रिभुवन सिंह, पृ० 352.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दृष्टि और मनःस्थिति जड़ नहीं है, परिवर्तनशील तो वे हैं ही । कवि का यथार्थ नये अर्थ लेकर भी पिछले अर्थों को मान्यता देता है । क्योंकि यथार्थ अपने आप में कवि के लिए साध्य नहीं "। इस प्रकार बच्चन ने सामाजिक सत्य को ग्रहण करने का प्रयास किया है ।"[1]

यहाँ बच्चन का साक्ष्य देकर उनके छायावादी और निराशावादी होने का खण्डन किया गया है पर बच्चन की पहचान को अलग से रेखांकित नहीं किया गया ।

डा० जीवन प्रकाश जोशी ने बच्चन पर दो पुस्तकें लिखीं । उनके व्यक्तित्व, कृतित्व तथा वर्तों पर सांगोपांग प्रकाश डाला । आलोचनात्मक उपाधि निरपेक्ष ग्रन्थों में डा० जोशीकृत बच्चन व्यक्तित्व और कवित्व डा० दशरथराजकृत हालावाद और बच्चन, प्रो० कृष्णचन्द्र पण्ड्याकृत बच्चन व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डा० श्यामसुन्दर घोष कृत बच्चन का परवर्ती काव्य, श्री हरस्वरूप पारीक कृत बच्चन का काव्य, रेणु भल्होत्रा कृत बच्चन का परवर्ती काव्य : एक मूल्यांकन तथा डा० रमेश गुप्त सम्पादित बच्चन : निकष पर ऐसे ग्रन्थ हैं जो आलोचना के स्तर पर बच्चन के काव्य का प्रवृत्ति मूलक अध्ययन प्रस्तुत करते हैं ।

शोध सापेक्ष ग्रन्थों में डा० राजेन्द्र भटनागर प्रणीत हरिवंशराय बच्चन का कृतित्व, डा० सुधा बहन पटेलकृत बच्चन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ग्रंथ भी परिचयात्मक है । बच्चन के गीत शिल्प पर जगदीश नारायण प्रसाद का एक प्रबंध आधुनिक हिन्दी गीति काव्य परम्परा में बच्चन भागलपुर से स्वीकृत हुआ है । उदयपुर से डा० जय प्रकाश ठाकुर ने व्यक्तित्व और कृतित्व पर कार्य किया है । डा० इन्दुबाला दीवान ने बच्चन और उनका साहित्य पर सौराष्ट्र में कार्य किया है । प्रायः इन प्रबन्धों में व्यक्तित्व और कृतियों का सामान्य परिचय ही दिया गया है ।

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 414.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रस्तुत अध्ययन की विशेषताएं -

1। बच्चन की अद्यतन प्रकाशित कृतियों का वैचारिक विकासात्मक अध्ययन ।

2। बच्चन की आत्मकथा गत तथ्यों के आलोक में बच्चन की कृतियों का अध्ययन ।

3। बच्चन की काव्यगत अवधारणाओं का विमर्श करते हुए व्यावहारिक स्तर पर उनकी कृतियों की परीक्षा ।

4। बच्चन के काव्य का शिल्पगत अध्ययन । बिम्ब प्रतीक, संवेदनागत रमणीयता तथा लोक संगीत के क्षेत्र में बच्चन की काव्य-चेतना का स्पष्टीकरण ।

5। बच्चन और स्वाधीनता आन्दोलन मूलक अभिव्यक्ति का प्रदान ।

6। छन्द योजना पर प्रथमबार अधिकृत विवेचन ।

7। बच्चन के जीवन दर्शन और इन पर पड़ने वाले भारतीय-अभारतीय प्रभावों का विवेचन ।

फुटकर लिखे गये लेखों के सम्पादित संकलनों में अजित कुमार और ओंकारनाथ श्रीवास्तव के ग्रन्थ "बच्चन निकट से" तथा बाबे बिहारी भटनागर के ग्रन्थ का उल्लेख भी यहां आवश्यक है पर इन निबन्धों में भी उक्त विशेषताएं परिलक्षित नहीं होती । डा० कल्याणमल लोढ़ा कृत "लोकप्रिय बच्चन" में भी उनकी वेदना विदग्धता का ही विस्तार से चित्रण है, उनकी जीवनेच्छा और संघर्ष शीलता का आधार यहां विवेचन में नहीं मिलता । डा० नवल किशोर भाम्हा के ग्रन्थ "बच्चन जीवन और काव्य" में बच्चन की रचनाओं की प्रेरक भूमि का प्रामाणिक चित्रण नहीं हो सका क्योंकि आत्मकथागत तथ्य तब तक अनुपलब्ध थे। डा० इन्दुबाला दीवान के शोध प्रबन्ध "बच्चन अनुभूति और अभिव्यक्ति" मे प्रणयानुभूति, स्वदेश प्रेम, दर्शन चिंतन, संगीत, भाषाशैली पर लिखा गया है पर विकासात्मक अन्विति कहीं नहीं दिखाई पड़ती । अलंकार, रस, बिम्ब, प्रतीक आदि का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विवेचन भी चलताऊ है । सन्त शास्त्रीय विवेचन तो सभी शोध प्रबन्धों में त्रुटि पूर्ण है तथा अधूरा है ।

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध उपलब्ध अभावों की पूर्ति की दिशा में किया गया एक प्रयत्न है । आगामी अध्यायों में पूर्व संकेतित विशेषताओं का पल्लवन किया जायेगा । बख्शन के काव्य का कलात्मक और विचार प्रधान अध्ययन हमारी मूल प्रतिज्ञा है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रथम अध्याय

छायावादोत्तर हिन्दी काव्यधारा और बच्चन

छायावादोत्तर हिन्दी कविता का विकास सामाजिक और राष्ट्रीय भावना से युक्त व्यक्तिवादी चेतना द्वारा हुआ । पुरानी परम्परा के प्रति विद्रोह की भावनाओं ने सामाजिक जागरण की भावना को जन्म दिया, जिसके परिणामस्वरूप विगत मर्यादाओं और विश्वासों के प्रति प्रबल विद्रोह ने जन्म लिया । जहाँ एक ओर साहित्य में व्यक्तिवादी भावना से कल्याणकारी विचारों का आगमन हुआ वहाँ असामाजिक वृत्तियों द्वारा असत्य भावों का समावेश हुआ ।

छायावादी कवि सतत प्रयत्नशील था कि द्विवेदी कालीन साहित्यिक बन्धनों से मुक्त होकर साहित्य के क्षेत्र में प्राचीन संस्कृति के उच्च विचारों को लेकर नवीन मानवतावादी अस्तित्व को प्रतिपादित किया जाये । वह अपने इस उद्देश्य में काफी हद तक सफल भी हुआ । व्यक्तिवादी चेतना के ये कवि अपने मनोलोक में ही नये सौन्दर्य की सृष्टि में लगे रहे । यहाँ तक कि इनका सम्बन्ध तत्कालीन जीवन की विषम परिस्थितियों से टूट गया । इनकी अपनी ही एक वैचारिक मर्यादा बन गई । जहाँ एक धारा अपना अस्तित्व खोने लगी वहाँ विकास की नयी दिशा ने जन्म लिया । व्यक्तिवादी चेतना का आधुनिक काव्य के विकास में महत्वपूर्ण योग रहा । यह ठीक ही है कि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"वर्तमान युग के आरम्भ तथा विकास में कवि का व्यक्तिवादी दृष्टिकोण प्रधान है । युग-युग से भारतीय कवि पर व्यक्तिगत संवेदनाओं को व्यक्त करने के क्षेत्र में प्रतिबन्ध रहा है, समाजीकृत तथा साधारणीकृत की बातें उसके सामने रहीं थीं । आधुनिक युग के पूर्वार्द्ध में ही ये बन्धन ढीले पड़ने लगे थे, सीमायें मिटने लगीं थीं। पर वर्तमान युग के कवि ने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का मुक्त उद्घोष किया " ।[1]

अस्त व्यस्त सामाजिक व्यवस्था कोमल भावनाओं के लिये उपयुक्त नहीं थी । जीवन के संघर्ष को जीतने के लिये शक्ति प्राप्त करना स्वाभाविक है । परन्तु गहरी निराशा का वातावरण था और इसका मूल कारण था कवि का अकेलापन । परिवार और समाज से छुटे हुए व्यक्ति का मन कभी भी संघर्षों से हार नहीं मानता ।

"छायावाद का कवि अपने भावों पर चारों ओर बन्धन ही बन्धन देखता है । उसके मध्यवर्गी सुख स्वप्न टूट चुके हैं । वह सामाजिक जीवन की चेतना को विकराल और भयानक पाता है । उसकी चेतना भी आज मानवता का प्रतिनिधित्व नहीं करती । निदान इन रचनाओं में इतना क्रन्दन-रुदन इतनी निराशावादिता मिलती है।"[2]

यद्यपि छायावादोत्तर कवि ईश्वर के स्थान पर मानव के प्रति प्रेम रखते हैं परन्तु आत्मिक विकास की ओर भी इनका ध्यान कम नहीं है । छायावादी कवि रचनाओं में रहस्य तथा आध्यात्मिक भावों को ढूंढते हैं

---

1. डा० रघुवंश, हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियां।भूमिका। पृ० ।.
2. शिवदान सिंह चौहान, प्रगतिवाद, पृ० 37.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परन्तु मोक्ष की कामना नहीं करते । इनका लक्ष्य है आत्मिक विकास के द्वारा सुन्दर सामाजिक जीवनयापन करना ।

छायावादोत्तर हिन्दी काव्य धारा भिन्न-भिन्न रूपों में विकसित हुई । इनको हम तीन भागों में बाँट सकते हैं –

1. सामाजिक राष्ट्रीय काव्यधारा जिसे आलोचकों ने परम्परावादी काव्य भी कहा है ।

> "द्विवेदी कालीन काव्य-प्रवाह और छायावादी काव्यधारा के प्रभाव से भी अपने काव्य व्यक्तित्व का निर्माण करने वाली रचनायें इस परम्परावादी काव्य की सीमा में आती हैं । छायावादोत्तर परम्परावादी रचनाओं का कुछ विशेष प्रवृत्तियों के आधार पर विकास हुआ है ।"[1]

राष्ट्रीयता की आधुनिक भावना का विकास आज की सामाजिकता के संदर्भ में हुआ है । भारतेन्दु तथा तत्कालीन कवियों की रचनाओं में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति हिन्दी काव्य में हुई । जितना हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना का क्रमिक विकास आधुनिक युग में मिलता है उतना पहले दिखाई नहीं देता – "देश के रहने वाले ही देश हैं और उनके सर्वांगिक विकास, स्वतन्त्रता, सम्पन्नता और आत्म-सम्मान की रक्षा राष्ट्रीय भावना में समाहित है ।"[2]

प्रारम्भ में राष्ट्रीयता की भावना संतुलित के उच्च आदर्शों से अछूत थी परन्तु आधुनिक कवियों ने राष्ट्रीयता से प्रेरित होकर जन-जीवन को ही निकट से देखा और गाया । डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य की भूमिका में लिखा है :-

---

1. डा० रमाकान्त शर्मा, छायावादोत्तर हिन्दी कविता, पृ० 140.
2. वही, पृ० 140.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"साहित्य में समाजवादी सिद्धान्त के बहुत प्रचार से ही या प्रान्तीय स्वायत्त शासन की प्रतिक्रिया से ही राष्ट्रीय भाव के कवियों में से अधिकांश ने भारत माता के स्थान पर किसानों और मजदूरों का स्तव-गान आरम्भ किया,"[1] भारतेन्दुकाल में ही राष्ट्रीय भावना के अन्तर्गत सामाजिक जनजीवन आ गया था। सामाजिक राष्ट्रीय काव्यधारा आज तक की कविताओं में भिन्न रूपों में विकसित हुई है। श्रीधर पाठक की रचनाओं में हम देखते हैं कि राष्ट्रीयता की भावना परम्परावादी कविता से भिन्न नये रूप में स्वाभिमान से ओतप्रोत है –

"वन्दनीय वह देश, जहाँ के देशी जन अभिमानी हों,
बांधवता में बंधे, परस्पर परता के अज्ञानी हों,
निन्दनीय वह देश, जहाँ के देशी निज अज्ञानी हों,
सब प्रकार परतन्त्र पराई प्रभुता-अभिमानी हों।"[2]

प्रारम्भिक राष्ट्रीय कविताओं में राष्ट्र के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन तथा गौरवपूर्ण इतिहास की समृद्धि का वर्णन मिलता है। देखिये इन पंक्तियों में–

"स्वर्गिक शीश फूल पृथ्वी का,
प्रेम-मूल प्रिय लोकत्रयी का,
सुललित प्रकृति नदी का टीका,
ज्यों निशि का राकेश।
जय, जय प्यारा भारत देश।"[3]

मानवीय संस्कारों से हीन व्यक्ति व्यक्तिगत अभिमान से घिरा रहता

---

1. डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ० 146.
2. श्रीधर पाठक, भारत गीत, पृ० 25.
3. श्रीधर पाठक, देश-गीत - भारतगीत, पृ० 26.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और उसका निजी अस्तित्व ही कुछ नहीं होता । संस्कारी व्यक्ति राष्ट्रीय भावनाओं से जुड़ा रहता है उसके व्यक्तित्व में निखार आता है । हमारे राष्ट्र का इतिहास प्राचीन और महान है । कवि अपने पूर्वजों की गौरव-गाथा सुनाता हुआ नहीं अघाता । आधुनिक कवियों का यह महान कार्य सराहनीय है —

"राम कृष्ण के आई हैं हम,
द्रोण भीष्म के आई हैं हम,
अर्जुन विक्रम के आई हैं हम,
इस नाते सबके आई हैं हम।"[1]

आदर्शवादी भावों के पीछे राष्ट्रीयता की भावना ही कार्य करती है । जिस समय देश पराधीन था, अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता था । उस समय राष्ट्रीयता की भावना जन जीवन के साथ थी । राजनीतिक, सामाजिक धार्मिक जीवन की विभिन्न समस्याओं को कवियों ने राष्ट्रीय भावना के ही सन्दर्भ में विश्लेषित किया है । अपने देश के पूर्वजों का और अपने अवतारों का अपनी राष्ट्रीय कविताओं के माध्यम से स्मरण किया है । इससे हमारी बुद्धि का, भावना का तथा विचारों का उत्तमोत्तम परिष्कार हुआ है ।

सांस्कृतिक निष्ठा :-

अतीतकालीन-साहित्य सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिए हिन्दी काव्य में आया । मुसलमानों के शासन काल में भी सांस्कृतिक संघर्ष का सामना करना पड़ा । पश्चिमी संस्कृति की औद्योगिकता ने भारतीय जीवन को हिला दिया ।

---

1. श्री सियारिय शर्मा, भारत माता - सरस्वती सन् 1907.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऐसे नाजुक समय में कवियों ने भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग दिखाकर समाज में आत्म-विश्वास पैदा किया और समाज को आत्म-संस्कार की प्रेरणा दी । यद्यपि ये कवि धार्मिक भावनाओं के प्रति इतने आस्थावान नहीं हैं जितने कि अपने पूर्वजों की प्रज्ञा-ज्ञान के प्रति दिखाई देते हैं । मैथिलीशरण गुप्त की "भारत भारती" में भारतीय संस्कृति के ह्रास का करुण चित्र देखिये –

"संसार रूप शरीर में जो प्राण रूप प्रसिद्ध था,
सब सिद्धियों में जो कभी सम्पूर्णता से सिद्ध था ।
हा, हन्त, जीते जीव ही, अब हो रहा म्रियमाण है,
अब लोक रूप मयंक में भारत कलंक समान है ।"[1]

कई बार सांस्कृतिक पतन को समाज और राष्ट्र के पतन का कारण बताया है । इसलिये द्विवेदी युगीन कवि सामाजिक विकास के लिये प्रयत्नशील थे । और समाज को आत्म-संस्कार की प्रेरणा दी । आधुनिक मनीषियों ने भौतिक जीवन को आध्यात्मिक जीवन के विकास का प्रथम सोपान माना है । इसकी स्वीकृति के बिना जीवन असम्भव है ।

छायावादी कवियों में प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी वर्मा ने भी अपनी संस्कृति की प्राचीन मान्यताओं के आधार पर नवीन विचारों की स्थापना की है । देखिये —

"एक अज माता की,
रक्खी है निर्निमेष,

---

1. मैथिलीशरण गुप्त, भारत-भारती, नवम् संस्करण, पृ० 84.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दुर्बल वह
छिनती सन्तान जब
जन्म पर अपने अभिशाप
तप्त आँसू बहाती है ।
किन्तु क्या ?
योग्य जन जीता है,
पश्चिम की उक्ति नहीं,
गीता है, गीता है,
स्मरण करो बार-बार—
जागो फिर एक बार।"[1]

आधुनिक जीवन भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक चिन्तन से ही समृद्ध है । आध्यात्मिक चिन्तन भारतीय कवियों की रचनाओं की रीढ़ की हड्डी है । जीवन का अन्तिम लक्ष्य है, अपने संस्कारों को समृद्ध करना, अपनी भावनाओं को उठाना । छायावादी कवियों की रचनाओं में सांस्कृतिक निष्ठा का स्वर बड़ा प्रबल है । इनकी रचनाओं में साधारण जन-जीवन के प्रति प्रेम और सहानुभूति का भाव भरा है । राजा राममोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, अरविन्द, मार्क्स, फ्राइड आदि के चिन्तन का जो प्रभाव भारतीय जीवन पर पड़ा उसे भी कवियों ने स्वर देने का यत्न किया । विवेकानन्द का प्रभाव निराला पर रहा और प्रसाद जी ने आनन्दवाद की स्थापना करते हुए "कामायनी" जैसा महाकाव्य लिखा । महादेवी ने भी अद्वैतवाद को स्वीकार कर आत्मिक विकास को महत्ता दी है —

"मेरे बिखरे प्राणों में
सारी करुणा ढुलका दो
मेरी छोटी सीमा में

---

1. निराला, अपरा, पृ0 20.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपना अस्तित्व मिटा दो ।"[1]

आर्य समाज के माध्यम से महर्षि दयानन्द ने भी रूढ़ियों को समाप्त करने के लिये विद्रोह का स्वर ऊंचा किया । अछूतों के प्रति घृणा के भावों को मिटाकर उनके प्रति भ्रातृभाव का संचार किया । इस कार्य में महात्मा-गांधी का योगदान सराहनीय है । हिन्दू और मुसलमानों की एकता के लिये उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी । कवियों ने भी अपनी मुलीन भाव-धारा से प्रभावित होकर अनेकों उच्च कोटि की रचनायें लिखीं । परम्परावादी धारा में साम्प्रदायिक संकीर्णता और धार्मिक रूढ़ियों को नष्ट करने के लिये बहुत सी राष्ट्रीय कवितायें लिखीं । साहित्य की दृष्टि से ये कविताएं उच्चकोटि की हैं। कवियों ने व्यक्तिगत राग-बोधों को व्यक्त न करके जन-जीवन और समाज के सत्य को ही सदा व्यक्त किया है । वर्षों की पराधीनता से भारतीय संस्कृति का ह्रास हो रहा था । ऐसी स्थिति में सामाजिक अवस्था को नवीन शक्ति और विकास देने के लिये आदर्शों और मर्यादाओं की आवश्यकता थी । आधुनिक जागृति में भारतीय जीवन को आत्म संस्कार की दिशा देने में कवियों ने आशातीत सफलता पाई । देखिये यह पंक्तियां –

"हुआ प्रबुद्ध भारत निज आरत दशा-निशा का ।
समझ अन्त प्रतिशय प्रबुद्धित हो तनिक तब उसने ताना,
अरुणोदय एकता दिवाकर प्राची दिशा दिखाती,
देखो नव उत्साह परम पावन प्रकाश फैलाती ।"[2]

सामाजिक – बराई बोध का स्वर भी इन कवियों की रचनाओं में मिलता है । जन-जीवन के उद्धार का महानतम कार्य उन्होंने अपनी लेखनी

---

1. महादेवी वर्मा, नीहार.
2. प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 373.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धारा थिया । "हरिऔध" "निराला", "पंत", "महादेवी" आदि का काव्य-व्यक्तित्व विषय की दृष्टि से अधिक व्यापक रहा । देश के गरीब ग्रामीणों और श्रमिकों के जीवन के करुण चित्रों को प्रस्तुत किया । परम्परावादी धारा में साम्प्रदायिक संकीर्णता और धार्मिक रूढ़ियों को नष्ट करने के लिये अनेकों रचनायें लिखी गईं । स्वातन्त्र्य संघर्ष के काल में कवि का ध्यान कला और शिल्प की ओर कम गया । कवियों की दृष्टि विषय प्रधान रही । इस काल की रचनायें राष्ट्रीय महत्व की हैं । इस धारा के कवि निम्न हैं -

मैथिलीशरण गुप्त -

परम्परावादी राष्ट्रीय काव्यधारा के द्विवेदी कालीन कवियों में गुप्त जी शिरोमणि कवि हैं । भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट श्रद्धा, धार्मिक बोध के साथ ही इनको काव्य में भारतीय जीवन के प्रति अपार प्रेम है । सैद्धान्तिक दृष्टि से गुप्त जी आदर्श और मर्यादा के कवि हैं । इनकी रचनाओं में साम्प्रदायिक जकड़ा का कहीं नाम नहीं । मानवतावादी दृष्टि के परिणाम-स्वरूप इन्होंने भारत की निर्धन जनता का सजीव चित्र अपने काव्य में खींचा । कृषक भारतीय जनता की रीढ़ की हड्डी है । यहाँ सबसे अधिक शोषण उसी का होता है । क्योंकि भारतीय जनता का दृष्टिकोण भोगवादी बनता जा रहा है । उसमें सबसे अधिक शोषण मजदूरों का तथा किसानों का ही हुआ। कवि की यह पंक्तियाँ उसकी साक्षी हैं -

"पाया हमने प्रभु कौन सा त्रास नहीं है ?
क्या अब भी परिपूर्ण हमारा ह्रास नहीं है ?
मिला हमें क्या नहीं नरक का वास नहीं है ?
विष खाने के लिये टका भी पास नहीं है ?" ।

---

1. श्री मैथिलीशरण गुप्त, किसान प्रार्थना.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देश ने राष्ट्र कवि की उपाधि से इनके काव्य-व्यक्तित्व को सम्मानित किया । "भारत भारती" इनकी प्रारम्भिक कृति होने के साथ-साथ राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत रचना है । पूरे राष्ट्र के कवि-मंच पर जितनी ख्याति गुप्त जी को मिली है उतनी शायद ही किसी अन्य कवि को मिली हो । गुप्त जी पूरे मानवतावादी कवि हैं पांडित्य प्रदर्शन समूची रचनाओं में कहीं भी दिखाई नहीं देता । राष्ट्र के व्यक्तित्व में निजत्व की भावना को कवि सम्मुख रखकर हमारी रागात्मक वृत्ति को विकास देता है । गुप्त जी की "भारत भारती" में आधुनिक भारतीय जीवन के सांस्कृतिक ह्रास के कारण प्राचीन भारतीय जीवन की महानता का गुणगान भी है । कवि की यह पंक्तियां इसकी साक्षी हैं –

"संसार रूप शरीर में जो प्राण रूप प्रसिद्ध था,
सब सिद्धियों में जो कभी सम्पूर्णता से सिद्ध था ।
हा, हन्त, जीते जीव ही, अब हो रहा म्रियमाण है,
अब लोक रूप मयंक में भारत कलंक समान है ।"[1]

"भारत भारती" में देश के अतीत गौरव को गाते हुए कवि ने वैदिक धर्म का वर्णन किया है जो पशु बलि-यज्ञों में विकृत हो गया, तब कवि कह उठा –

"हिंसा बढ़ी ऐसी कि मानव दानव से बढ़ गये,
भू से न भार सहा गया, अविचार ऊपर चढ़ गये ।
सहसा हमारा यह पतन प्रभु से भी देखा न गया,
तब शाक्य मुनि के रूप में प्रकटी दयामय की दया ।"[2]

---

1. श्री मैथिलीशरण गुप्त, भारत भारती.
2. वही.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनुभूति की सहजता तीव्रता से स्पष्ट करती है । गुप्त जी के प्रमुख ग्रन्थ हैं :- जयद्रथवध, भारत भारती, पंचवटी, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जयभारत, विष्णुप्रिया । पलासी का युद्ध, मेघनाथ वध, वृत्र संहार आदि इनके अनूदित काव्य हैं ।

1936 में श्री मैथिलीशरण गुप्त की "यशोधरा" प्रकाशित हुई । काव्य की उपेक्षिता उर्मिला ने साकेत के गवाक्ष से यशोधरा की ओर संकेत किया था । देश की कितनी अज्ञात यशोधराओं ने, अपने पतियों को जेलों, गोली की बौछारों, फांसी के तख्तों पर भेजकर कहा होगा –

"जाओ नाथ अमृत लाओ, तुम मुझ में मेरा पानी,
चेरी ही मैं बहुत तुम्हारी मुक्ति तुम्हारी रानी,
प्रिय तुम तपो, सहूं मैं भरसक, देखूं बस हे दानी,
कहां तुम्हारी गुणगाथा मैं मेरी करुण कहानी ।"

मैथिलीशरण गुप्त जी की कविताओं में भारतीय संस्कृति तथा भारतीय राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी है ।[1] गुप्त जी की रचनाओं में हिन्दू-मुस्लिम एकता का संकेत है जिसकी अनिवार्यता अनुभव की जा रही थी ।

स्वर्गीय डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने एक बार प्रयाग में भाषण देते हुए कहा था कि इस देश को जगाने में महात्मागांधी ने जितना काम किया है उससे कम काम "भारत-भारती" ने नहीं किया । इसमें सन्देह नहीं कि गुप्त जी का सारा साहित्य सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत है ।

---

1. द्रष्टव्य "बच्चन रचनावली" भाग 6, नये पुराने झरोखे, पृ० सं० 196.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सियारामशरण गुप्त :-

द्विवेदीकालीन परम्परा के सांस्कृतिक निष्ठा के उच्चकोटि के मानवतावादी कवियों में इनका अग्रणी स्थान है । यद्यपि इन्होंने संख्या में बहुत कम लिखा है परन्तु जो भी लिखा है उसका अपना साहित्यिक मूल्य है । द्विवेदीकालीन कवियों पर तत्कालीन परिस्थितियों का विशेष प्रभाव था । अतः इनकी रचनाओं पर महात्मा गांधी के विचारों का बहुत प्रभाव पड़ा । गांधीदर्शन को सियारामशरण गुप्त ने अपने जीवन में स्वीकार किया । गांधी जी का मानवतावादी दृष्टिकोण सामाजिक है । 'अनुताप' बड़ी मार्मिक रचना है । एक अछूत के हृदय की वेदना का बड़ा हृदयस्पर्शी चित्र खींचा है।

समाज का यथार्थ कवि को अनुष्टुप कर देता है । समाज के नवनिर्माण की भावना को कवि स्वर देता है । कवि ने "नकुल" खण्डकाव्य में सामाजिक जीवन का यथार्थ प्रस्तुत किया है । इस रचना पर गांधी जी के सर्वोदयवाद का प्रभाव है ।

वैज्ञानिक विकास ने जीवन को अति भौतिकवादी बना दिया है । आध्यात्मिक दृष्टि के बिना मानव जीवन का विकास उतना नहीं हो पाता जितना होना चाहिए, विभिन्न स्वार्थ अपना सिर ऊंचा कर लेते हैं और संघर्ष का रूप ग्रहण कर लेते हैं । सियारामशरण गुप्त पर क्योंकि गांधी जी के विचारों का अधिक प्रभाव है, इसलिये काव्य सौन्दर्य के स्थान पर जीवन श्री कृष्ण अवस्था का चित्रण अधिक उभरा है । जीवन निर्माण की दृष्टि से गुप्त जी की रचनाएं सांस्कृतिक मूल्य की हैं ।

सन्देह नहीं कि सियाराम शरण की प्रारम्भिक रचनाएं अपने बड़े भाई के काव्य की अनुगामिनी प्रतीत होती हैं परन्तु यह एक समय का जिसमें इसी प्रकार की कविताओं की आवश्यकता थी ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उनके तीसरे काव्य-संकलन "दूर्वादल" की कविताओं में कवि की कल्पना सजीवता से उभरी है । भावना उन्मुक्त होकर प्रवाहित हुई है और ध्वनि-सौन्दर्य मुखरित हुआ है । "विषाद" में व्यक्तिगत विषाद की अभिव्यक्ति है जो कवि ने अनुभव की । "आर्द्रा" में कवि ने जीवन के छोटे-छोटे, साधारण किन्तु मार्मिक प्रसंगों को देखा और पाठकों की करुणा उनके प्रति जगायी ।

"आत्मोत्सर्ग" गणेश शंकर विद्यार्थी के आत्म-बलिदान पर लिखा शोक-काव्य है । "पाथेय," "मृण्मयी", "बापू", "दैनिकी", "नकुल" आदि इनकी प्रमुख रचनाएं हैं । "पाथेय" में गांधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन की प्रेरणा थी । "पाथेय" का यात्री मार्ग के किसी भी झंझावात को अपने मार्ग की बाधा नहीं बनने देता । उदाहरण के रूप में यह पंक्तियां प्रस्तुत है—

"सखे, रोक मत मुझे आज तू,
सब कुछ है मेरे अनुकूल ।"

— (पाथेय)

अथवा —

"सिर के ऊपर के प्रहार सब सुमन-समूह-समान झड़ें,
पैरों के नीचे के कांटे मृदु मृणाल से जान पड़ें ।
भय के दीप्तानल में धंसकर उसे बुझा दें पैरों से,
छाती खोल, खुले में अड़कर विपदाओं के साथ लड़ें ।"

कवि असफलता में भी सफलता देखता है । "मृण्मयी" में पद्य-बद्ध कथाओं के द्वारा मंगलकारी तत्वों पर प्रकाश डाला गया है । "बापू" सियारामशरण गुप्त की सशक्त रचना है । "बापू" पर हिन्दी में इससे अच्छी रचना शायद ही हो । कवि की यह पंक्तियां इस ओजपूर्ण रचना की साक्षी हैं —

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"ओ भैरव, कवि की वाणी का,
मृदु-माधुर्य लजा दे आज,"

— ।पाथेय ।

निसन्देह सियारामशरण जी देश के सुधारवादी और राष्ट्रीय आन्दोलन के पोषक थे ।

पद्मश्री सोहन लाल द्विवेदी —

राष्ट्रीय प्रगीतों के समर्थ रचयिता सोहन लाल द्विवेदी का अपने समकालीन कवियों में अग्रिम स्थान है । स्वतन्त्रता संग्राम के दिनों में इनके राष्ट्रीय गीतों ने धूम मचा दी । राष्ट्र पर कुर्बान होने की प्रेरणा शहीदों में भर दी । इनके गीतों में सामाजिक बोध और सांस्कृतिक निष्ठा के साथ-साथ ओजस्वी विचारों की अभिव्यक्ति भी है । इन्होंने देश के गौरवशाली इतिहास को शाश्वत स्वर दिया । महामना मालवीय जी के सम्पर्क से इनके हृदय में राष्ट्रीय भावना भर गई । द्विवेदी जी की कविताओं का मुख्य विषय राष्ट्रीय उद्बोधन है, जो नव-जागरण का संदेश है ।

द्विवेदी जी की भाषा सरल, बोधगम्य और स्वाभाविक है । उसमें सूक्ष्म कल्पना तथा कोमल भावों की अभिव्यक्ति है । इनके प्रगीतों का हिन्दी साहित्य में अलग ही स्थान है । प्रेम ही इनके काव्य का मूल स्रोत है । भारतीय समाज के प्रति अगाध प्रेम इनकी रचनाओं में स्पष्ट होता है । शहीदों के प्रति इनका अभिनन्दन "जय भारत जय" से "उन्हें प्रणाम" नामक रचना में देखा जा सकता है —

"जंजीरों में कसे हुए सिंकचों के पार
जन्म भूमि जननी की करते जय जय कार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सही कठिन, हथकड़ियों की, बेतों की मार
आजादी की कभी न छोड़ी टेक पुकार ।
स्वार्थ, लोभ, यश कभी सका है जिन्हें न जीत
जो अपनी धुन के मतवाले मन के मीत
ढाने को साम्राज्यवाद की दृढ़ दीवार
बार-बार बलिदान चढ़े प्राणों को वार ।

× × × × × ×

जो फांसी के तख्तों पर जाते हैं झूम,
जो हंसते-हंसते शूली को लेते चूम,
दीवारों में चुन जाते हैं जो मासूम,
टेक न तजते, पी जाते हैं विष का धूम ।
उस आगत को जो कि अनागत दिव्य भविष्य
जिसकी पावन ज्वाला में सब पाप हविष्य ।
सब स्वतन्त्र, सब सुखी जहां पर सुख विश्राम
नवयुग के उस नव प्रभात की किरण ललाम ।
उस मंगलमय दिन को मेरे कोटि प्रणाम ।
सर्वोदय हंस रहा जहां, सुख शान्ति प्रकाम ।"[1]

भैरवी, वासवदत्ता, कुणाल, चित्रा, प्रभाती, युगाधार, इनकी सुन्दर रचनायें हैं । सोहनलाल द्विवेदी की "वासवदत्ता" नामक कविता बहुत लोकप्रिय हुई । इसमें भगवान बुद्ध एक वेश्या का आत्म समर्पण ठुकरा देते हैं, पर जब वह रुग्ण हो जाती है तब उसे अपनी करुणा का वरदान देने के

---

1. सोहन लाल द्विवेदी, जय भारत जय.
1. डा० नरेन्द्रदेव शर्मा, प्रगीतकार बच्चन और अंचल, पृ० 1.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लिये स्वयं चलकर उसके द्वार पर आते हैं –

"करुणामय त्रिलोक उस शोक-युक्त रमणी को,
काँप उठे करुणा से,
पिघल उठे दुःख से ।
गौतम ने अपनी पुण्य पाणि से
फफोलों पर, छालों पर, घाव पर, पीव पर,
शीतल जल छिड़का,
निज हाथ से धोया उसे
जी-सी उठी मृत-सत वात्सल्यता तुरन्त,
देखने लगी तृष्णा गौतम की प्रतिमा को
सेवा की स्फूर्ति को ।
बोले तथागत,
"आया हूं, आज देवि,
आज अनिवार्य था आना यहाँ मेरा यह ।"
कण्ठ भर आया,
वात्सल्यता नत चरणों में
मस्तक धर,
हृदय धर,
जीवन धर,
प्राण धर,
जड़ सी बनी बैठी रही,
बोल कुछ पायी नहीं,
अर्पणा अचल बनी,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चेतना सक्त बनी,
हो गयी मौन, कह पायी हृदय बात नहीं।"[1]

2. <u>स्वच्छन्द प्रवाधारा</u> जिसे व्यक्ति निष्ठ काव्य कहा जा सकता है :-

साहित्य में जब भी किसी नई धारा का प्रादुर्भाव होता है तब उसे बहुत से विरोधों का सामना करना पड़ता है । यदि किसी आन्दोलन में विरोध को सहने की शक्ति होती है तभी वह आगे विकसित होता है और धीरे-धीरे एक दिन प्रतिष्ठित होकर रहता है । स्वच्छन्दतावादी साहित्य को भी प्रारम्भ में अनेक विरोधों का सामना करना पड़ा लेकिन स्वच्छन्दतावादी साहित्यकार हर प्रकार का विरोध सहते हुए आगे बढ़ते रहे ।

"साहित्य के इतिहास में यह तथ्य विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि जब साहित्य की भावधारा परम्परा और पूर्व निर्धारित प्रतिमानों के पाश में बंध जाती है तब उसमें विद्रोह का समारम्भ हो जाता है । साहित्य और कला की दृष्टि से स्वैर विद्रोह का मूल्य है । वस्तुतः प्रत्येक साहित्य-धारा के विकास की तीन स्थितियाँ हुआ करती हैं । प्रारम्भ, विकास, और प्रतिष्ठा के नवोन्मेषी धरातलों का स्पर्श साहित्य धारणी की प्रत्येक तरंग द्वारा होता है ।"[2]

---

1. श्री सोहनलाल द्विवेदी, वासवदत्ता.
2. डा० नरेन्द्र देव वर्मा, प्रगीतकार व्यक्ति और अंक, पृ० 1.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परवर्ती छायावादी कवि की व्यक्तिगत चेतना, सामाजिक, यथार्थ और अपने जीवन के यथार्थ से अधिक प्रभावित है । मनुष्य के नाते वह अनेक प्रकार की मर्यादाओं में जकड़ा हुआ है, और समाज के नाते वह तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक विषमता से घिरा हुआ है, परेशान है । इतना ही नहीं रूढ़िवादी धार्मिक अंध-विश्वासों के संघर्षों से भी अपने आपको मुक्त नहीं कर पाता —

"नाचो हे रुद्र नृत्य प्रलयंकर,
नाचो ताण्डव नृत्य अनंकर,
देव तुम्हारे क्रोधानल से
फूट पड़े जगती की ज्वाला
उमड़ पड़े निर्दय लपटों से
शत, शत, शर से दुर्दम ज्वाला"[1]

स्वच्छन्दतावाद भारत में युग के प्रति तीव्र असन्तोष और वर्तमान के प्रति जागरूकता की भावना लेकर उत्पन्न हुआ । यह युग राष्ट्र-व्यापी निराशा का युग था, साहित्यकार भी निर्द्वन्द होकर प्रेम विषयक गीतों का सृजन करने में असमर्थ थे । इस राष्ट्रीय निराशा के युग में दो प्रकार के साहित्यकार मिलते हैं । एक तो वह जो अपनी अनुभूतियों के आधार पर सत्य के अन्वेषण में लगे रहे । उन कवियों को अन्तर्मुखी कहा जा सकता है । और दूसरे वह होते हैं जो बहिर्जगत के क्रिया कलापों का अवलोकन करते हैं और सत्य को, बाह्य जगत के यथार्थ को, बहुविधि व्यापारों के माध्यम से जानना चाहते हैं । स्वच्छन्दतावादी साहित्य का निर्माण भी इन्हीं साहित्यकारों के द्वारा हुआ । इन कवियों ने शृंगारिक काव्य की ही रचना की, ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि उस समय सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों के द्वारा जो दिशा

---

1. श्री नरेन्द्र शर्मा, प्रभात फेरी ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कार्य करने की इन्हें मिली वही इन्होंने अपनायी ।

जन जीवन की करुण अवस्था के चित्र इन कवियों की रचनाओं में मिलते हैं । सामाजिक जीवन जो आर्थिक संघर्ष से टूट रहा था उसके अनेक मार्मिक चित्र इनकी रचनाओं में देखे जा सकते हैं । एक उदाहरण लीजिए –

"बीबी बच्चों से छीन, बीन दाना दाना अपने में भर,
भूखे तड़पें या मरें, मरों का तो मरना है उनको घर,
धन की दानवता से पीड़ित कुछ फटा हुआ कुछ कर्कश स्वर
चरमर चरमर चूं, चरमर, जा रही चली भैंसा गाड़ी"[1]

\+ + + +

"श्वानों को मिलता दूध वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं,
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर, जाड़ों की रात बिताते हैं।"[2]

परवर्ती छायावादी कवियों ने साधारण जन जीवन के प्रति सहानुभूति दिखाई है, हिन्दी काव्य में यह परम्परा पहले भी देखी जा सकती है । परन्तु केवल करुणा और दया के सहारे किसी भी वर्ग की शक्ति तथा आत्म-विश्वास को जागृत नहीं किया जा सकता । ऐसी स्थिति में व्यक्तिवादी, समाज से विरक्त आत्मीय विकास में तल्लीन होता है, और सांसारिक जीवन की भौतिकता को ही महत्व देकर निजी भोगों की ओर आकर्षित होता है । लेकिन छायावादी कवि सांसारिक जीवन को महत्व देते हुए भी अध्यात्म की ओर आकृष्ट होता है । इसके विपरीत परवर्ती छायावादी कवि को भौतिक जीवन के दु:ख अधिक प्रभावित करते हैं । यही कारण है कि प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी आदि के काव्य में समष्टिगत कल्याण की पीड़ा अधिक अभिव्यक्त हुई है, जबकि परवर्ती छायावादी कवि को आत्मीय विकास

---

1. श्री भगवतीचरण वर्मा, मानव.
2. श्री रामधारी सिंह दिनकर, हुंकार.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की चिन्ता कम है । सच पूछा जाये तो वह समाज तथा राष्ट्र के सुख दुख से अधिक प्रभावित है । इनकी रचनाओं में जीवन संघर्ष की क्षमता कम दिखाई देती है । अगर कुछ दिखाई देता है तो वह है निराशा, घुटन, दुख और अवसाद की गहन भावनाएं । गाँव के किसानों, श्रमिक मजदूरों का जो चित्र इनकी रचनाओं में दिखाई पड़ता है उसमें जीवन की आस्था और विकास का स्वर कहीं भी दिखाई नहीं देता । कवि का विद्रोह किसी सीमा में अन्तिम लक्ष्य बन जाता है । जिस पीड़ित वर्ग के जीवन-चित्र को इन कवियों ने अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति दी है वहीं उस वर्ग के जीवन का असुन्दर पक्ष है लेकिन इनके अन्दर जो मानवीय गुण है उनका कवि ने उल्लेख नहीं किया । श्रमिक और मजदूर वर्ग यद्यपि अशिक्षित होता है परन्तु सर्जनात्मक व्यक्तित्व रखता है ।

परवर्ती छायावादी कवियों ने सीधे सरल शब्दों में उच्चकोटि की रचनाएं कीं । इससे यह स्पष्ट है कि इन्होंने जो अनुभव किया वह खुलकर व्यक्त कर दिया । प्रकृति का मनुष्य जीवन से बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है । जहाँ प्रकृति द्वारा मनुष्य को अनेकों सुख प्राप्त मिले हैं वहाँ कभी कभी प्रकृति का उग्र रूप भी दिखाई देता है । फिर भी प्रकृति के प्रति सहज प्रेम होना स्वाभाविक भी है । परवर्ती छायावादी कवियों ने अपनी रचनाओं में छायावादी कवियों के समान प्रकृति का मानवीकरण किया है । कवि की यह पंक्तियाँ साक्षी हैं —

"सन्ध्या सिन्दूर लुटाती है,
रंगती स्वर्णिम रंग से सुन्दर
निज नीड़ अधीर खगों का पर
तरुओं की डाली डाली में कंचन के पात लगाती है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

5165

पुस्तकालय
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

करती सरिता का छल पीला
जो था पल भर पहले गीला
नावों के पालों को सोने की चादर सी चमकाती है ।
उपहार हमें भी मिलता है
अंगार हमें भी मिलता है
आँसू की बूंद कपोलों पर
मिल शोणित सी चमकाती है।"[1]

यद्यपि प्रकृति चित्रण उच्चकोटि का है परन्तु आत्मीयता का अभाव है।

परवर्ती छायावादी कवियों ने अपने अनुभवों को परम्परा से मुक्त होकर सुन्दर और स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया । अनुभवों की सच्चाई इस काल के कवियों की विशेषता है । इनका विद्रोह प्रचलित काव्य धारा से था । प्रेम के नाम पर जो रचनायें होतीं थी उनमें भोग और पीड़ा व्यापक रूप से व्याप्त थी । दोनों ही स्थितियों में जीवन के विनाश की सम्भावनाएँ अधिक हैं । निस्सन्देह प्रेम जीवन का यथार्थ सत्य है परन्तु यही सब कुछ नहीं है । प्रेम का मूलाधार नारी और पुरुष का प्रेम है । छायावादी कवियों की प्रेम सम्बन्धी रचनायें प्रकृति के प्रतीकों के कारण अधिक स्पष्ट नहीं हुई । परवर्ती छायावादी कवियों ने प्रेम भावना को अपनी अनुभूति के आधार पर बिना किसी लाग लपेट के निर्भीकता से व्यक्त किया । परिणामस्वरूप कहीं-2 यह निर्भीकता शंका प्रेम के रूप में अनावश्यकता के निकट पहुंच गई ।

सम्पूर्ण जीवन, स्वस्थ परिवेश और नैतिकता पर ही आधारित होना चाहिए । नैतिकता की उपेक्षा सामाजिक जीवन संदर्भ में नहीं की जा सकती ।

---

1. बच्चन, रचनावली भाग 1, निशा निमन्त्रण, पृ० 162.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जहाँ राष्ट्र और समाज को तत्कालीन संघर्षों का सामना करना पड़ रहा था ऐसी परिस्थिति में पूंजीवादी तथा सामन्तवादी व्यवस्था में व्यक्ति अपने ही सुख दुख में लीन था तब इन कवियों ने निजी व्यक्तित्व को ही महत्व दिया और अपने सांसारिक जीवन को ही काव्य के माध्यम से व्यक्त किया जबकि कवि का व्यक्तित्व महान होता है और काव्य की सीमाएं भी संकुचित नहीं होनी चाहिये । लेकिन ऐसे अनेक स्थल हैं जहाँ कवि सुध-बुध खोकर आत्म-तुष्टि के लिये पागल है । मांसल श्रृंगार की परिपाटी इन कवियों की रचनाओं में बार-बार दुहराई गई है । इन पंक्तियों में प्रेम के स्थूल चित्र की अभिव्यक्ति—

"इस पार प्रिये तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा
तुम देकर मदिरा के प्याले मेरा मन बहला देती हो
उस पार मुझे बहलाने का उपचार न जाने क्या होगा।"[1]

\+ + + + +

"मधु छलक रहा था उर में, मैं था सुख का दीवाना
अलसाई सी आँखों में, था झूल रहा पैमाना।"[2]

\+ + + + + +

"एक पल के ही दरशा में, जग उठी तृष्णा अधर में,
जल रहा परितप्त अंगों में पिपासा कुल पुजारी ।
आज सोहाग हरूं मैं किसका, लूटूं किसका यौवन ?
फिर परदेशी को बन्दी कर सफल करूं यह वेदन ?[3]

उपर्युक्त पंक्तियाँ इस बात की साक्षी हैं कि इन कवियों ने अपने तत्कालीन युग की समस्याओं को इतनी गम्भीरता से नहीं देखा, समसामयिक

---

1. हरिवंशराय बच्चन, मधुबाला
2. श्री भगवतीचरण वर्मा, प्रेम संगीत.
3. श्री रामेश्वर शुक्ल "अंचल", मधूलिका.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समस्याओं के स्थान पर इन कवियों की रचनाओं में केवल आसक्ति ही चित्रित हुई है । उन रचनाओं में अप्राप्य प्रेम जनित निराशा और कुंठा की भरमार है । भारतीय जीवन परम्परा सदा संयम और मर्यादा में विकसित हुई है । विकासशील जीवन में मानव की सर्जनात्मक चेतना ने प्रकृति से स्वतन्त्र जीवन-व्यवस्था की स्थापना की है । जो प्रकृति नियम के विरुद्ध चलता है वह कभी सफल नहीं होता । इन कवियों की निराशा में असामाजिक वृत्ति मिलती है । यह पंक्तियाँ इसकी पुष्टि करती हैं –

"मैं सोच रहा हूं कैसे मर पाऊंगा ले इतना भूखा तन-मन,
दूभर सूनी घड़ियों में, जब मेरा शोषित करता क्रन्दन ।"[1]

\+ + + + +

"आशा का और निराशा का, अपवाद लिये अवसाद लिये,
मैं तिल-तिल मिटता रहा हूं, बस एक तुम्हारी याद लिये"।[2]

यद्यपि कभी कभी ऐसा लगता है कि समाज व्यक्ति के विकास में बाधक है पर इस प्रकार की स्वच्छन्द वृत्ति का आज के संदर्भ में और विकसित जीवन में कोई आदर नहीं है । शरीर और आत्मा का हमारे जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध है । शरीर हमारे मानव जीवन का साधन तो आत्मा सर्जन और स्वस्थ चिन्तन द्वारा विकसित होती है । छायावादी कवियों ने अपनी भावनाओं को दार्शनिकता का रूप प्रदान किया, जबकि स्वच्छन्दतावादी कवियों ने अपनी अनुभूति को दार्शनिकता का जामा नहीं पहनाया । वे अपनी अनुभूतियों को सहज रूप में ही चित्रित करते रहे ।

अंग्रेजों द्वारा भारतवर्ष में उद्योगीकरण का चक्र चलाया गया । इसका

---

1. रामेश्वर शुक्ल अंचल, करोला, पृ० 56.
2. भगवतीचरण वर्मा, प्रेम संगीत, पृ० 65.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ा और अर्थ व्यवस्था डगमगा गई साथ-साथ समाज के मानदण्ड टूट गये । कलकारखानों ने देश में समृद्धि तो ला गयी परन्तु मनुष्य की आत्मा का विघटन भी होने लगा । इन गीतकारों में जीवन के प्रति अरुचि-की भावना है । इसीलिये ये समाजद्रोही कहे गये क्योंकि समाज ने इन्हें बन्धनों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिया । ये पंक्तियाँ कवि की व्याकुलता की साक्षी हैं —

"वासना जब तीव्रतम थी बन गयी थी संयमी मैं,
है रही मेरी क्षुधा ही सर्वदा आहार मेरा "[1]

प्रगीत रचना के सुप्रसिद्ध कवि डा० हरिवंशराय बच्चन, रामेश्वर शुक्ल अंचल, भगवतीचरण वर्मा और नरेन्द्र शर्मा के नाम प्रमुख हैं । यह युग अहमनिष्ठा का युग था । इसमें वैयक्तिक प्रणय-निवेदन की भरमार थी । प्रेम का उच्च बोध हमारी सहृदयता और रागात्मक वृत्ति को विकसित करता है ।

भाषा विन्यास की दृष्टि से इन कवियों का कार्य महत्वपूर्ण है । इन्होंने परम्परागत अलंकृत भाषा का प्रयोग न कर बोलचाल की भाषा में अपने विचारों को व्यक्त किया है । अंचल की भाषा अधिक अलंकृत है । बच्चन, नरेन्द्र शर्मा की काव्य-भाषा में हृदयस्पर्शी सरलता और सहज अभिव्यक्ति है । इस सरलता और सहजता के कारण इनकी कविता जनजीवन के अधिक निकट पहुँची ।

श्री हरिवंश राय बच्चन —

परवर्ती छायावादी कवियों में बच्चन अपनी प्रतिभा, सहज अभिव्यक्ति

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, मधुबाला, पृ० 129.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और निजी अनुभूति के लिये प्रसिद्ध हैं। निजी जीवन की वैयक्तिक अनुभूतियाँ ही इनके काव्य की प्रेरणा हैं। इनके काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्होंने जीवन की स्वाभाविक घटनाओं और रागबोधों को सरलभाषा में अभिव्यक्त किया। बच्चन का काव्य जहाँ प्रगीतों की परम्परा का सृजन करता है वहाँ काव्यानुभूति के विकास का निरूपण भी करता है। यद्यपि कवि की मानसिक स्थिति सदैव एक सी नहीं रही है परन्तु कवि के प्रत्येक क्षण को स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया जा सकता है। कवि ने समकालीन जीवन की विषमताओं को काव्य-स्वर प्रदान किया। कवि की व्यक्तिपरक रचनाएं तत्कालीन समाज और रूढ़ियों से विद्रोह करती हुई व्यक्तिगत जीवन अधिकारों की माँग प्रस्तुत करती हैं।

कवि स्वभावतः संवेदनशील होता है। जिस युग में "बच्चन" पैदा हुए वे वह अंधविश्वासों से ग्रस्त सामाजिकता का युग था। "बच्चन" के प्रारम्भिक काव्य ने समाज को झकझोर दिया। यद्यपि समाज के साहित्य-समीक्षकों ने इनकी कविता का कड़ा विरोध किया परन्तु व्यापक युवा-मन ने बच्चन के काव्य का विभोर होकर स्वागत किया। इसीलिये कवि ने अपने को कभी अकेला नहीं समझा। उनकी यह धारणा थी कि जैसा वह अनुभव करते हैं वैसी ही अनुभूति उस युग का युवा-मन कर रहा है। कवि स्पष्टीकरण का प्रयास करता है जो हमें "मधुकलश" में सुनाई पड़ता है।

बच्चन के काव्य में व्यक्तिगत भावनाओं का प्रगाढ़ नियोजन हुआ है। प्रत्येक युग का काव्य अपने युग को प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत करता है। बच्चन के काव्य में युगीन अतृप्ति का बोध होता है। छायावादी कवियों ने भी अतृप्ति के बोध को अपूर्णता के रूप में प्रस्तुत किया है, दार्शनिक भाषा में व्यक्त किया है परन्तु बच्चन ने उसे जनजीवन की भाषा में व्यक्त किया है।

इनकी प्रारम्भिक कृतियों में निराशा, कुंठा, अन्तर्मुखता के साथ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिखाई देते हैं । बच्चन छायावाद के दर्शन से प्रभावित हैं । आज है, कल न जाने क्या होगा, जो कुछ है उसका भोग करें । इनके काव्य की लोकप्रियता का मुख्य कारण उसमें स्पष्टता से व्यक्त मानव मन का, जीवन का अनुभूति-मूलक यौन सत्य है । बच्चन की काव्य-साधना उनकी जीवन साधना है। उन्होंने अपने जीवन में जो भी अच्छा बुरा, सुख दुख अनुभव किया, उसी का प्रतिफलन हमें बच्चन के काव्य में मिलता है, प्रारम्भिक कविताओं की यह पंक्ति - "मुझ से अलग न मेरा गान" इनकी आदि से लेकर अन्त तक की कृतियों में अक्षरशः चरितार्थ होती है । मधुशाला की यह पंक्तियां देखिये –

"जिसने अपना भाग्य समझने
में भूल-सा धोखा खाया,
किस्मत में था अवघट मरघट
ढूंढ रहा था मधुशाला ।"[1]

बच्चन जी की पहली पत्नी श्यामा देवी की मृत्यु 1936 में हुई तब इनके काव्य में एकाएक मधु के स्थान पर अश्रु बहने लगे । जीवन निराशा से भर गया । "निशा निमन्त्रण", "एकान्त संगीत" , "आकुल अन्तर" इन्हीं वेदना के क्षणों की रचनायें हैं । यह पंक्तियां उनकी विकल मनःस्थिति की साक्षी हैं –

"मुझ से मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊं किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पग को, भरता उर में विषाद कण है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है ।"[2]

x x x x x

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, मधुशाला, पृ० सं० 59.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, निशा निमन्त्रण, पृ० सं० 161.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

" वे सब साथी ही हैं मेरे
जिनको गृह गृहिणी-शिशु घेरे
जिनके उर में है शांति बसी,
जिनका मुख है सुख का दर्पण ।
बीता इकतीस बरस जीवन ।"[1]

"बच्चन की वेदनानुभूति इतनी खरी और सच्ची है और उसकी अभिव्यक्ति इतनी सरल और प्राञ्जल है कि आलोचक भी उसके सम्मोहन से अपने आपको मुक्त नहीं रख पाते हैं । परन्तु इस वेदना-काव्य की सरस संवेदनीयता को असन्दिग्ध रूप से स्वीकार करते हुए भी उसका इस दृष्टि से तटस्थ और निःसंग विवेचन होना ही चाहिये कि कहीं अपनी अन्तर्वर्ती रुग्ण और अस्वस्थ भावनाओं के कारण "बच्चन" काव्य का यह "मधु-कलश" कहीं "विष कुम्भ पयोमुखम्" तो नहीं है ।"[2]

भाग्य के प्रति कवि की गहरी निराशा इन पंक्तियों में स्पष्ट दिखाई देती है —

"संघर्ष में टूटा हुआ, दुर्भाग्य से लूटा हुआ
परिवार से टूटा हुआ, कितना अकेला आज मैं"[3]

बच्चन के कवि व्यक्तित्व के निर्माण में रामायण, विनय पत्रिका, तथा गीता के संस्कार पड़े हैं । गांधी जी के प्रति तथा बंगाल के अकाल पर लिखी हुई कवितायें भी व्यक्तिगत संवेदना को ही व्यक्त करती हैं । "बुद्ध और नाचघर" की कवितायें कवि की प्रतिभा की प्रखरता प्रकट

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, एकान्त संगीत, पृ० सं० 226.
2. डा० रमेश गुप्त, बच्चन, निकष पर , पृ० सं० 13.
3. बच्चन रचनावली भाग 1, एकान्त संगीत, पृ० सं० 157.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करती हैं । "निशिगंधा" में तीन शिल्पों में कविताएँ अभिव्यक्त हुई हैं। "तरंगिनी" में कवि की स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा में जीवन-आस्था की झलक है । "आकुल अन्तर," "मिलन यामिनी", "प्रणय पत्रिका" आदि रचनायें उच्चकोटि की हैं । इन कृतियों में कवि की निजी अनुभूति मुखर हुई है । मधु काव्य का रचयिता एकाएक विरहानुभूति में स्वान्त संगीत में खो गया । लेकिन जिजीविषा उसे "तरंगिणी" की दुनिया में ले गई । कवि "नीड़ का निर्माण" पुनः करता है । इतनी सच्ची, तीखी, प्रभावशाली अभिव्यक्ति अन्यत्र मिलनी दुर्लभ है । वह अपने युग के प्रतिनिधि कवि हैं । कवि ने अपनी अनुभूति से ही प्रेरणा पायी और उसी को काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की ।

रामेश्वर शुक्ल अंचल :-

अंचल प्रणयकालीन स्मृतियों के गायक हैं । परवर्ती छायावादी कवियों में इनका प्रमुख स्थान है । प्रेम और विरह की सुन्दर अभिव्यक्ति इनकी रचनाओं में देखी जा सकती है । परवर्ती छायावादी कवियों में स्वच्छन्द चेतना की तीव्रता की दृष्टि से अंचल की रचनायें उल्लेखनीय हैं । अंचल का काव्यारम्भ छायावाद के वैभवयुग में हुआ । यद्यपि छायावाद के उत्तरार्ध में नियमों के प्रति विद्रोह की भावना शिथिल होती जा रही थी, छायावादी काव्य आरोपित बन्धनों में जकड़ता जा रहा था । इतना ही नहीं वह जन जीवन और जन संवेदना से दूर होता गया और उसका सम्बन्ध जन जीवन से कट गया । जहाँ एक धारा अपना व्यक्तित्व खोने लगी वहाँ विकास की दूसरी नयी दिशा का जन्म हुआ । ऐसी विषम परिस्थितियों में परम्परागत धारा का तिरस्कार कर बड़ी निर्भीकता से अपनी मौलिक मान्यता के आधार पर अंचल ने वैयक्तिकता को नया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परिवेश दिया । ये कवि अशरीरी सौन्दर्य से अपनी मन:तुष्टि नहीं कर सकते थे और न ही ये दार्शनिक थे । जीवन के यथार्थ को भूलकर दिवास्वप्न देखने के भी आदी नहीं थे । जीवन को पूरी तरह जीने में, भोगने में इनको विश्वास था । या यूं कहिये कि इनकी जिजीविषा तीव्र थी ।

अंचल के काव्य में जीवन का नया दृष्टिकोण है कि इच्छाओं को काल्पनिक तुष्टि प्रदान करने की अपेक्षा उसकी ज्वाला में धधकते रहना । वह अवास्तविक सौन्दर्य की अपेक्षा शरीरी सौन्दर्य के रसपान में अधिक विश्वास करते हैं । ये प्रकृत, मांसल और ठोस सौन्दर्य के पुजारी हैं उनका काव्य यद्यपि सौन्दर्य आराधना का काव्य है परन्तु वह सौन्दर्य परोक्ष के भाव से ढका हुआ न होकर प्रत्यक्ष है ।

छायावाद के परवर्ती काल में जहाँ शृंगारिकता को अध्यात्म का जामा पहनाकर अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है वहाँ अंचल मन की शृंगारिकता को यथावत रख देने का प्रयास करते हैं । मांसल सौन्दर्य को अपने काव्य की अभिव्यक्ति देना कम साहस का काम नहीं है । परन्तु यह निर्भीकता अंचल के काव्य में आद्योपान्त दिखाई देती है ।

अंचल का काव्य उद्दाम वासना, रत्यासक्ति, आवेश और उन्माद को लेकर सामने आया है । प्रेम ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है । जीवन के अन्य राग बोधों की ओर कवि का ध्यान नहीं । अंचल प्रेम के भावात्मक रूप के स्थान पर उसके भोग पक्ष में ही डूब गये । यह कोई नई बात नहीं थी क्योंकि रीतिकालीन कवि तो इस क्षेत्र में बहुत आगे थे । अंचल का काव्य प्रेम सम्बन्धों के कारण सराहा जाता है । मानव सुलभ प्रेम की प्रबल भावना इनके काव्य में बड़े सहज ढंग से अभिव्यक्त हुई है –

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"यह मुहूर्त शुभ पर्व पड़ा, इसे मनाने आज सखी
सागर सीमा तोड़ चला, तब तरि की कैसी लाज सखी ।"[1]

एक ओर वर्तमान की नीरसता है तो दूसरी ओर अतृप्ति का कोलाहल। कवि किसी रूढ़ि से नहीं बंधना चाहता । वह तो रक्त मांस से युक्त अनुभूतियों में विश्वास रखता है । इतना होने पर भी कवि असंयमित नहीं होता । कवि वर्तमान दुरवस्था के प्रति गहरा क्षोभ व्यक्त करता है –

"कल तलक मैं था तुम्हारी मुग्ध सांसों से सटा
आज लगता है तुम्हारी धड़कनों से दूर हूं,
रूप में मुझे कल तक जकड़ जाने दिया
देखने प्रतिक्षण दिया तपना मिलन की आस का
थी न जीवन में तनिक पहचान भी जिस तृप्ति से
भर दिया उसने हृदय दामन हृदय की प्यास का,
गंध बाकी है अभी तक उस जले मधुमास की
आज रोता है कफन तक उस मरे उल्लास का ।"[2]

प्रगतिवादी रचनायें तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, जागृति के लिये लिखी गई हैं ।इन रचनाओं में सौन्दर्य वर्णन में कवि को सफलता नहीं मिली है । सामाजिक निर्माण की भावना का स्थान उत्तेजक भावुकता ने ले लिया है । इन पंक्तियों में देखिये :–

"आज सुन्दरी उनकी पीड़ित दलित लालसाओं की बारी,
फिर तन हाड़ों में बल भर दो, फूंको तो अपनी चिनगारी।

---

1. अंचल : ध्रुवलिका
2.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"रात को बनी थी तुम गीली और रंगीली,
किन्तु दिन में बनो अखण्ड युद्ध की करालिका ।"[1]

कवि की इन रचनाओं में जन जीवन के आत्म विश्वास को जागृत करने की शक्ति दिखाई नहीं देती । समाज के दर्द को व्यक्त करने में शब्द असमर्थ हैं । "मधुलिका", "अपराजिता," "लाल चूनर" और "वर्षान्त के बादल" कवि की प्रणय सम्बन्धी रचनायें हैं । इनमें कवि की प्रेम के संयोग पक्ष की लालसा और अतृप्ति व्यक्त हुई है । ये पंक्तियाँ इन भावनाओं को दर्शाती है –

"इस प्रेरित लोलित गति में जब झूम झमकता विशुध गात,
गोरी बाहों में कस प्रिय को, कर दूं चुम्बन से सुरास्नात ।"[2]

भारतीय जीवन में प्रेम को इतने खुल कर व्यक्त करने तथा भोग करने की किसी को भी छूट नहीं है । सब चीज मर्यादा में ही अच्छी लगती हैं । प्रेम के अतिरिक्त भी जीवन के अनेक गम्भीर मसले हैं । अंचल की रचनाओं में जीवन के यथार्थ का चित्र कम और कल्पना का अधिक है । परम्परावादी नारी के सामाजिक व्यक्तित्व का छायावादी कवियों की रचनाओं में जो स्वरूप मिलता है उसकी अपेक्षा उनकी रचना में नारी का अस्तित्व मात्र, भोग का साधन बनकर सामने आया है । अतः यह तो नारी के नारीत्व की उपेक्षा है --

"किन्तु नारी, सिर्फ नारी ही तुम्हें मैं जानता हूं,
तुम प्रणयन की खिलाड़न, मैं तुम्हें पहचानता हूं।"[3]

---

1. श्री अंचल : करील, पृ० 16-19.
2. वही , अपराजिता, पृ० 75.
3. वही , लाल चूनर, पृ० 24.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"बर्षान्त के बादल" कवि की प्रकृति सम्बन्धी कविताओं का संकलन है । वर्षा के बादलों का चित्र बड़ा ही सुन्दर है । यह कवि की उच्चकोटि की रचना है ।

अंचल के काव्य में काव्य शिल्प की समस्या नहीं है । अनुभूति को यथावत् अभिव्यक्त करने की उनमें पूरी क्षमता है । यह हम मानते हैं कि सौन्दर्य सृष्टि की प्रतिभा है । उनकी दृष्टि समाज और व्यापक जन-जीवन के परिवेश को स्वीकार नहीं करती । छायावादी कवियों में अंचल का विशिष्ट स्थान है ।

भगवती चरण वर्मा —

परवर्ती छायावादी काव्य में वर्मा जी की रचनाओं में जीवन-सत्य बड़ी मार्मिकता से व्यक्त हुआ है । इनकी चेतना वैयक्तिक थी । सामाजिक नव-निर्माण की भावना भी इनकी कृतियों में मिलती है । ईश्वर और धार्मिक विश्वासों के प्रति विद्रोह, सामाजिक व्यवस्था के प्रति घृणा, असामाजिक वृत्तियों के प्रति विद्रोह की भावना बड़ी स्पष्टता से व्यक्त हुई है । परवर्ती छायावादी काव्य में वर्मा जी का निर्वैयक्तिवादी दृष्टि-कोण स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है और भौतिक जीवन के प्रति आसक्ति की भावना भी । इनका मत है कि हमारा जन्म और मृत्यु नियति पर निर्भर है । किसी भी रूप में हम स्वतन्त्र नहीं है । ग्रीक दार्शनिकों ने भी मानव के करुण चित्र हमारे सामने रखे हैं । वह सब नियति के ही शिकार थे । अतः वर्मा जी मनुष्य के स्वतन्त्र अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते । छायावादी कवियों की रहस्यात्मकता का परित्याग करते हुए प्रेम, मस्ती एवम् उल्लास भरे यौवन के राग अलापते हैं । इनके गीतों में किसी प्रकार की कृत्रिम नैतिकता के बन्धन नहीं हैं —

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"हम दीवानों की क्या हस्ती, आज यहाँ कल वहाँ चले,
मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहाँ चले।"

× × × × ×

"आये बनकर उल्लास अभी, आँसू बनकर वह बह चले अभी,
सब कहते ही रह गये अरे, तुम कैसे आये कहाँ चले।"

हम देख रहे हैं कि जैसे-जैसे विज्ञान उन्नति कर रहा है वैसे-वैसे मनुष्य प्रकृति से स्वतन्त्र होता जा रहा है। यद्यपि परन्तु यही तो प्रकृति के ही अधीन हैं परन्तु मानव बुद्धिजीवी है उसकी अलग सत्ता है, अलग अस्तित्व है। कला, साहित्य, विज्ञान आदि वस्तुएं प्राकृतिक नहीं मनुष्य द्वारा बनाई गई हैं। वर्मा जी नियतिवादी हैं यहाँ तक कि प्रणय सम्बन्धी कविताओं में भी नियतिवादी स्वर अधिक मुखर हुआ है। प्रणय सम्बन्धी रचनायें अधिक मांसल है। इन पंक्तियों में देखिये —

"मैं बढ़ता जाता हूं प्रतिपल, गति है नीचे गति है ऊपर,
घूमती ही रहती है पृथ्वी, घूमता ही रहता है अम्बर
इस भ्रम में भ्रमकर ही भ्रम के जग में मैंने पाया तुमको,
जग नश्वर है, तुम नश्वर हो, बस मैं हूं केवल एक अमर।"

वर्मा जी की सशक्त प्रगतिवादी रचना "भैंसागाड़ी" है इस कविता में कवि ने पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है कि समाज के सर्जनात्मक कार्यों में शोषक शक्तियां किस प्रकार बाधक बनती हैं। शोषित वर्ग के प्रति सहज करुणा का भाव देखिये —

"घूं घरर मरर - घूं घरर मरर"
जा रही चली भैंसागाड़ी।"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमारे गांवों की दरिद्रता का दीन रूप और क्या हो सकता है। कितना कारुणिक दृश्य उपस्थित करती हैं ये पंक्तियां ? -

"चरमर - चरमर चूं चरर जा रही चली भैंसा गाड़ी
उस ओर क्षितिज के कुछ आगे, कुछ पांच कोस की दूरी पर
भू की छाती पर फोड़ों से, हैं उठे हुए कुछ कच्चे घर
नर पशु बनकर पिस रहे जहां, नारियां जन रहीं हैं गुलाम,
पैदा होना फिर मर जाना, बस इन लोगों का एक काम।"

यद्यपि इनकी प्रणय सम्बन्धी रचनाओं में काल्पनिकता का बोध होता है जहां छायावादी कवि समष्टि के कल्याण की चिन्ता में रहता है वहां वर्मा जी वैयक्तिकतावादी दृष्टिकोण में अनुरक्त हैं। लेकिन "स्व" का विकसित रूप ही मनुष्य के व्यक्तित्व को उज्ज्वल बनाता है।

भाषा सम्बन्धी सहजता इनकी रचनाओं में जगह-जगह मिलती है। वर्मा जी कला के पारखी होते हुए भी सौन्दर्य के पुजारी हैं। "मानव" इनकी रचनाओं का सुन्दर संग्रह है। इन्होंने हिन्दी काव्य को अपनी रचनाओं द्वारा एक भिन्न विचार और दर्शन दिया।

नरेन्द्र शर्मा -

नरेन्द्र शर्मा का काव्यगत व्यक्तित्व छायावादी परम्परा के अध्यात्म-चिन्तन, व्यक्तिपरक स्वतन्त्रता और प्रगतिवादी सामाजिक बोध की विचारधाराओं के आधार पर विकसित हुआ। प्रगतिवादी धारा की अनेक नवीन प्रवृत्तियों को इन्होंने काव्य का विषय बनाया। इनकी प्रारम्भिक रचनाओं में प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है जो कहीं कहीं पर वासनात्मक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी हो गई है । इनकी रहस्य और अध्यात्म सम्बन्धी रचनायें छायावादी प्रभाव से प्रभावित हैं तथा प्रगतिवादी रचनाओं में सामान्य जीवन का यथार्थ चित्र है ।

"प्रभात फेरी", "प्रवास के गीत," "पलाश वन," "मिट्टी और फूल", "रक्त चन्दन," "अग्नि शस्त्र," "कदली वन" आदि नरेन्द्र शर्मा के कविता-संग्रह हैं । "प्रभात फेरी" रचना में प्रकृति के प्रति मानवीय भाव स्पष्ट दिखाई देता है । इसमें कवि सौन्दर्य तथा प्रणय का चित्र प्रस्तुत करता है । सामाजिक बोध की रचनायें भी कवि की सराहनीय हैं । इनकी स्थूल अलंकारिक रचना की ये पंक्तियां देखिये —

"बहुत दिनों तक दूर रह लिये, आओ अंक भिगा कर लें,
विरह व्यथा के दिन सुमिरन कर दृढ़तर आलिंगन भर लें।"[1]

निवृत्तिवादी विश्वासों पर भी कुछ रचनायें हैं जो प्रकृति प्रेम को प्रकट करती हैं । "प्रवास के गीत" में कवि की प्रारम्भिक रचनायें निहित हैं जो निराशा, कुंठा और आत्म विश्वास के अभाव पर प्रकाश डालती हैं, - जैसे —

"आज भ्रान्ति से मरने का, क्यों मेरा अधिकार छिन गया
मेरी अनुमति लिये बिना विधि, किस विधि मेरा श्वास गिन गया।[2]

"पलाश वन" में कवि जीवन के यथार्थ को सोचता है । पुराने अवसाद के क्षणों को समाप्त कर नये विश्वास के सहारे आगे बढ़ता है । "मिट्टी और फूल" में कवि निराशा, अवसाद को छोड़कर आगे बढ़ गया है और

---

1. श्री नरेन्द्र शर्मा, प्रभात फेरी, पृ० 58
2. वही , प्रवासी के गीत , पृ० 75.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उनका आस्थावादी स्वर गूंज उठा है –

"बहुत कुछ भोगा, कभी तो अन्त भी होगा,
यान प्राण, उसांत मुझ वाहन बने, मेरे हृदय [1]

परवर्ती छायावादी कविताओं में अनुभूति का व्यापक विस्तार दिखाई देता है । ग्रामीणों और श्रमिकों के पीड़ित तथा शोषित जीवन के प्रति उनकी सहानुभूति बड़ी तीव्र है । गाँव के प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रभाव भी कवि की रचनाओं में दिखाई देता है । "गाँव की धरती" इसी संदर्भ की रचना है । अध्यात्मवादी रचनाओं में कहीं कहीं प्रणय तथा प्रगतिवादी स्वर भी मुखरित हुए हैं । नरेन्द्र शर्मा जितने छायावादी दर्शन के निकट पहुँचे उतने ही मार्क्सवादी भौतिक दर्शन के भी । स्वतन्त्र रूप से एक दर्शन को लेकर आगे नहीं बढ़े । "अग्नि शस्त्र" कवि की मानवतावादी विचारों से ओत-प्रोत रचना है । "रक्त चन्दन" में बापू की मृत्यु सम्बन्धी रचनायें हैं । "कदली वन" में कवि के व्यक्तिगत नियतिवादी विचार व्यक्त हुए हैं । ये रचनायें सांसारिक जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं –

"रात भर जलता रहेगा दीप चुपचाप
और होते ही बुझेगा दीप अपने आप ।
यों फटेगी तन-वर्तिका की आयु
दीप का निर्वाण होगा, किरण की हुन वाप।"[2]

सांसारिक जीवन भी एक मर्यादा को लेकर आगे बढ़ता है।अपने परिवेश से कवि इतना विरक्त और निराश हो जाता है कि अपनी मानवीय भावनाओं को भी विकसित नहीं कर सकता . इनकी वैयक्तिक प्रणय सम्बन्धी

---

1. श्री नरेन्द्र शर्मा, "मिट्टी और फूल", पृ० 18.
2. वही , "कदली वन", पृ० 20.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और श्रृंगार सम्बन्धी रचनायें काव्य की दृष्टि से अधिक सुन्दर हैं । इनकी आध्यात्मिक रचनायें सामान्य कोटि की हैं । इनकी निजी अनुभूतियों की रचनायें उच्चकोटि की हैं । इनकी रचनायें रस का बोध तो करा सकती हैं परन्तु जीवन के प्रति विश्वास और आस्था देने में असमर्थ हैं । इन्होंने सर्वत्र व्याप्त शून्यता और रिक्तता का ही गान गाया है । भाषा में तरलता और मृदुता है । व्यक्तिवादी होते हुए भी समाज और जीवन को उच्चकोटि का साहित्य प्रदान किया है । इनकी अनुभूतियों की मार्मिकता सराहनीय है ।

आरसी प्रसाद सिंह —

परवर्ती छायावादी कवियों में आरसी प्रसाद सिंह जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण में नियतिवादी, भोगवादी, निरागावादी कवि हैं । आप क्षणवाद के समर्थक हैं । इनकी कविताओं में ओज और अनुभूति की गहराई दृष्टिगोचर होती है । इनके काव्य में अंचल की मांसलता और अतृप्ति की भावना अधिक है । कहीं कहीं नारी के गौरवपूर्ण सामाजिक व्यक्तित्व का चित्र भी दिखाई देता है । जैसे —

"आनन्द शक्ति हो जननी तुम, गौहर की जौहर ज्वाला,
दानव सैन्य व्यूह में शोभित, चामुण्डा सी विकराला,
नचा रहा जिसका कटाक्ष, जग केवल मात्र दुराग्रा-सा,
एक शब्द में ही कह देना, उस नारी की परिभाषा ।"[1]

आरसी प्रसाद सिंह का काव्य उनकी व्यक्तिगत अनुभूति है, जो हर्ष, विषाद, आनन्द, घुटन, प्रेम, करुणा आदि भावों में प्रकट हुई है।यह

---

1. श्री आरसी प्रसाद सिंह, कपाली, पृ0 112.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रेमानुभूति के चितेरे हैं । आरती प्रसाद सिंह का काव्य उच्चकोटि का है । प्रेम ही जीवन का सम्पूर्ण लक्ष्य बन गया है । उसके बिना कवि जीवन के अन्य रस बोधों की ओर आकृष्ट नहीं है । नारी के भोग लिप्सा के चित्र स्थान-स्थान पर मिलते हैं । कवि ने मांसल सौन्दर्य के चित्र बड़ी निर्भीकता से प्रस्तुत किये हैं । इन पंक्तियों में कवि कहता है –

"अधर-अधर से, ओष्ठ ओष्ठ से, रोम रोम से मिल जाने दे,
कटि से कटि सखि ..... [1]

अपने समकालीन कवियों के समान प्रगतिवादी और मार्क्सवादी विचारों का प्रभाव इनके काव्य में दिखाई देता है । कहीं-कहीं उत्तेजना और भावुकता भी दिखाई पड़ती है । "कपाली" की कुछ रचनायें उच्च-कोटि की हैं । देखिये कुछ पंक्तियों को –

"आज सर्वनाश के रण-ताण्डव उत्सव में
भीषण वीभत्स और नरकाग्नि ज्वाला ज्वलन्त !
गाओ साम्यवाद गान, बोलो जय, जय, जय !

"कपाली," "संचयिता," "जीवन और यौवन," "नई दिशा," "पांचजन्य", "प्रेम गीत" इनके काव्य संग्रह हैं । परवर्ती छायावादी कवियों में इनकी रचनायें ऐतिहासिक महत्व की हैं ।

3. <u>प्रगतिवादी काव्यधारा - जनवादी आन्दोलन</u> –

जनवादी आन्दोलन को साहित्य में प्रगतिवाद के नाम से जाना जाता है । युगीन राजनैतिक परिस्थितियों का प्रभाव इस काव्य आन्दोलन पर

---

1. श्री आरती प्रसाद सिंह, संचयिता, पृ0 257.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विशेष रूप से पड़ा । एक ओर राष्ट्र अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिये संघर्षरत था दूसरी ओर उसकी समस्यायें आर्थिक, धार्मिक और सामाजिक थीं । अंग्रेजों ने भारतीय समाज को हर दृष्टि से खण्डित किया । उन्होंने देश में साम्प्रदायिकता को विकसित किया तथा धार्मिक स्वतन्त्रता का झूठा आश्वासन देकर उन्होंने मिशनरियों को समाज में कार्यरत किया । आर्थिक क्षेत्र में भी उन्होंने पूंजीवादी दृष्टिकोण से भारतीय उद्योग धंधों को तथा खेती के व्यवसाय को खत्म करने का प्रयास किया । राष्ट्रीय और सामाजिक बोध के अभाव में भारतीय जमींदार और साहूकार भी अपने ही आदमियों का खून चूसने लगे । देश में एक ओर मज़दूरों की हड़ताल का आयोजन होने लगा । जनमत में स्वाधीनता की भावना बलवती होने लगी । ऐसी अवस्था में जनजीवन में आत्म बोध जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य महात्मागांधी ने किया । इसके व्यापक प्रभाव से साहित्यकार भी वंचित न रह सके और जनवादी चेतना अपने पूरे विकास की ओर अग्रसर हुई । प्रगतिवादी काव्य युगीन सामाजिक बोध की ही साहित्यिक अभिव्यक्ति है । इसमें मार्क्सवादी विचार धारा का भी प्रभाव है ।

जन जागरण का स्वर मुंशी प्रेमचन्द के साहित्य में स्पष्ट लक्षित है । सामान्य जीवन के प्रति किये गये अन्याय से वह सदैव लड़ते रहे । उनका साहित्य समाज को एक नया स्वस्थ स्वरूप प्रदान करने में सहायक रहा । छायावाद के भौतिकवादी दृष्टिकोण से प्रगतिवादी काव्यधारा का जन्म हुआ ।

"युग की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को जानने वाले एक नवीन समुदाय का साहित्य के बीच आविर्भाव हुआ । जिसने अपने आपको प्रगतिवादी कहा और जिसकी रचना प्रगतिशील कही गई ।"[1]

---

1. डा० केसरी नारायण शुक्ल ।हिन्दी काव्यधारा का सांस्कृतिक स्रोत,पृ.199 । पृ० 199 ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रगतिशील लेखक संघ का अधिवेशन लखनऊ में 1936 में मुंशी प्रेमचन्द की अध्यक्षता में हुआ । अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा, "हमारी कसौटी पर केवल वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, जो हृदय की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाये नहीं, क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है ।"[1]

दूसरा अधिवेशन कलकत्ता में हुआ । उसके द्वारा समस्त भारतीय साहित्य को सामाजिक विकास की एक नयी दृष्टि मिली । सामान्य जीवन में जो निराशा और भय का भाव व्याप्त हो गया था उसको धीरती हुई सामाजिक चेतना विकसित हुई । अमृतराय, उपाध्याय, प्रेमचन्द आदि साहित्यकारों का प्रगतिवादी काव्यधारा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा । छायावादी कवियों ने भी इस नयी काव्यधारा को स्वीकार किया। साहित्य का उद्देश्य घोषित हुआ –

> "इस युग में जीवन की वास्तविकता ने जैसा उग्र आकार धारण कर लिया है, उससे प्राचीन विश्वासों में प्रतिष्ठित हमारे भाव और कल्पना के मूल हिल गये हैं अतएव इस युग की कविता स्वप्नों में नहीं पल सकती । उसकी जड़ों को अपनी पोषण सामग्री ग्रहण करने के लिये कठोर धरती का आश्रय लेना पड़ रहा है । हमारा उद्देश्य इस इमारत में घुनियां लगाने का कदापि नहीं है, जिसका कि गिरना अवश्यंभावी है ।"[2]

---

1. मुंशी प्रेमचन्द, 'साहित्य का उद्देश्य,पृ० 191
2. सुमित्रानन्दन पंत, सम्पादकीय रूपाभ जुलाई 1938.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस काल में सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। नवजागरण की भावना से इस समय के साहित्य में काफी विकास हुआ। हिन्दी साहित्य की प्रगतिवादी काव्यधारा एक ओर विकासशील जीवन के सामाजिक बोध को लेकर आगे बढ़ती है तो दूसरी ओर अन्धात्मक भौतिकवाद के आदर्शों से एक रूढ़ सीमा को स्वीकार करती है। कई बार पुरानी परम्परायें नयी परम्परा को जन्म देकर मार्ग से हट जाती हैं। इसलिये प्रगतिवादी धारा का नवोन्मेष आधुनिक काव्यधारा के संदर्भ में हुआ।

सामान्य जीवन जो अपने श्रम, त्याग और निष्ठा की शक्ति से सर्जन के प्रत्येक क्षेत्र को गति देता है उसकी उपेक्षा कवि का सत्य बोध नहीं सह सकता। मनुष्य के पास जीवन से बढ़कर कोई अमूल्य वस्तु नहीं है। जीवन के प्रति अनुरक्ति की भावना से ही उसकी सर्जनात्मक चेतना अनेक सत्यों की ओर आकर्षित होती है। यही कारण है जो प्रगतिवादी कवि के स्वर में सत्य है, प्रेम है, घृणा भी है, उसके क्रान्तिकारी स्वर में मानवतावादी समाज व्यवस्था के नव निर्माण की एक तीव्र भावना निहित है।

प्रगतिवादी कवि साहित्य को समूचे समाज की सम्पत्ति मानते हैं। उनका सदा से दृष्टिकोण यही रहा है कि जहाँ अच्छे साहित्य से समाज की बुराइयों को दूर किया जा सकता है वहाँ उसका दुरूपयोग नहीं होना चाहिए। प्रगतिवादी कवि यथार्थ से प्रभावित हैं। इसलिये सामाजिक जीवन की समस्यायें काव्य का विषय बनीं।

"साहित्य में समाजवादी सिद्धान्त के बहुत प्रचार से
हो या प्रान्तीय स्वायत्त शासन की प्रतिक्रिया से हो, राष्ट्रीय
भाव के कवियों में से अधिकांश ने भारत माता के स्थान पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किसानों और मजदूरों का स्तव-गान आरम्भ किया "।[1]

और अब –

"मेरा संसार बदल गया है, मेरा दृष्टिकोण बदल गया है, मैं बदल गया हूं। कल वाली कल्पनाएं, कल वाले सपने वे सब के सब न जाने कहां गायब हो गये, वास्तविकता की दुरुता से जकड़ा हुआ मैं आज के संघर्ष में अपने पन को खो चुका हूं, यही नहीं वह संघर्ष ही अपना बन चुका है।"[2]

व्यक्तिवादी गीतकार अन्तर्मुखी थे लेकिन प्रगतिवादी कलाकार बहिर्मुखी थे। वे सत्य का साक्षात्कार करना चाहते थे। उनको विश्वास था कि भौतिक जगत में ही सत्य के दर्शन हो सकते हैं। संघर्षों से पलायन से नहीं। संघर्षों का सामना साहसपूर्वक करने में ही जीवन है। प्रगतिवादी कवियों की रचनाओं में मिट्टी की महक और पसीने की बूंदों की गंध निहित है। प्रगतिवादी कवियों का उद्देश्य था सामन्तवादी शासन प्रणाली का बहिष्कार कर एक समुन्नत समाज की स्थापना। जन-जीवन की दयनीय दशा ने कवियों को निराशावादी बनाने की अपेक्षा उनमें नव निर्माण की आस्था तथा विश्वास भरा।

आधुनिक काल में भारतेन्दु कालीन कवियों ने राष्ट्रीय परिवेश में आर्थिक शोषण के भयंकर परिणामों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। देखिये महावीर प्रसाद द्विवेदी की ये पंक्तियां –

"कभी-कभी गुड़िया सी बचपन में ही ब्याही जाती हैं,

---

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ० 146.
2. भगवतीचरण वर्मा, [स्वगत, सन 1938] "वर्मा जी" में और मेरा युग.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जिसके कारण ही अति दुःसह दुख जन्म भर पाती हैं ।
प्यारे पिता, बन्धुवर, तुम कब आ होगा में आओगे ?
कब हम दुखी दीन अबलाओं पर तुम दया दिखाओगे।"[1]

\+ + + + + + +

"हैं एक मुट्ठी अन्न को वे बार बार पुकारते ।
कहते हुए कातर वचन सब ओर हाथ पसारते ।
दाता तुम्हारी जय रहे, हम को दया कर दीजिये।
माता, मेरी, हा-हा, हमारी शीघ्र ही सुध लीजिये।[2]

द्विवेदीकालीन कवियों ने समाज को आत्म संस्कार की प्रेरणा दी। छायावादी कवियों ने वैयक्तिक अनुभूतियों के चित्रण के साथ ही मानव कल्याण तथा सामाजिक यथार्थ को भी चित्रित किया । प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी वर्मा सभी दार्शनिक होते हुए भी जीवन के सहज बोध से सदा प्रभावित रहे । मानवतावादी दृष्टिकोण की ये पंक्तियां देखिये–

"वह आता
दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता ।
पेट पीठ दोनों मिल कर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भर दाने को
भूख मिटाने को
मुंह फटी पुरानी झोली को फैलाता ।"[3]

---

1. महावीर प्रसाद द्विवेदी, काव्य मंजूषा-विलाप ।सरस्वती, खिलम्बर, 1906 ।
2. मैथिलीशरण गुप्त, भारत भारती, पृ० 88.
3. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, परिमल.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आधुनिक समाज की वर्ग व्यवस्था पर जहाँ श्रम का शोषण होता है, ग्रामीण जीवन अधिकारों और न्याय से वंचित रहता है, वहाँ प्रगतिवादी कवि का आक्रोश स्पष्ट दिखाई देता है । पंत जी ने गाँव के नर-नारियों, रीति-रिवाजों का वर्णन करते हुए उनके जीवन के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की है –

"मिट्टी से भी मटमैले तन, अध फटे तुचैले जीर्ण वसन,
ज्यों मिट्टी के हों बने हुए ये गंवई लड़के भू के धन।"[1]

छायावादी कवि अधिक दिनों तक मानवतावादी आस्तिकता के सहारे नव समाज का निर्माण न कर सके । यथार्थ के स्थान पर कवियों ने कल्पना लोक में ही शान्ति प्राप्त की ।

"छायावाद की यह स्थिति बहुत दिनों तक सम्भव नहीं थी । जीवन की अस्वीकृतियों को गौरवान्वित करके, मानसिक कुण्ठाओं को छिपाकर कल्पना लोक के छायाभास और रहस्याभास के वैभव में अपने आपको भुलाये रहना अधिक सम्भव नहीं था । और सामाजिक भावनाओं के लिये अज्ञात अशरीरी आलम्बन का रहस्यात्मक आधार भी अधिक टिकाऊ सिद्ध नहीं हो सका । परिणामस्वरूप आज के काव्य में एक नया मोड़ स्वाभाविक था । इस नये काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है कि यह काव्य भाव के काल्पनिक कुहासे से निकल कर जीवन की वास्तविकता तथा यथार्थ की ओर बढ़ने का प्रयत्न कर रहा है ।"[2]

---

1. पंत, गाँव के लड़के ग्राम्या.
2. डा० रघुवंश, हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ, पृ० 9.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मानवतावादी दृष्टिकोण के कारण इस धारा का प्रत्येक कवि प्रत्येक वस्तु को व्यापक जन कल्याण के संदर्भ में देखता है । सामान्य जनता में आत्म बोध को जागृत करना साहित्यकार का पहला कर्तव्य है । प्राचीन रूढ़ियों को खत्म कर इस धारा के कवियों ने प्रबुद्ध समाज की स्थापना का प्रयत्न किया । नवीन राष्ट्रीय चेतना में जो जागरण की भावना थी उसमें सबके कल्याण और विकास की भावना सर्वोपरि है । आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक विचारों में परिष्कार की दृष्टि आधुनिक काल में दिखाई देती है । नवीन समाज की स्थापना और उसके सर्वांगीण विकास की भावना राष्ट्रीय जागरण का लक्ष्य थी ।

"छायावादी कविता के पूर्ण उन्मेष के काल में ही देश की राष्ट्रीय चेतना में एक नया मानवतावादी संस्कार होने लगा था । देश की स्वतन्त्रता का लक्ष्य केवल अंग्रेजों की राजनीतिक पराधीनता से मुक्ति पाना भर है, या हर प्रकार के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक शोषण, भेदभाव और अन्याय पूर्ण वर्ग-सम्बन्धों का अन्त करके समानता, न्याय जनतन्त्र के आधार पर एक नये शोषण मुक्त समाज और नयी मानवतावादी संस्कृति की स्थापना करना है - यह प्रश्न सभी लोक-चेता- विचारकों को मथित करने लगा था।"[1]

सामयिक परिस्थिति से उत्पन्न निराशा अगर विश्वास को खत्म न करे तो नयी आशा और जीवन-विकास की दिशा कभी नहीं खोती । जीवन ने इतने संघर्षों में भी विश्वास को नहीं खोया । प्रगतिवादी कवि इसी

---

1. शिवदान सिंह चौहान, काव्य धारा, हिन्दी कविता का विकास, पृ०43.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विश्वास से भरे नव जीवन का गुणगान करता है -

"ऐसे आओ
जैसे गिरि के अंग शरीरा पर
रंग रूप का प्रीट लगाये
बादल आये,
हंस-माल माला लहराये ।
और विमल तन
शान्ति निकेतन-सम बन जाये ।
तब मेरा मन
तुम्हें प्राप्त कर
आत्मसात कर
स्वयं तुम्हारी आकांक्षा का
बन जायेगा छवि का सागर,
जिसके तट पर
शंख सीप लहरों के मणिधर
आयेंगे-जायेंगे मनहर,
और होगा दिव्य दिवाकर ।"[1]

प्रगतिवादी काव्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि उसने कविता को जनजीवन की भूमिका पर प्रतिष्ठित किया ।

"व्यक्ति की किसी भी अवस्था में ऐसी कल्पना नहीं की जा सकती, जिसमें व्यक्ति के विवेक अथवा न्याय बुद्धि को समाज के सम्बन्धों से निरपेक्ष भाव से मुक्त करके देखा जा सके।"[2]

---

1. केदारनाथ अग्रवाल, जीवन से प्रगति पृ० 9 ।
2. डा० रागेय राघव आधुनिक हिन्दी कवितायें - विषय और शैली, पृ० 57.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रेम को प्रगतिवादी कवि ने बड़े मर्यादित ढंग से चित्रित किया है। यद्यपि प्रेम जीवन की एक प्रबल और स्वभाविक इच्छा है परन्तु प्रेम ही सब कुछ नहीं है। इस दुनिया में प्रेम के दर्द से भी बड़े दर्द हैं। नारी का प्रेम भी तर्जनात्मक है, मात्र शारीरिक तृप्ति ही नहीं –

"सुख आये दुख आये, दिन आये रात आये,
सुख दुख एक भी अकेले सहा नहीं जाता,
आज मैं अकेला हूं अकेले रहा नहीं जाता –
मुझे जगत जीवन का प्रेमी बना रहा है प्यार तुम्हारा
मेरी दुर्बलता को हर कर, नयी शक्ति नव साहस भर कर
तुमने फिर उत्साह दिलाया, धर्म क्षेत्र में बढ़ूं सम्भल कर।"[1]

प्रगतिवादी धारा के कवियों के काव्य में देश प्रेम की भावना व्यापक रूप में व्यक्त हुई। राष्ट्र की समृद्धि का सीधा सम्बन्ध राष्ट्रीय जीवन से है। राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय जीवन और उसकी समस्याओं से अनुरक्त होती है। द्विवेदी कालीन कवि सामाजिक जीवन के विकास के लिये कटिबद्ध था। रामायण, महाभारत में स्थापित मानव मूल्यों के आधार पर ही द्विवेदीकालीन कवियों ने तत्कालीन कवियों को नया विकास देकर भारतीयता की ओर आकृष्ट किया।

यद्यपि आज राष्ट्रीय जीवन में उच्चकोटि की भावना नहीं दिखाई देती है, स्वार्थी तत्व संकीर्ण सीमा ही में संतुष्ट हैं। प्रजातन्त्र के नाम पर चन्द लोग सुख भोग रहे हैं। फिर भी राष्ट्रीयता की भावना नये निर्माण के साथ विकसित होती जा रही है। वह राष्ट्रीय जीवन के आत्म विश्वास और गौरव की भावना को टिकाये रखने के लिये प्रयत्नशील है। हमारा पिछला इतिहास पराधीनता के कारण विपन्न रहा। इसका

---

1. त्रिलोचन शास्त्री, धरती 49.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारण राष्ट्रीयता की कमी थी ।

प्रगतिवादी कवियों ने बोलचाल की भाषा को काव्य-भाषा के रूप में स्वीकार किया । इन्होंने सबसे पहले यह अनुभव किया कि काव्य भाषा और जन भाषा को एक रूप दिया जाय तथा काव्य को भावुक वर्ग की परिधि से निकाल कर व्यापक बनाया जाय । अत: इस काव्य-धारा में सरलता तथा बोध गम्यता है । प्रगतिवादी कवियों ने मानवतावाद, गांधीवाद और व्यापक राष्ट्रीयता के प्रचार से समाज और राष्ट्र को प्रगति की ओर प्रेरित किया । डा० नगेन्द्र के शब्दों में, "भारत में प्रगतिवाद का भविष्य साम्यवाद के साथ बंधा हुआ है लेकिन फिर भी आधुनिक काव्य के अध्येता को आदर और धैर्यपूर्वक उसका अध्ययन करना होगा । उसने हिन्दी काव्य को एक जीवन्त चेतना प्रदान की है, इसका निषेध नहीं किया जा सकता।"

प्रगतिवादी काव्य-धारा ने काव्य सौन्दर्य को एक नवीन सौन्दर्य प्रदान किया । इसने सामाजिक जीवन के नये परिष्कार के लिये सर्जनात्मक कार्य किया । प्रगतिवादी धारा के समृद्ध कवि दिनकर, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, सुमन आदि ने प्रारम्भ से अन्त तक विकासशील साहित्य की रचना की ।

श्री रामधारी सिंह दिनकर -

दिनकर छायावादी काव्य के परवर्ती कवियों में अग्रगण्य कवि हैं । पुराने कथानकों में भी इनकी मौलिकता नये सत्यों को स्थापित करने में समर्थ हुई है । मनुष्य जाति के प्रति दिनकर की गहरी आस्था है और अपने राष्ट्र तथा राष्ट्रीय संस्कृति के प्रति गहरा प्रेम है । भारतीय जीवन-परम्परा सदा संयम और मर्यादा में विकसित हुई है । दिनकर जी के काव्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में यह प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है ।

परवर्ती छायावादी कवियों में दिनकर चिन्तनशील प्रतिभा के कवि हैं । सामाजिक असत्य और रूढ़ियों के प्रति इनका विद्रोह व्यक्तिवादी है । दिनकर की कविता पर राष्ट्रीयता की छाप सबसे अधिक है । भारतीय जीवन के उच्च मूल्यों के ये स्वस्थ गायक है । दिनकर जी की मानव जीवन और भारतीयता के प्रति अपनी सहज मौलिक दृष्टि है ।

"मेरी राष्ट्रीय कविताओं और मेरे जीवन के बीच एक प्रकार की भिन्नता रही है । विप्लव और राष्ट्रीयता का वर्ण्य कभी मेरा उद्देश्य न था । आत्मा मेरी अब भी "रसवंती" में बसती है..... राष्ट्रीयता मेरे व्यक्तित्व के भीतर से नहीं जन्मी, उसने बाहर से आकर मुझे आक्रान्त किया ।"[1]

आपकी कविताओं में कभी शिव का सा प्रलयकारी तांडव नृत्य का दृश्य उपस्थित होता है तो कभी हिमालय तथा गंगा के प्राकृतिक वर्णन का । व्यक्तिवादी चेतना के कवि होते हुए भी इन्होंने राष्ट्रीयता और सामाजिक जीवन के चित्रों को बड़ी सहृदयता से प्रस्तुत किया है । रोमांटिक कवियों की स्वच्छन्दता के साथ दिनकर में प्रगतिशील सामाजिक प्रश्नों के प्रति तीव्र आकर्षण है । इनकी कविताओं में ओज और पौरुष है ।

"दिनकर का व्यक्तित्व रोमांटिक कवि की वैयक्तिक भावनाओं से क्षुब्ध है, परन्तु कवि का अपना व्यक्तित्व अपने परिवेश में राष्ट्र और समाज के व्यापक सत्य को समाविष्ट करके ही आगे बढ़ता है । निराशा, अवसाद के गीत गाते हुए भी कवि निजी

---

1. श्री रामधारी सिंह दिनकर, उद्धृत, पृ० 31,32,33.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीवन के ही रागबोध से सन्तुष्ट नहीं हैं ।"[1]

"रेणुका," "रसवन्ती," "द्वन्द्व गीत", "हुंकार", "धूप और धुआं", "सामधेनी", "बापू", "रश्मिरथी", "इतिहास के आंसू", "दिल्ली", और "नीम के पत्ते" आदि इनकी सन् 1935 से लेकर 1954 तक की प्रकाशित रचनायें हैं । "प्रण भंग" एक खण्ड काव्य है, "रेणुका" और "हुंकार" में कवि की यौवन-सुलभ उत्तेजना की भावनायें सामने आती हैं । "रसवंती" में कवि के सौन्दर्य उपासक यौवन की तरंगित हिलोरें स्पष्ट प्रकट होती हैं, किन्तु साथ ही व्यक्तिवाद और मानवतावाद की व्यापक भावनाओं का भी परिचय मिलता है । दिनकर ने वर्तमान सभ्यता का भीषण चित्र खींचा है । सामाजिक शोषण के प्रति कवि का उद्बोधन देखिये —

"फेंकता हूं लो तोड़ मरोड़, अरी निष्ठुर वीणा के तार
उठा चांदी का उज्ज्वल शंख, फूंकता हूं भैरव हुंकार।"

\+ \+ \+ \+

"हटो व्योम के मेघ पंथ से, स्वर्ग लूटने हम जाते हैं
दूध-दूध ओ वत्स, तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं"[2]

उपरोक्त पंक्तियों में कवि का पौरुष अपने देश की पीड़ित जनता के लिये भावाकुल होकर स्वर्ग सृष्टि को लूटने के लिये तत्पर है । दिनकर में अपने भावों को व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है । जो जीवन का अवरोधक तत्व है उसके नाश के लिये कवि तीव्र इच्छुक है । "कुरुक्षेत्र"

---

1. डा० रमाकान्त शर्मा, छायावादोत्तर हिन्दी कविता, पृ० 123.
2. रामधारी सिंह दिनकर, हुंकार, पृ० 10-23.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और "रश्मिरथी" सर्वश्रेष्ठ काव्य हैं । इनमें इनकी प्रतिभा का पूर्ण उन्मेष दिखाई पड़ता है । "रश्मिरथी" में कवि ने कर्ण का व्यक्तित्व अपने ही ढंग से प्रस्तुत किया है । महाभारत का यह उपेक्षित पात्र है । कर्ण दलितों और पीड़ितों का प्रतिनिधि है । कर्ण के प्रति दिनकर का स्नेह उच्चकोटि का है । कर्ण के माध्यम से कवि यह सिद्ध करता है कि पुरुषार्थ से मनुष्य की मर्यादा और सम्मान बढ़ता है ।

दिनकर के व्यक्तित्व का मूल्यांकन उनके गीतों की अपेक्षा उनके "कुरुक्षेत्र" और "रश्मिरथी" नामक उच्चकोटि के प्रबन्ध-काव्यों के आधार पर करना न्याय संगत होगा । "कुरुक्षेत्र" में कवि ने आज के युग की विकट समस्या युद्ध और शान्ति पर अपने मौलिक विचारों को रखा है और भीष्म के माध्यम से युद्ध की अनिवार्यता पर बल दिया है, जबकि गांधी जी ने असत्य के विरुद्ध लड़ने का तरीका सत्याग्रह के द्वारा निकाला न कि युद्ध प्रणाली से । मार्क्स जीवन की विषमता को नष्ट करने के लिये युद्ध को अनिवार्य मानते हैं । यही संघर्ष "कुरुक्षेत्र" में स्पष्ट दिखाई देता है । इसमें कवि ने भीष्म के विचारों की दृढ़ता पर बल दिया है –

"और जो अनिवार्य है उसके लिये
खिन्न या परिताप होना व्यर्थ है
तू नहीं लड़ता, न लड़ता
आग वह फूटती निश्चय किसी भी व्याज से,
त्याग तप भिक्षा, बहुत हूं जानता मैं भी मगर
त्याग तप भिक्षा विरागी योगियों के धर्म हैं,
या कि उनकी नीति जिनके हाथ में सायक नहीं,
या मृषा पाखंड यह उनका पुरुष बल हीन का, "[1]

---

1. दिनकर, कुरुक्षेत्र, पृ० 21,22,28.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आत्मिक विकास के लिये प्रेम, अहिंसा और तप अत्यन्त आवश्यक हैं। इनसे समाज भी सशक्त बनता है। गाँधी जी का सिद्धान्त अपने में पूर्ण है। "रेणुका" दिनकर की प्रारम्भिक रचना है। इसमें कवि की संस्कृति के प्रति निष्ठा "मिथिला", "पाटलिपुत्र", "हिमालय" आदि कविताओं के माध्यम से व्यक्त हुई है। कवि की धार्मिक संदर्भ में विद्रोह की भावना भी दिखाई देती है। जैसे :—

"नाचो, हे नाचो नटवर,
चन्द्रचूड़, त्रिनयन, गंगाधर आदि प्रलय अनुचर शंकर"[1]

"द्वन्द्वगीत" में कवि के व्यक्तिगत भाव व्यक्त हुए हैं। नियतिवादी निराशा का स्वर भी कहीं कहीं दिखाई देता है। जीवन और मृत्यु के विषय में भी कवि के विचारों से अवगत होते हैं। "नीम कुसुम" में इन्होंने आज की मानवता को आशावाद का संदेश दिया है। "उर्वशी" इनकी अमर कृति है। "इतिहास के आँसू" और "दिल्ली" इन दोनों रचनाओं में स्वतन्त्रता के बाद भारतीय जीवन के प्रति असन्तोष का भाव व्यक्त हुआ है।

इनकी अभिव्यक्ति बड़ी स्पष्ट और स्वभाविक है। दिनकर शौर्य के तथा सौन्दर्य के कवि हैं। इनकी कविता मानवतावादी दृष्टिकोण लेकर आगे बढ़ी। भाषा का प्रवाह, छन्दों का उचित प्रयोग इनके काव्य की विशेषता है। परवर्ती छायावादी कवियों में दिनकर जी पुराने संस्कारों तथा विश्वासों के संवाहक के साथ आधुनिकता के अपनाव के कारण सदैव याद किये जायेंगे।

---

1. दिनकर, रेणुका, पृ० ३.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केदारनाथ अग्रवाल –

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी काव्य-धारा के उच्चकोटि के कवि हैं। इनकी रचनाओं में सहज रूप से प्रभावित करने की शक्ति है और रागात्मक वेग है। इनकी सामाजिक चेतना भौतिक दर्शन से प्रभावित है। रागात्मक बोध से जीवन के व्यापक परिवेश को चित्रित करने में इन्होंने पूर्ण सफलता प्राप्त की। प्रगतिवादी रचनाओं में इनकी कृतियाँ अपना अलग स्थान रखती हैं। इन्होंने प्रगतिवादी कवियों की परम्परा में "लाल डंडा", "युग", "चीन के प्रगतिशील गीत" लिखे। इनकी रचनाओं में मौलिकता और सामाजिक संवेदना की कितनी सहज अभिव्यक्ति है। देखिये इन पंक्तियों में –

"मांझी न बजाओ बंशी मेरा मन डोलता
मेरा मन डोलता कि जैसे जल डोलता
जल का जहाज जैसे पल पल डोलता।"

सामान्य जीवन के प्रति अटूट विश्वास है –

"हम लघु दीपों के समान ही जले ज्योति से,
और ज्योति से ज्योति मिलाकर रहे जागते
क्षण-क्षण के संशय सम्भ्रम को मिले सामने
पराभूत होकर वे हमसे रहे भागते
अमा-निशा के अन्धकार के अन्तराल में
हम तरिमत सपनों की सुषमा रहे पालते
बुझने से पहले प्रयाण करने से पहले
शुभागमन हम सूर्योदय का रहे राजते।"[1]

---

1. श्री केदारनाथ अग्रवाल, प्रगति, पृ० 10.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इनकी रचनाओं का आत्मवान स्वर नव जीवन को नये निर्माण की ओर अग्रसर करता है । जिस नये स्वस्थ समाज और व्यापक आत्मीयता का स्वप्न हम वर्षों से देखते रहे हैं, कवि मनुष्य के श्रम से उनके निर्माण में तल्लीन है –

"मैं अचेतन और उपचेतन सभी पर
वार करता जा रहा हूं
व्यक्तिवादी सभ्यता को
ध्वंस बिल्कुल कर रहा हूं
मैं हिमालय को रगड़ कर
रास्ते की धूलि का कण कर रहा हूं
स्वर्ग में बैठे हुए कवि देवता को
मानवों के साथ जीने
और मरने के लिये ललकारता हूं
सामने जाकर उसे धिक्कारता हूं
और कहता हूं कि आ,
इन हड्डियों में तोल अपना रक्त का घर ।"[1]

प्राकृतिक चित्रों में भी मौलिकता है । प्रकृति से जीवन का घनिष्ट सम्बन्ध है । प्राकृतिक सौन्दर्य जीवन में सौन्दर्य भरता है । कवि की ये पंक्तियां साक्षी हैं –

"रंग भरी पिचकारी मारी
फूलों के गालों पर खिलने

---

1. श्रीकेदारनाथ अग्रवाल, आधुनिक हिन्दी कविता, विषय और शैली, पृ० 225.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वही महीना फागुन का
रंग रहा हमारी देह दुलारी
वही महीना रंगों का
रस-बोरे भरि अंगों का
रंग रहा हमारी इच्छा सारी
रंग भरी पिचकारी मारी
भौंरों के पंखों पर चित्रने
वही महीना फागुन का
वही महीना चुम्बन का
मदमाते प्रेमालिंगन का
रंग रहा हमारी सत्ता सारी ।"[1]

सौन्दर्य और प्रेम प्रगति के मार्ग में बाधा नहीं बनते । युवावस्था की सहज स्वभाविक अभिव्यक्ति को स्वभाविक ही मानना चाहिये । इनके प्रेम गीत भी व्यक्तित्व के निखार में सहायक सिद्ध होते हैं । जीवन के व्यापक क्षेत्रों से विषयों का चुनाव केदारनाथ अग्रवाल ने मुक्त होकर किया और सब पर अपना रंग चढ़ाया । सौन्दर्य सृष्टि शिल्पगत स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार करने वाले कवियों में आपका स्थान अग्रिम है । कवि की सहज अभिव्यक्ति बेजोड़ है । देखिये –

"जितना जो कहा कभी
सुधियों ने उषियों ने
स्वप्न भरी अंखियों ने

---

1. श्री केदारनाथ अग्रवाल, फागुन का महीना- प्रगति, पृ० 13.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैंने वह दिया सभी
कविता को अपनी "[1]

"युग की गंगा", "नींड के बादल", "लोक और आलोक" इनके उत्तम काव्य संग्रह हैं । "पाब्लो नेरुदा" के काव्य का अनुवाद "रेल मंत्रों को जाने दो" इनकी अनेकों कविताएँ विदेशी भाषा में अनुदित हैं । शब्द सरल, अर्थ गम्भीर हैं । उद्बोधन प्रधान कविताएं इनकी साधारण कोटि की हैं । अधिकतर रचनायें मुक्त छन्द में हैं । गीतों को लोक गीतों की ध्वनि के आधार पर इन्होंने नया मोड़ दिया है । शहर और गाँव के जीवन की कुत्सता को तथा जीवन के स्वस्थ पक्षों को ये बड़ी सुन्दरता से व्यक्त करते हैं । श्रमिकों का शोषण करने वाले साहूकारों के प्रति कवि रोष प्रकट करते हुए कहता है –

"घाट, धर्मशाला, अदालतें, विद्यालय, वेश्यालय सारे
श्रमजीवी की उस हड्डी से टिके हुए हैं –
जिस हड्डी को सभ्य आदमी ने
समाज ने टेढ़ी करके मोड़ दिया है ।"[2]

शब्द सरल लेकिन अर्थ प्रभावशाली हैं । कवि की अनुभूति की सहजता भी अन्यत्र मिलनी दुर्लभ है । इनकी सुन्दर कल्पनाओं की उड़ान भी सराहनीय है । ताजमहल के विषय में निम्नलिखित रचना का एक सुन्दर उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है –

---

1. श्री केदारनाथ अग्रवाल, प्रगति, पृ० 2.
2. वही , युग की गंगा.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"हरियाली का श्याम सरोवर सदियों से फैला है भू पर
श्वेत कमल सा ताजमहल यह खिला हुआ है उसके ऊपर ।
नील गगन को छूकर भी यह नहीं हुआ है नीला अब तक
अमल धवल यह खड़ा हुआ है भूतल पर गर्वीला अब तक ।
नभ का चाँद निकल कर, बढ़कर जग को कर देता है निर्जन
फिर भी क्रमशः घट कर वह तो हो जाता है पूरा ओझल ।
लेकिन ऐसा चाँद कहीं नहीं - यह अपना प्यारा ताजमहल है।"[1]

उनकी रचनायें मुक्त छन्द में भी हैं । इन्होंने लोक गीतों को नयी ध्वनि प्रदान की ।

युग की विषम परिस्थितियों को देखकर भी कवि नये जीवन के प्रति आत्थावान है । प्रगतिवादी कवियों में केदारनाथ का शिल्पगत सौष्ठव सराहनीय है ।

नागार्जुन -

ये प्रगतिवादी परम्परा के उच्चकोटि के कवि हैं । नागार्जुन काव्य के क्षेत्र में भाव और शिल्प दोनों दृष्टियों से एक कुशल, मौलिक चिन्तन-शील कवि होते हुए समर्थ तथा शक्तिशाली लेखक भी हैं । कथा साहित्य में भी नागार्जुन का विशेष स्थान है । आपका सामाजिक बोध जन जीवन की अनुभूतियों से रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करके सामने आता है । इनकी रचनाओं में समाज की प्रतिक्रियावादी शोषक शक्तियों के प्रति विद्रोह स्पष्ट दिखाई देता है । इन्होंने संघर्षों से भरी हुई किसानों और मजदूरों

---

1. श्री केदारनाथ अग्रवाल, ताजमहल, प्रगति, पृ० ३.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की शोषनीय दशा देखी, उसे अनुभव किया और अपनी रचनाओं में प्रभावशाली शिल्प द्वारा व्यक्त किया । मार्क्सवादी चिन्तन तथा सक्रिय कम्युनिस्ट होने के साथ इनका साहित्य प्रेम उच्चकोटि का है । इनकी कहानियों और उपन्यासों में भी सामान्य जीवन का यथार्थ चित्र मिलता है । इन्होंने जीवन में अवरोध पैदा करने वाले तत्वों के विपरीत क्रान्ति का आवाहन किया । इनकी रचनाओं में रूढ़िवादिता, असमानता और आर्थिक विषमता से पीड़ित जनता के नव निर्माण की आवाज है । व्यंग्यपूर्ण रचनायें भी शोषक समाज के प्रति मिलती हैं । ये नये निर्माण के लिये विनाश की अनिवार्यता पर जोर देते हैं –

"मैं न अकेला कोटि कोटि हैं दुख जैसे तो
सबको ही अपना अपना दुख है वैसे तो
पर दुनियां को नरक नहीं रहने देंगे हम,
कर परास्त छलियों को अमृत छीनेंगे हम ।"[1]

राष्ट्रीयता की भावना कोरी भावना की भित्ति पर ही विकसित नहीं हो सकती । राष्ट्र के प्रति नागरिकों की भावनाएं जीवन सम्बन्धों के आधार पर ही निर्भर होती हैं । कवि राष्ट्रीय जीवन के प्रति आत्म-विश्वास और गौरव की भावना को टिकाए रखने के लिये प्रयत्नशील है । देश की प्रजा राष्ट्र का प्राण है इसलिये कवि उसके सुख दुख के गीत गाता है । देश का गान भी देश-वासियों का ही गुणगान है । पूंजीवादी जीवन द्वारा स्थापित खोखले आदर्शों का कवि ने मजाक ही उड़ाया है । यद्यपि यह ईश्वर की सत्ता पर विश्वास नहीं रखते परन्तु मानव के प्रति इनका अटूट प्रेम है । विश्व को परिवार की संज्ञा देते हैं ।

---

1. नागार्जुन, नया साहित्य, अक्टूबर 50

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपने देश की मिट्टी के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा है । "फुलधारा" काव्य संग्रह इनके व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब है –

"गढ़ा जा रहा कोटि-कोटि पृथ्वी-पुत्रों के लिये
विराट सिंहासन – ।"[1]

श्रमशील जीवन की स्तुति करते हुए कवि कहते हैं –

"हमको क्या भय, तुमको क्या भय,
मुट्ठी भर ही होंगे, वे जिनका भविष्य है ।
अंधकारमय ---"[2]

कवि ने आर्थिक विषमता को निकट से देखा है और अनुभव किया है इसीलिये कवि का सामान्य प्रजा के दुख दर्द के प्रति रागात्मक बोध स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है । क्रान्ति का स्वर कहीं बाहर से नहीं आया वह तो कवि हृदय की ज्वाला है । ये पंक्तियाँ साक्षी हैं – कवि हृदय के उद्गार की –

"कैसे लिखूं शान्ति की कविता,
अमन चमन को कैसे मैं कड़ियों से बांधू ।
मैं दरिद्र हूं पुश्त पुश्त की यह दरिद्रता,
कटहल के छिलके जैसे खुरदरी जीभ से
मेरा लहू चाटती आई ।
मैं न अकेला,
× × × ×
मुझ जैसे तो लाख-लाख हैं, कोटि-कोटि हैं,
यों तो सबका यही हाल है

---

1 + 2. नागार्जुन, फुल-धारा, पृ0 79.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सभी सरों पर यही बाल हैं
सभी दुखी हैं
दो प्रतिशत भी नहीं सुखी हैं
कैसे लिखूं शान्ति पर कविता।"[1]

प्रकृति के सुन्दर वातावरण में भी कवि को गरीब परिवार का दुखद चित्र अधिक प्रभावित करता है। प्रकृति के सौन्दर्य में भी कवि जन-जीवन की दयनीय अवस्था को बड़े सुन्दर एवं मार्मिक चित्रणद्वारा प्रस्तुत करते हैं –

"फटी दरी पर बैठा है चिर रोगी बेटा
राशन के चावल से कंकड़
बीन रही पत्नी बेचारी
गर्भ-भार से अलस-शिथिल
है अंग - अंग,
मुंह पर उसके मट मैली आभा,
छप्पर पर बैठी है बिल्ली
किसके घर से जाने क्या कुछ खा आई है
चला-चला कर जीभ स्वाद लेती होंठों का।"[2]

नागार्जुन की रचनाओं में कुंठा, निराशा और भय की भावना कहीं भी दिखाई नहीं देती। लेकिन उनके स्वर में पलायन नहीं है आस्था है, यद्यपि इनकी गम्भीर संवेदना परक रचनायें हैं। कवि की उद्बोधनात्मक रचनाओं में काव्य शिल्प सामान्य कोटि का है।

---

1. नागार्जुन, आधुनिक हिन्दी कविता में विषय और शैली, पृ0 86.
2. वही, पृ0 151.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवि कल्पना जगत में नहीं भ्रमण करता । वह जीवन के यथार्थ को देखता है और जीवन सौन्दर्य को समृद्ध करने के लिये साहित्य का सृजन करता है । देश की नवीन परिस्थितियों के प्रति कवि की असंतुष्टि की भावना है। प्रस्तुत पंक्तियों में वह इन शब्दों के साथ प्रकट हुई है –

"लोग दुखी हैं अन्न वस्त्र का है न ठिकाना,
लाल किले से टकराता है नया तराना
नये हिन्द का नया ढंग है नीति निराली
मुट्ठी भर लोगों के चेहरों पर है लाली
हे नीलकंठ, युगयुग तुम युग की पीड़ा पी रहे,
बस नई सृष्टि की लालसा लिये कर्पित जी रहे,

।निराला के प्रति।– काव्यधारा

कवि नये समाज का स्वप्न लिये अपने क्षेत्र में कार्यरत रहा है । उसने बोलचाल की भाषा में काव्य रचना की । भाषा विषय के अनुकूल, शैली में स्पष्टता तथा स्वभाविक प्रवाह नागार्जुन के काव्य में देखा जा सकता है । इनकी रचनाओं के मूल में मिट्टी की गंध और मानव के प्रति विश्वास स्पष्ट दिखाई देता है । काव्य का विषय सुनिश्चित और साहित्यकार का लक्ष्य भी स्पष्ट है । राजनीतिक कट्टरता होते हुए भी ये उच्चकोटि के सहृदय कवि हैं ।

शिवमंगल सिंह "सुमन" –

उच्चकोटि की सर्जनात्मक प्रतिभा और मानवीय सहृदयता से युक्त सुमन प्रगतिवादी दर्शन और सामाजिक बोध के सफल सर्जक हैं । स्वस्थ चिन्तन और रागात्मक बोधों से सम्पन्न सुमन प्रगतिवादी परम्परा के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उच्चकोटि के कवि हैं । इनकी अधिकतर रचनायें छोटी हैं परन्तु उनके अर्थ गम्भीर हैं । लम्बी रचनाओं में कहीं-कहीं कलागत न्यूनता आई है । प्रबुद्ध कला प्रेमी तथा सामान्य जन दोनों में ही इनकी रचनाओं को सराहा है । सैद्धान्तिक विचारों के स्थान पर जीवन के सहज अनुभव इनके काव्य में अभिव्यक्त हुए हैं । इनकी लोकप्रियता का कारण इनकी रचनाओं में सहज अभिव्यक्ति तथा अनुभूति की गहराई है । ये जीवन के सच्चे अनुभवों के आधार पर जिये और दर्द को अपनी रचनाओं में चित्रित किया । आपके काव्य जीवन का आरम्भ असफल प्रेमी की विरह प्रधान रचनाओं द्वारा हुआ । इनकी रचनायें समाज के जीवन के सुख दुख का स्वस्थ प्रतिनिधित्व करती हैं । सुमन मार्क्सवाद के समर्थक होते हुए भी मानवतावादी व्यक्तित्व के प्रति अनुरक्त हैं। प्रणय सम्बन्धी रचनाओं में श्रृंगारिक स्थूलता के स्थान पर प्रणय की अभिव्यक्ति अधिक स्पष्ट हुई है । प्रेम जीवन-संघर्ष को सहने की शक्ति देने वाला एक नैतिक आधार है । प्रेम, जीवन के नैतिक और बौद्धिक विकास का रागात्मक बोध है । देखिये यह पंक्तियाँ स्पष्ट करती हैं –

"कुछ बात दिल की कह सकूं
उपहास जगत का सह सकूं
इतना मुझे अधिकार दो
मुझको न सुख संसार दो ।"[1]

× × ×

"आज तुमसे दूर कितनी दूर
मैं बैठा हुआ हूं अनमना सा
कुतरता नाखून, तन मन दूर

---

1. श्री शिव मंगल सिंह "सुमन", हिल्लोल.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वयं के ही प्रति खिंचा कुछ-कुछ तना सा
कल तुम्हारे पास था लिपटा हुआ मधु चाँदनी में ।"[1]

× × × ×

"हाथ में जब तक तुम्हारे प्यार की पतवार है
कर सकूंगा अगम सागर पार "।

× × ×

साँसों पर अवलम्बित काया, जब चलते चलते घुर हुई
दो स्नेह शब्द मिल गये, मिली नव स्फूर्ति थकावट दुर हुई।[2]

जीवन के नव निर्माण की तड़प जगह-जगह दिखाई देती है । सामाजिक विषमता तथा जीवन संघर्ष के चित्र सामने आते हैं । "हिल्लोल" सुमन का प्रथम काव्य संग्रह है । इसमें संग्रहीत "जागरण" कविता सामाजिक बोध की रचना है । "जीवन के गान", "प्रलय सृजन", "युग का मोल", "विश्वास बढ़ता ही गया," "पर आँखें नहीं भरी," इनके काव्य-संग्रह हैं । इनके अतिरिक्त विदेशी भाषा की रचनाओं के अनुवाद किये हैं । "जीवन गान" की अधिकतर रचनायें जीवन संघर्ष की हैं । "प्रलय सृजन" की रचनायें शिल्प बोध की दृष्टि से उच्चकोटि की हैं । लाल सेना के बारे में उत्तम रचनायें इस संग्रह में है । वैज्ञानिक संस्कृति के प्रति कवि का झुकाव है और वह मानव शक्ति के नये स्रोतों को जीवन निर्माण का साधन बनाता है –

"मानवता का यह अन्तिम विजय समर हो
यह दलितों का पावन संकल्प अमर हो "[3]

---

1. श्री शिव मंगल सिंह "सुमन", प्रगति, पृ0 44.
2. वही, प्रलय सृजन.
3. वही, , पृ0 25

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

× × ×

"स्वर्ग सौधों का उजेरा
दीन कुटिया का अँधेरा
है जहाँ निशि व्याप्त कब से
पर नहीं होता सवेरा
ज्योति बन तू जल यहाँ कवि।"[1]

"सुमन" की रचनायें जन-वादी हैं। भाव और भाषा दोनों की दृष्टि से देखा जाये तो सुमन का व्यक्तित्व प्रगतिशील रहा है। इन्होंने सामान्य जन जीवन के दुख को अनुभव किया है और अपनी अनुभूति को सरल भाषा में अभिव्यक्त किया है। कवि का दृढ़ विश्वास इन पंक्तियों में दृष्टव्य है –

"चारों ओर जल रही ज्वाला
आज रक्त घृत बन जाता है
हड्डी का ईंधन जलता है
कंकालों की आहुति पड़ती है
यह ऐसी भीषण विकराला।
अब तो रहा नहीं जाता है
अब तो सहा नहीं जाता है
क्यों न क्षार कर दें उसको
जिसने जग क्षार-क्षार कर डाला।"[2]

---

1. श्री सुमन, कवि प्रगति, पृ० 25.
2. वही, आधुनिक हिन्दी कवितायें विषय और शैली, पृ० 221.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा

"कितने पग चल चुका, कहाँ अटका, ठिठका, डेरा डाला
कहना कठिन पार कर आया, कितना तम औ उजियाला
स्मृतियाँ ही बस ठोस टिकाऊ हो न सके पथ के परिचय
यौवन के सपनों को ठोस सत्य से आज पड़ा पाला
लेकिन साथी ।

चलने का आनन्द और ही
गति का हर अभियान नया,
जान न पाये
क्योंकि सुनाने वाला
चलता चला गया ।
छांह पैर धर लेती,
अधरों से झरने छलकाते हैं ।
मैं चलता जा रहा
राह के दृश्य बदलते जाते हैं ।"[1]

सामान्य जीवन के यथार्थ चित्रों में जहाँ कवि पीड़ा से कराह उठा है वहाँ उनकी रचनाओं में आत्मवादी स्वर स्पष्ट दिखाई पड़ता है । निराशा को इनकी रचनाओं में कहीं स्थान नहीं ।

"सुमन का देश प्रेम" और "पर आँखे नहीं भरीं" इन रचनाओं में मानवतावादी स्वर मुखर है । सामाजिक उत्थान के संदर्भ में प्रगतिवादी रचनायें हैं । इनकी प्राकृतिक-सौन्दर्य सम्बन्धी रचनायें और जन जीवन की निजी अनुभूतियों पर लिखी गई रचनायें साहित्य की दृष्टि से बड़े

---

1. श्री सुमन, मैं चलता जा रहा प्रगति, पृ० 30.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महत्व की है । इनकी भाषा में स्पष्टता और माधुर्य है । प्रतीकों के रूप में ऐतिहासिक तथा पौराणिक पात्र भी हैं । मुक्त छन्दों का प्रयोग इन्होंने अपनी रचनाओं में किया है । शैली ओजपूर्ण है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

द्वितीय अध्याय

बच्चन की काव्य धर्मिता

साहित्य व्यक्तित्व का पर्याय है । साहित्यिक कृति कवि के चेतन व्यक्तित्व का प्रक्षेप होती है । साहित्यिक प्रणयन का मूल प्रयोजन आत्मानुभूति होता है ।[1] अतः काव्य को आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति का माध्यम ही कहा जायेगा ।[2] आत्मानुभूति प्रकाश्य होने के कारण उसे व्यक्तित्व की प्रतिकृति मात्र नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आत्म-विचार और कल्पनात्मक चिन्तन उसके बौद्धिक और भावात्मक स्तर का सम्पादन होने के कारण ही साहित्यिक सर्जना के प्रेरक होते हैं । यही कारण है कि अन्तः प्रेरणा काव्य का प्रमुख हेतु कही जा सकती है । किन्तु अंतः प्रेरणा के निर्धारक तत्व सामाजिक प्रक्रिया सापेक्ष होते हैं, अतः अंतः प्रेरित अनुभूतियों और कार्य व्यापारों का अनुपालन सामाजिक क्रिया और प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में ही होता है । इसलिए किसी भी काव्य कृति का अध्ययन करते हुए उसकी प्रेरणा के सामाजिक और मानसिक प्रारूपों और प्रक्रियाओं का विश्लेषण अनिवार्य समझा गया है । प्रसिद्ध अमरीकी साहित्य-समीक्षक जय रेन वेलेक तथा आस्टिन वारन ने कहा भी है —

---

1. आधुनिक साहित्य - आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी, - पृ० 412.
2. Selected Essays - T.S.Eliot - P. 19-20.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

'Since every writer is a member of Society, he can be studied as a social being though his biography is the main source, such a study can easily widen into one of the whole milieu from which he came and in which he lived. It will be possible to accumulate information about the social provenance, the family background the economic position of writers.'[1]

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक आल पोर्ट ने आंतरिक संगठन और आंतरिक परिवेश को व्यक्तित्व निर्धारण का हेतु स्वीकार किया है।[2] हिप्पो लाइते टेन ने कवि व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए वंश-परिवार, पारिवारिक क्षेत्र तथा युग बोध - ये तीन आधारभूत स्वीकार किए हैं।

बच्चन भी स्वीकार करते हैं कि जीवन के साथ लेखन शैली में भी परिवर्तन होता है। वह कहते हैं, अगर आपकी वाणी आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व की प्रतिध्वनि है तो जैसे व्यक्तित्व बदल जाता है, ध्वनि बदल जाती है।[3] जीवन और कविता का गहरा रिश्ता है। बच्चन का व्यक्तित्व और कवित्व दोनों स्थिर नहीं रहे, निरन्तर गतिशीलता उनमें रही है। वह कहते हैं - " और न मेरा व्यक्तित्व सुस्थिर है और न मेरा कवित्व ही। दोनों का विकास होता रहा है। पर, जहाँ मेरे कल का व्यक्तित्व मेरे आज के व्यक्तित्व में समा गया है और उसकी कोई अलग सत्ता नहीं रह गई, वहाँ मेरी कल की कविता भी मौजूद है और आज की

---

1. Theory of Literature - Rene Wallack and Austen Warren, P. 96.
2. Personality - Gordon allport - 129-130.
3. रचनावली 9, पृ0 41.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मौजूद है । जैसे मेरे कल के व्यक्तित्व में आज का व्यक्तित्व बीज रूप से वर्तमान था, जैसे मेरे आज के व्यक्तित्व में मेरे कल का व्यक्तित्व भी समाया है, वैसे ही मधुशाला में भी आरती का कुछ प्रकाश और अंगारे की कुछ चिनगारियाँ मौजूद थीं और आरती और अंगारे में मधुशाला का रंग-राग किसी न किसी रूप में समाया है और इसी प्रकार मेरी आगे की रचना में भी आरती का कुछ धूप और अंगारे का कुछ ताप रहेगा । मेरी प्रथम रचना की क्षमताएं - इनमें शक्तियाँ और कमजोरियाँ दोनों सम्मिलित हैं - मेरी अन्तिम रचना ही सिद्ध कर सकेगी; मेरी अन्तिम रचना ही बतलायेगी कि मेरी प्रथम रचना में क्या संभावनाएं थीं । कहने का मतलब मेरा जीवन सांगिक है (आरगेनिक) वैसी ही मेरी कविता भी है । व्यक्ति का विकास शून्य में नहीं होता, समाज में होता है । समाज का बड़ा व्यापक अर्थ है । यह और बात है कि कुछ लोग समाज को समझते हैं - किसान मजदूर सभा । मैं यह मानने वाला हूं कि समाज से पलायन की प्रवृत्ति भी समाज में रहकर जागती है । मेरा व्यक्ति भी समाज में विकसित हुआ है और मेरी अभिव्यक्ति भी समाज में विकसित हुई है ।"[1]

गीतकार के लिए आत्मानुभूति आवश्यक है । अनुभूति को स्थूल घटनाओं तक सीमित रखना ठीक नहीं । वह कल्पना में जो जीता, बरतता, रहता-सहता, संजोता वह भी अनुभूति का सूक्ष्म रूप है । उससे कवि को वंचित करके हम उसको उस कला से ही वंचित कर देंगे जिससे वह अपनी अनुभूतियों में औरों को साझीदार बनाता है । समय-समय की अनुभूति और कल्पना पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी और वह उसका क्या उपयोग करेगा यह कवि के जीवन की स्थिति और विकास पर निर्भर करेगा।[2]

---

1. रचनावली, 9, पृ० 181.
2. वही, 2 - 87.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तात्पर्य यह कि कविता में कवि का जीवन निहित तो होता है पर अलग से दिखाई नहीं पड़ता । पर्सनल होते हुए भी कविता को इम्पर्सनल होना पड़ता है । "कविता लिखने का मतलब ही यह होता है कि व्यक्तिगत जो बातें हैं उन्हें उसमें से हटाना, यानी वैयक्तिक भावनाओं को खूब छानना ताकि वे इतनी सूक्ष्म हो जायें कि मानव मात्र की बातें मालूम हों, बच्चन की बातें न मालूम हों । अगर कविता में मैं वे बातें लिखता जो व्यक्तिगत या पर्सनल हैं तो शायद मेरी कविता की इतनी ज्यादा अपील नहीं होती मेरे दुख-सुख-संघर्ष में आप क्यों इन्टरेस्ट लेते ? हज़ारों आदमियों के अपने दुःख सुख संघर्ष हैं और उन्हें शायद वे लिख भी सकते हैं पर उनके लिखने में और एक कवि के लिखने में अन्तर है । सबसे बड़ा अन्तर है कि जब साधारण आदमी अपना सुख दुख कहता है तो अपनी निजी बात कहता है, अपनी पर्सनल बात कहता है, लेकिन कवि जब कहता है तो अपने को मानवता का एक मीडियम बनाकर कहता है । इसलिये उसकी कविता दूसरे को अपील करती है । उदाहरण के लिए निशा निमंत्रण में मेरी बहुत सी निजी भावनायें हैं । उसके तो दस एडीशन हुए हैं । पाकेट बुक्स के एडीशन अलग हुए हैं । मेरा ख्याल है कि कम से कम एक लाख आदमियों ने निशा निमंत्रण को पढ़ा होगा, लेकिन लाख आदमी मेरी जैसी वेदना से गुजरे हों, इसकी मैं कल्पना नहीं कर सकता । इसीलिए एक लाख आदमियों ने उसे पढ़ा और उसके साथ अपने को आईडेण्टिफाई किया, क्योंकि वह मेरी पर्सनल बात होकर व्यक्त नहीं हुई थी इम्पर्सनल हो गई थी । इम्पर्सनल हुए बिना कविता हो ही नहीं सकती ।"

बच्चन ने आत्मकथा लिखी है, 4 खण्डों में । क्या भूलूं क्या याद करूं,

---

1. रचनावली, 9- पृ0 56.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नींव का निर्माण फिर, बसेरे से दूर तथा दशद्वार से सोपान तक इनमें नींव का निर्माण फिर तथा बसेरे से दूर कविता-संस्कारी है। कविता की व्याख्या बड़ा दुरूह कार्य है। कभी-कभी तो सृजन के क्षणों में लिखी हुई पंक्तियों का अर्थ वह भी ठीक से नहीं कर पता। बच्चन जी ने अपनी कविताओं की पृष्ठभूमि अपनी आत्मकथा में दी है और इससे बहुत सी भ्रान्तियों का निराकरण हुआ है। कवि की रचना को - गीत-रचना को समझने के लिए कवि के व्यक्तिगत जीवन की जानकारी उपयोगी होती है। कविता में बहुत से अर्थ कल्पना द्वारा थोपे जा सकते हैं - अतः कवि कविता की पृष्ठभूमि तो दे सकता है पर उसे उसकी इतनी व्याख्या नहीं करनी चाहिए कि पाठक और श्रोता उस परिधि से बाहर ही न जा सकें। बच्चन जी ने आत्मकथा तथा काव्य-कथा के सामंजस्य पर कहा है - "अपने लिखने की प्रक्रिया के बारे में एक बात आपको बता दूं। बहुत मरतबे अपने जीवनक्रम को समझने के लिए मैंने अपनी कविताओं का सहारा लिया। कविताओं को जब मैंने देखा तो पता चला कि कौन सी परिस्थितियां थीं जिन्होंने मुझ से ये कविताएं लिखवाईं। आत्मकथा को लिखते हुए मुझे जिन घटनाओं की याद आई, उन्हें मैंने जो विस्तार दिया है वह कविताओं से लिया है। अब मैं आपको एक उदाहरण दे दूं। जैसे मैंने "आइरिस" की बात कही कि शब्द की एक दीवार हमारे बीच खड़ी थी। जो हमारे पत्रों का आदान-प्रदान हुआ है - बहुत से पत्र लिखे थे - उससे ऐसा लगा कि उसमें शब्द ही शब्द थे, उनके भीतर हृदय था ही नहीं। इस तरह मैं अपनी कविताओं के सहारे एक्सट्रेक्ट से कंक्रीट की तरफ आता रहा कि मैं किन बातों को याद कर रहा हूं। जब कविताएं लिखीं थीं तब कौन सी कैजुअल और पर्सनल बातें थीं जिन्हें एलिमिनेट करके छानकर उन्हें बनाया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

था । यानी एक्सट्रेक्ट से कंक्रीट का हुये पता चला ।[1]

जीवन का पर्याय है कविता । जीवन जो सहज स्वाभाविक रूप में करता है, उसी को साहित्य परिष्कृत रूप में करता है ।[2] कवि ने आत्म-कथा लिखकर उन संस्कारों, स्थितियों , घटनाओं और क्रिया कलापों का ब्यौरा दे दिया है जिनसे होकर बच्चन का कविता काल व्यतीत हुआ । "किसी संस्कार से, किसी अनजाने प्रभाव से या किसी अन्त: प्रेरणा से जीवन को समझने और अपने व्यवहार, क्रियाकलाप को निर्देशित करने के लिए, यहां तक कि लेखन के लिए भी, जिसमें मेरे क्रियाकलाप का बहुत बड़ा अंश सन्निविष्ट हुआ है , मैं जीवन की सहज-स्वाभाविक प्रवृत्तियों की ओर ही मुड़ा हूं । मैंने अपना लेखक जीवन अपने यौवन में कवि के रूप में आरंभ किया था और उसका समापन मैंने अपनी वृद्धावस्था में यानी अपने जीवन के सात दशक पूरे करने पर आत्म कथा लेखक के रूप में किया । और आप अगर मेरा विश्वास करें तो मेरे लेखक जीवन का सबसे बड़ा संतोष यह है कि उस क्रम में मैं जीवन के स्वाभाविक मार्ग-प्रगति-विकास के प्राय: निकट रहा हूं । उससे छिटका हुआ नहीं हूं।[3]

"आत्मकथाकार इतना विश्वास तो लेकर चलता ही है कि उसके जीवन में लोग रुचि लेंगे, वह अपने को जीवन के किसी क्षेत्र में स्थापित करके ही अपना जीवन लिखना प्रारंभ करता है और यहां मैं कवि अथवा कलाकार को आत्मकथा लिखने का सबसे बड़ा अधिकारी मानता हूं । क्योंकि कविता अथवा कला कवि अथवा कलाकार के सम्पूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति होती है और अगर लोगों ने किसी कवि अथवा कलाकार की कृतियों में रुचि ली है तो वे उसके जीवन को

---

1. रचनावली- 9, पृ0 58.
2. वही, 6, पृ0 45.
3. वही, पृ0 450.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी जानना चाहते हैं और यह ज्ञान केवल कौतूहल शांत करने के लिए नहीं होता बल्कि उससे उसकी कविता अथवा कला पर न्यूनाधिक प्रकाश पड़ने की संभावना है । मैंने भी अपने को काव्यक्षेत्र में यत्किंचित स्थापित समझकर ही अपनी आत्मकथा लिखने की धृष्टता की । मेरी आत्मकथा के पहले खण्ड को पढ़कर स्वर्गीय जगदीश चन्द्र माथुर ने मुझे लिखा था कि बच्चन जी अब आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि मधुशाला जैसी रचना की पृष्ठभूमि में आपके जीवन की कैसी परिस्थितियाँ - प्रेरणाएं थीं । मेरी आत्म-कथा से निश्चय ही मेरी और रचनाओं पर प्रकाश पड़ता है ।"[1]

बच्चन ने अपनी आत्मकथा पूर्ण ईमानदारी के साथ लिखी है । उसमें अच्छा-बुरा सब कुछ साफ-साफ है । अंग्रेजी की कहावत " द पेन विट्रेज" उस पर सही लागू होती है । बच्चन की जीवन घटनाएं, भाव, विचार, चिंतन, मनन, स्वाध्याय, दर्शन सभी कुछ उसमें है । जीवन की सजीवता और सर्जना की अनिवार्यता उसमें साथ-साथ चले हैं । बच्चन के सृजन का रहस्य इसी में है । बेंजामिन फ्रेंकलिन का यह कथन कि इफ यू डू नोट बी फारगाटन ऐज़ सून ऐज़ यू आर डेड, इदर राइट समथिंग वर्थ रीडिंग आर डू समथिंग वर्थ राइटिंग - अर्थात् अगर आप चाहते हैं कि मरणोपरांत आपको दुनिया जल्दी न भुला दे तो कुछ ऐसा लिखें जो पढ़ने योग्य हो या कुछ ऐसा करें जो लिखने योग्य हो - बच्चन के जीवन पर खरा उतरा है, उन्होंने पढ़ने योग्य लिखा है और उनके जीवन में बहुत कुछ ऐसा घटित हुआ है जो लिखने योग्य है । टुकड़ा रूप में नये पुराने झरोखे में संकलित "मेरा रचना काल" तथा "मेरी कविता के सोपान" ऐसे निबन्ध हैं जो बच्चन के जीवन काल, समकालीन परिवेश तथा कविता-प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं । उनका सार यही है कि मैं अपनी कविता की मूलधारा आन्तरिक चेतना की गहराइयों में बहता देखता हूं पर वह धार के दोनों तटों पर भी कभी-कभी

---

1. बच्चन रचनावली 6, पृ० 453.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कैसे जाती है ।[1] " मैं अपनी बहुत सी रचनाओं के पीछे यह देखने का प्रयत्न करता हूं तो मुझे लगता है कि उनका जन्म मेरे अनुभवों से हुआ है । जिन अनुभवों को मैंने किसी दिन अनोखा, अद्भुत, एकमात्र मेरा समझा था, अब मैं समझता हूं कि उनमें कुछ भी ऐसा नहीं था, लेकिन उनकी प्रतिक्रिया अवश्य ही मेरे भावप्रवण मन में तीव्र, तीखी, बेचैन करने वाली रही होगी ।"[2] अस्तु, यहाँ बच्चन की आत्मकथा के परिप्रेक्ष्य में उनकी रचनाओं की पृष्ठभूमि स्पष्ट करने का प्रयत्न करेंगे जिससे यह समझा जा सके कि बच्चन की कविता जीवन से कटी हुई नहीं रही । उनकी कल्पना भी अनुभूति प्रवण रही तथा अनुभवों की प्रतिक्रिया तथा कल्पना की प्रतिक्रिया दोनों ने ही कवि को कहने के लिए बाध्य कर दिया । जहाँ तक बच्चन की काव्य-प्रेरणा का प्रश्न है, उनका कथन है कि मुझे दुर्भाग्यवश ऐसी परिस्थितियाँ सदा नहीं मिलीं । मैं शत प्रतिशत कवि नहीं रह सका । मुझे अपने और अपने ऊपर निर्भर रहने वालों के लिए जीविका के साधन जुटाने को प्राय: सदा ही कुछ ऐसा काम करना पड़ा है जो सृजन की पूरी स्वतंत्रता नहीं देता । मुझे क्लास में पढ़ाते हुए भी प्रेरणा हुई है, कचहरियों के इजलास पर भी, परेड के मैदान में भी, सरकारी दफ्तरों की फाइलों के बीच भी और सदा मैंने उन्हें संजोकर किसी सुविधाजनक समय पर उनका उपयोग करने का प्रयत्न किया है । कुछ प्रेरणाएँ छिपकामी बिल्लियों के समान भी थीं, वे मेरी मस्तिष्क की क्षीण तीलियों को तोड़कर निकल भी गयी हैं और मैं उन्हें फिर पकड़ नहीं पाया ।[3] तात्पर्य यह कि सृजन में अपना ही नहीं, जन-मानस, सुप्त-मानस तथा परम्परागत मानस एक साथ काम करते हैं । कवि इन सबको एक साथ जगाता है, एक उद्देश्य पर उन्मुख करता है तथा एक परिपूर्ण कृति में बदल देता है ।

---

1. बच्चन रचनावली- 6, पृ० 215.
2. वही, पृ० 220.
3. वहीं, 6, पृ० 221.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

डा० बच्चन के व्यक्तित्व को समझने के लिये यह आवश्यक है कि हम उनकी समस्त कृतियों का अध्ययन करें । बच्चन ने "हलाहल" की भूमिका में कहा है - "कवि का सच्चा परिचय उसकी कृति है और कृति का सच्चा परिचय वह अपने आप है ।"[1] अलेक्सान्द्र निकोलायेविच वेंकोविच ने "बच्चन : एक व्याख्या" में लिखा है - " बच्चन हिन्दी के उन पहले कवियों में से थे, जो इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि साहित्यकार का वास्तविक अस्तित्व ही अपने विविध रूपों और सम्बन्धों सहित कलाकृतियों का कारण और आधार होता है ।"[2] कविता किस प्रकार जन्म लेती है इस पर गेटे का मन्तव्य था - "दुनिया इतनी बड़ी और वैभवशाली है, और जीवन इतना विविधतापूर्ण कि कविताओं को कारणों की कमी कभी नहीं पड़ेगी । लेकिन सभी कविताओं के कारण अवश्य होने चाहिये । इसका अभिप्राय यह हुआ कि यथार्थ ही कृतियों के लिये सामग्री और कारण है । कोई एक विशिष्ट घटना सामान्य अर्थ ग्रहण करती है । यह काव्यात्मक तभी हो सकती है, जब कवि उसे अपने सृजन का विषय बनाता है ।"

यों तो "बच्चन" जी ने छठी क्लास में दाखिला लेने से पूर्व ही अपनी कविताएँ लिखनी आरम्भ कर दीं थी लेकिन काव्य प्रतिभा को निखार विद्यालय में प्रवेश लेने के बाद ही मिला । विद्यालय में एक साहित्य सभा थी जिसमें आधुनिक हिन्दी साहित्य तथा पाश्चात्य साहित्य पर प्राय: चर्चाएँ हुआ करती थीं । अन्य सहपाठी भी साहित्यिक अभिरुचि के थे । कवि की धारणा है कि बारह वर्ष से अट्ठारह वर्ष तक की आयु का समय किसी भी व्यक्ति के जीवन में बड़े महत्व का होता है, उसके निर्माण का होता है, इन्हें केवल निर्माण का समय मानकर सन्तुष्ट नहीं होना चाहिये।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 373.
2. अलेक्सान्द्र निकोलायेविच वेंकोविच - बच्चन : एक व्याख्या, पृ० 15.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ये वे वर्ष हैं जो मनुष्य को एक संस्था, एक इयत्ता, एक इकाई, एक व्यक्तित्व प्रदान करने में सहायक होते हैं ।

गांधी, नेहरू, टैगोर जैसे देश के महान नेताओं ने देश में फैली हुई छुआछूत को मिटाने का बीड़ा उठाया था । बच्चन जी के मन पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा । जहां अनेक जातियां और उपजातियां होती हैं वहां संकुचता और वैर-विरोध स्वत: ही उत्पन्न हो जाता है। वहां लोग अपने गुणों को तो उभारते हैं और दूसरे में अवगुण ढूंढते हैं ।

गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ होने वाले भेदभाव के विरुद्ध सत्याग्रह किया । वहां पर ही "हिन्द स्वराज" की अवधारणा ने जन्म लिया । इस अवधारणा के मूल में आधुनिक औद्योगिक सभ्यता का निषेध था । यान्त्रिक सभ्यता एक महान पाप का मूर्त रूप है । भारतीय किसानों के हितों की रक्षा करने में ही हित निहित है तथा सामाजिक आदर्श की प्राप्ति के लिये हस्तशिल्प को पुनर्जीवित करने पर जोर दिया। हर देश भक्त को चरखा कातना और खद्दर पहनना चाहिये । अपनी सादगी, सौम्यता, सत्याग्रह की नैतिकता और अन्याय के प्रति दृढ़ता से डटे रहने की क्षमता से गांधी जी जन सामान्य के बीच लोकप्रिय हो गये ।

लोकमान्य तिलक की अन्त्येष्टि का करुण प्रयाण आया । बच्चन यद्यपि तेरह वर्ष की आयु के ही थे परन्तु उनमें देश के महान नेताओं के प्रति अगाध प्रेम था, इसी प्रेम की भावना से उन्होंने भी अश्रु कलश को बंधा दिया । 1919 में जलियांन वाले बाग में हुए हत्याकाण्ड के दुष्ट समाचार ने पूरे देश में हलचल मचा दी । बच्चन के जीवन पर तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन की घटनाओं का बहुत प्रभाव पड़ा । बच्चन जी लिखते हैं, "गांधी जी नपी-तुली भाषा में बात करते हैं । न स्वर में कोई उतार-चढ़ाव है, न शैली में कहीं शृंगार-अलंकार, न सिर झटकते हैं,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न हाथ फैंकते हैं, पर एक-एक शब्द में हत्याती दृढ़ता है — जैसे कोई लोहे की कलम से पत्थर पर लिख रहा हो । वे अपने अहिंसात्मक असहयोग की व्याख्या करते हैं; स्कूल-कालेज, कचहरी-अदालत, सरकारी नौकरी, विधान सभाओं और सरकारी किताबों का बहिष्कार करने को कहते हैं । चर्खा चलाने, खादी पहनने और हिन्दू मुस्लिम एकता बनाये रखने की अपील करते हैं । अन्त में वादा करते हैं कि जनता उनके बताये कार्यक्रम पर अमल करे तो वह एक साल में स्वराज्य प्राप्त करा सकते हैं ।.....बार में खबर फैलती है कि आज नेहरू-परिवार आन्दोलन में कूदा, कल टण्डन परिवार, परसों फलाने, नरसों ढिमाके ।"[1]

बच्चन का परिवार साहित्यिक अभिरुचि का परिवार था । उर्दू, फारसी, अंग्रेजी तथा मध्य युगीन हिन्दी साहित्य से उन्हें विशेष प्रेम था बच्चन पर भी कबीर, मीरा, तुलसी और मध्यकालीन कवियों की रचनाओं का प्रभाव पड़ा । उन्होंने अनुभव किया कि मीराबाई का जीवन भी अनेक भारतीय नारियों की त्रासद जैसा ही था । कवि के मन पर इन सबका बहुत प्रभाव पड़ा ।

बच्चन के स्कूल में कोई ऐसा मित्र नहीं था जिससे वह अपने विचारों का आदान प्रदान कर सकें । उस समय उनकी अपने पड़ोस में रहने वाले एक ब्राह्मण पुत्र कर्नल से मित्रता थी । उसकी पत्नी की ओर भी बच्चन जी का झुकाव था । दुर्भाग्यवश कर्नल की अचानक मृत्यु हो गई और श्यामा के वैवाहिक जीवन का अन्त हो गया । यद्यपि बच्चन जी भलीभाँति जानते थे कि इस प्रेम का परिणाम अच्छा नहीं होगा परन्तु फिर भी उनका अधिकांश समय श्यामा के साथ ही व्यतीत होता था । हुआ भी वही, तीर्थयात्रा के बाद श्यामा को पहचानना भी कठिन हो गया ।

---

1. क्या भूलूं क्या याद करूं , पृ० 186, 18 - संस्करण आठवाँ, 1982.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बच्चन जी ने अपनी आत्मकथा " क्या भूलूं क्या याद करूं" में परीक्षा में असफल हो जाने पर लिखा है कि श्यामा ने कहा — "दोकी मैं हूं पर प्रायश्चित भी कर आई हूं। आज स्कूल खुल रहा है स्कूल जाओ। खूब पढ़ना। मैं सब कुण्ड-नदियों में तुम्हारे नाम से डुबकी लगा आई हूं। सब देव मन्दिर देहरियों पर तुम्हारे नाम से सिरदा पड़ आई हूं। तुम बहुत दिन जीओगे, बहुत कुछ करोगे, देखने को मैं न रहूंगी। मेरा समय आ गया है। आज सन्ध्या को मैं अपने पिता के यहां जा रही हूं। यहां लौटकर शायद ही आऊं।"[1]

1926 में बच्चन जी की शादी श्यामा देवी के साथ हो गई। वह शादी के चन्द दिनों बाद ही अस्वस्थ हो गईं। वह ज्वर ऐसा चढ़ा जो कई माह तक न उतरा। और अन्त में आन्त्र-क्षय का रूप लेकर उसकी मृत्यु का कारण बना। कितनी बड़ी विडम्बना थी, कवि के जीवन के साथ यह कैसा न्याय था भगवान का ? यह पंक्तियां बच्चन जी के अन्तर्द्वन्द को व्यक्त करती हैं — "स्वस्थ पति-पत्नी के बीच शारीरिक सम्बन्ध स्वाभाविक, आवश्यक और अनिवार्य है। पर श्यामा के शरीर की जैसी स्थिति थी उसमें शरीर को दीवार मानकर प्राण प्राणों के मिलने पर ही प्राय: सन्तोष करना था।"[2]

"प्रारम्भिक रचनायें" —

बच्चन जी की प्रारम्भिक रचनायें "रजाम", "गीत विहग", "मातृ मन्दिर", "पांचजन्य", "धार के इधर-उधर" आदि हैं।[3]

---

1. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ0 222 आठवां संस्करण फरवरी, 1982.
2. वही, पृ0 261.
3. बच्चन व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ0 36.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"बच्चन की प्रारम्भिक रचनाओं में मनुष्य का आन्तरिक जीवन, उसकी अनुभूतियाँ पारम्परिक छायावादी प्रतीकों और बिम्बों में व्यक्त हुई। यों कहीं कहीं पर कवि की मौलिक प्रतिभा भी दिखाई देती है। बच्चन लगातार अपनी कविता का स्वर तलाश कर रहे थे। वे छायावादी बिम्बात्मकता को नया अर्थ देने का प्रयास कर रहे थे।"[1]

प्रारम्भिक कृतियों में कवि की योनभावना मुखर प्रकट हुई है। अपनी पुरानी रूढ़ियों जड़ताओं और प्रतिबिम्बों को स्पष्ट भाषा में ललकारते हुए कवि ने अपनी रचनाओं में विश्व के प्रति गोरोचियाई आशावादी दृष्टिकोण एवं जिसमें मानव का सुन्दर-स्वच्छ और समन्वय पूर्ण जीवन दिखाई देता है। कवि ने अपनी अनुभूतियों को स्वभाविक ढंग से व्यक्त किया। "तेरा हार" जो कवि का सबसे प्रथम काव्य संग्रह था उसकी पत्र पत्रिकाओं में भूरि-भूरि प्रशंसा हुई जिससे बच्चन जी के कवि को प्रोत्साहन मिला।

कवि की "प्रारम्भिक रचनाओं" की प्रथम 28 कवितायें "तेरा हार" काव्य संकलन से संकलित की गई हैं। 1932 में "तेरा हार" के नाम से प्रकाशित हुई थीं परन्तु अब "प्रारम्भिक रचनायें - भाग 1" और "प्रारम्भिक रचनायें - भाग दो" हैं। काव्य संकलन "तेरा हार" की सबसे पहली कविता का शीर्षक "सम्बोधन" है। उस संग्रह के सम्बोधन, समर्पण और विदा को इस रचना में दिखाया गया है। कवि के मन की सुन्दर भावना इन पंक्तियों में व्यक्त हुई :-

"बुलाऊं क्यों मैं तुम्हें पुकार,
जान ले क्यों सारा संसार,
तुम्हें इन कलियों का मधुवास
खींच लायेगा मेरे पास।

---

1. अलेक्सान्द्र निकोलायेविच तिवेचिव : बच्चन : एक व्याख्या.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रहें हम-तुम जग केवल साथ
पिन्हा दूं हार तुम्हें सुखराग,
न पाये हम दोनों का प्यार
कभी शंकालु विश्व में व्याप ।
तुम्हारी ग्रीवा में सुकुमार,
सुशोभित हो यह मेरा हार,
खिले कलियों-सा मन सुकुमार
हमारा तुम्हें निहार-निहार ।"[1]

यद्यपि "प्रारम्भिक रचनायें" कवि की काव्य जगत में प्रवेश की रचनायें हैं परन्तु कवि की कल्पना-शक्ति तथा जीवन की वास्तविकता सजीव रूप में अभिव्यक्त हुई है । "गांधी के विलायत-प्रस्थान पर भारत माता की चिंता" शीर्षक कविता "प्रारम्भिक रचनायें - भाग 2" में प्रथम कविता है । इस लम्बी कविता में बापू के प्रति श्रद्धा तथा भारत भूमि की उनके प्रति ममता की भावना प्रकट हुई है –

"सुना है अब से मेरा लाल विलायत जाने को तैयार,
सिहुरता जाता है हृदयागार, उमड़ी आती है जल-धार ।
× × × × × × × ×
लाल लौटे फिर मेरी गोद विजय का लिये खिलौना साथ
सफलता से प्रसन्न मुख देख उसे, दूं आशिष सिर धर हाथ ।"[2]

"प्रारम्भिक रचनाओं" में कवि के मन के उद्गार व्यक्त हुए हैं ।

---

1. बच्चन रचनावली - भाग 3, पृ० 457.
2. वही, पृ० 513, 518.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यद्यपि 1930 की यूनिवर्सिटी प्रतियोगिता में बच्चन जी की कहानी को प्रथम पुरस्कार मिला, कुछ कहानियां भी लिखीं, परन्तु कवि की रुचि अधिक काव्य सृजन में थी । "काव्य-सृजन में ही मेरा मन कुछ शान्ति, कुछ मुक्ति पाता है जो अन्यथा उद्विग्न, उद्भ्रांत अथवा अशान्त रहता है । शायद अब भी मन: शक्तियों का पूर्ण केन्द्रीकरण, तन्मयता, तल्लीनता, परिपूर्ण आत्म-विस्मरण में काव्य-सृजन के ही क्षणों में जानता हूं – जिसे अब मैं समाधि कहने लगा हूं । जब मैं अपनी अनुभूतियों में जीता हूं – कला के माध्यम से अनुभूतियों को जीना शायद जीने से अधिक घनत्व से, तीव्रता से, गहराई से जीना है – तब मैं सारे संसार के लिये मर जाता हूं और मैं चाहता हूं कि कोई कुछ भी ऐसा न करे जिससे मैं संसार में जीने के प्रति सचेत हो जाऊं, जब तक कि मेरी ही "समाधि" न टूटे ।[1] कवि को कहानीकार की अपेक्षा काव्य सृजक के रूप में अधिक ख्याति प्राप्त हुई ।

अतत: मैं बच्चन जिस युग में पैदा हुए थे वह जर्जरग्राय और अंध-विश्वासों से ग्रस्त सामाजिकता का युग था । उस युग में अतृप्ति की बात करना बहुत बड़ा गुनाह समझा जाता था । प्रत्येक युग का काव्य अतृप्ति को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्त करता है ।बच्चन ने अतृप्ति के बोध को दार्शनिकता का जामा नहीं पहनाया और न ही उन्होंने दार्शनिकों की सी भाषा को ही अपनाया । यही कारण है कि बच्चन के काव्य ने जन मानस को अधिक प्रभावित किया । आज भी उनके गीत युवा पीढ़ी को प्रिय हैं । डा० नगेन्द्र लिखते हैं – "बच्चन के प्रारम्भिक काव्य में पाठक का पहली बार समाज-विरोध की अभिव्यक्ति से परिचय हुआ । यह सच है कि यह विरोध मधुशाला की अन्योक्तिपूर्ण विषय-वस्तु के माध्यम से प्रेषित हुआ ।" बच्चन के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है

---

1. डा० बच्चन , क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० 266, आठवां संस्करण फरवरी 1982.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कि उन्होंने अपने मन की अनुभूतियों को काव्य में स्थानान्तरित करने का प्रयत्न किया है । काम मनुष्य के जीवन की सहज प्रवृत्ति और प्रेम इसी का परिष्कृत रूप है । प्रेमपरक रचनायें वास्तव में घोनघुण्ठा से अभिव्यक्ति का साधन बनीं । प्रेम के गीत कवि ने यौवनावस्था में लिखे । धीरे-धीरे प्रेम के स्वरूप में परिवर्तन होता गया और मानसीय संवेदनाओं को भी स्थान मिलता गया ।

बच्चन का प्रवेश हिन्दी काव्य में "उमर खैयाम" की "मधुशाला" से हुआ । "उमर खैयाम" के विषय में बच्चन अपने बचपन से ही सुनते आ रहे थे । इनकी कविताओं के एडवर्ड फिट्जेराल्ड द्वारा किये गये अनुवाद 1925 में पढ़े । इन अनुवादों ने हिन्दी साहित्यकारों का मन उर्दू-काव्य की ओर आकर्षित किया । बच्चन, नवीन, अंचल, भगवती चरण वर्मा आदि कवियों के काव्य में साकी, मयखाना, हाला, प्याला और सुरा विषयक बिम्ब आने लगे । "उमर खैयाम" का भोगवादी जीवन दर्शन था। कल किसने देखा है अतः वर्तमान का ही भर कर भोग करना चाहिये । यह क्षणिक सुखवाद का सिद्धान्त था । बच्चन के किशोर हृदय पर खैयाम की भोगवादी तथा सुखवादी भावनाओं का विशेष प्रभाव पड़ा । मधुबाला, मधुशाला, मधु कलश आदि रचनाओं में इनका प्रभाव देखा जा सकता है। श्री सुमित्रानन्दन पंत ने "उमर खैयाम" की मधुशाला" तथा बच्चन की "मधुशाला" का वर्गीकरण इस प्रकार किया है – "उमर की मदिरा – जीवन स्मृतियों की मदिरा है और बच्चन की जीवन स्वप्नों की – एक में अतीत का मधुलिप्त मोह है, दूसरे में भविष्य की सुनहरी आशा सम्भावना ।"[1]

---

1. अभिनव सोपान । 1964 । भूमिका, पृ0 21.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समसामयिक परिस्थितियों का कवि के मन पर इतना गहरा प्रभाव था कि "रुबाइत उमर खैयाम" का उन्होंने अनुवाद कर डाला । उन्हें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिये उपयुक्त प्रतीक भी मिल गये । उनके काव्य संकलन "आरती और अंगारे" की यह पंक्तियां इस बात की पुष्टि करती हैं —

"तुम्हारी मदिरा से अभिषिक्त
हुए थे जिस दिन मेरे प्राण
उसी दिन मेरे सुख की बात
हुई थी अन्तर तम की तान—"[1]

बच्चन ने स्वयं फिट्जेराल्ड के अनुवाद के विषय में अपनी धारणा लिखी है —

"खैयाम की कविता के प्रति जो मेरी प्रतिक्रिया थी, वह एक समय मुझे निजी मालूम हुई थी । पर इन प्रकाशनों की तिथियों पर गौर करने से पता लगेगा कि जैसा देशकाल में कुछ ऐसा वातावरण था कि दूर दूर बैठे हुए लोगों ने भी लगभग एक ही समय में खैयाम को हिन्दी में उपस्थित करने की बात सोची । जिस तरह मैंने अभी कहा है कि व्यक्ति के जीवन में एक समय ऐसा आता है जब वह "उमर खैयाम" की विचारधारा की ओर स्वयं खिंच जाता है । क्या इसी तरह देश के जीवन में ऐसा समय आता है जब वह इस प्रकार की कविता सुनने को आतुर आकुल हो उठता है ।[2] "उमर खैयाम" की रचना ने बच्चन को पूरी तरह संतुष्ट किया । बच्चन लिखते हैं, "एडवर्ड फिट्जेराल्ड ने उन्नीसवीं सदी के मध्य में अपने अंग्रेजी तर्जुमे के अन्दर "उमर खैयाम" का जो खाका खींचा है उसके बारे में बिना किसी संकोच या सन्देह के मैं कह सकता हूं कि वह किसी सुखवादी आनन्दी

---

1. द्रष्टव्य - बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 152.
2. बच्चन रचनावली भाग 4, पृ० 26.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीव अथवा किसी हिडोनिस्ट या एपीक्यूर का नहीं है। इन रुबाइयों का लिखने वाला वह व्यक्ति है जिसने मनुष्य की आकांक्षाओं को संसार की सीमा के अन्दर घुटते देखा है, जिसने मनुष्य की प्रत्याशाओं को संसार की प्राप्तियों पर सिर धुनते देखा है। जिसने मनुष्य के सुकुमार स्वप्नों को संसार के कठोर सत्यों से टक्कर खाकर चूर चूर होते देखा है इन रुबाइयों के अन्दर एक उद्विग्न और आर्त आत्मा की पुकार है। एक विषण्ण और विपन्न मन का रोदन है, एक दलित और भग्न-हृदय का केन्द्र है। संक्षेप में कहना चाहें तो कहेंगे कि रुबाइयत मनुष्य की जीवन के प्रति आसक्ति और जीवन की मनुष्य के प्रतिउपेक्षा का गीत है।[1] रोमान्टिक कवियों पर खैयाम के काव्य दर्शन का व्यापक प्रभाव पड़ा।

"खैयाम" मधु को जीवन के सुखवादी दृष्टिकोण का प्रतीक मानकर चले हैं। उनके विचार में क्षणिक सुख भी स्वर्ग प्राप्ति से बढ़कर है। जीवन की क्षणभंगुरता का ही दृष्टिकोण है। बच्चन जी की भी यही धारणा है - "सुख की एक साँस पर होता है अमरत्व निछावर"। बच्चन जी के काव्य में हाला, प्याला, साकीबाला और मधुशाला जीवन के प्रतीक बनकर उतरे हैं। प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी आदि बच्चन के समकालीन कवियों के काव्य में भी मधु की अभिव्यंजना होती रही है।

जीवन के प्रति निराशा का भाव मधुशाला में इन पंक्तियों में व्यक्त होता है -

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 22.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"छोटे से जीवन में कितना
प्यार करूं, पीलूं हाला,
आने के ही साथ जगत में
कहलाया "जाने वाला",
स्वागत के ही साथ विदा की
होती देखी तैयारी,
बन्द लगी होने खुलते ही
मेरी जीवन मधुशाला ।"[1]

— (मधुशाला)

निराशा के अतिरिक्त, सौन्दर्याकर्षण तथा क्षणभंगुरता और परिवर्तनशीलता का भी अद्भुत वर्णन है । प्रेम का रंग कितनी जल्दी बदलने लगता है —

"कितनी जल्दी रंग बदलती है, अपना चंचल हाला,
कितनी जल्दी घिसने लगता, हाथों में आकर प्याला,
कितनी जल्दी साकी का आकर्षण घटने लगता है,
प्रात नहीं थी वैसी जैसी रात लगी थी मधुशाला ।[2]

-- (मधुशाला)

हृदय की एक समान अनुभूति का चित्र प्रस्तुत है —

"मुसलमान और हिन्दू है दो,
एक मगर, उनका प्याला

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, मधुशाला, पृ० 54.
2. वही, पृ० 61.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक मगर, उनका मदिरालय
एक मगर, उनकी हाला ।" [1]

गांधी जी से किसी ने शिकायत की कि आप जिस सम्मेलन के सभापति हैं, वहाँ पर मदिरा का गुण-गान कैसे सम्भव है ? इसपर गांधी जी ने बच्चन को बुलाकर शिकायत की बात की तथा कुछ पद सुनने चाहे । बच्चन जी ने हिन्दू मुस्लिम एकता पर चन्द रुबाइयाँ सुनाईं –

"मदिरालय जाने को घर से चलता है पीनेवाला,
किस पथ से जाऊँ, असमंजस में है वह भोलाभाला,
अलग-अलग पथ बतलाते सब, पर मैं यह बतलाता हूं,
राह पकड़ तू एक चला चल पा जायेगा मधुशाला ।[2]

मधुशाला और मधुबाला कवि के जीवन की निजी अनुभूतिपरक रचनायें हैं । कवि के शब्दों में देखिये - "मेरी कविता मेरी अनुभूतियों से सींची उठी हुई चीज थी । और जब उसे प्रकाश में लाया गया तो मुझे इसकी आशा बिल्कुल न थी कि वह औरों को भी अपनी अनुभूति प्रतीत होगी । कोई सिद्धान्त बनाकर कोई बाद विशेष चलाने के विचार से, कोई दर्शन प्रतिपादित करने के ध्येय से, कोई ग्लानि लाने का लक्ष्य करके, अथवा स्थापित और प्रचलित काव्य-विधा-ढांचावाद- के विरुद्ध विद्रोह का कोई झंडा खड़ा करने के लिये यह कविता नहीं आई थी । पर जब वह आई तो यह सब उसमें देखा गया, और समय के साथ अधिकाधिक उसमें देखा जाने लगा है । अगर मेरी कविता में यह सब था तो वह मेरे जीवन में आ चुका था — कोई सिद्धान्त बना था तो जीवन में, किसी बाद का आभास हुआ

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, मधुशाला, पृ0 52.
2. वही, पृ0 45.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

था तो जीवन में, कोई क्रान्ति की गई थी तो जीवन में, और अगर अभिव्यक्ति की किसी नई विधा ने जन्म लिया था तो जीवन में कुछ ऐसा परिवर्तन आ चुका था कि वह पुरानी विधा में व्यक्त नहीं हो सकता था। मेरी कविता को हालावादी नाम उसके प्रकट होते ही दिया गया। उसके पीछे सिर्फ मुझे एक बात स्पष्ट दिखती है कि उसे छायावाद से भिन्न समझा गया। मूलत: छायावाद यदि साहित्यिक विधा थी या बना दी गई या घोषित कर दी गई थी तो मेरी कविता जीवन वाद की, जिए-भोगे जीवन की सीधी अभिव्यक्ति और जीने भोगने में आए परिवर्तन के अनुरूप परिवर्तित। यही सीमा में उसकी नवीनता थी। नवीनता का स्वागत भी होता है, विरोध भी होता है। मैंने अपने मित्र को — शायद गिरिजा कुमार माथुर को — कभी लिखा था कि छायावाद के किले पर पहला गोला मधुशाला के आँगन से फेंका गया था, उसे किले पर फेंकने के लक्ष्य से नहीं, बल्कि, यदि उसी रूपक को आगे ले चलें तो मधुशाला के निवासी मधुपायियों की गोला फेंकने की आन्तरिक, अनिवार्य क्रीड़ा-प्रवृत्ति से। इसलिये उससे क्रान्ति हो गई, मगर मैंने क्रान्ति की घोषणा किये। न मैंने कभी कहा, न मुझे कभी कहने की आवश्यकता हुई कि मैं छायावाद का विरोध करने के लिये खड़ा हुआ हूं। कला और सृजन के विरोध को विरोध घोषित करने की जरूरत नहीं होती, क्योंकि कला की एकमात्र दुनिया ऐसी है कि यहाँ बिना संहार किये निर्माण करना संभव है। यहाँ का संहार ही, वास्तव में सशक्त सृजन है। नया सृजन अपने आप ही जीर्ण-शीर्ण, काल बाह्य पुरातन की अनुपयोगिता, अनावश्यकता सिद्ध करता आता है। और यह सब तो मैं आज कह रहा हूं; आज से ३५-३६ वर्ष पूर्व मैं एक मात्र अपने उर के उद्गारों को प्रस्तुत करने की विवशता से आगे आया था और मुझे इसकी तृण मात्र परवाह या चिन्ता नहीं थी कि उसके प्रति लोगों की प्रतिक्रिया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्यों होगी, अथवा उसके परिणाम क्या होंगे ।"[1]

जिस युग में बच्चन का जन्म हुआ था उस युग का समाज नाना प्रकार के पाखण्डों और आडम्बरों से भरा हुआ था । यह अंधविश्वासों से ग्रस्त सामाजिकता का युग था । तब अतृप्ति की बात करना भी गुनाह समझा जाता था । बच्चन के प्रारम्भिक काव्य ने रूढ़िग्रस्त समाज को झकझोर दिया । निजी मन के भावों की अभिव्यक्ति में कवि ने समाज की परवाह नहीं की । समाज सुधार की चेतना ने कवि के सम्मुख समाज का घिनौना दृश्य उपस्थित किया लेकिन समाज का प्रतिरोध कवि को उसके मार्ग से विचलित नहीं कर सका ।

मधुबाला की कविताओं में भी भोगवाद की ही अभिव्यंजना हुई है । "मिट्टी का तन, मस्ती का मन, क्षणभर जीवन मेरा परिचय" अथवा –

"इस पार प्रिये तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा"
प्याला है पर पी पायेंगे, है ज्ञात नहीं इतना हमको,
इस पार नियति ने भेजा है, असमर्थ बना कितना हमको ।
अब तो हम अपने जीवन भर, उस दूर कठिन को कोस चुके,
उस पार नियति का मानव है, व्यवहार न जाने क्या होगा।[2]
--। इस पार-उस पार ।

"कवि की कामना" में कवि की प्रेम-परक छटपटाहट देखी जा सकती है – कवि की तीव्र अनुभूति ही शब्दों द्वारा मुखरित हुई । कवि के संयम का विस्फोट कवि के काव्य के रूप में हुआ । देखिये इन पंक्तियों में–

---

1. डा० बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूं, 311-312 आठवां संस्करण, 1982.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 106.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"वासना जब तीव्रतम थी
बन गया था तपस्वी मैं,
है रही मेरी क्षुधा ही
सर्वदा आहार मेरा ।"

--कवि की वासना

अथवा—

कल छिड़ी, होगी सत्य कल प्रेम की मेरी कहानी,
कौन हूं मैं, जो रहेगी विश्व में मेरी निशानी ?
क्या किया मैंने नहीं जो कर चुका संसार अब तक ?
मुझ जन को क्यों अखरती है अधिक मेरी जवानी
मैं छिपाना जानता तो जग मुझे साधू समझता,
शत्रु मेरा बन गया है छल रहित व्यवहार मेरा ।
कह रहा जग वासनामय हो रहा उद्गार मेरा ।"[1]

--कवि की वासना ।

प्रकाशो तथा श्री कृष्ण के बढ़ते हुए सम्बन्धों में बच्चन रुचि भी रखते थे और ईर्ष्या भी करते थे । बच्चन ने उनके सम्बन्धों को स्पष्ट करते हुए — "क्या भूलूं क्या याद करूं" में लिखा है — "इस बार तीन चार दिन श्री कृष्ण और रानी को प्रायः साथ देखने और उनके साथ रहने का अवसर मिला । मेरी आँखें यह देखने में न चूकीं कि अब वे पहले से अधिक एक दूसरे के निकट आ गये थे और इसी अनुपात में घर वालों का विरोध उनके प्रति बढ़ गया था ।"[2] कुछ समय के बाद प्रकाशो बच्चन जी की देख रेख में उनके घर रही । प्रकाशो के आने के बाद काफी

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 129.
2. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० 284.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समय तक उनके भीतर प्रेम और कर्तव्य की भावना के बीच संघर्ष होता रहा। कवि को वह अपनी कृति "मधुशाला" के अनुरूप लगती थी । और अब बच्चन की नयी रचना "मधुबाला" में उसने मधुशाला का स्थान ग्रहण कर लिया था । प्रकाशकों के आग्रह पर बच्चन उसको कभी कभी घुमाने ले जाते थे । मुहल्ले के स्त्री पुरुष उनके लिये तरह तरह की फब्तियाँ कसते और कानाफूसी करते थे ।

कवि हृदय बहुत संवेदनशील होता है । संसार के प्रति कवि की विरोध की भावना "मधुशाला" में प्रकट हुई –

"क्या कहती ? दुनिया को देखो,
दुनिया देती ताना मुझको,
है कहती फिरती गली गली
"अंदिरा पीने की लत मुझको"
दुनिया तो मुझ से है रूठी
है तुली हुई बद कहने पर.... "।

"मधुशाला" के अधिकांश गीत इन्हीं दिनों लिखे गये थे । कविता के भाव साकी से सम्बद्ध हैं । परन्तु जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, वह आत्मीयता और रागिनी मायावी लगने लगी । श्री कृष्ण और प्रकाशो बच्चन के जीवन से दूर चले गये । बच्चन पुनः एकाकी रह गये ।
"मधुबाला", "मधुकलश" तथा "हलाहल" की अधिकांश पंक्तियों में कवि के हृदय के विषाद तथा शोक के भाव परिलक्षित होते हैं । बच्चन अपनी आत्मकथा "क्या भूलूं क्या याद करूं" में लिखते हैं –

"मधुशाला से मेरे चेतन, अवचेतन, अति चेतन, संस्कार अनुभूति में संचित स्मृति कल्पना, भय-आशा-निराशा, वेदना, हर्ष, विमर्ष, संघर्ष,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, मधुशाला, पृ० 101.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्मोह-व्यामोह-विद्रोह-सबका बड़ा रक्षण हुआ -कैथारसिस-परगेशन-रेचन । वह है भी पुरानी त्रासदी के समान अपनी स्पिरिट में । फिर प्याला,हाला, मधुकलश, सुराही, मधुशाला, साकिक, मधुशाला आगे आते हैं और पुरानी त्रासदी में "कोरस" की तरह अपना-अपना परिचय देते हैं । "मधुशाला" के बाद मैंने "मधुबाला" के गीत लिखने शुरू किये जैसे -- अभी पूरा रक्षण नहीं हुआ था । वास्तव में वह पूर्ण "मधुकलश" के साथ हुआ । "मधुशाला", "मधुबाला", "मधुकलश", को एक ही रचना मान कर जो पढ़ेगा शायद उसी को इन तीनों रचनाओं के पूरे रहस्य का बोध होगा । यों तो कवि की समस्त कृतियों को एक ही कृति मानकर पढ़ना चाहिये - यह उसका बाङ्मय शरीर है - अलग करके रचनाओं को देखना जैसे उसके हाथ-पांव, नाक-कान, को काट-काट कर देखना है । प्रत्येक अंग का महत्व सर्वांग के साथ है, सर्वांग का महत्व प्रत्येक अंग के साथ ।"[1]

बच्चन ने श्री कृष्ण और प्रकाशो को फिर अपने जीवन में नहीं आने दिया लेकिन कवि के अवचेतन में वह विद्यमान रहे । इस घटना के 18 वर्ष बाद कैम्ब्रिज में उन्होंने यह कविता लिखी थी -

"भावना तुमने उतारी थी कभी मेरी, इसे भूला नहीं मैं।"[2]

अथवा

"पाप मेरे वास्ते है नाम लेकर आज भी तुमको बुलाना।"[3]

धीरे-धीरे श्यामा दिन पर दिन अधिक बीमार होती चली गई । उधर आर्थिक दशा भी सन्तोषजनक न थी । बच्चन जी लिखते हैं "श्यामा की रुग्णावस्था मेरे भोक्ता के लिये ही नहीं मेरे द्रष्टा के लिये भी

---

1. डा० बच्चन : क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० 282.
2. बच्चन रचनावली भाग 2 , पृ० 109.
3. वही, पृ० 110.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उद्विग्नतापूर्ण थी ।[1] एक ओर मधुशाला की चन्द व्यक्तियों द्वारा आलोचना की जा रही थी तो दूसरी ओर मधुशाला की प्रतियाँ धड़ाधड़ बिक रहीं थी । "मधुकलश" काव्य संकलन श्यामा के देहावसान के बाद प्रकाशित हुआ । इसमें संकलित रचनायें कवि की अतीत की हृदय विदारक घटनाएं हैं जिनको कवि के भावुक हृदय ने झेला था ।

बच्चन जी अपनी आत्मकथा "नीड़ का निर्माण फिर" में लिखते हैं "मेरी मानसिक आवश्यकता थी कि अपने शब्दों से मैं अपनी पीड़ा मुखरित करूं ।

और सुनाने को मेरे पास थी, "खैयाम की मधुशाला", "मधुशाला" "मधुबाला" और वे स्फुट कवितायें जो मैंने अपनी और श्यामा की बीमारी के दौरान लिखीं थीं और जो बाद में "मधुकलश" में संग्रहीत हुईं । और इन सब में "रुबाइयत उमर खैयाम" के अनुवाद भी - ये सारी आत्म-भोगी स्थितियां और इन स्थितियों से प्रेरित कल्पनाएं थीं जो आश्चर्यजनक रीति से लय होकर अपने में बदल अब हर समय मेरे दिमाग में उमड़-घुमड़ कर मुझे परेशान किया करती थीं । लेकिन जब 'कविता के रूप में, कला के रूप में मैं उन्हें दुहराता, उन्हें स्मरण करता तो यह अनुभव मुझे कोई शुभ-शुद्ध मनकों की माला जपने जैसा लगता । शायद उसी तरह की शान्ति मुझे देता । उस शान्ति को समझने के लिये किसी आस्तिक के पास जाना पड़ेगा ।

कवि का कहना है कि कला अनुभूतियों का किसी इन्द्रिय- ग्राह्य माध्यम में रूपांतरण है । यह रूपांतरण ही वह जादू है जो अनुभूतियों को मस्तिष्क के उस पार से उठाकर, जहां वे भोगी जाती हैं, उस स्तर पर ले जाता है जहां उनका आस्वादन किया जाता है । यह आस्वादन की प्रक्रिया कहीं पहुंचकर आनन्द-संतोषप्रद और कहीं पहुंचकर

---

1. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ0 325.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शांतिदायिनी हो जाती है । भोगने-झेलने की अस्थिरता-कटुता- एक शब्द में हर मानवीय अनुभव की अपूर्णता- कला के माध्यम से वह पूर्णता प्राप्त करती है जो मनुष्य को अधिक से अधिक संतोष देती है, शोक की अनुभूति से शोक-गीत रचना, और शोक-गीत से आनन्द-संतोष और शान्ति की उपलब्धि कर लेना विष को मधुरस बना देना है, और यह कला का सबसे बड़ा चमत्कार है । जीवन है तो मनुष्य अपने को कटु-मधु अनुभूतियों के भार से विमुक्त नहीं कर सकता । पर इस भार को वहनीय और सुखद भी बना देने में सबसे अधिक योगदान, मैं समझता हूं कला ने दिया है । धर्म और दर्शन ने प्रायः उनसे ऊपर उठ जाने की शिक्षा दी है, कला ने उन्हें साथ लेकर चलने की । धर्म और दर्शन की बहुत दुहाई देकर भी विशिष्ट और विरले ही सुख-दुख के ऊपर उठ सके हैं । सामान्य मानव को कला ने ही सम्भाला है, कला ही उसकी जीवनयात्रा की संगिनी रही है, संबल बनी है ।"[1]

"मधुशाला", और "मधुबाला" किसी विलासी का आलाप-राग नहीं था । उनमें तो युग-युग से दबी-दुखी, पर अपराजित, मानवता ही बोली थी, सारे बन्धनों को तोड़कर, सारी जड़ सीमाओं से जूझ कर -

"राग के पीछे छिपा, चीत्कार कह देगा किसी दिन,
हैं लिखे मधु गीत मैंने, हो खड़े जीवन समर में ।"[2]

"मधुकलश" में कवि का आदर्श है मानव द्वारा पूर्णता प्राप्त करना । इस युग में अस्तित्ववादी व्यक्ति के विरोध का मूल कारण नया समाज नहीं है उसका विरोध तो केवल बुजुर्गों के उस समाज से जो वास्तविकताओं को ध्यान में नहीं रखते और खोखले आदर्शों के ही गीत गाते हैं । जीवन की

---

1. नीड़ का निर्माण फिर, पृ0 31 पांचवां संस्करण, जुलाई 1980.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 119.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वाभाविक माँग की उपेक्षा की जाती है और आरोपित जीवन जीने के लिये बाध्य किया जाता है । कवि अपने जीवन में अभावग्रस्त ही रहता है । "कवि की वासना" –

प्राण प्राणों से सटे किस किस तरह दीवार है तन
काल है घड़ियाँ न गिनता बेड़ियों का शब्द छन-छन
घेर लोकाचार पहरी ताकते हर बात मेरी
बद्ध इस वातावरण में क्या करे अभिलाष यौवन ?[1]

कवि ने अपने मन की पीड़ा और आक्रोश को रागात्मक पदों में रचकर प्राणवान बनाने की चेष्टा की है । देखिये "मधुकलश" में –

"जीवन में दोनों आते हैं मिट्टी के पल सोने के क्षण,
जीवन से दोनों जाते हैं पाने के पल, खोने के क्षण
हम जिस क्षण में जो करते हैं, हम बाध्य वही हैं करने को
हंसने के क्षण पाकर हंसते हैं रोते पा रोने के क्षण"।[2]

अपने व्यक्तित्व को मनुष्य जितनी अच्छी तरह अपने आप समझ सकता है उतना अन्य कोई नहीं । यह पंक्तियाँ इसकी साक्षी हैं –

"मैं जिस तरह करता रहा हूं प्रतिशोध अपना
मानवों में कौन मेरा उस तरह से कर सकेगा।"[3]

"यह मैंने माना कि मेरी कविता मेरे जीवन की अनुभूतियों से प्रेरित है, उनकी प्रतिध्वनि है, पर क्या मैं अपनी छाती पर हाथ रखकर कह सकता हूं कि मैं अपने जीवन में सदा स्वस्थ और स्वाभाविक रहा हूँ ।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 128.
2. वही, पृ0 127.
3. बच्चन रचनावली भाग 1, मधुकलश, पृ0 139.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेरे जीवन में सदा ऐसे व्यक्ति ऐसी परिस्थितियाँ आती गईं जिन्होंने मुझे स्वस्थ स्वाभाविक रहने नहीं दिया । कर्बल से लेकर श्यामा तक-स्त्री-पुरुष जो मेरे निकट आये, जिनसे मैं घनिष्ठ हुआ—किसी से मेरा सम्बन्ध सामान्य, स्वस्थ, स्वाभाविक, सहज-प्रफुल्ल नहीं रहा, नहीं तो मैं लिखता—

"प्राण, प्राणों से लगे मित
किस तरह दीवार है तन ।

यह लिखते हुए वही मेरे दिमाग में रही होगी । किसी का तन मेरे लिये दीवार था, किसी का मन मेरे लिये दीवार था । कहीं लोक-रीति और लोक-मर्यादा ने मेरे जीवन की स्वाभाविक मांगों को अवरुद्ध, कुंठित, विकृत किया, तो कहीं लोकभय और लोकाचार ने । सतह पर और, तल में और, बाहर और, भीतर और, तन में और, शब्द में और, भाव में और - इतने दबाव, खिंचाव, तनाव बनाव को सहते, जीते मुझे रोगक्लान्त, उद्भ्रांत, "मारबिड" हो ही जाना था । उसी "मॉरबिडिटी" में मेरी कविता अनियन्त्रित, उद्दाम, उच्छृंखल हो उठी थी, जिसे तन शान्त, चिंता विमुक्त घर नहीं नसीब हुआ था उसने मधुशाला बनाई थी, जिसे मन की सहचारिणी नहीं मिली थी उसने मधुबाला की कल्पना की थी, जिसे मनोवांछित साथी नहीं सुलभ हुआ था उसने साकी का हाथ पकड़ लिया था और जो एक निर्मल-शीतल स्रोत से अपनी तृष्णा तृप्त नहीं कर पाया था वह हाला के प्याले पर प्याले चढ़ा रहा था । कल्पना, सुन्दरता, शृंगार, उल्लास, उन्माद तीव्रानुभूतियों की ऊँचाइयों तक उठकर—जहाँ तक पहुंचने में, दुर्भाग्य से, मेरे शब्द और स्वर दोनों समर्थ थे —जब कोई वास्तविकता की ऊबड़-खाबड़, रूखी चट्टानों पर गिरता होगा तब उसकी निराशा कितनी मार्मिक, कितनी मारक होती होगी । उन अंधा कर देने वाले क्षणों में कोई भावातुर पानी में डूब मरे, आग में कूद पड़े,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रेल से कट जाये, तो क्या आश्चर्य ! शायद जो अपना अंत कर देते होंगे वे कुछ क्षणों की ही पीड़ा जानते होंगे, पर जो उस निराशा को लेकर जीते होंगे वे क्षण-क्षण मरण का दंश अनुभव करते होंगे । ऐसी हत्या और दंश के दायित्व से मैं अपनी कविता को मुक्त नहीं समझ सकता — मैंने निश्चय किया कि अब ऐसी कविता नहीं लिखूंगा । मैं अपनी "मॉरबिडिटी" से अपना उद्धार करूंगा।"[1]

प्रत्येक व्यक्ति की अपने मनोनुकूल जीने की अभिलाषा होती है लेकिन परिस्थितिवश कईबार वह अपनी इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाता और टूट कर रह जाता है । ऐसे अस्तित्व के व्यक्तित्व को कवि ने बड़े अनूठे ढंग से पदों में व्यक्त किया है —

"थी तृषा जब रीत जल की ला लिये अंगार मैंने
चीथड़ों से उस दिवस था कर लिया अंगार मैंने —
राजती पट पहनने की जब हुई इच्छा प्रबल थी.....
वासना जब तीव्रतम थी, बन गया था संयमी मैं
है रही मेरी क्षुधा ही सर्वदा आहार मेरा —"[2]

--।मधुकलश- कवि की वासना ।

अपनी आत्मकथा " क्या भूलूं क्या याद करूं में कवि बच्चन जी ने अपनी तीव्रतम अनुभूतियों के विषय में लिखा है कि — "मेरे जीवन की तीव्र अनुभूतियों और संघर्षों ने मुझे इतना भाव-प्रवण । सेंसिटिव । बना दिया था कि इन संकीर्ण, कट्टरपंथी और प्राय: ईर्ष्या-द्वेष प्रेरित आलोचकों के आरोप भी मुझे प्रत्युत्तर में गीत अथवा कविता लिखने को उकसा जाते थे । "कवि की वासना", "कवि की निराशा","कवि का उल्लास"

---

1. नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 46 व 47.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, मधुकलश, पृ० 128.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और "पथ भ्रष्ट" श्यामा की रोग-शैय्या के निकट ही लिखे गये थे। साथ ही अदृश्य और दृश्य संसार ने भी जो चुनौतियां मुझे दीं थीं उनका सामना करने के लिये मुझे अपनी शब्द शक्ति से बल, साहस, और संकल्प के प्रति सचेत और विश्वासी बनना था। "कवि का गीत", "लहरों का निमन्त्रण" "मांझी" आदि रचनायें भी उसी समय लिखीं गईं -

आज है अस्थिर गगन,
अस्थिर सलिल-तल हो रहा है,
किन्तु अस्थिर हो न मांझी
धैर्य अपना खो रहा है,
झेलने को इस बड़े
तूफान के हल्के-झकोरे
मानवी सम्पूर्ण साहस
वक्ष बीच संजो रहा है...."[1]

"मधुकलश" मानव देह का प्रतीक है। "मधुकलश" में कवि ने व्यक्ति-विद्रोह को स्वर दिया है। यह जीवन बहुरंगी है। एक के लिये जो सुख के क्षण हैं दूसरे के लिये वही दुखद अनुभूति है। श्यामा के जीवन के अन्तिम क्षणों में कवि की अनुभूति - "मैं जैसे-जैसे श्यामा को शव कर देने वाली रेखा के निकट पहुंच रहा था वैसे-वैसे यह तरुणाई मुझ से विदा होती जा रही थी। जो रग-रेशे में गर्म रक्त बनकर दौड़ता था वह जैसे दिमाग की ठंडी शिरा में मीठी कड़वी याद बनकर रेंगने लगा था। और एक दिन जब उसका शव मेरी गोद में आ गिरा तो सारी पिछली यादें - यादों के अतिरिक्त घटनायें रहती भी किस रूप में हैं - अंधकार में डूब गईं। मैं भी अन्धकार में डूब गया। कुछ पता नहीं था

---

1. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ0 325, आठवां संस्करण फरवरी 1982.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहाँ को जा रहा हूं । कुछ पता नहीं था कहाँ से आ रहा हूं — नहीं, कुछ-कुछ पता चलता था — अभी वे प्रतिध्वनियाँ इतनी मंद मौन न हुई थीं जिनको मैंने अपना मधु-गान समझा था, पर अब उन्हें सुनने को मैं रुकना नहीं चाहता था । मैं अन्धकार की ओर मुख किये जा रहा था, दूर, मंद, मंदतर होती अपने अतीत की प्रतिध्वनियों से, दूर धुंधली से और धुंधली होती अपने विगत की प्रतिछायाओं से । निरुद्देश्य ? नहीं । यही मैं अपनी जीवन-यात्रा में कभी नहीं हो पाया । शायद अपने को अधिक स्पष्ट करने के लिये अपने से ही मैंने पूछा था —

मुंह क्यों आज तम की ओर ?

और मैंने ही उत्तर दिया था,

कालिमा से पूर्ण पथ पर
चल रहा हूं मैं निरन्तर,
चाहता हूं देखना मैं इस तिमिर का छोर ।
ज्योति की निधियाँ अपरिमित
कर चुका संसार संचित,
पर छिपाये हैं बहुत कुछ सत्य यह तम घोर ।"[1]

युवा-भावनाओं की अभिव्यक्ति को कवि ने परिष्कृत ढंग से व्यक्त किया है । "तीर पर कैसे रुकूं मैं आज लहरों में निमन्त्रण" नामक कविता आत्मकथात्मक शैली में है तथा "पथभ्रष्ट" कविता में कवि ने तीखा व्यंग प्रतिपादित किया है । "मधुकलश" की अन्तिम कविता "गुलहजारा" है । अन्तिम पद की इन पंक्तियों में कवि ने श्यामा की अन्तिम मृत्यु शय्या पर उनकी अन्तिम मुस्कान की ओर संकेत करते हुए लिखा है —

---

1. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ0 328. आठवां संस्करण, फरवरी 1982.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"बीज के दो कोष बाकी
थे, गया ले, तोड़ माली,
पीत होकर अब ठिठुरती
पत्तियां हैं नोक वाली,
मृत्यु शय्या पर पड़े अति
रुग्ण की अन्तिम हंसी सी
यत्न करके खिल रही है
एक लघु कलिका निराली ।"

"आज उपवन से हमारे,
मिट रहा है गुलहजारा ।"[1]

"यह "मधुकलश" जिसमें मैं मधु रस भर कर देना चाहता था मरघट पर घण्ट बनकर लटक गया । घटनाओं पर पछतावा हो सकता है, है-भी, पर कविता पर पछतावा नहीं । मधु रस इसमें न हो पर वह जीवन के रस से खाली नहीं, और जीवन का रस मधु ही मधु नहीं होता, कटु भी होता है, जो कविता के रस में बदल, उसमें एक-रस हो सदा-सर्वदा स्वादिष्ट रहता है; समर्थ के हाथों अमृत भी बनता है ।"[2]

निशा निमन्त्रण —

जब बच्चन जी की पहली पत्नी का देहान्त हुआ तब उन पर वेदनाओं का पहाड़ टूट पड़ा । श्यामा की मृत्यु के बाद कवि का वर्षों का अत्यन्त सक्रिय जीवन एकाएक निष्क्रिय हो गया था । कुछ दिनों तक सब अस्त-व्यस्त

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, मधुकलश, पृ० 147.
2. वही, पृ० 121.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रहा । कवि का जीवन नितान्त इकाकी रह गया । रह गया वह और उसकी तन्हाई । कुछ समय के बाद बच्चन की काव्यधारा पुन: प्रवाहित हुई । अब मधु काव्य के स्थान पर वेदना का काव्य था ।

"वेदना के बिना मनुष्य का अहम् नहीं टूटता, और अहम् के टूटे बिना एक मनुष्य के हृदय से दूसरे मनुष्य के हृदय तक पहुंच नहीं होती, सेतु नहीं बनता। विचारों का सेतु एक दिमाग से दूसरे दिमाग तक बिना अहम् के टूटे भी बन सकता है, पर भावनाओं का, कभी नहीं, और कविता भावनाओं के सेतु पर चढ़कर ही एक हृदय से दूसरे हृदय तक जाती है । हृदय-हृदय के बीच भावनाओं के सेतु का निर्माण किये बगैर जो शब्दों का कारवां खड़ा कर देते हैं उनका परिणाम इसके सिवा कुछ नहीं हो सकता कि उनका कारवां कागजों के अरण्य में खो जाये या निरर्थक ध्वनि बनकर शून्य में विलीन हो जाये । यह भावनाओं का सेतु बनाने से अधिक बन जाने पर निर्भर है । इसी से कहा जाता है कवि जन्म लेते हैं बनाये नहीं जाते । जीवन की न जाने कैसी-कैसी स्थितियां-परिस्थितियां अपने आप आकर न जाने किस-किस से तोड़, औरों से जोड़ जाती हैं । मैं तो कहता हूं कि इतना होने से ही आदमी कवि बन जाता है । जीवन में बहुत से कवि हैं जो शब्दों में कविता नहीं करते, शब्द कविता का, वास्तव में बहुत-से माध्यमों में से, केवल एक माध्यम है । मैंने कहीं पढ़ा था – अंग्रेजी में– हिन्दी अनुवाद दे रहा हूं: "कविता लिखने का उतना विषय नहीं, जितना जीने का, और कविता जीना जीने का सबसे दुसाध्य रूप है । यह बिल्कुल सही है जो कबीर कहते हैं –

"सीस काटि भुइं पे धरे, तापर धारे पांव,
दास कबीरा यों कहे, ऐसा होउ तो आव ।

इसका अर्थ सतही नहीं । इस पर गौर करना होगा । शीश काटना तो शायद सम्भव भी हो जाए पर उसको उठाकर भूमि पर धरना और फिर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उस पर पांव रखना तो तभी सम्भव हो सकता है जब मरने के बाद भी कोई जीता रहे -- जीने की चेतना अपने हाथों में बचा रहे। अहम् के काटने के बाद जो चेतना शरीर को उठाती है, उस पर पांव धरती है, उसी का नाम कवि है।"[1]

श्यामा की मृत्यु के तत्काल बाद कवि ने अपनी कविता लिखी की जो पिछली कविताओं से भिन्न थी। उसकी पहली पंक्ति थी "आओ तो आएं, मर जाएं।"[2] आदित्य प्रकाश चौहरी की मां के देहावसान के बाद उनके पिता को पत्नी वियोग में दुखी देखकर बच्चन जी को अपना दुख भी याद हो आया और कविता न लिखने की प्रतिज्ञा करने पर भी अचानक कविता फूट पड़ी। फिर एक के बाद एक करके कवि हृदय से कविता की धारा बह निकली, जो "निशा निमन्त्रण" और "एकान्त संगीत" में संग्रहीत है।

कविता की धारा का प्रवाह इतना तेज था कि कवि अपनी परीक्षा की तैयारी करते या कि कविता लिखते। परन्तु भाव वेग को रोकने की अपेक्षा निकाल देना ही श्रेयस्कर होता है। कबीरदास जी लिखते हैं –

"कबिरा क्षुधा है कुकरी करत भजन में भंग,
साको टुकड़ा डारि दे भजन करो नि:संग।

सृजन की क्षुधा भी कितनी प्रबल होती है? "निशा निमन्त्रण" के गीतों में अवसाद है, अतीत की याद है, विवशता का अहसास है, असामर्थ्य-बोध का दंश है, अपनी भूलों पर पश्चाताप है, निराशा है।"[3]

"निशा निमन्त्रण की सबसे बड़ी उपलब्धि मैं इसे मानता हूं कि अपने अवसाद, विषाद, संकट, दु:ख में भी, या शायद उन्हीं के कारण, मैं अवसन्न, विषण्ण, संकटापन्न, दुखी संसार को अपनी सहानुभूति (सह + अनुभूति),

---

1. डा० बच्चन, क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० 260.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, निशा निमन्त्रण, पृ० 170.
3. "नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 107.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संवेदना + सम + वेदना + दे सकता था, "निशा निमन्त्रण" की बहुत सी पंक्तियां साक्षी में खड़ी होंगी ।"[1]

"निशा निमन्त्रण" में कवि की अकेले पन की स्थिति प्रतिध्वनित होती है, शाम को घर लौटते समय कवि के मन की दशा देखिये –

"मुझ से मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊं किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है ।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है ।"[2]

--

"निशा निमन्त्रण" में कवि ने सन्ध्या से प्रात: तक प्रकृति के विभिन्न परिवर्तनों पर अपने जीवन की शून्यता और एकाकीपन को विभिन्न रूपों में वर्णित किया है । कवि का मूल लक्ष्य प्रकृति-चित्रण का न होकर उसके मन की तीव्र राग चेतना का है । "निशा निमन्त्रण" में सौ गीतों में कवि की गहनतम वेदना और एकाकीपन की भावना की अन्तरंग अनुभूतियां हैं जो कवि की अपनी हैं । लेकिन दूसरों को भी पराई नहीं लगतीं । इन गीतों को चार भागों में विभाजित किया गया है । पूर्व गीत संध्याकालीन हैं, फिर मध्यरात्रि के, तत्पश्चात् मध्य रात्रि के बाद के तथा पौ फटने के समय के हैं । "निशा निमन्त्रण" के कितने ही गीतों के पीछे कवि की अपनी पत्नी के साथ बिताई हुई घड़ियों की स्मृतियां निहित हैं । ये पंक्तियां कवि की निजी स्मृतियों की साक्षी हैं –

---

1. डा० बच्चन, नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 107 पांचवां संस्करण जुलाई, 1980.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, निशा निमन्त्रण, पृ० 161.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"पूर्ण कर दे वह कहानी
जो शुरू की थी सुनानी,
आदि जिसका हर निशा में, अन्त चिर-अज्ञात
साथी, सो न, कर कुछ बात ।[1]

कवि ने अपनी आत्मकथा में भी लिखा है - "यदि कोई कला है तो उसकी जड़ें ठोस जीवन की धरती में है, मेरी कोई भावना है तो उसका मूल मेरी भोगी-जैसी अनुभूतियों में है, मेरी कोई कल्पना है तो उसका स्रोत इन्द्रिय-गम्य यथार्थ में है, मेरा कोई दर्शन है तो वह इसी पाँव के नीचे की पृथ्वी की माटी के स्पर्शन से बना है । वाग्धारा, आकाशी, अतिमानसी स्रोत मेरे लिये नहीं खुल सके हैं ।"[2]

काव्य के प्रति कवि की गहरी शिकायत है । "निशा निमंत्रण" का मूल स्वर वेदनामय है । बच्चन के जीवन का दुख केवल उन्हीं का निजी है यह सोचना केवल भ्रम है । परन्तु यह परायेपन को अपनेपन में बदलने की अद्भुत क्षमता रखता है । अधिक दुख भोगने के बाद व्यक्ति या तो निराशावादी हो जाता है या फिर संघर्षवादी । बच्चन के दुखपरक गीत सीधे मर्म को कुरेदते हैं । एक दुखी के दुख को दुखी जितनी जल्दी से समझता है और नहीं समझ सकते । जितना वह संवेदनशील होता है उतना और नहीं हो सकता अति दुःख जीवन को विषाद की बेड़ियों में जकड़ने की अपेक्षा, सहज, मुखर मानवीय संवेदना जगाता है । यही तो जीवन में व्याप्त सुख, दुख की मनः अनुभूति की साक्षी है । यह पंक्तियाँ हैं -

"तू अपने दुख में चिल्लाता, आँखों देखी बात बताता
तेरे दुख से कहीं कठिन दुख यह जग मौन सहा करता है,
मुझ से यही कहा करता है ।[3]

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 175.
2. नीड़ का निर्माण फिर, पृ0 67.
3. रचनावली भाग 1, पृ0 174.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बच्चन निशा निमन्त्रण की भूमिका में लिखते हैं कि "जो मेरी "मधुशाला" और "मधुबाला" से परिचित हो कर "निशा निमन्त्रण" के गीतों को पढ़ेंगे वे सहज ही देखेंगे कि मेरी शब्द योजना मेरे छन्द, मेरे रूपक, एक शब्द में – मेरी बोली में, कितना परिवर्तन आ गया है।"[1] कवि के जीवन में जैसे जैसे परिस्थितियां बदलती गईं वैसे-वैसे उसकी शब्द योजना और शैली में परिवर्तन आ गया क्योंकि उसमें कवि के हृदय की आवाज थी । बनावट नहीं थी ।

दु:ख सुख जीवन के मूल भाव हैं । मनुष्य पर जैसा भी समय आता है उसके अनुसार उसके भाव स्पष्ट दिखाई देने लग जाते हैं । "सूक्ष्मत: दुख मन का मूल भाव है जो प्राणी को किसी अभाव से अवगत कराता है। वह अभावपूर्वक लौकिक हो सकता है और वह बहुत कुछ आलौकिक अभाव भी हो सकता है, लेकिन भाव स्थूल है, – अत: उसके दुख में गहनता नहीं होती; सतहीपन होता है । लेकिन आलौकिक अभाव सूक्ष्म होता है । प्रश्न उठता है कि दुख जीवन की गति का सम्बल होता है या अगति का विराम चिन्ह? गति से तात्पर्य है जीवन की सक्रियता से और अगति से तात्पर्य है जीवन की निष्क्रियता से । दुख जीवन में सक्रियता का संचार भी कर सकता है और निष्क्रियता भी ला सकता है । "बच्चन" के गीतों में दुख की निष्क्रियता है । पर वहाँ जीवन की सक्रियता सहसा टक्कर भी मारती है । बच्चन के गीतों में व्यंजित दु:ख महादेवी के गीतों में व्यंजित दुख की तरह से व्यक्तिपरक है । किन्तु कौन सा दुख और किसका दुख व्यक्तिपरक नहीं होता ? पर उसकी प्रतिक्रिया और प्रभाव में अन्तर हो सकता है । "घायल की गति घायल जाने" उक्ति में व्यक्ति के दुख की सहवेदना, संवेदना और प्रसार की "आत्मवत् सर्वभूतेषु" कहने का कारण है । यही व्यक्ति के दुख के उदात्तीकरण का तरीका है । दुख ही व्यक्ति (कवि) की वाणी को

---

1. रचनावली भाग 1, पृ० 154.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समष्टि की वाणी बना देने का जीवनतन्त्र है ।"[1]

घनघोर निराशा के वातावरण में अगर कवि के जीवन में कहीं आशा की किरण है तो वह बहुत क्षीण रेखा की तरह है । केवल एक गीत में चांदनी का क्षीणतम संकेत ही इस भाव को स्पष्ट कर देती है यह पंक्तियां –

"दे रही दिलासा
आ झरोखे से जरा-सा
चांदनी पिछले पहर की पास में जो सो गई है ।
रात आधी हो गई है ।"[1]

बच्चन जी का कहना है कि उनकी रचना के साथ पाठकों की प्रतिक्रिया बदल रही थी । "मधुशाला" और "मधुबाला" का बाह्य उल्लास इतना मुखर था कि उसके पीछे छिपे अवसाद – "राग के पीछे छिपे वीतराग" – की ध्वनियां कम ही लोगों ने सुनी थीं । वे एक ऐसी मस्ती में रहने लगे थे, जिसके लिये वे सदा से लालायित थे, और जो उन्हें पहली बार मिली थी । "मधुकलश" का स्वर एक विद्रोही का स्वर था, जो संसार के हर आरोप का जवाब दे रहा था, हर चुनौती को स्वीकार कर रहा था, और हर दैवी अथवा दुनियावी मुसीबत को ललकार रहा था – "मैं छिपाना जानता तो जग मुझे साधु समझता", "रक्त मेरे ही हृदय का है लगा मेरे अधर में", "बूंद स्याही की भला क्या रोक लेगी राह मेरी", और तीर पर कैसे रुकूं मैं आज लहरों में निमन्त्रण", "निशा निमन्त्रण ने लोगों में यह संवेदना जगाई जो ऐसे

---

1. जीवन प्रकाश जोशी, बच्चन व्यक्तित्व और कवित्व, पृ0 125.
1. बच्चन रचनावली भाग 1, निशा निमन्त्रण, पृ0 180.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योद्धा के प्रति होती है जो अपना कर-बल लगाने पर भी समर में परास्त हो गया है । यहाँ न कोई रूपक था, न कोई अलंकार, न कोई शृंगार, न कोई कृत्रिमता । जीवन का एक नग्न सत्य, एक नग्न, निर्मम, कठोर चट्टान के समान एक स्वप्न-भग्न इंसान को दाबे हुए था – उसकी साँसों से जो पीड़ा मुखरित हो रही थी उसको कविता कहना उसके क्रन्दन का उपहास करना होता । मेरे पाठकों ने समझा, मेरे इने-गिने मित्रों ने समझा, कि ऐसे समय में मुझे उनकी संवेदना की आवश्यकता है । आज तीस बरसों के बाद मैं संवेदनीय नहीं रहा, पर "निशा निमन्त्रण" संवेदना जगाने, उसका विस्तार करने का काम आज भी कर रहा है । मैंने "निशा निमन्त्रण" को किसी कलाकृति के रूप में प्रस्तुत नहीं किया था । पर अगर आज मुझ से कोई पूछे कि आप सर्वोच्च कलाकृति किसे मानते हैं, तो मैं निस्संकोच कहूंगा कि उसे जो अधिक से अधिक संवेदना क्षेत्र का विस्तार कर सके । एक ऐसे संसार में जो अपनी अपूर्णता में पीड़ित रहने के अतिरिक्त और हो भी क्या सकता है, पीड़ित के प्रति संवेदना जगाकर कला अपनी सत्ता, आवश्यकता, अनिवार्यता, सार्थकता, मैं समझता हूं, निर्विवाद रूप से सिद्ध करती है । "निशा-निमन्त्रण" की सीमाओं से मैं अनजान नहीं हूं । पर उसकी क्षमता को मैंने अनुभव से जाना है ।"[1]

एकान्त संगीत –

"एकान्त संगीत" सन् 1938, 39 में लिखी गई । "निशा निमन्त्रण" के बाद एकान्त संगीत के गीतों का सृजन हुआ । इस संग्रह का पहला गीत "अब मत मेरा निर्माण करो" कवि ने ट्रेनिंग कालेज कमच्छा, के बोर्डिंग हाऊस में लिखा । वहाँ दस महीने रहे और 44 गीत लिखे । ट्रेनिंग कालेज

---

1. नीड़ का निर्माण फिर, पृ0 32. संस्करण पाँचवां, जुलाई, 1980.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से विदा होने के दिन "बुलबुल जा रही है आज" ५५वां गीत लिखा। अन्य गीत प्रयाग में ही लिखे गये हैं। "एकान्त संगीत" के गीतों में धूप-सी-खिली चांदनी भी कवि के अवसाद को कम करने में सहायक नहीं होती। एक गीत में कवि लिखते हैं –

"चांदनी में साथ छाया।
मौन में डूबी निशा है,
मौन डूबी हर दिशा है,
रात भर में एक ही पत्ता किसी तरु से गिराया।
चांदनी में साथ छाया।"[1]

"बच्चन" ने अपने एकान्त को सम्पूर्ण जिया है। पलायन नहीं किया। प्राणघाती निराशा ने भी कवि की जिजीविषा को खत्म नहीं होने दिया। तभी तो वह अपनी इच्छा और तृष्णा की अवहेलना के विरोध में चीत्कार कर उठे। यही कारण है कि यह कविता वैयक्तिक धरातल से अध्यात्मिक स्तर तक उभर उठ गई है। मनुष्य की जन्म-जन्मान्तरों से भरी हुई निराशाओं को बेधता हुआ विरोधी स्वर चीत्कार कर उठता है –

"कहने की सीमा होती है,
सहने की सीमा होती है,
कुछ मेरे भी बस में, मेरा कुछ तोड़ समझ अपमान करो।"

डा० नगेन्द्र ने लिखा है कि "निशा-निमन्त्रण" और "एकान्त संगीत" का रचनाकाल बच्चन के लिये आत्मसाक्षात्कार का समय है।

---

1. रचनावली भाग 1, पृ० 338.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इन कविताओं में भाग्यचक्र के नीचे कुचले हुए मानव के चीत्कार और ललकार के स्वर को अनसुना कर दिया है । कवि जीवन में स्पष्ट लक्ष्य बोध के नहीं होने पर भी निरंतर आगे बढ़ते रहने के लिये दृढ़ संकल्प है ।"

यह स्पष्ट है कि कवि ने अपने एकान्त के क्षणों को कभी पलायन नहीं माना और ना ही अपने आपको छलावा । देखा जाए तो उन्होंने अपने नितान्त अकेलेपन का भोग ऐसे किया जैसे कि वह निर्भय होकर अपनी और अपने संसार की भ्रान्तियों का मुकाबला करने चला हो । ऐसा अकेलापन, जहाँ आत्म-सत्य और जगत-सत्य का साक्षात्कार होता है –

"तट पर है तलवार एकाकी,
नौका है सागर में,
अंतरिक्ष में खग एकाकी
तारा है,अम्बर में,
भू पर वन, वारिधि पर बेड़े,
नभ में उडुगण मेला,
नर-नारी से भरे जगत में
कवि का हृदय अकेला ।"[1]

कवि की धारणा है कि "उच्चकोटि का सृजन तनाव की स्थिति से ही जन्म लेता है । रचना ऐसी होनी चाहिये जैसे तनी प्रत्यंचा से छूटा तीर। "सतसैया के दोहरा जिमि नावक के तीर।"[2] इसी तनाव में मैं "एकान्त संगीत" के गीत पर गीत लिखे जा रहा था । मैं अपने को किन विचारों, भावनाओं, कल्पनाओं, स्थापनाओं से साधना चाहता था, मेरे मनन चिन्तन की प्रक्रिया – दिशा क्या थी, इसका क्रमानुसार लेखा जोखा "एकान्त संगीत"

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 214.
2. बच्चन रचनावली भाग 7, पृ0 332.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में है । उसमें कहा हुआ से अधिक अनकहा है । एक गीत से दूसरे गीत की स्थिति के बीच में क्या क्या गुजर चुका है — अनुभूतियों के स्तर पर घटित से भी अघटित और अनुमानित से भी, - यहाँ पर बताने की शायद ही आवश्यकता है कि भाव-प्रवण मन के लिये, कवि के लिये, भाव-भीगे कवि के लिये घटित और अनुमानित की आत्मानुभूति में कोई खास अन्तर नहीं रहता — उसे देखना, समझना, जी-भोग सकना, "एकान्त संगीत" के आस्वादन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है, शायद सबसे कठिन काम भी, पर सहृदय के लिये स्वभाव सहज । प्रकाश से अधिक सहृदय व्यक्ति मुझे जीवन में कम मिले हैं । "एकान्त संगीत" और उसके पहले की मेरी रचनाओं में भी उन्होंने कविताओं के बीच में ही नहीं, पंक्तियों के बीच में, शब्दों के बीच में, मेरी कविता पढ़ी थी, जो एक अर्थ में लिखित कविता से अधिक ठोस कविता थी, और इसी का अर्थ वह मुझसे जानना चाहते थे, यानी मेरा जीवन, मेरा मन, मेरा मस्तिष्क ।"[1]

किसी के मन की थाह लेने से पहले हमें अपने मन की थाह भी देनी होती है । इसलिये बिना अपना भेद खोले किसी दूसरे का भेद नहीं जान सकते। कवि कहते हैं, "कालेज में— प्रोफेसर प्रकाश हुई तथा सन्तुष्ट दिखाई देते थे । सुन्दर सुशिक्षित पत्नी भी मनोनुकूल ही पायी थी । परन्तु बाहर से सुन्दर लगने वाला जीवन अन्दर से कितना खोखला है । इसी सन्दर्भ में कवि का एक गीत "एकान्त संगीत" में संग्रहीत है —

"हर जगह जीवन विकल है ।
तृषित मरुथल की कहानी
हो चुकी जग में पुरानी,
किन्तु वारिधि के हृदय की प्यास उतनी ही अटल है ।

× × × ×

---

1. डा० बच्चन, नीड़ का निर्माण, पाँचवाँ संस्करण, 1980, पृ० 134.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रो रहा चिरकी अकेला,
देख तन का मिलन मेला,
पर जगत में दो हृदय के मिलन की आशा विफल है ।
× × × ×
अनुभवी इनको बतायें,
व्यर्थ मत मुझ से छिपायें,
प्रेयसी के अधर-मधु में भी मिला कितना गरल है ।"[1]

इस नर-नारी से भरे जगत में कवि हृदय अकेला है ।
यह अकेलापन, यह अभिशाप, यह पीड़न और यह क्रन्दन इन पंक्तियों में दृष्टिगत होता है –

"कितना अकेला आज मैं ।
संघर्ष से टूटा हुआ दुर्भाग्य से लुटा हुआ,
परिवार से छुटा हुआ, कितना अकेला आज मैं ।
× × × × ×
खोया सभी विश्वास है,
भूला सभी उल्लास है,
कुछ खोजती हर सांस है, कितना अकेला आज मैं ।
कितना अकेला आज मैं ।"[2]

"मरना तो होगा ही मुझको,
जब मरना था तब मर न सका ।
जीवन में कुछ कर न सका ।"[3]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 245.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, एकान्त संगीत, पृ0 257.
3. वही, पृ0 224.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हर व्यक्ति कहीं न कहीं कभी न कभी अकेले पन से अभिशप्त है । संताप से पीड़ित है । वह उस असह्य पीड़ा से अपने को आजाद भी करना चाहता है परन्तु उसे बहुत आत्म-संघर्ष करना पड़ता है । इतना ही नहीं उसे संकल्प विकल्प के द्वन्द्व से निकलना पड़ता है । "निशा-निमन्त्रण" के सौ गीत निकाल कर एकान्त संगीत का सृजन हुआ । इसके आगे के सौ गीत आकुल अन्तर के भी हैं । इन रचनाओं को समझना तथा इनका आनन्द लेने के लिये इन तीनों काव्य संकलनों को क्रमशः पढ़ना चाहिये । "एकान्त संगीत" के गीत व्यक्ति के गहन विषाद को तीव्र रूप देते हैं एकाकी पन के चीत्कार को हटाकर अपने को जगत में समाहित करने की प्रेरणा देते हैं । यह पंक्तियाँ इसी उद्देश्य को प्रदर्शित करती हैं –

"यदि न सके ये ऐसे गायन, बहले जिसको गा मानव मन
शब्द करे ऐसे उच्चारण,
जिनको अन्दर से इस जग के शापित मानव का स्वर बोले,
जब-जब मेरी जिह्वा डोले ।[1]

"एकान्त संगीत" मानसिक तनावों के भावों की तीव्रता का चित्रण है । इतना ही नहीं इसमें विषाद इतना गहरा है कि व्यक्ति की दशा एक बौराए और विक्षिप्त व्यक्ति की सी होकर रह जाती है । यह पंक्तियाँ इसकी साक्षी हैं –

"मेरे पूजन अराधन को, मेरे सम्पूर्ण समर्पण को
जब मेरी कमजोरी कह कर, मेरा पूजित पाषाण हंसा,
तब रोक न पाया मैं आँसू ।"[2]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, आकुल अन्तर, पृ0 299.
2. " " " , एकान्त संगीत, पृ0 231.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा

"तुमने अपने कर पसार, लेकिन देर बड़ी कर आये
बंधन तो छूट चुका पथिक, अब लूटो राख लुटाता हूं मैं
अग्नि देश से आया हूं मैं।"[1]

मृत्यु का साक्षात्कार कवि ने अनेक गीतों में किया है। "बच्चन" "देहात्म" के साक्षात्कार पर ही रुक जाना चाहते हैं। आज के मानव की अभिलाषा का चित्र कवि की निजी अनुभूति में देखिये –

"लो, कफन ओढ़ाता आता है, कोई मेरे तन पर तारे।
अपने पर मैं ही रोता हूं,
मैं अपनी चिता सजोता हूं,
जल जाऊंगा अपने कर से रख अपने अंगारे।
खिड़की से झांक रहे तारे।"[2]

कितना गहन अवसाद का चित्र है कवि का। अपने हाथ से अपने ऊपर अंगारे रखने की स्थिति सहन करता है। कितनी तीव्र आत्मवेदना लिये है। यहां तक कि वह अपनी मृत्यु को भी देखना चाहते हैं। लेकिन देखा गया है कि चरम सीमा के क्रन्दन और पीड़न में चुपचाप सब कुछ सहने की शक्ति आ जाती है। वह अपनी पीड़ा को प्रकट नहीं होने देता। पी जाता है सारे गम को। उस गम को सहन करने का नाम है जिजीविषा अर्थात् पुरुषार्थरत रहना।

दुख तो जीवन में आता जाता रहता है। इससे भागना एकमात्र पलायन है। दुख को भोगने के लिये सदैव तत्पर रहना ही मानव धर्म है। दुख से राहत पाने का एकमात्र उपाय है उसे भोग लेना।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, एकान्त संगीत, पृ0 249.
2. वही, पृ0 217.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"मदिरा-मज्जित कर मन-काया,
जो चाहा तुमने कहलाया,
क्या जीता मदि जीता मुझको मेरी दुर्बलता के क्षण में !
है हार नहीं यह जीवन में ।"[1]

"एकान्त संगीत" के सौ गीतों में मध्यवर्गीय समाज के व्यक्ति के संघर्षमय जीवन की करुण गाथा है । उसमें जहाँ निराशा की भावना है वहाँ उसके मूल स्वर में संघर्ष भी सुनाई देता है । इस रचना के पढ़ने से अभिशप्त मानव को जीने के लिये साहस और संकल्प मिलता है । इतना पाने के लिये मनुष्य को बहुत कुछ खोना पड़ता है । और वह मूल्य गम्भीर भी हो सकता है । यह पंक्तियाँ इसकी साक्षी हैं –

"गरल पान करके तू बैठा, फेर पुतलियाँ, कर पग ऐंठा
यह कोई कर सकता मुर्दे, तुझ को अब उठ गाना होगा,
विष का स्वाद बताना होगा ।"[2]

बच्चन के काव्य में आत्म-मंथन और जीवन मंथन से ही जीवन-दर्शन अवतरित होता चला गया है । बच्चन जी के काव्य में यह यन्त्रत्र सर्वत्र दृष्टिगत होता है –

"यह महान दृश्य है,
चल रहा मनुष्य है,
अश्रु-स्वेद-रक्त से, लथ-पथ लथ-पथ लथ-पथ
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ ।"[3]

जीवन के प्रति कवि का आन्तरिक वेदना से भरा यह गीत –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, एकान्त संगीत, पृ० 231.
2. वही, पृ० 252.
3. वही, पृ० 246.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"जीवन शाप या वरदान ?
तुम को तुमने जगाया,
मौन को मुखरित बनाया,
करुण क्रन्दन को बताया क्यों मधुरतम गान ?
जीवन शाप या वरदान ।"[1]

आकुल अन्तर -

"आकुल अन्तर" वैयक्तिक विषाद से उभर कर जीवन के प्रति अधिक जागरूक है । जीवन, काल, संघर्ष, नियति, जग, प्रकृति आदि के प्रति कवि अब भावुक और आत्मकेन्द्रित नहीं है जैसा कि वह "निशा निमन्त्रण" या "एकान्त संगीत" में है । यहां जग जीवन के यथार्थ का बोध है । इस रचना की कविताओं में जीवन का सत्य कितने मार्मिक शब्दों द्वारा प्रस्तुत किया गया है –

"कैसे आंसू नयन सम्भालें ।
मेरी हर आशा पर पानी,
रोना दुर्बलता नादानी,
उमड़े दिल के आगे पलकें, कैसे बांध बनालें ।
कैसे आंसू नयन सम्भालें ।
समझा था जितने मुझको सब,
समझाने को वह नहीं रही अब,
समझाते मुझको हैं, मुझ को झूठ न समझने वाले ।"

× × × +

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, आकुल अन्तर, पृ0 247.
2. वही, पृ0 268.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"मन मेरा खोजा करता है, क्षण भर को वह ठौर
छिपा तूँ अपना शरीर जहाँ ।
अरे है वह वक्षस्थल कहाँ ?"[1]

+ + + +

"जीवन बीत गया सब मेरा जीने की तैयारी में।"[2]

"निशा निमन्त्रण" और "एकान्त संगीत" की भूमिका ही "आकुल अन्तर" में विकसित हुई है । कवि का मन आकर्षित हुआ और वह आकर्षित को जीवन-संगिनी के रूप में अपनाने का स्वप्न देखने लगे । कवि ने अपनी आत्मकथा "नीड़ का निर्माण फिर" में नारी का कितना संसर्ग रहा है उनके जीवन में, इस पर अपने विचार लिखे हैं। क्योंकि नारी का प्रवेश उनके जीवन में किशोरावस्था से ही हो गया था –

"नारी किशोरावस्था से ही मेरे जीवन की अंग, आवश्यकता, अनिवार्यता बन चुकी थी – चाहे मुझे दुख दे, चाहे सुख, चाहे मुझे विपत्ति करे, चाहे शान्ति दे, चाहे मेरे लिये समस्या बने, चाहे समाधान । अभी तक मैं उसे खोजने नहीं गया था, वह किसी संयोग, किसी घटना, किसी विधान से मेरे समीप आ गई थी । जब वह मेरे समीप रहती थी, मुझे तन-मन से "आकुपाइड" – संलग्न रखती थी । जब से वह मुझ से दूर हो गई थी एक खालीपन, एक शून्यता, मुझे खाती रहती थी । मैं कुछ भी करूँ, मुश्किल से मुश्किल, अपने को व्यस्त अनुभव न कर पाता था। जैसे मेरा नर्वस प्रतिघात उसी से उलझने, जूझने, निपटने के लिये आरक्षित हो - रिजर्ड – और अपनी बेकारी में बेचैन हो, घुमड़ रहा हो, घूम रहा हो,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, आकुल अन्तर, पृ0 272
2. वही, पृ0 273.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आकाश-पाताल नाप रहा हो, पर कहीं ठहरने का आधार न पा रहा हो, - "जीवन ओजार आधार" - कहीं थाह न पा रहा हो, -

शून्यता स्वान्त मन की
शून्यता जैसे गगन की,
थाह पाती है न इसका मृत्तिका असहाय।
मिट्टी दीन कितनी हाय।"[1]

लेकिन स्वप्न कभी पूरे नहीं होते। "आकुल अन्तर" में विषाद से ऊपर उठने का संकेत है। कवि ने अपनी आत्मकथा में लिखा है -

"आडम्बरित के प्रति मेरे आकर्षण ने मेरे अन्दर रागात्मकता का जो दीप जलाया था, उसकी लौ को भ्रम, भय, संशय, संदेहों की आंधी के झोंके बराबर कंपाते रहे थे। "आकुल अन्तर" निश्चय अन्धकार से ऊपर उठने का संकेत देता है, पर प्रकाश के प्रति किसी ललक का नहीं, वस्तुतः उसके प्रति एक उदासीनता, एक निरपेक्षता का भाव है -

"मैं पुलक उठता न सुख से,
दुख से तो क्षुब्ध होता,
इस तरह निर्लिप्त होना
लक्ष्य तो मेरा नहीं था।
हाय क्या जीवन यही था।"[2]

"आकुल अन्तर" का मूल स्वर शायद इसी उदासीनता, निरपेक्षता, निर्लिप्तता का है और उसके ऊपर उस धैर्य, साहस, शौर्य का कि अब जो कुछ आये सुख, दुख, हर्ष, विषाद उसे बिना किसी शिकवा - शिकायत के सहना है, सहना चाहिये। मैं समझता हूं यहां मेरा कवि निर्बल, पर मेरा

---

1. डा० बच्चन, नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 195. पाँचवां संस्करण जुलाई, 1980
2. वही, पृ० 202.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्यक्ति सबल हो गया है । यदि ऐसा न होता तो आइरिस से जो निराशा मुझे मिली थी उससे एक बार फिर मैं "निशा-निमन्त्रण" के अन्धकार में डूब जाता । मेरा शारीरिक रूप से अस्वस्थ हो जाना शायद इसका संकेत है कि यह धक्का मेरे शरीर ने ही झेल लिया था । "निशा निमन्त्रण" "एकान्त संगीत" काल में आघात मेरे मन पर पड़ा था, मेरे तन को कुछ भी न हुआ था।"[1]

अपने प्रेम की असफलता का स्पष्टीकरण देते हुए कहते हैं –

"आइरिश कवि डब्ल्यू.बी. ईट्स कई वर्षों तक गाडमान की मनुहार करने के बाद भी जब उसका मन जीतने में सफल न हुए थे तो उन्होंने लिखा था, इससे अच्छा होता मैं किसी पत्थर की मूरत को प्यार करता । आइरिस के सम्बन्ध में मैं भी शायद यही कहना चाहता । लेकिन मुझ से जो भूल हुई थी उसका पश्चाताप मुझे अधिक समय तक न रहा । क्यों? प्रेम की मेरी कहानी जिस प्रकार खत्म हुई थी और उसने जो मूल्य मुझ से उगाहा था शायद, वही इसका उत्तर है । ..... यह बड़ी कीमत न चुकाई होती तो मेरी गलती मुझे बहुत दिन सालती ।"[2]

जीवन के प्रणय-संघर्ष और असन्तोष तथा विषाद से टूटे हुए व्यक्ति को इन गीतों के माध्यम से जीने का संदेश मिलता है । बच्चन ने अपने वेदना के गीतों को अनन्त जीवन में देखा, यद्यपि आलोचकों ने उन्हें कहा कि बच्चन निराशावादी हैं, पलायनवादी है, व्यक्तिवादी है, मृत्यु का गायक है, परन्तु हम यह कह सकते हैं कि यह सब उनके गीतों में होते हुए भी उनके गीत मनुष्य को स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा देते हैं । "आकुल अन्तर" में संघर्ष इसका साक्षी है –

---

1. डा० बच्चन, नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 202.
2. वही, पृ० 226.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"जब कि ध्येय बन चुका,
जब कि उठ चरण चुका,
स्वर्ग भी समीप देख मत ठहर, मत ठहर।

अथवा

"घोषणा करे हृदय गायक,
जीवन है जीने के लायक,
जीवन कुछ करने के लायक,
जीवन है लड़ने के लायक,"[2]

"निशा निमन्त्रण", "एकान्त संगीत", "आकुल अन्तर" के गीतों में भिन्नता नहीं है। इन तीनों में अनुभूति की एक ही धारा प्रवाहित हो रही है और यह तीनों मिलकर एक अखण्ड काव्य है। जो यथार्थ जीवनानुभूति "निशा निमन्त्रण" में शुरू हुई थी उसकी परिणति "आकुल अन्तर" में होती है।

सतरंगिनी -

"सतरंगिनी" बच्चन जी के 1942 से 1944 तक के लिखे हुए गीतों का सुन्दर संकलन है। कुछ आलोचकों का मत था कि बच्चन जी की रचनाओं में व्यक्तिगत सुख दुख की अनुभूतियाँ अधिक अभिव्यक्त हुई हैं। यह ठीक है कि बच्चन ने अपने प्रारम्भिक गीतों में विषयों का चयन अपने चारों ओर के जनजीवन से किया था। उन्हीं को प्रतीक माना था। कवि अपनी रचना का विषय अपने परिवेश से ही ग्रहण करता है।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, आकुल अन्तर, पृ0 297.
2. वही, पृ0 296.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"सतरंगिनी" कवि का निजी अनुभूतिपरक काव्य है । जो अनुभूतियाँ बच्चन की वैयक्तिक थीं जिन्होंने उन्हें उद्वेलित किया, वही उन्होंने अपने पाठकों की अनुभव कीं । बच्चन मानव को केन्द्र बनाकर उसके सुख दुख, हर्ष, विषाद, उत्थान पतन को ही अपने काव्य में अंकित करने की चेष्टा करते हैं । बच्चन जी के काव्य की लोकप्रियता का मुख्य कारण उनकी अनुभूति की एकता है । यही उनके काव्य की सम्प्रेषणीयता को बढ़ाता है ।

सतरंगिनी में सात रंग हैं और प्रत्येक रंग में सात गीत हैं, "इन्द्र धनुष" की छाया में" प्रथम विषय प्रवेश गीत है । इन गीतों में कवि ने सुख, उल्लास, आनन्द, आशा, उमंग का ही चित्र प्रस्तुत किया है । कवि की इस रचना से पूर्व तीन रचनाएं हैं "निशा निमन्त्रण", "एकान्त संगीत" और "आकुल अन्तर" । इन रचनाओं में कवि की गहन वेदना, आन्तरिक पीड़ा और एकाकीपन का स्वर उभरा है । अन्तरिक्ष में आकुल आतुर होकर कवि का मन पथ भूले हुए पक्षी की तरह भटक रहा था लेकिन कवि दुर्दम वेदनामय परिस्थितियों को अधिक दिनों तक संजोकर नहीं रख सके । यह है भी कठिन । एक सीमा तक ही मनुष्य इससे चिपका रह सकता है । जीवन को सहज बनाने के लिये दुख और कुण्ठा जो जीवन की अत्यावश्यक प्रवृत्तियां हैं उनसे कवि का दूर रहने में ही कल्याण है । कवि स्वयं लिखते हैं – "मुझे अंधड़ और आंधियों ने बहुत झिंझोड़ा, बहुत तोड़ा था, पर वह मुझे झुका नहीं सकीं थीं, मेरे अन्दर इस्पात की ऐसी शलाका थी जो मुड़ नहीं सकती थी, इसी ने मुझे सम्भाला, दृढ़स्थिर रखा, बचाया, खिलाया ।"[1]

"सतरंगिनी" की रचना के पीछे कवि की प्रबल जिजीविषा है । आंधी अंधड़ में भी उजड़े हुए नीड़ का पुनः निर्माण करने की इच्छा इतनी प्रबल है वह हर झंझावात का सामना करने में भी नहीं हिचकता । देखिये इन

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, सतरंगिनी, पृ० 307.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पंक्तियों में –

"नाश के दुख से कभी दबता नहीं निर्माण का सुख,
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नव गान फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर"– [1] । निर्माण ।

यह संसार एक मुसाफिर-खाना है । यहाँ मुसाफिर आता है और कुछ दिन सुख दुख की आँख मिचौनी खेलकर चला जाता है और फिर दूसरा वही स्थान ग्रहण कर लेता है । यही क्रम आदि काल से चला आ रहा है । समय गतिवान है । मुसाफिर की महत्ता इसी में है कि वह पथ के संकटों को सहता हुआ भी गतिवान रहता है । ध्वंस के ऊपर सृजन करता हुआ आगे ही आगे बढ़ता रहता है । और यह नियति का भी नियम है कि नाश के बाद निर्माण अवश्यम्भावी है । इसी तरह जीवन पर छाये घने विषाद पर कवि ने विजय पा ली है । यही विजय का स्वर सतरंगिनी की कविताओं में फूट पड़ा है । यह पंक्तियाँ इसकी साक्षी हैं –

"मृत्यु पथ पर भी बढ़ूँगा मोद से यह गुनगुनाता
अन्त यौवन, अन्त जीवन का, मरण क्या
दो नयन मेरी प्रतीक्षा में खड़े हैं ।"[2]

– । विश्वास ।

यही है व्यक्ति की नवजीवन की और नव यौवन की नयी आशा और नया विश्वास । सम-सामयिक संघर्षों का सामने करते हुए "बच्चन" जी का मनोबल इन पंक्तियों में द्रष्टव्य है –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, सतरंगिनी, पृ0 349.
2. वही, 365.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"प्रलय का स्व सर्जा बांधे प्रलय की रात है छाई
विनाशक शक्तियों की इस तिमिर के बीच बन आई,
मगर निर्माण में आगा बढ़ाये कौन बैठा है ।
अंधेरी रात में दीपक जलाये कौन बैठा है ।"[1]

-- ।जुगुनू ।

× × × ×
"जो बने हैं वे उजड़ते हैं प्रकृति के यह नियम है
पर किसी उजड़े हुए को फिर बनाना कब मना है ?
है अंधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है ?[2]

—।अंधेरे का दीपक ।

बच्चन जी ने लिखा है कि —

"सतरंगिनी" की योजना बनी । सच कहूं तो इसकी कल्पना मेरे मन में पांच वर्ष पूर्व उठी थी । उतनी कल्पना नहीं जितनी यथार्थ की स्वाभाविक परिणति लगती-सी । अंधेरा सब दिन छाया नहीं रह सकता । जो अन्धकार से लड़ता है वह एक दिन प्रकाश देखता है । प्रकाश को मैंने देख लिया था । जब प्रकाश बादलों के आंचलों को पार करता है तो इन्द्रधनुष होता है । अपनी अधूरी शिक्षा दीक्षा पूर्ण कर लेने के साथ ही ज्ञान प्रकाश और आदित्य प्रकाश मेरे जीवन में आ गये थे । अब तो मेरी आंखें इन्द्रधनुष की प्रतीक्षा कर सकती थीं । और जब एक दिन आहरित से मेरा परिचय हुआ तो मुझे लगा कि वह प्रत्याशित इन्द्र धनुष या इन्द्रधनुषी ।जैसा कि "दिनकर" ने उसके लिये अपनी "उर्वशी" में प्रयोग किया है ।।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, सतरंगिनी, पृ0 364.
2. वही, पृ0 340.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेरे जीवनमें उदय हो गई है । क्या आप जानते हैं कि आइरिस (Iris) के अर्थ अंग्रेजी में इंद्रधनुषी (Rainbow) होते हैं ? इंद्रधनुष-सतरंगा, इन्द्र धनुषी-सतरंगिनी । मुहावरा कल्पना की उड़ान का है । पर जीवन जो उड़ान लेता है उसे टेककर कल्पना अपने को पंगु समझती है । मैंने दो-ढाई वर्ष आइरिस को अपने जीवन में पाने की कल्पना की थी और जीवन ने तेजी को मेरी बाहों में डाल दिया था । आइरिस मेरे जीवन में आ जाती तो "सतरंगिनी" का क्या रूप होता, कौन बताये । मेरी कविता जीवन की अनुगामिनी बनकर - जैसा उसे सदा रहना ही चाहिये - "सतरंगिनी" को जो रूप दे सकी है, वह आपके सामने है ।"[1]

"सतरंगिनी" के गीतों का सृजन कवि के जीवन की निर्मम अनुभूतियों का परिणाम है । इसके गीतों से केवल हमारा मनोरंजन ही होता है ऐसी बात नहीं है । कवि ने जीवन की कविता को गति प्रदान की और उसमें प्राण फूंक दिये । "सतरंगिनी" का प्रत्येक गीत इसका परिचायक है । कवि संसार का रहस्य जानना चाहता है और वह अपनी इस उत्कट इच्छा को रोक नहीं पाता -

"उदय शिखर से अरुण-शिखा की
उठी जागरण की वाणी ।
सुप्ति के उपवन से कूकी
कुहु-कुहु कोयल मस्तानी,
कातर स्वर से बुलबुल बोली
अस्ताचल की घाटी में,
प्राण पपीहे का पागल स्वर
चीर गया पत्थर पानी,
एक विहंगम भरे हृदय से
करता बैठा स्वर साधन,

---

1. डा० बच्चन, नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 306-307 पाँचवाँ संस्करण, 1980.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इन्द्रधनुष की छाया में ।"[1]

– इन्द्रधनुष की छाया में।

इन्द्रधनुष की छाया में स्वर साधन करने वाला मयूर है जो कवि के भावी जीवन का प्रतीक है । जिस प्रकार काले घने बादलों के अन्धकार को हटाकर इन्द्रधनुष स्वर्णिम प्रकाश फैलाता है उसी प्रकार जीवन पर छाई हुई काली विषादमयी रात्रि को हटाकर सतरंगिनी के गीत आनन्द और उल्लास का प्रकाश फैलाते हैं । "मयूर" को कवि ने इन गीतों में सामन्जस्य की स्वर साधना का प्रतीक माना है । यहाँ सामन्जस्य का अभिप्राय है जीवन में आशा-निराशा, उत्थान-पतन और हर्ष-विषाद में सामन्जस्य पैदा करना । अतः में बच्चन की रचनाओं के प्रतीक समझना अत्यन्त आवश्यक है । "सतरंगिनी" एक प्रतीकात्मक गीत संकलन है । बच्चन जी ने अपनी "सतरंगिनी" की भूमिका में आये हुए प्रतीकों को स्पष्ट करने का प्रयास भी किया है ।

बच्चन जी ने आइरिस को आकाश-गंगा की भाँति बताते हुए लिखा है – "शिकायत है मुझसे आकाश-गंगा को । रोना तो यही है कि वह धरती ही की गंगा थी, जिसने समाज के किसी अत्याचार से, अपने किसी उग्र आदर्शवादी संस्कार से, यथार्थ के किसी पलायन से अथवा किसी अज्ञात मनोविकार से अपने को आकाश-गंगा समझ लिया था । वह मुझसे दूर ही दूर रही और इस कामना को भीतर ही भीतर ढोती रही कि मैं उसे देख पाऊं । उसने कभी अपने आपको स्पष्टतः व्यक्त नहीं किया और अन्दर ही अन्दर चाहती रही कि मैं उसके अन्तर की मौन पुकार सुन लूं, उसने कभी मेरे निकट आने का संकेत नहीं किया और बराबर यह कामना करती रही कि मैं उसे बुलाऊं – "इसीलिये खड़ी रही कि तुम मुझे पुकार लो।"

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, सतरंगिनी, पृ० 327.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और न मैंने उसकी ओर आंख उठाकर देखा, न मैंने उसे सुना, न मैंने उसे बुलाया । सच तो यह है कि मैंने निश्चित रूप से जाना भी नहीं कि वह इस तरह मेरी प्रतीक्षा में है – प्रतीक्षा में रहती आई है । पर जानना मनोवैज्ञानिक साक्षी है, अनजाने भी होता है ।"[1]

और फिर "चल चुका पुल एक जीवन" तब पंत जी से मिलने एक अधेड़ महिला आई और उसने उनसे अपने मन की सब बात कह दी । पंत जी ने बच्चन जी को बताया कि महिला ने अपने हृदय की बात इन शब्दों में कही है – " मेरा जीवन एक ट्रेजडी है । वह तो मैं जी भोग चुकी । वह कहाँ से शुरू हुई इसे मैं जानती हूं । मैंने सोचा था इस पर मुंह नहीं खोलूंगी । पर अब मैंने इस ट्रेजडी का किसी रूप में निराकरण करने का निश्चय कर लिया है । फिर भी मैं चाहती थी, अपनी ट्रेजडी किसी से कहकर अपना दिल हल्का कर लूं । बच्चन से मैं अब भी कुछ नहीं कहना चाहती ।..... मेरे जीवन को ट्रेजडी बना देने के लिये बच्चन उत्तरदायी हैं । मेरी आँखों में उनके प्रति जो प्यार था, उसे देखने के लिये उनकी आँखें अंधी थीं । मेरे दिल की आवाज सुनने के लिये उनके कान बहरे थे । दुनिया-भर को उन्होंने पुकार-पुकार कर कविता सुनाई, मुझे एक बार पुकारने के लिये उनकी जीभ गूंगी थी, उन्होंने जब एकाएक दूसरी जीवन-संगिनी चुन ली, तब मंच से अपने को हटा लेने के सिवा मेरे पास कोई चारा न था । मैं उनके सुखी जीवन में किसी प्रकार का व्याघात नहीं बनना चाहती थी । पर मेरे अन्दर एक घुमड़न होती रही । यह अंधा, बहरा, गूंगा होना जीवन में कितना खतरनाक है । यह कितने दुख दर्द का कारण बन सकता है । मैंने जीवन की ट्रेजडी के इस मूल को कहीं से कुछ काटने का निश्चय किया है । मैं अपने अन्तिम दिन अंधे, बहरों, गूंगों के रताइलम अनाथालय । में बिताना चाहती हूं, उनकी सेवा में, उस आदमी के

---

1. डा० बच्चन, नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 221, पांचवां संस्करण, 1980.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रायश्चित के लिये, जिसे मैंने प्यार किया था । उसे मैं नहीं पा सकी पर अंधे, बहरे, गूंगों में शायद उनकी कोई छाया मुझे मिल जाये ।

आत्म-स्वीकृत वेदना ईश्वरीय वरदान है । वह कभी खरीदी नहीं जा सकती, यह पंक्तियां इसकी साक्षी हैं —

"वेदना से ज्वलित उडुगण,
गीतमय, गतिमय, समीरण,
उठ, बरस मिटते सजल घन,
वेदना होती न तो यह सृष्टि जाती ठहर
नभ में वेदना की लहर ।"[1]

बच्चन जी लिखते हैं — "और क्या मैं आकाश गंगा को भूल गया था ? मेरा व्यक्ति भूल गया हो, मेरी कवि नहीं भूला था । क्या एकान्त संगीत की इस पंक्ति — "नभ में वेदना की लहर" में मेरा अवचेतन उसी नभ-गंगा की वेदनामयी लहरों को नहीं स्मरण कर रहा था ? मेरी आंखें अंधी हों, पर क्या मेरे अवचेतन ने "सतरंगिनी" में यह नहीं देख लिया था — "दो नयन मेरी प्रतीक्षा में खड़े हैं" — काव्य के बहुदिशा-संकेतों को एक-दिशा सीमित मान लेना आलोचना की कितनी भयंकर भूल है । मैं बहरा-गूंगा होऊं, पर क्या मेरे अवचेतन ने उस आकाश-गंगा के हृदय की धड़कनें नहीं सुनी थीं और क्या उसके भी गूंगेपन को वाणी नहीं दी थी । "प्रणय-पत्रिका" में "मधुर प्रतीक्षा ही जब इतनी प्रिय, तुम आते तब क्या होता" ? जो दस बरस से घर में बैठा हो उसे भी ऐसी पंक्तियां सम्बोधित की जाती हैं ? इतना ही नहीं, क्या मेरे अवचेतन ने अंत न होने वाली प्रतीक्षा की उस कटुता को भी देख

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, एकान्त संगीत, पृ0 247.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लिया था जिसका स्पष्ट संकेत पंत जी के पत्र के उद्धरण में है । पंत जी से इस प्रसंग की भनक पाने से पूर्व प्रकाशित "करती प्रतिमानों की आवाज" की "प्रतीक्षा के क्षीर" पर शीर्षक कविता से एक उद्धरण देना चाहूंगा —

ओह !
मेरी शिरा - शिरा ने यह अनुभव कर लिया है
कि प्रतीक्षा
कटु—तिक्त विषमयी भी हो सकती है ।
हां । .....
मधुर प्रतीक्षा ही जब इतनी,
प्रिय, तुम आते तब क्या होता ।
किस मासूम की यह पंक्ति.....इ है ?

अवचेतन में झांकना जिसके लिये कवितायें एक झरोखा-सा प्रस्तुत करती हैं — कितना विस्मयकारी अनुभव हो सकता है । इस प्रसंग पर — और टिकना मेरे लिये कष्टकर है । आत्म-स्वीकृत वेदना का परिहार नहीं है । वह न अपने को किसी को जताना चाहती है, न उसे किसी की संवेदना की आवश्यकता है । वह केवल रिटायरमेंट चाहती है, बिट्ट्रायल— सबसे खिंचकर अज्ञात, हो जाना । वह हो गई है । वह मुझसे कुछ नहीं सुनना चाहती, सुन भी नहीं सकती । पर उसके प्रति जिन लोगों को संवेदना जागी हो उनकी सान्त्वना के लिये यह कहना चाहूंगा कि यदि आज मैं उस मासूम को सम्बोधित कर सकता तो उसके समक्ष अपनी आज से लगभग तीस वर्ष पूर्व लिखित ये पंक्तियां रखता —

अमर देवताओं से अन्तर,
मथा गया तेरा निशि-वासर

।यह तुझ पर अन्याय नहीं था ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्योंकि यही था सबसे बढ़कर
तेरी छाती का सम्मान ।[1]

यद्यपि कवि विगतकालीन परिस्थितियों से मुक्त होने का प्रयास करता है परन्तु अवचेतन में अतीत की स्मृतियाँ विद्यमान रहती हैं । "सतरंगिनी" में कवि ने अतीत के द्वंद्व से मुक्त होने का प्रयास किया है । वह चाहता है कि विरह चिन्तन के कुहासे उसके हृदय पटल से हट जायें। इसी पंक्ति में स्पष्ट है - "बीत गई सो बात गई"! "नीड़ का निर्माण फिर - फिर, नेह का आह्वान फिर-फिर"[2] में यह भाव उपस्थित है । तभी कवि के दूसरे विवाह की योजना बनने लगती है । वह सतरंगिनी की भूमिका में लिखते हैं -

"सतरंगिनी" मेरे काव्य जीवन में एक नया मोड़ उपस्थित करती है । पर उस मोड़ के प्रति मेरे मन में कोई अपराध-भावना काम कर रही है, इसे मैं नहीं मानता । "सतरंगिनी के गीतों के द्वारा मैं "निशा-निमन्त्रण" "एकान्त संगीत" और आकुल अन्तर की अंधकार और अवसाद-पूर्ण परिस्थितियों से ऊपर उठा हूं । अपराध तो होता उस अवसाद-विषाद-निराशा में डूबे रहना । "आकुल अन्तर" , की एक पंक्ति इस समय मुझे याद हो आई है - "तू एकाकी तो गुनहगार," अपने दुःख-शोक की अभिव्यक्ति तक तो ठीक और शायद स्वाभाविक भी है, पर यदि मैं उन्हें दुलारने लगता, जिसका छलावा भी था, तो मेरी भावना आत्म-दया (सेल्फ पिटी) में बदल जाती और आत्म-दया को मैं सबसे बड़ा अपराध मानता हूं ।

---

1. नीड़ का निर्माण फिर, पृ0 225.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, सतरंगिनी, पृ0 343.
3. वही, पृ0 349.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"लेकिन एकाकी से एकाकी घड़ियों में
मैं कभी नहीं बन कर इतना मोहताज रहा"[1]

--आरती और अंगारे ।

"सतरंगिनी" के गीतों ने न केवल कवि को सम्भाला ही बल्कि उन्हें प्रोत्साहन भी दिया । कवि इस संकलन के गीतों को सबसे अधिक स्वस्थ गीत मानते हैं । सतरंगिनी सन्देह अंधकार के ऊपर प्रकाश, विध्वंस के ऊपर निर्माण, निराशा के ऊपर आशा और मरण के ऊपर जीवन की जीत का गीत है ।[2] "सतरंगिनी" एक ऐसी रचना है जिसमें कवि अपने अवसाद के क्षणों से हटकर अपने उल्लास की विजय का उद्घोष करता है । "जुगनू" और "निर्माण" आदि कविताएँ इसकी साक्षी हैं ।

सर्वप्रथम तेजी से कवि का परिचय बरेली में प्रकाश के घर पर हुआ । मिस तेजी, फ्रेहवन्ट कालेज, लाहौर में साइकोलोजी की अध्यापिका थीं । बड़े दिनों के अवकाश में प्रेमा के साथ बरेली आई थीं । जब दोनों का परिचय कराया गया उसी समय बच्चन जी को अपनी बारह वर्ष पूर्व लिखी गई कविता याद आ गई —

"इसी लिये सौन्दर्य देखकर
शंका यह उठती तत्काल,
कहीं जाने को तो मेरे
नहीं बिछाया जाता जाल ।"

सबके आग्रह पर कवि ने बड़ी मार्मिक रचना का काव्य पाठ किया । यह रचना "आकुल अन्तर" में निहित है । उसकी पंक्तियाँ ही कवि विह्वलता की साक्षी हैं —

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1 सतरंगिनी, पृ० 311.
2. वही, पृ० 12.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"क्या करूं संवेदना लेकर तुम्हारी ?
क्या करूं ?
मैं दुखी जब जब हुआ
संवेदना तुमने दिखाई,
मैं कृतज्ञ हुआ हमेशा
रीति दोनों ने निभाई,
किन्तु इस आभार का अब
हो उठा है बोझ भारी,
- - - - - -
एक भी उच्छ्वास मेरा
हो सका किस दिन तुम्हारा ?
उस नयन से बह सकी कब
इस नयन की अश्रुधारा?
सत्य को मूंदे रहेगी
शब्द की कब तक पिटारी ?
क्या करूं संवेदना लेकर तुम्हारी"[1]

कवि मुख से अभी यह पंक्तियां -"उस नयन से बह सकी कब इस नयन की अश्रुधारा" पूरी भी न हुई थी कि मिस पुरी की आंखों से अविरल अश्रुधार बहने लगी । सब यह देखकर हतप्रभ हो गये और नववर्ष का नव प्रभात नव उल्लास और नव उमंग के साथ उदित हुआ । बस कवि के जीवन में यहां से प्रणय-प्रगीतों का समारम्भ हुआ । बच्चन जी अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबन्धकार राबर्ट लुई स्टीवेन्सन के एक लेख का कुछ अंश अपनी आत्मकथा में उद्धृत करते हुए लिखते हैं –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 269.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"Love should run out to meet love with open arms. Indeed, the ideal story is that of two people who go into love step for step with a fluttered consciousness, like a pair of children venturing together into a dark room. From the first moment when they see each other, with a pong of curiosity, through stage after stage of growing pleasure and embarrassment. They can read the expression of their own trouble in each other's eyes. There is no declaration properly so-called; the feeling is so plainly shared, that as soon as the man knows what is in his own heart, he is sure of what it is in the woman's."[1]

जहाँ समर्पित भाव होता है वहाँ जाति, धर्म, परिवेश, भाषा, विधा आदि की जानकारी की कोई भी आवश्यकता नहीं रहती। तेजी बूरी रावलपिंडी निवासी सरदार खजान सिंह की चौथी और सबसे छोटी पुत्री थीं। दुर्भाग्य से जब वह तीन मास की थीं तभी इनकी माता का देहावसान हो गया। मातृ-ममता से वंचित होने पर भी उनके हृदय में मातृ हृदय का निवास था। तेजी की सगाई सरदार जी ने अपने दोस्त के लड़के से कर दी थी। लेकिन कुछ समय बाद उन दोनों के सम्बन्धों में कुछ तनाव की स्थिति आ गई और इसके परिणाम-स्वरूप तेजी के मन में इसी प्रकार की निराशापूर्ण स्थिति थी जिस प्रकार की बच्चन जी के मन में आइरिस प्रसंग के अलग होने में थी। दैवी विधान से दोनों का अपने बालीपन से एक दूसरे की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक था। नियति भी बड़ी प्रबल है। सब रिश्ते नातों की परवाह किये बिना ही वह बच्चन जी की जीवन संगिनी बनने का निश्चय कर चुकी थीं।

---

1. नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 238.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बचपन से ही बच्चन जी का झुकाव नारी की ओर रहा उन्होंने लिखा भी है — "नारी मेरी सात वर्ष की अवस्था से ही मेरे जीवन में आने लगी थी । परन्तु यह तो पैंतीस वर्ष की आयु में ही सम्भव हुआ कि जो नारी मेरे समक्ष प्रकट हुई उसे मैं एक साथ देवी ! माँ! सहचरी ! प्राण ! कह सका । पंत जी की यह पंक्ति शायद शैली की "एपीसाइकिडियन" की इस पंक्ति से प्रेरित है — Spouse! Sister! Angel! Pilot of the fate. श्यामा को मैंने देवी तो नहीं पर परी अवश्य समझा था । उसे वृथ-परी कह भी चुका हूँ । और माँ का उसका रूप मैंने उसके जीवन के अन्तिम दिन देखा था । साहचर्य मुझे उसका ऐसे आंसुओं की बाढ़ और उच्छ्वासों के बवंडर के बीच मिला था कि उनके आतंक से अपनी-अपनी रक्षा करने में निरत हम दोनों को एक दूसरे के अंग संग, आकर्ष-स्पर्श का एहसास शायद ही कभी हुआ हो । श्यामा में छिपी देवी को मैंने मृत्यु शय्या पर ही पहचाना —

"जब तुझे पहचान पाया,
देवता को जान पाया,
सींच तुझ को ले गया तब काल का अज्ञान ।
यह तेरा करुण अवसान ।

और उसके प्राणों से प्राणों को मिलाने का पूर्ण अवसर शायद ही कभी आया —

"प्राण प्राणों से सके मिल
किस तरह दीवार है तन । [1]

कवि ने जीवन में तेजी के आने पर पहली बार एहसास किया कि

---

1. डा० बच्चन, नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 250 पांचवां संस्करण, 1980.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"उनमें देवी की दिव्यता, माँ की ममता, सहचरी की सद्भावना, और प्राणाधार की प्राणदायिनी धारा का मैंने एक साथ अनुभव किया। और ये मुझे प्राप्त हुई थीं न मेरी खोज से, न मेरी साधना से, न मेरे अधिकारी होने से, बल्कि देव के रहस्यपूर्ण विधान से —

"कर परिश्रम कौन तुमको
आज तक अपना सका है
खोजकर कोई तुम्हारा
कब पता भी पा सका है
देवताओं का अनिश्चित
यदि नहीं वरदान तुम हो
कौन तुम हो ?"[1]

तेजी ने बच्चन में क्या अच्छाई पाई ? यह जानने के लिये कवि ने यह पंक्तियाँ उद्धृत की —

"क्या समझ कर किन्तु, धर ली
एक पागल ज्वाल तुमने,
डाल दी मेरे गले में,
आँसुओं की माल तुमने।"[2]

लेकिन तेजी ने आकर उनके जीवन में प्रसन्नता ही प्रसन्नता भर दी थी। मृत्यु पर मानों जीवन की घोषणा कर दी थी। कवि की यह पंक्तियां इसकी साक्षी हैं —

---

1. डा० बच्चन, नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 251 पांचवां संस्करण, 1980.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 357।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"तुम किसी बुझती चिता की
जो लुकाठी खींच लाती
हो, उसी से ब्याह-मंडप,
के तले दीपक जलाती,
मृत्यु पर फिर-फिर विजय की
यदि नहीं दृढ़ आन तुम हो,
कौन तुम हो ?"[1]

हलाहल -

बच्चन जी के मधुकाव्य की परिणति "हलाहल" में होती है। इस काव्य से ज्ञात होता है कि बच्चन जी बहिर्मुखी न होकर अन्तर्मुखी होने का प्रयास करते हैं। "हलाहल" के मर्म और अस्तित्व को समझने के लिये "हलाहल"को अवश्य पढ़ना चाहिये। हलाहल" की यह पंक्तियाँ इसकी साक्षी हैं -

"मरण था अब के अन्दर व्याप्त हुआ निर्भय तो विष निस्तत्व स्वयं हो जाने को है सिद्ध हलाहल मेरा अपनत्व।"[2]

"हलाहल" में क्रूर नियति-चक्र से व्यक्ति को जूझने की तीव्र प्रेरणा मिलती है। दु:ख में भी व्यक्ति सुखानुभूति करता है और मानवीय शक्ति अर्जित करता है। बच्चन जी ने अपनी आत्मकथा "नीड़ का निर्माण फिर" में लिखा है - "मैंने स्वान्त: सुखाय कविताएं लिखीं थीं और अब उन्हें

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 354.
2. वही, पृ0 400.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"स्वान्तस्तम: शान्तये" सुना रहा था । तुलसी के "स्वान्त: सुखाय" ने बहुत बार लोगों का ध्यान आकर्षित किया है और तरह-तरह से उसकी व्याख्या की गई है । कभी-कभी तो ऐसे संकुचित अर्थ में कि आज "स्वान्त: सुखाय" लिखना जैसे कोई अपराध हो । फिर भी तुलसी "स्वांत: सुखाय" लिखकर "बहुजनहिताय" लिख गये । यदि उनका तात्पर्य केवल यह होता कि उन्होंने जो लिखा वह अपनी आंतरिक प्रेरणा से - किसी के आदेश पर नहीं, किसी को प्रसन्न करने के लिये नहीं, धन-कीर्ति कमाने के ध्येय से नहीं- जैसा कि उन दिनों प्राकृतजन- गुन गाने वाे करते होंगे- केवल अपनी आत्मा की पुकार पर, केवल आत्माभिव्यक्ति की विवशता से, तो भी किसी भी युग में कवि कर्म के लिये वे एक स्वाभिमान पूर्ण उदाहरण उपस्थित कर जाते । पर मानस को समाप्त करते समय अपने लेखन का उद्देश्य "स्वान्तस्तम: शान्तये" बताकर तो उन्होंने मानो कविता और कला के आदर्श अथवा लक्ष्य को भी परिभाषित कर दिया है "तम:" यहां प्रतीक है उन सारे विकारों का - "विकार" मनोवैज्ञानिक अर्थ में - जो काव्य अथवा कला में रूपान्तरित हो मन को शान्त करते हैं ।

प्रश्न उठाया जा सकता है कि तुलसी ने यदि स्वान्त-तम: शान्त करने के लिये सृजन किया था तो उनसे युग तम कैसे शान्त हो सका । मेरा उत्तर यह है कि तुलसी इतने विशाल हृदय थे कि उनके सारे युग का तम उनके अन्त: का तम बन गया था । कौन कवि युग अथवा जीवन के कितने विकारों को स्वान्त: में ले जाकर शान्त कर देगा, यह उसके कद पर निर्भर होगा । जिस बात पर मैं जोर देना चाहता हूं वह यह है कि यह प्रक्रिया कवि के अन्तर में ही होनी है, अपनी कला के माध्यम से ही होनी है, चाहे उसके विकार एक दम निजी हों, चाहे युग जीवन व्यापी।"[1]

---

1. डा० बच्चन, नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 36.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवि ने परम्परा से हटकर छायावादी और रहस्यवादी काव्य से कट कर "मधु काव्य" की रचना की । बच्चन के मधु-काव्य का साहित्यिक मूल्य है । "मधुकलश" और "हलाहल" की व्यक्तिपरक अभिव्यंजना के पीछे मनुष्य की नियति का हाथ है । अधिक निराशा में भी कहीं आशा की किरण दिखाई देती है –

"सुरा पीने को भी बाजार
हलाहल पीने को एकान्त
सुरा पीने को सौ मनुहार
हलाहल पीने को मन शान्त
हलाहल पीकर भी यदि साथ
किसी का चाहो, तो नादान,
अकेलापन है पहला घूंट
हलाहल का लो इसको जान ।"[1]

कभी-कभी ईश्वर के प्रति भी मनुष्य की विरक्ति देखने में आती है बच्चन का "सहरों का निमन्त्रण" में वही स्थिति चित्रित हुई है । बच्चन के लिये जहर जरा कुछ शान्त करने का अर्थ है सत्य का साक्षात्कार करना । हलाहल जीवन का कटु सत्य है । लेकिन कटु सत्य को प्रिय बनाना तथा उसे मधुरता प्रदान करना अनिवार्य है । यह भी सत्य है कि अमृत हलाहल में निहित है और हलाहल अमृत में । कवि की यह पंक्तियां इसकी साक्षी हैं –

"हलाहल और अमिय मद एक,
एक रस के ही तीनों नाम,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 384.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहीं पर लगता है रतनार,
कहीं पर श्वेत कहीं पर श्याम।"[1]

मनुष्य को जीवन क्यों मिला है ? इस पर कवि अपने विचार प्रकट करते हैं –

"न जीवन है रोने का ठौर
न जीवन दुख का होने का ठौर,
न होने का अनुरक्त विरक्त,
अगर देखो कुछ करके गौर ....."[2]

नश्वर संसार और क्षणभंगुर जीवन दोनों ही मनुष्य की स्वतन्त्रता में बाधक है। "हलाहल" कविता में कवि इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि कोई भी सिद्धान्त अमूर्त नहीं हो सकता। सुख की प्राप्ति की खोज के लिये मनुष्य अमरत्व तक का बलिदान कर देता है। "हलाहल" की कविताओं में भावनाओं की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति नहीं मिलती, जो "मधुबाला", "मधुशाला" और "मधुकलश" की कविताओं में निहित है। उनकी रचनाओं के पीछे सदा यह कल्पना रही है कि सभी की अनुभूति कवि की अनुभूति के समान ही होती है। अपने और दूसरों के भी सुख-दुख, हर्ष, विषाद को कवि ने अपने हृदय के अन्दर देखा। दूसरों के हृदयों को देखने का कवि के पास एक ही साधन है वह है अपना हृदय।

"बच्चन की कविता और जीवन सम्बन्धी अवधारणाएं जड़ और निश्चल न होकर फिर परिवर्तनशील रही हैं। इस परिवर्तन में उनके काव्य के क्रम विकास की सूक्ष्म रेखाओं को स्थापित होते देखा जा सकता है।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 396.
2. वहीं, 388.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मिलन यामिनी –

बच्चन के प्रणय प्रगीत "मिलन यामिनी", "प्रणय पत्रिका" और "धार के इधर-उधर" में निहित हैं । यह गीत कवि के दूसरे विवाह की पृष्ठ-भूमि से जुड़े हुए है । इन गीतों में कवि के परिवर्तित जीवन की प्रणयानुभूति के विविध पक्षों की अभिव्यंजना है । कवि ने गीतों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है । उन्होंने अपने दाम्पत्य जीवन के प्रारम्भ में जो कुछ भी अनुभव किया है उसी का वर्णन "मिलन यामिनी" में किया है ।

बच्चन जी लिखते हैं कि "योनाकर्षण से लैंगिकाकर्षण – ध्यान देंगे कि दोनों में अन्तर है – लैंगिकाकर्षण से आत्म संरक्षण, आत्म संरक्षण से जाति-संरक्षण की यात्रा में ही मनुष्य ने विवाह की संस्था की नींव डाली होगी । इसी प्रकार मनुष्य व्यक्ति जीवन की अवस्था से सामूहिक जीवन की सुरक्षा की ओर गया होगा, और सामूहिक जीवन को व्यवस्थित करने की प्रक्रिया में परिवार की नींव पड़ गई होगी । मानव संस्थाओं को विकृत होते देर नहीं लगती । परिवार का व्यवस्थापक शीघ्र ही उसका रक्षक और स्वामी बन गया होगा । हमारे "पति" शब्द का अर्थ "स्वामी" सर्व विदित है – राष्ट्रपति, सेनापति, सभापति, कुलपति– मुझे किसी संस्कृतज्ञ ने बताया था कि "पति" शब्द जिस मूल धातु से बना है उसके अर्थ रक्षक होते हैं – "पा", से जैसे "पाहि माम्" में । परिवार के विकास क्रम में नारी अपनी शारीरिक अल्प-बलता से,– अबला वह कहलाती है – अथवा सुरक्षा के कारण ही न्यूनबल हो, सुरक्षा से अधिक दुर्बल बनाने वाला कुछ भी नहीं – पुरुष के साथ अपना पद क्रमशः खोती हुई व्यक्ति से वस्तु हो गई होगी – देने –लेने की चीज "कन्यादान" की प्रथा में क्या इसका स्पष्ट संकेत नहीं है ? क्या वह जुए के दांव पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं लगी ? क्या वह बेची खरीदी नहीं गई ?"[1]

परन्तु आज सुधारवादी युग की नारी पुरुष की समकक्षी बनकर उभरी है । तेजी ने जिस साहस का परिचय दिया है उससे यह अनुमान लगा सकते है ।

बच्चन जी का कहना है - " दमित यौनभावनाओं से कुंठाओं का जन्म होता है । योनाकर्षण को अवरुद्ध करने की अपेक्षा लैंगिकाकर्षण को संयमित करना अत्यन्त आवश्यक है ।"[2] सच तो यह है कि बच्चन जी प्रणय के क्षेत्र में कुंठित नहीं रहे । यदि कविता के माध्यम से वह अपनी भावना को व्यक्त न करते तो निसन्देह टूट जाते । इस बीच तेजी वीणा की झंकार की तरह उनके जीवन में आ गई । कवि अपनी "मिलन यामिनी" में अपने दाम्पत्य जीवन के प्रारम्भिक अनुभवों को अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं - "मिलन यामिनी" जो काम कर चुकी है गत जब उसे करना पाता है तो उसके हाथ पाँव फूल जाते हैं ।"[3] ठीक भी है । इसमें सन्देह नहीं कि "मिलन यामिनी" के अधिकांश गीतों मे ऐसी अभिव्यंजना है जो मनुष्य को जीने की प्रेरणा देती है । उनमें पूर्ण आस्था और विश्वास पैदा करते हैं—

"व्यर्थ कोई आग जीवन का नहीं है
व्यर्थ कोई राग जीवन का नहीं है "[4]

× × × ×

"डूबना है व्यर्थ पिछले आँसुओं में,
डूबना है व्यर्थ छिछले आँसुओं में,

---

1. नीड़ का निर्माण फिर, पृ0 264 संस्करण पाँचवाँ, जुलाई, 1980.
2. नीड़ का निर्माण फिर, पृ0 266.
3. वही, पृ0 272.
4. बच्चन रचनावली भाग 2, मिलनयामिनी, पृ0 29.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रात के आंसू बनेंगे प्रात के मोती" [1]

× × × ×

"मैं जलन का आग अपना भोग आया
तब मिलन का यह मधुर संयोग आया
दे चुका हूं इन पलों का मोल पहले
है रूपहली रात, हैं सपने सुनहले ।"[2]

× × × ×

"मैं कलह को प्रीति सिखलाने चला था,
प्रीति ने मेरे हृदय को ही छला था,
बांध दो आशा पुनः मन प्राण में तुम,
बांध दो बिखरे सुरों को गान में तुम ।[3]

"मिलन यामिनी" में जीवन के प्रति अटूट आस्था और संकल्प की दृढ़ता भी कई गीतों और गीतांशों में व्यक्त हुई है –

"काम ऐसा कौन जिसको छोड़ मैं सकता नहीं हूं
कौन ऐसा मुंह कि जिसको मोड़ मैं सकता नहीं हूं?"[4]

इस काव्य संकलन के मध्य-भाग और उत्तर-भाग में जीवन का जीवन्त स्वर है । अदम्य जिजीविषा और दृढ़ विश्वास स्थान-स्थान पर मुखरित हुआ है । यही विश्वास कवि को विदेश में भी आगे बढ़ने की

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, मिलन यामिनी, पृ० 33.
2. वही, पृ० 31.
3. वही, पृ० 29
4. वही, पृ० 54.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और अपने निर्धारित लक्ष्य पर पहुंचने की प्रेरणा देता रहा है । कवि अपने मार्ग में आने वाली जटिल से जटिल परिस्थितियों का सामना भी उसी साहस से करता है —

"मैं रुका हूं हर पांव मुझे विश्वास लिये,
अड़-खाबड़ तम की ठोकर खाते-खाते
इनसे कोई रक्ताभ किरण फूटेगी ही" [1]

कवि को पूर्ण विश्वास है कि अगर पृथ्वी पर प्रेम की भावना व्याप्त न होती तो सृजन और निर्माण भी असम्भव था । यह पंक्तियां इसी लक्ष्य को उद्घाटित करती हैं —

"सजीव है गगन किरण-पुलक भरा,
सजीव गंध से भरी वसुन्धरा,
प्रणय अभय लिये प्रणय कहानियां,
डर-मरा न स्नेह से जिसे मुआ ।"[2]

कवि अपने जीवन के बीते हुए दिनों के अन्धकार को पार कर प्रयाग में पहुंच गया है —

"ठीक है मैंने कभी देखा अंधेरा,
किन्तु अब तो हो गया फिर से सवेरा ।"[3]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 42.
2. वही, पृ0 79.
3. वही, पृ0 34.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रणय पत्रिका –

"प्रणय पत्रिका" में कवि की प्रवासकालीन कवितायें संग्रहीत हैं। यह कवि की प्रवासकालीन अनुभूतियों पर आधारित है जो अतीत के दिन कवि ने अपनी प्रियतमा के साथ गुजारे थे। कवि ने यह स्वीकार भी किया है – "प्रणय-पत्रिका में मैं अनुभूतियों के आधार पर राग के संसार के नैतिक तन्तुओं को पकड़ना, समझना और उन्हें प्रस्थापित करना चाहता था। इसकी मेरे लिये बड़ी आवश्यकता थी, क्योंकि सब प्रकार के तथाकथित धर्मों के प्रति आस्था मेरे अन्दर मिट चुकी थी, किसी प्रकार के दार्शनिक सिद्धान्त को मेरा मन पूर्णतया स्वीकार नहीं करता था और प्रचलित रूढ़ि नैतिकता से तो मुझे घृणा हो गई थी। मेरी कल्पना की "प्रणय-पत्रिका" पूरी नहीं हो सकी। कभी मुझे उसके अधूरी रह जाने का क्षोभ था। अब वह भी मिट चुका है। वास्तव में वह उस समय पूरी हो जाती तो भी अधूरी ही रहती। राग-संसार का तब मेरा ज्ञान अधूरा था। आज भी कैसे कहूं कि वह पूरा है। उसका अंशा-ज्ञान भी किसी अर्थ में मेरा दिशा-निर्देश करता रहा है। अपूर्ण, अपूर्ण के दिशा-निर्देश में अपूर्ण पर ही पहुंचेगा। मनुष्य की यह नियति मैंने स्वीकार कर ली है।"[1]

कवि ने इन रचनाओं की मूल प्रेरणा अपने प्रेम की स्मृति को माना है। केम्ब्रिज में वहां के रहने वालों को "केम्ब्रिजाइटिस" नामक बीमारी हो जाती है। कवि को भी इस "केम्ब्रिजाइटिस" का सामना करना पड़ा। इसमें न नींद आती थी, न भूख ही लगती, न पढ़ने में मन लगता था, और न किसी का साथ ही अच्छा लगता था। ऐसे समय में कवि को राहत पहुंचाती थी केवल उनकी कविता की कल्पना की उड़ान। देखिये इन पंक्तियों में –

---

1. डा० बच्चन, नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 354.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"हर रात तुम्हारे पास चला आता हूं
जब घन अंधियारी तारों से दल धरती पर
आ जाती है,
जब दर-परदा-दीवारों पर भी नींद-नशा
छा जाता है,
तब यन्त्र सदृश अपने बिस्तर से हो बाहर
चुपके-चुपके
हर रात तुम्हारे पास चला आता हूं।
समतल भू-तल बस्ती की पाँतों के पहरे
में सुप्त नगर,
अम्बर को दर्पण दिखलाते, सरवर, सागर,
मधुवन, बंजर,
हिम तरु-मंडित, नंगी पर्वत-माला, मरुथल,
जंगल, दलदल,
सबकी दुर्गमता के ऊपर मुस्काता हूं।
हर रात तुम्हारे पास चला आता हूं।"[1]

बच्चन जी लिखते हैं - "मैंने "नीड़ का निर्माण फिर" में संकेत किया था कि मैं अपनी प्रस्तावित "प्रणय-पत्रिका" के द्वारा राग का एक दर्शन प्रतिपादित करना चाहता था। मेरी वह योजना पूरी नहीं हुई। आज लगता है कि बहुत अच्छा हुआ जो मेरी यह योजना पूरी नहीं हुई। मैं एक बड़ा खतरनाक काम करने जा रहा था। दर्शन कितना ही गम्भीर-सूक्ष्म क्यों न हो, वह जीवन नहीं हो सकता, जीवन का स्थानापन्न नहीं हो सकता। दर्शन के प्रतिपादन में इस बात का बड़ा भय था, सम्भावना

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 108.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तो थी ही कि मेरा सृजन वैचारिक अथवा मानसिक स्तर से होने लगता, अनुभूतियों के अथवा जैविक प्राणों के स्तर के विपरीत । उस स्तर से मैंने कभी नहीं लिखा था, लिखता तो निश्चय ही असफल होता, कम से कम मुझे तो उससे सन्तोष न होता । उसमें बारीकी होती, कला होती, अभिव्यक्ति की सफाई होती, परिष्कार-निखार होता, एक स्वीकृत, मान्यता प्राप्त मानदण्ड से शायद उसे उच्चकोटि की कविता की श्रेणी में मान लिया जाता, ऊंची कक्षाओं के पाठ्यक्रम में रखने योग्य, पर उसमें जिन्दगी का सबूत देने वाली सांसें न होतीं, उसके पदों, उसकी लयों में रक्त दौड़ता हुआ न प्रतीत होता, उसके वाङ्गमय शरीर में जीवन का ताप न महसूस होता- जीवन का स्पन्दन । विदेश पहुंचने पर मेरी जिन मानसिक अथवा भौतिक परिस्थितियों ने मुझे लिखने को विवश किया, उन्होंने और कुछ न किया हो, एक बार फिर मुझे जीवन से जोड़ दिया । मैं जीवन की खुरदुराहट को, यहां तक कि उसके भद्देसपन ।भनिति भदेस । को कला की चिकनाहट पर तरजीह देता हूं, दर्शन की अल्पता, वायवीयता पर तो सौ सौ बार । जीवन का जीवन्त स्वर ही कविता नहीं, तो कविता मुझे बख्शो।"[1]

बच्चन जी ने "प्रणय-पत्रिका" , "विनय पत्रिका" की शैली में लिखी है । "विनय पत्रिका" तुलसीदास जी का भक्ति और वैराग्य का ग्रन्थ है और "प्रणय-पत्रिका" संयोग और वियोग का काव्य है । यह दूर बैठी प्रियतमा के नाम एक संदेश-काव्य के रूप में संकलित किया गया है -

"सो न सकूंगा और न तुझको सोने दूंगा, हे मन-बीने ।
सेज सजा सब दुनिया सोई यह तो कोई तर्क नहीं है,
क्या मुझ में-तुझ में दुनिया में सच कह दे, कुछ फर्क नहीं है,
स्वार्थ- प्रपंचों के दु:स्वप्नों में वह खोई, लेकिन मैं तो

---

1. बच्चन रचनावली भाग 8, पृ0 87.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

खो न सकूंगा और न तुझ को खोने दूंगा, हे मन-बीने।"[1]

आइरिस पर लिखी कविता तथा प्रकाशों पर लिखी कविता भी इसी काव्य संकलन में है —

तुम्हारे नील-झील से नैन, नीर निर्झर-से लहरे केश।"[2]

तथा—

"पाप मेरे वास्ते है नाम लेकर आज भी तुमको बुलाना।"

"उन रुपहली यादगारों के लिए, पर, मैं नहीं आंसू गिराता,
मैं उसी क्षण के लिये रोता कि जिसमें मैं नहीं पूरा समाता
और मैं जिसमें समाता पूर्ण वह बन गीत नभ में गूंजता है,
तुम इसे पढ़ना कभी तो भूलकर मत आंख से मोती ढुलाना।"[3]

नदी में अकेले तैरते हुए हंस को देखकर कवि अपनी प्रियतमा की स्मृति में कह उठता है —

"कौन सरसी को अकेली और सहमी
छोड़ तुम आये यहां हो
कुछ बताओ।"[4]

घर की याद में निमग्न कवि को हवा के शीतल झोंके ने झकझोर दिया। खिड़की से आये हुए हवा के झोंके ने कवि को गीत लिखने पर मजबूर कर दिया। यह पंक्तियां उनके हृदय की दशा की पुष्टि करती हैं—

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 97.
2. वही, पृ0 115.
3. वही, पृ0 110.
4. वही, पृ0 118.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"अब हेमन्त- अन्त निचराचा
लौट न आ तू, गगन विहारी ।"[1]
"कह रही है पेड़ की हर शाख
अब तुम आ रहे अपने बसेरे ।"[2]

नोरा, जिसको आयरलैंड की सौन्दर्य प्रतियोगिता में पुरस्कार मिला था, पर कवि ने प्रवास की अन्तिम कविता लिखी । इसकी कुछ पंक्तियाँ उद्धृत है —

"सबसे कोमल
आयर-मधुवन की कलिका का
सबसे निर्मल
आयर-सागर के मोती का
सबसे उज्ज्वल
आयर-अम्बर के तारे का
तुम नाम अगर मुझ से पूछो,
भर आह कहूँगा, मैं नोरा ।"[3]

"प्रणय पत्रिका" में शृंगार रस के चित्र स्पष्ट मिलते हैं । भारतीय नारी के जीवन की पिपासा और अटूट विश्वास इसमें निहित है । उदाहरण के लिये इस गीत की कुछ पंक्तियाँ देखिये —

"आज खड़ी हो छत पर तुमने होगा चाँद निहारा,
फूट पड़ी होगी नयनों से सहसा जल की धारा,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 119.
2. वही, पृ0 120.
3. वही, पृ0 115.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसके साथ जुड़ी जीवन की कितनी मधुमय घड़ियाँ
यह घाट नया है, नाव नयी आशा की ।"[1]

अपने पिछले, श्यामा के साथ बिताये हुए, दिनों की याद करके कवि कह उठता है —

"रात आधी, खींच कर मेरी हथेली पर
उंगली से लिखा था 'प्यार' तुमने,
कामना था कुछ हमारे बिस्तरों में और चारों ओर दुनिया
सो रही थी,
तारिकायें ही गगन की जानती है
जो दशा दिल की तुम्हारे हो रही थी,
मैं तुम्हारे पास होकर दूर तुमसे
अध-जगा सा और अध-सोया हुआ था,
रात आधी, खींचकर मेरी हथेली पर,
उंगली से लिखा था "प्यार" तुमने ।"[2]

कवि ने प्रवास के दिनों में अपनी अनुभूति तथा कल्पना को जीवन्त स्वर दिया । वहाँ रहकर यह सृजन का कार्य करना बड़ी तपस्या का काम है । कवि ने लिखा भी है — "मुझे नहीं मालूम कि इससे पूर्व हिन्दी के किसी कवि ने ऐसे वातावरण में बैठ, ऐसी मनःस्थिति में गीत लिखे थे।"[3] प्रवास के दिनों में सृजन परिवेश में लिखे इन गीतों में नवीनता और विशिष्टता का होना स्वाभाविक ही था ।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 107.
2. वही, पृ0 110.
3. वही, पृ0 88.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"धार के इधर उधर" नामक राष्ट्रीय काव्य संकलन में संकलित रचनाओं का सम्बन्ध प्राय: सामयिक परिस्थितियों और घटनाओं से है। इतने वर्ष पुरानी सामयिक संघर्ष पर लिखी हुई रचनायें ऐसी प्रतीत होती हैं मानो आज के ही संघर्षों को संबोधित कर लिखी गई हैं। यह वर्तमान के संघर्षों पर आधारित हैं। अधिकतर रचनायें राष्ट्रीय भावनाओं से सम्बन्धित हैं।

"आरती और अंगारे" नामक काव्य संकलन में कहीं-कहीं कवि के पारिवारिक जीवन की झलक दिखाई देती है। प्रथम पत्नी श्यामा देवी की मृत्यु पर एक श्लेजी लिखी है जो इसी संकलन में है। उदाहरण के लिये उसकी कुछ पंक्तियाँ देखिये –

"श्यामा रानी पड़ी थी रोग की शैया पर,
दो सौ सोलह दिन कठिन कष्ट के थे बीते,
संघर्ष मौत से बचने और बचाने का,
था छिड़ा हुआ, या हम जीतें या वह जीते।

अपने बचपन के दिनों को दुहराते हुए कवि ने लोक जीवन का चित्रण करने का उपक्रम किया है। "लड़कपन के लोरों के भिखारी"[1] ऐसी ही रचना है। "मैं तुम्हें पत्नी समझ पाया कहाँ था, खेल की तुम थीं सहेली"[2] कविता श्यामा जी की स्मृति में लिखी गई थी। कवि ने अपने पिता की जन्मभूमि के प्रति भी अपनी श्रद्धा व्यक्त की है "भटिनपुर को नमस्कार है जहाँ पिता जन्मे थे मेरे।"[3] इसी प्रकार अपने बुजुर्गों के प्रति भी कवि ने अपनी श्रद्धा प्रकट की है। यह रचनायें आत्मकथात्मक हैं।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, आरती और अंगारे, पृ0 217
2. वही, पृ0 219.
3. वही, पृ0 214.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपने एकमात्र भाई श्यामलिंग की मृत्यु पर भी कवि ने केम्ब्रिज में उनकी स्मृति में रचना की । उनकी कुछ पंक्तियां यहां प्रस्तुत है –

"जब कि मैंने देश दुनिया भूल
कविता कामिनी का मर्ज पाला,
तब पसीने की कमाई से तुम्हीं ने
था समूचा घर संभाला,
राग-रस पकते तभी हैं
जबकि फुरसत से उन्हें कोई पकाये,
पर मुझे बेफिक्र तुमने ही
सरल औ" साफ की थी राह मेरी ।
हाय, श्यामलिंग, तुम भाई न थे,
तुम दाहिनी थे बांह मेरी ।
चार बहिनों-भाइयों के बीच
केवल एक मैं बाकी बचा हूं,
काल का उद्देश्य कोई पूर्ण
करने को गया शायद रचा हूं,
और क्या आता मुझे है,
सिर्फ इतको छोड़- तुक से तुक मिलाना
है अभी मुखरित कहां हर एक
सुख की सांत, दुख की आह मेरी ।[1]

इस दुखद घटना ने कवि मन को बहुत प्रभावित किया । कवि ने सदैव जीवन की कठिन और ठोस सत्यताओं से जूझते हुए लिखा है – "पीठ पर धर बोझ अपनी राह नापूं"।[2] कवि का जीवन आराम

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, आरती औरअंगारे, पृ०218.
2. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 229.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करने का अभ्यस्त नहीं था क्योंकि आजीवन उन्होंने अपने सिर पर भार लादा था । कवि कहते हैं "दुख-सुख, शोक, चिन्तायें प्रत्येक मनुष्य के जीवन में आया करती हैं और वह उन्हें झेलता हुआ कुछ टूटता, कुछ बनता है । कलाकार इन्हीं में मानवता के दुख-सुख, शोक चिन्ताओं को देख लेता है । उन्हें कला में बदल लेता है उन्हें झेलने-भोगने की वस्तु से आस्वादन का विषय बना लेता है । कवि ने अपने समस्त जीवन के दुख-सुख को कला के माध्यम से जीवन्त स्वर प्रदान किया ।

"आरती और अंगारे " में कवि ने भारत की गरिमा के गीत गाये हैं । कवि ने उज्जयिनी और खुजराहो के शिल्प को अपनी कविताओं का आधार बनाया है । देखिये इन पंक्तियों में —

"ओ उज्जयिनी के वाङ्-मयी जगवन्दन ।
तुम विक्रम नव रत्नों में थे यह इतिहास पुराना
पर अपने सच्चे राजा को अब जग ने पहचाना
तुम थे वह आदित्य, नवग्रह जिसके फेरे करे"
तुमसे लज्जित शत विक्रम के सिंहासन ।
ओ, उज्जयिनी के वाङ्-मयी जगवन्दन ।"

अथवा

"खजुराहो के निडर कलाधर, अमर शिला में नाम तुम्हारा।"[2]

इस संकलन में बेटों के कवियों और महाभारत के कवियों के प्रति श्रद्धान्जलियां हैं । कालिदास, कविराज जयदेव, पंडितराज जगन्नाथ, चन्द्रवरदायी, विद्यापति, जायसी, तुलसी, सूर, मीरा, केशव, रहीम, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, मीर, गालिब, इकबाल, अंग्रेज

---

1. नीड़ का निर्माण फिर, पृ0 356.
1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 194.
2. वही, पृ0 209.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवि ईट्स आदि कवियों के प्रति भी कवि ने अपने श्रद्धा-सुमन इस संकलन में उकेरे हैं । मूर्ति कला तथा चित्रकला पर भी कवि की रचनायें मिलती हैं । इसलिये यह रचना काव्य और संस्कृति की दृष्टि से ऐतिहासिक मूल्य की है ।

विदेश में कवि के कितने ही तनाव, खिंचाव, हृदय-मनमस्तिष्क मथने वाले क्षण उस स्थान से जुड़े थे जहाँ कवि रहते थे । उनमें कुछ क्षण मात के भी थे और कुछ राहत के भी । तनाव के क्षण तो किसी समय मनुष्य भूल भी जाता है परन्तु जिन क्षणों में कुछ राहत मिली हो, कुछ आराम मिला हो वह कैसे भुलाये जा सकते हैं । कवि के साथ भी यही बात है । वह भी अपने जीवन के उन क्षणों को सदैव याद करते हैं । जब शोध कार्य का भी जोर था और कविता भी मन तथा मस्तिष्क को घेरे हुए थी । उस समय कवि ने अपने मन को दृढ़ कर एक ही दिशा में लगाने का निश्चय किया और वह दिशा थी शोध-कार्य की । लेकिन कविता के उद्गार के विषय में कवि लिखते हैं – "क्या बताना पड़ेगा कि "गर्म लोहा" क्या है ?" ठण्डा लोहा" क्या है ? कविता का "गर्म लोहा" कौरन पीटना होता है । कल्पना की लहरें, भावनाओं का उत्ताप, लयों का लचीलापन ज्यादा देर नहीं ठहरता –

"गर्म लोहा पीट, ठण्डा पीटने का वक्त बहुतेरा पड़ा है ।"[1]

इस संकलन में कवि की कुछ श्रृंगारी रचनायें "प्रणय-पत्रिका" की तरह संकलित हैं । अतीत के बिछे-आगे दिनों की यादें कवि को बेचैन कर देती हैं । उदाहरणार्थ –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 8, पृ0 138.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"मान्कर बहुत एक लट मैं तुम्हारी
लपेटे हुए पोर पर तर्जनी के
पड़ा हूं, बहुत दूर, कि इन आंवरों में
मिले कारयूले मुझे जिन्दगी के,
भंवर में पड़ा-सा हृदय घूमता है,
बदन पर लहर पर लहर चल रही है।
न तुम सो रही हो न मैं सो रहा हूं।
मगर यामिनी बीच में ढल रही है।"[1]

केम्ब्रिज में कवि ने अपने प्रणय की प्रतीक्षा में यह रचना लिखी। विगत प्रणय की स्मृति कितनी प्रतीक्षामयी थी –

"रात की हर सांस करती है प्रतीक्षा – द्वार कोई खटखटायेगा।
और बारम्बार मैं बलिहार उस पर जो न आया,
औ' न आने का समय – दिन ही कभी जिसने बताया,
और आधी जिन्दगी भी कट गई जिसको परखते,
किन्तु उठ पाता नहीं विश्वास मन से – वह कभी चुपचाप आयेगा।
रात की हर सांस करती है प्रतीक्षा– द्वार कोई खटखटायेगा।[2]

"सुख और दुखमा पर ही रीझना बुरा नहीं है, मगर हम उसकी गरिमा भी समझ लें। सस्ते सुख-दुखमा पर रीझना कितना आसान है। आदर्श सुख-दुखमा पर रीझना आसक्त होना नहीं, निडर होना, बलि होना।"[3] उदाहरण के लिये कवि की यह पंक्तियां साक्षी हैं –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 238.
2. वही, पृ0 258.
3. बच्चन रचनावली भाग 8, पृ0 515.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"अधरामृत की उस तह तक मैं पहुंचा, विष को भी वह आया,
और गया सुख को पिछुआता, पीर जहां वह बनकर छाया,
मृत्यु गोद में जीवन अपनी अन्तिम सीमा पर लेटा था,
राग जहां पर, तीव्र अधिकतम है, उसमें आवाज नहीं है,
मैं सुख पर, दुखमा पर रीझा, इसकी मुझको लाज नहीं है।"[1]

कवि परदेश में अपने परिवार से दूर, पत्नी से दूर तथा प्यारे-प्यारे बच्चों से दूर चिन्तातुर बैठे हैं। तेजी जी का बच्चों की कुशलता का पत्र न पहुंचने पर कवि की मनःस्थिति इन पंक्तियों में देखिये –

"लाख देवता तुम हो, किन्तु, पेटना क्या जानोगे ?
नहीं मुझे मालूम कि मेरी
सांसों का यह जो - दो तारा
इसको कस कर झंकृत करने
में कितना है हाथ तुम्हारा
है तो, मेरे एक प्रश्न का
उत्तर दे सकते हो ? पूछूं ?
"मेरे जीवन की वीणा को और अभी कितना तानोगे ?[2]

सच देखा जाये तो "आरती और अंगारे" में कवि का आस्थावादी स्वर गूंज रहा है। मानवता की पूजा ही उसकी आरती है। कवि जीवन की वास्तविकताओं का आदर करता है।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 246.
2. वही, पृ0 248.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निष्कर्ष

बच्चन की रचनाएँ स्वात्मप्रक्षेपण की उत्कृष्ट उदाहृति हैं। स्वात्मप्रक्षेपण को अंग्रेजी में इगोप्रोजेक्शन (Ego Projection) भी कहते हैं। सर्वप्रथम फ्रायड ने 1849 में इस शब्द का प्रयोग किया। गार्डनर लिन्डजे (Gardner Lindzey) के शब्दों में प्रक्षेपण का अर्थ है –

"The projected creations of primitive men resemble the personifications constructed by creative writers; for the latter externalize in the form of separate individuals the opposing instinctual impulses struggling within them."

यह प्रक्षेपण दो दिशाओं में होता है (1) अचेतन मानसिक विकृति के प्रभावों से बचने के लिए रोगी द्वारा दूसरे व्यक्ति पर अपनी अचेतन मानसिक विकृति को प्रक्षेपित करना तथा (2) तुलन पर मनुष्य के व्यवहार की क्रियाओं, व्यवहार तथा कल्पना का प्रभाव। कविता में व्यक्तित्व का प्रक्षेपण इस दूसरे अर्थ में होता है। स्वात्म से तात्पर्य है, व्यक्ति की चेतना या मानसिक धरातल जो अनेक घटनाओं के रूप में क्रिया करती है तथा काव्य में अभिव्यक्त होती है।

बच्चन के प्रारंभिक जीवन में आर्थिक अभाव के साथ दाम्पत्य सुख का भी अभाव रहा है। काम की अतृप्ति, आश्रय की आकांक्षा (Succorance) प्रेम के मार्ग में अवरोध जन्य उद्वेग (Emotion) तथा इसके कारण उत्पन्न विषाद (Dejection) एवं उदासीनता (Depression) के चित्र विविध निर्झरणा, आकुल अन्तर में उपलब्ध होते हैं। वातावरण जन्य दबाव (Press) के चित्र भी प्रारंभिक रचनाओं में मिलते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बच्चन की एक विशेषता यह है कि उनमें संघर्ष से जूझने की शक्ति कम नहीं है । अत: उनमें अभाव या Lack नहीं मिलता, उसमें अपार सक्रियता है । उसका अहं कभी निर्बल नहीं हुआ । उनका परम अहं (Super ego) शक्तिशाली है । वह सदा-रचत प्रधान है । मनोविज्ञान की भाषा में, बच्चन की कविता वासना का उन्नयन है । जहाँ उसमें अभ्नाशा (Frustration) के चित्र हैं वहाँ वासना का उन्नयन भी (Sublimation) दिखाई पड़ता है । प्रकृति से भावुक होने के कारण बच्चन में उद्वेगात्मकता अधिक है । इंग्लैण्ड से लौटने के बाद दिल्ली प्रवास के दिनों में उनमें बौद्धिकता का प्राधान्य दिखाई पड़ने लगता है और फिर लिखी गई रचनाओं से तटस्थता आ जाती है । लंदन जाने से पूर्व के बच्चन में अन्तर्मुखता अधिक है और बाद को वह बहिर्मुख हो जाते हैं । बच्चन की परवर्ती रचनाओं में सांस्कृतिक मूल्यों के विघटन पर क्षोभ, आक्रमण (Aggression) प्रभुत्व (Dominance) की भावनाएं प्रबल हो गई हैं । बच्चन के काव्य में परिस्थितियों के प्रति कहीं समर्पण नहीं दिखाई देता ।

बच्चन के जीवन संस्कार एक मध्यवर्गीय परिवार के संस्कार हैं । उनके विचारों तथा संघर्षों की परिणति उनकी काव्य-रचनाओं में मिलती है । किशोरावस्था, युवावस्था, जन्म काम, आकर्षण देहसुख, आमोद-प्रमोद की आकांक्षा, सामाजिक प्रतिबन्धों का निषेध, मधुशाला, मधुबाला, आकुल अन्तर, एकांत संगीत, निशा निमंत्रण, मिलन यामिनी, प्रणय पत्रिका तथा सतरंगिनी में व्यक्त हुए हैं । कवि ने स्वयं कहा है कि कलाकार का अचेतन मस्तिष्क कला-रूपों को जन्म दे देता है तभी जो दमित था वह शांत होता है । आपने कभी देखा है, मुख मुख पनघट या कूप पर बैठी स्त्रियाँ अपने रात के स्वप्न रस ले लेकर सुना रही हैं । कलाकार जो करता है, उससे भिन्न नहीं होता जो जीवन करता है पहले घटित फिर स्मृत, फिर अचेतन में स्मृति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का स्वप्न अथवा कल्पना में रूपान्तर और अन्त में सचेतन मस्तिष्क द्वारा स्वप्न एवं कल्पना का कला रूप में अवतरण। किसी भी जीवन्त कलाकृति के पीछे यही क्रम रहता है। कला रूप घटित से अनिवार्यतः सम्बद्ध होता है पर न कला रूप घटित का प्रतिबिम्ब होता है और न घटित कला-रूप की ऐतिहासिकता का सबूत अथवा साक्षी। मेरा घटित अचेतन के स्तर पर पहुँच-कर क्षरित अथवा समाप्त नहीं हुआ। हो सकता तो उस समय उससे छुटकारा पाने का मैं स्वागत करता, पर मैं सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य से कलाकार का सचेतन मस्तिष्क लिए बैठा था। एक दिन अचेतन का कंटक जाल मेरे सचेतन को कुरेदने लगा और उसे पुष्प माल, अपनी रुचि की सीमा में, बनाने को मैं विवश हो गया।[1] मेरी कविता मेरे जीवन में इतनी निकटता से जुड़ी है, जैसे मेरी नस नाड़ियों में बहता हुआ रक्त।[2] दुःखों के रहते भी बच्चन नहीं हारे। यह उनका परम अहं था। उन्होंने कहा – मुझ में जो जिजीविषा थी, जीने की कामना थी, उसके प्रति मैं सचेत था। तू क्यों बैठ गया है पथ पर या मर कर भी चलने को तत्पर रचनायें मेरे इस मनोबल की साक्षी हैं। मनोवैज्ञानिकों के यहाँ निराशा मनुष्य को आत्म केन्द्रित बना देती है अथवा अपने में संकुचित कर देती है पर मेरी निराशा में यह नहीं है।[3] निशा निमंत्रण का गायक कहता है –

"जय हो है संसार तुम्हारी
जहाँ झुके हम वहाँ तनो तुम,
जहाँ मिटें हम वहाँ बनो तुम।
तुम जीते उस ठौर जहाँ पर हमने बाजी हारी।

उच्चकोटि का सृजन तनाव की स्थिति से ही जन्म लेता है।[4] बच्चन

---

1. नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 101.
2. वही, पृ० 105.
3. वही, पृ० 106.
4. वही, पृ० 125.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने मानसिक द्वन्द्व (Mental conflict) का चित्रण अपनी सभी रचनाओं में किया है । मैं छिपाना जानता तो जग मुझे साधु.....।

प्रौढ़ावस्था में बच्चन का जीवन शांत, सुखी तथा निश्चिन्त रहा है । अतः सामयिक जीवन-परिवेश का चित्रण उनकी रचनाओं में मिलता है।इन वर्णनों में कवि जीवन की वैसी आत्मीयता तथा निजता नहीं है जैसी प्रणय पत्रिका तक की रचनाओं में है । "धार के इधर उधर" से लेकर "जाल समेटा" तक की रचनाओं में उनका आत्म प्रक्षेपण नहीं के बराबर है । कवि का जीवन-बोध अब इतना विस्तृत हो गया है कि उसमें जीवन की सभी दिशाएँ चित्रित हुई हैं । कवि की पूर्व काव्यधारा से हटकर इन रचनाओं का निर्माण हुआ है । स्वतंत्र भारत के नवनिर्माण की जो कल्पना राजनीतिज्ञों ने की, विज्ञान और तकनीक के विकास के साथ योरप की जो मान्यताएँ भारतीय जीवन में प्रविष्ट हुई, उन पर कवि ने दृष्टिपात किया । युद्ध, शांति, विकास, त्रास सभी समस्याओं की प्रतिध्वनि उनकी कविता में मुखरित हुई । और अब कवि निश्चिन्त होकर कह उठता है –

दिवस का मुझ पर नहीं अब कर्ज बाकी रह गया है,
जगत के प्रति भी न कोई फर्ज बाकी रह गया है,
जा चुका जाना जहाँ था, आ चुका आना जिन्हें था
इस उदासी के अँधेरे में बता मन कौन आकर मुस्कराएगा
या
स्वप्न की सीमा हुई मालूम ।

"त्रिभंगिमा" में तो कवि ने यहाँ तक कह दिया कि बहुत से लोग यह भी पूछेंगे कि साहब, हवा का रुख क्यों बदला और अगर बदला भी तो इधर ही या उधर ही क्यों हुआ ? आपको शायद इस प्रकार सिर खपाने की न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जरूरत है और न फुरसत ही और न मुझे ही थी ।"[1] जाल समेटा में आकर कवि बहिर्मुख होकर फिर कलम उठाकर रख देता है । सृजन की यहाँ आकर पूर्णता हो गई है । "हमें जन जीवन से अनुराग" का स्वर यहाँ मुखरित मिलता है । पहले निजी जीवन से अनुराग था अब जनजीवन से है । पहले में विषयीपन था अब वस्तुनिष्ठता है । तात्पर्य यह कि आरती और अंगारे से पूर्व की रचनाएं स्वात्म प्रक्षेपण की दृष्टि से पूर्ण हैं । त्रिभंगिमा में आंशिक प्रक्षेपण है । और फिर तो कवि की रचनायें तटस्थ वस्तु-विश्लेषण की दृष्टि से लिखी गई प्रतीत होती हैं और यही कारण है कि कवि अपनी आत्मकथा में परवर्ती रचनाओं को अपने जीवन के घटनाक्रम से जोड़कर विवेचित करने में कोई रुचि नहीं दिखाता ।

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 360.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तृतीय अध्याय

बच्चन के काव्य की वैचारिक पृष्ठभूमि

छायावादोत्तर हिन्दी कविता द्वन्द्व की कविता है और बच्चन अपने समकालीन कवियों में इस दृष्टि से उल्लेखनीय कवि हैं । अन्तर्जगत और बहिर्जगत के सत्य को देखने के द्वन्द्व ने कविता में अनुभूति के सरलीकरण को महत्व दिया । छायावादी कवियों में निराला को छोड़कर काव्य-चेतना के स्तर पर यह द्वन्द्व कहीं दिखाई नहीं देता । प्रसाद ने हृदय और बुद्धि का द्वन्द्व पैदा भी किया तो वहाँ बुद्धि को दबाकर हृदय के स्तर पर उसका समाधान ढूंढ लिया । पर यह संघर्ष युग भूमि का संघर्ष नहीं है । डा० नामवर सिंह का यह कथन इस दृष्टि से उल्लेखनीय है कि "छायावाद युग में जिस प्रकार बाहरी और भीतरी द्वन्द्वों को दबाने या उनसे बच निकलने की कोशिश की गई उसकी कीमत इतिहास में आगे चलकर अच्छी तरह टूट टूट कर चुकाई । दबाये हुए द्वन्द्वों के दबाव को चेतना अधिक देर तक न झेल सकी, फलस्वरूप सन् 36 के आसपास भारतीय मानस में एक दरार- एक फाँक पैदा हो गई जिसे टी॰एस॰ इलियट ने अपनी परम्परा के सन्दर्भ में संवेदना के प्रथक्करण की संज्ञा दी है । दूसरे शब्दों में इस समय के आसपास भारतीय मानस खण्डित हो गया । राजनीतिक स्तर पर इस खंडित मानस का ऐतिहासिक दस्तावेज़ पंडित जवाहरलाल नेहरू की आत्मकथा है । और साहित्य में दिनकर, बच्चन, भगवतीचरण वर्मा आदि की पीढ़ी का व्यक्तित्व इस दुर्घटना का साक्षी है । वर्षों के संघर्ष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समझौते की द्वन्द्वमयी स्थिति से गुजरते हुए इस बिन्दु पर आकर पं० नेहरू ने अपने भीतर एक रिक्तता का अनुभव किया । गांधी-इरविन समझौते के साथ कांग्रेस के अन्दर जो प्रवृत्ति बढ़ी उससे असन्तोष व्यक्त करते हुए पं० नेहरू ने अपनी आत्मकथा में लिखा कि हम उनके (गांधी जी) के साथ थे यद्यपि हम उनके जीवन दर्शन को स्वीकार नहीं करते थे । कर्म को उसके आधारभूत चिन्तन से अलग कर देना एक वांछित प्रक्रिया नहीं थी । लाजमी था कि बाद में उनसे एक अर्न्तद्वन्द्व और संकट की स्थिति आ जाये। आकस्मिक नहीं है कि पंडित नेहरू ने इस सन्दर्भ में टी.एस.ईलियट की "खोखले आदमी" शीर्षक कविता की दो पंक्तियां उद्धृत करके अपनी मानसिक अवस्था को व्यक्त करना आवश्यक समझा । कविता के क्षेत्र में मन के इस विभाजन का अर्थ था छायावादयुगीन तन्मय एकाग्रता का खण्डन और बाहर तथा भीतर के बीच गहरे व्यवधान का बोध"।[1] बच्चन इसी मन:स्थिति में अपना द्वन्द्व इस प्रकार व्यक्त करते हैं –

"किस्मत में था खाली खप्पर, खोज रहा था मैं प्याला;
ढूंढ रहा था मैं मृगनयनी, किस्मत में थी मृगछाला;
किसने अपना भाग्य समझने में मुझसा धोखा खाया;
किस्मत में था अवघट मरघट, ढूंढ रहा था मधुशाला।"[2]

(मधुशाला)

छायावादोत्तर हिन्दी कविता में जहां एक ओर कविता के सरलीकरण का प्रयत्न है वहां उसमें बुद्धिवाद का विरोध और वैयक्तिक अनुभवों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति मुख्य रूप से दिखाई पड़ती है । प्रसाद ने कामायनी में भी यही बात कही थी । डा० नामवर सिंह के

---

1. कविता के नये प्रतिमान, पृ० 168.
2. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 59.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शब्दों में प्रसाद की समरसता का सौमरस बच्चन के हाथों हाला हो गया और हाला के रूप में उसने सोम की सांस्कृतिक गरिमा ही नहीं खोई, चेतना का सन्तुलन और उदात्तता भी खो दी । निःसन्देह इस कविता में यथार्थ का आकर्षण था । साधारणता का अपनापन था । बच्चन ने कहा है –

"किसको जीवन अच्छा लगता, किसको प्रिय न मरण होता,
यदि न जगत में सबका कोई, अपना आकर्षण होता।[1]

बच्चन की कविता और जीवन सम्बन्धी अवधारणायें प्रारम्भ में इन्हीं दो बिन्दुओं पर स्थिर होती हैं । या तो वह यथार्थ के आकर्षण से सम्बद्ध है या उनमें नितान्त अपनेपन का बोध है । यथार्थ का आकर्षण देखिये –

"मैं हंसता पर मेरे हंसने में क्या आकर्षण होता,
अगर न उस हंसने से पहले फूट-फूट कर मैं रोता [2]

।यदि कविता ।

"पहुंच तेरे अधरों के पास, हलाहल कांप रहा है देख,
मृत्यु के मुख के अति दौड़ गयी है, सहसा भय की रेख ।"[3]

।हलाहल ।

"यह चांद उदित होकर नभ में कुछ ताप मिटाता जीवन का,
लहरा-लहरा यह शाखायें कुछ शोक भुला देतीं मन का,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, प्रारम्भिक रचनायें, पृ0 549.
2. वही, पृ0 520.
3. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 400.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कल मुझमें वाली कलियाँ हँसकर कहती हैं, मग्न रहो,
बुल्बुल तरु की फुनगी पर से संदेश सुनाती यौवन का,
तुम देकर मदिरा के प्याले मेरा मन बहला देती हो,
उस पार मुझे बहलाने का उपचार न जाने क्या होगा ।
इस पार प्रिये, मधु है, तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा।"[1]

। मधुबाला ।

छायावादी कवि तम के पार जो कुछ देख रहे थे वह काल्पनिक था और बच्चन ने उस पार की अपेक्षा इस पार को देखा वह यथार्थ था, उस पार की अनुभूतियों के लिये गूढ़ प्रतीक, व्यंजना और रहस्यात्मक आकर्षण की अपेक्षा थी किन्तु इस पार के लिये प्यास और तृप्ति की अनूठी अभिलाषा बच्चन में दिखाई पड़ती है । स्पष्ट है छायावादी कवियों की अपेक्षा छायावादोत्तर कवियों का जीवन से लगाव गहरा है और इसलिये वह अपने अभावों को साकार करने की फेरा में प्रयत्नशील हैं । डा० जीवन प्रकाश जोशी के अनुसार बच्चन ने अपने गीतों में यौवन के उन्माद एवम् उसकी आशा और निराशा को उसी यथार्थ स्थिति के अनुसार व्यक्त किया है । उनके काव्य का जीवित सत्य उनके हर गीत में वाणी पाता है अतः यहाँ समष्टि से व्यष्टि का घोर संघर्ष प्रकट होता है और काव्य की लोक कल्याण भावना का उसमें किंचित आभास व्यक्त नहीं होता । परन्तु प्रत्येक देश के काव्य साहित्य में और इतना ही नहीं प्रत्येक कवि की रचनाओं में यह संघर्ष प्रधानता से प्रकट होता है । बच्चन की रचनाओं में ऐसी बात आधुनिक सभी कवियों से हम अधिक मात्रा में पाते हैं । इसीलिये सामाजिक मिथ्यादर्श और जर्जरित मर्यादाओं का विरोध करते हैं ।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 106.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देखिये –

"कल छिड़ी होगी प्रेम की मेरी कहानी,
कौन हूं मैं जो विश्व में रहेगी मेरी निशानी ?
क्या किया मैंने नहीं जो कर चुका संसार अब तक ?
वृद्ध जन को क्यों अखरती है क्षणिक मेरी जवानी ?
मैं छिपाना जानता तो जग मुझे साधु समझता,
शत्रु मेरा बन गया है छल-रहित व्यवहार मेरा ।"[1]

यथार्थ छन्द की समाहिति के रूप में अथवा वर्जनाओं के विरुद्ध स्वच्छन्दता के रूप में बच्चन ने मधु की व्यंजना की । बहुत दिनों तक हिन्दी के आलोचक मधु काव्य को उमर खैयाम के कारण फारस की परम्परा से जोड़ते रहे । किन्तु वैदिक कवियों और हिन्दी के तुकी निर्गुण कवियों ने मधु को आध्यात्मिक आनन्द और प्राण शक्ति के रूप में स्वीकार किया । बृहदारण्यक उपनिषद् में मधु विद्या इसी अर्थ में प्रयुक्त हुई है अतः मधु का एक दार्शनिक आधार हमारी परम्परा में है ।

बच्चन ने हाला को स्वयम् जीवनवाद का प्रतीक माना है । उन्होंने लिखा है "मेरी कविता को जो हालावादी नाम उसके प्रकट होते ही दिया गया उसके पीछे मुझे एक बात स्पष्ट दीखती है कि उसे छायावाद से भिन्न समझा गया । मूलतः छायावाद यदि साहित्यिक विधा थी या बना दी गई या घोषित कर दी गई थी तो मेरी कविता जीवनवाद थी, जिये-भोगे जीवन की सीधी अभिव्यक्ति और जीने-भोगने में आये परिवर्तन के अनुरूप परवर्तित, यही संक्षेप में उसकी नवीनता थी।"[2]

बच्चन से पूर्व रोमांटिक कवियों पर जो उमर खैयाम का प्रभाव पड़ा

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 129.
2. बच्चन रचनावली भाग 7, पृ० 227.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और प्रसाद ने 1925 से पूर्व ही आँसू में मदिरा और प्याले के प्रतीकों का खुलकर प्रयोग किया उससे स्पष्ट है कि बच्चन ने परम्परा विरुद्ध प्रतीक तो नहीं ग्रहण किये थे पर उन्हें एक रचनात्मक दृष्टिकोण दे दिया था। महादेवी के काव्य में भी प्याला, हाला, मधुशाला और साकी जैसे प्रतीक आये हैं। पर इन सब में जहाँ अभावात्मक दृष्टिकोण प्रधान है वहाँ क्षणिक सुख भोग की लालसा की तीव्र व्यंजना है। यह मादकता काल्पनिक है। मनोविज्ञान की शब्दावली में इसे दमित विलाप कह सकते हैं। बच्चन ने इसे जीवन की आशा के रूप में चित्रित किया है।

बच्चन ने इस बीच जिस मादक नारी का सम्पर्क प्राप्त किया उसने मधुबाला के गीतों का निर्माण कराया। बच्चन द्रष्टा नहीं भोक्ता हैं। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है - "पंत जी की स्वर्ण किरण में एक कविता है "दो सुपर्णा" जिसमें उन्होंने वृक्ष पर बैठे दोनों पक्षियों के परस्पर विरोधी दृष्टिकोण का वर्णन करते यह प्रश्न उठाया है कि क्या ऐसा पक्षी कहीं नहीं है जो जीवनफल भी चखता है और निश्चल देखता भी है। यानी जो संग-संग द्रष्टा-भोक्ता दोनों है। उनके अनुसार वही आदर्श पक्षी भी है। उपनिषद् के रूपक में इलियट बोलना चाहते तो कह सकते थे कि जीवन तरुवर पर दो पक्षी बैठे हैं - एक द्रष्टा है और एक भोक्ता। पंत जी शायद आदर्श पक्षी उसको कहते जो द्रष्टा भोक्ता दोनों साथ-साथ हो। पता नहीं मैं आदर्श पक्षी था या नहीं, पर उस समय, मेरी स्मृति स्पष्ट है, मैं साथ-साथ द्रष्टा-भोक्ता दोनों था। किस मानसिक प्रक्रिया से यह सम्भव हो सका था, इसकी व्याख्या मैं नहीं करना चाहता, लेकिन शायद पहले भी कर चुका हूँ। द्रष्टा-भोक्ता साथ-साथ होने के फलस्वरूप मेरा सृजन किस कोटि का हुआ, इस पर मुँह खोलने का अधिकार नहीं है। पर मुझे अपनी एक अनुभूति को ईमानदारी के साथ अंकित कर देने का अधिकार तो है ही-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उस समय की अनुभूति की अभिव्यक्ति का एक उदाहरण देना चाहूंगा,

अरुण हाला से प्याला पूर्ण ललकता उत्सुकता के साथ
निकट आया है तेरे आज सुकोमल मधुबाला के हाथ;
सुरा-सुषमा का या यह योग नहीं यदि पीने का अरमान,
अभी तू कह अपने को अक्त, कहूंगा मैं तुझको पाषाण,
हमें लघु मानव को क्या लाज नये मुनि- देवों के मन डोल;
सरलता से संयम को जीत रही दुलदुल डालों पर बोल –
सुरा पी, मधु पी, कर मधुपान....."

मैं नहीं कल्पना कर सकता कि बाद में कभी उसका पुनःस्मरण कर मैं उसको इतनी तीव्रता और सुन्दरता के साथ व्यक्त कर सकता था । हो सकता है, यही मेरी परिलक्षित प्रतिभा की सीमा है ।"[1]

मधु तो बच्चन की दमित तृषा तृप्ति की अभिव्यक्ति है । कवि ने एक ओर इस काल में यौवन की प्रचण्ड ज्वाला का अनुभव किया तो दूसरी ओर उसने अनियन्त्रित अभिव्यक्ति को महत्व दिया । "क्या भूलूं क्या याद करूं" में बच्चन ने अपनी उन जीवन-घटनाओं का परिचय दिया है जिन्होंने बच्चन की इस मनःस्थिति का निर्माण किया । एक ओर अस्वस्थ श्यामा की शारीरिक दुर्बलता जहां कवि शरीर का स्पर्श करने में भी हीचार का अनुभव करता है और दूसरी ओर उनके जीवन में आने वाली एक क्रान्तिकारी महिला और काम की तलाश । राजनीतिक जीवन में महात्मागांधी का आन्दोलन, रौलेक्ट एक्ट का विरोध, जलियानवाला बाग का हत्याकाण्ड, तिलक का स्वर्गवास, चौरी-चौरा का आन्दोलन, हिन्दू मुस्लिम दंगे, और एक खिसियाल पराजय की भावना देशभर में छाई हुई थी, दिनकर जैसे कवि को उस समय कहना पड़ा –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 7, पृ0 217.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"आज खड्ग की धार कुंठिता
है खाली तूणीर हुआ,
विजय पताका झुकी हुई है,
लक्ष्य भ्रष्ट वह तीर हुआ ।"

इसी अनिश्चितता की स्थिति को कवि ने इस रूप में व्यक्त किया है—

"तुमने समझा मधुपान किया,
मैंने निज रक्त प्रदान किया ।
उर क्रन्दन करता था मेरा
पर मुख से मैंने गान किया ।
मैंने पीड़ा को रूप दिया
जग समझा मैंने कविता की ।"[1]

अथवा

उफ, कितने इस पथ पर आते,
पहुँच मगर कितने कम पाते,
है इसको अफ़सोस न इसका
इस पर जो मरते तर जाते ।"[2]

बच्चन के यह मधु गीत जीवन के समर में खड़े होकर लिखे गये हैं । बच्चन के शब्दों में मधुशाला और मधुबाला किसी विलासी का आलाप राग नहीं था । उनमें तो युग-युग से दबी – कुचली पर अपराजित, मानवता ही बोली थी, सारे बन्धनों को तोड़कर, सारी वर्ग सीमाओं से ऊपर –

"राग के पीछे छिपा
चीत्कार कर देगा किसी दिन,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 95.
2. वही, पृ० 90.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं लिखे मधुगीत मैंने
हो खड़े जीवन समर में ।"[1]

बच्चन का सन् 1923 और 24 के बीच का समय अध्ययन और अध्यापन का काल है । उनकी प्रारम्भिक रचनायें "तेरा हार" के नाम से प्रकाशित हुईं । "प्रताप", "चांद", और "हंस" में उनकी अनुकूल आलोचना प्रकाशित हुई । "तेरा हार" के प्रकाशन के दिनों में बच्चन जी प्रयाग महिला विद्यापीठ के हिन्दी के अध्यापक थे ।

सौन्दर्य, जीवन आस्था, अनाशेरणा, उद्दाम यौवन भावना और देश का दैन्य उनकी कविताओं के प्रमुख विषय रहे । डा० रवीन्द्र कुमार जैन ने इस सम्बन्ध में लिखा है - बच्चन की "प्रारम्भिक रचनायें" दो संग्रहों में सन् 33 में प्रकाशित हुई थीं । सन् 32 में "तेरा हार" नामक संग्रह भी प्रकाशित हुआ था । इन प्रारम्भिक कृतियों में कवि की यौन-भावना फूट पड़ने के लिए बेचैन होती हुई प्रकट हुई । छायावाद अपनी अन्तिम सांस ले रहा था । उसके प्रति प्रबुद्ध वर्ग का रचनात्मक या जीवनात्मक सम्बन्ध न बन पाया था । बच्चन जी की तरंगमयी यौन चेतना झुलकर प्रकट हुई । उसने पुरानी रूढ़ियों, जड़ताओं और प्रतिबन्धों को ललकारा और यौवन को गाली देने वाले परम्परावादी समाज को पागल कहा । छायावादी स्वर में प्रच्छन्नता, गूढ़ व्यंजना एवं ऐकान्तिक तथा वियोग और अभाव की रुग्णता थी । बच्चन का स्वर जीवनवादिता का स्वर था । क्षणवादिता और मस्ती- उसके मूल में थी, साथ ही साथ देश का राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष भी यदाकदा मुखरित होता था ।

"कोयल" नामक कविता में देश में आने वाले नवजीवन की ओर इंगित

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 119.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किया गया है –

"बदल अब प्रकृति पुराना ठाठ
करेगी नया-नया शृंगार,
सजाकर निज तन विविध प्रकार
देखेगी ऋतुपति- प्रियतम के शुभागमन की बाट
कोकिले पर तेरा यह गान
हमारे नग्न बुभुक्षित देश
के लिये लाया क्या सन्देश ?
साथ प्रकृति के बदलेगा इस, दीन देश का भाग ।

कवि का स्वर निश्चित रूप से देश की दुख भरी दशा से गीला है, उसे वसन्त का वैभव नहीं सुहाता परन्तु इस भाव की कविताएँ उक्त संग्रहों में अत्यल्प हैं ।

"कलियों से", "उपवन" एवम् "गीत विहंग" आदि कविताएँ कवि के प्रेरणा स्रोत आवेगों की कविताएँ हैं । ये आरम्भिक कविताएँ ही थीं।"[1]

बच्चन की इन "प्रारम्भिक रचनाओं" का मूल स्वर यथार्थवादी है । कुछ कविताएँ आदर्शात्मक भी हैं । इनके विषय प्रकृति, मानवीय प्रेम, निशा तथा राष्ट्र प्रेम हैं । डा० जीवन प्रकाश जोशी के शब्दों में –

"प्रारम्भिक रचनाएँ " की कविताएँ बच्चन के भावी काव्य विकास की सभी दिशाओं को दर्शाने वाली दूरबीनें हैं । इस संग्रह की प्रथम कविता को पढ़ते ही गांधी जी के प्रति प्रेम व्यक्त होता है । यह प्रेम आगे "खूनी की माला" और "खादी के फूल" में संग्रहीत कविताओं में प्रतिफलित हुआ है ।

"रजतम" शीर्षक कविता को पढ़कर प्रसाद के "आंसू" की याद आ जाती है।

---

1. बच्चन निकष पर , पृ० 58.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"गीत विहग" और "बाल गान" कविताओं में पंत जी की भावशैली का स्मरण हो आता है । "मातृ मन्दिर" और "पंचजन्य " कविताओं में कवि का राष्ट्र-प्रेम शिशु स्वर में किलकारता है जो गुप्त जी की राष्ट्रीय भावना का तुतलाता सा स्वर है । आगे वही समर्थ होकर "धार के इधर उधर" तथा अन्य संग्रहों की कुछ कविताओं में ध्वनित हुआ है । उसकी प्रौढ़ तथा परिपक्व ध्वनि "जब नारी के बालों को खींचा जाता", "चेतावनी" शीर्षक कविता में सुनाई पड़ता है । लेकिन बच्चन का यह स्वर जन गन, मन में अधिक नहीं गूंजा । दिनकर का स्वर अधिक बुलन्द रहा । यों बच्चन के भाव शिल्प विकास की दृष्टि से प्रारम्भिक रचनायें बहुत महत्वपूर्ण हैं ।"[1]

1921 से और 1935 के प्रान्तीय स्वशासन तक का इतिहास राजनैतिक उथल-पुथल का था । 1921 की अहमदाबाद कांग्रेस से एक राष्ट्रीय परिवर्तन यह हुआ कि कांग्रेस अब जनता में आ चुकी थी, अंग्रेजी का स्थान हिन्दुस्तानी ने ले लिया था और अब कांग्रेस में खद्दर ही खद्दर दिखाई देने लगा । गांधी जी कांग्रेस द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन के डिक्टेटर चुने गये । बारदोली में लगान बन्दी आन्दोलन शुरू हुआ । चौरी चौरा से आन्दोलन ने हिंसात्मक रूप लिया । इसका गांधी जी पर इतना असर हुआ कि उन्होंने असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया । चितरंजनदास, मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपतराय को बुरा लगा और अब गांधी जी ने रचनात्मक कार्यक्रम का नारा दिया । 1922 के दिल्ली कांग्रेस के अधिवेशन में "अच्छूतोद्धार" तथा "चरखा" और "करघा प्रचार" मुख्य कार्यक्रम तय किये गये । गांधी जी गिरफ्तार हुए और उन्होंने सारे आन्दोलन की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली । इधर लीग के कारण हिन्दू मुस्लिम दंगे शुरू हुए ।

---

1. बच्चन व्यक्तित्व और कवित्व, पृ0 36.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कोहटा का दंगा बड़ा भयंकर था । इस दंगे की जांच के लिये शौकत अली और गांधी जी की कमेटी बनी । पर वह एक न हो सके । मन्मथनाथ गुप्त ने अपने इतिहास में लिखा है कि शौकतअली इस मत पर पहुँचे कि दोष हिन्दुओं का है जब कि हिन्दू सैकड़ों की तादाद में मारे गये थे । यहीं से अली भाई साम्प्रदायिकता की ओर चले गये । उधर 1917 की रूस की क्रान्ति के बाद क्रान्तिकारियों के लिये रूस तीर्थ स्थान बन गया था । समाजवादी देश मानव जाति के शोषण के अन्त के लिये प्रयत्नशील रहे । एम॰एन॰ राय जैसे पुराने क्रान्तिकारी रूस पहुँचे और उन्होंने वहां से पत्र भेजकर समाजवादी संगठन स्थापित करने की चेष्टा की । कानपुर षड्यन्त्र, काकोरी षड्यन्त्र, मेरठ षड्यन्त्र, ऐसे क्रान्तिकारी आन्दोलनों के परिणाम थे जो सोशलिस्ट रिपब्लिक में विश्वास करते थे । जिस दिन भगत सिंह को फांसी हुई उस दिन कानपुर की हालत बहुत खतरनाक थी । हिन्दू मुस्लिम दंगे हो गये । 25 मार्च 1930 को गणेशशंकर विद्यार्थी एक मुसलमान के हाथों शहीद हो गये । उनकी हत्या और भगतसिंह की फांसी से कराँची के अधिवेशन में मातम छा गया । अंग्रेजों की भेद नीति और साम्प्रदायिक बंटवारे के विरुद्ध गांधी जी ने अनशन किया और बंटवारे का काम अपने हाथों में लिया । गांधी जी हरिजन पत्रिका निकालने लगे और अब बहुत से प्रसिद्ध मन्दिर हरिजनों के लिये खुल गये थे । किन्तु सनातनियों की ओर से उनका विरोध भी हुआ था । फिर भी गांधी जी कई प्रसिद्ध मन्दिर खुलाने में समर्थ रहे ।"[1]

1935 में ब्रिटिश सरकार ने प्रान्तीय स्वशासन की जो सुविधा दी उसमें साम्प्रदायिक बंटवारे को दृष्टि में रखा गया । फलतः हिन्दू मुसलमानों की दूरी बढ़ती गई । साम्प्रदायिक वैमनस्य की इसी पृष्ठभूमि पर बच्चन का प्रारम्भिक काव्य खड़ा है । उन्होंने कहा –

---

1. कांग्रेस के सौ वर्ष, पृ0 28॰

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"धर्म-ग्रंथ सब जला चुकी है जिसके अन्तर की ज्वाला,
मन्दिर, मस्जिद, गिरजे-सबको तोड़ चुका जो मतवाला,
पंडित, मोमिन, पादरियों के फंदों को जो काट चुका,
कर सकती है आज उसी का स्वागत मेरी मधुशाला।"[1]

+ + + + + + +

"मुसलमान औ' हिन्दू है दो, एक, मगर उनका प्याला,
एक, मगर, उनका मदिरालय, एक, मगर, उनकी हाला;
दोनों रहते एक, न जब तक मस्जिद-मन्दिर में जाते;
बैर बढ़ाते मस्जिद- मंदिर मेल कराती मधुशाला।"[2]

उपासना-स्थल सभी सम्प्रदायों के लिये समान हैं। फिर सवर्ण असवर्ण का भेद क्या ? गांधी जी के मन्दिरों में हरिजन प्रवेश की चेष्टा को ध्यान में रखकर ही मानों बच्चन जी ने "सुराही" नामक रचना में कहा-

"सब आर्य प्रवर आ सकते हैं,
सब आर्येतर आ सकते हैं,
इस मानवता के मन्दिर में,
सब नारी नर आ सकते हैं,"[3]

गणेश शंकर विद्यार्थी की शहादत को हिन्दू मुस्लिम दंगे का परिणाम मानते हुए बच्चन जी ने महत्वपूर्ण कविता लिखी है। करांची अधिवेशन में गांधी जी ने इस घटना पर शोक प्रस्ताव पास करवाया। गांधी जी को सम्बोधित करते हुए बच्चन जी ने कहा है -

"जब कानपुर के हिन्दू मुस्लिम दंगे में
वह शिष्य तुम्हारा सत्य अहिंसा पुजारी,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 47.
2. वही, पृ० 52.
3. वही, पृ० 92.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

खाली हाथों था घुसा भेड़ियों के दल में,
औ, करत हुआ था, उनकी ही रक्षा करते ।
तब बापू तुमने अपने पीड़ित अन्तर से
उद्गार किये थे व्यक्त इस तरह शब्दों में,
मुझको गणेश शंकर से ईर्ष्या होती है,
भगवान काश यह पावन मृत्यु मुझे मिलती ।"

\+ + + + + +

तू आज शहीदों का राजा, जो अभिमानी,
तू सिद्ध शहीदों का अधिकारी सेनानी,
तेरी छाती ने भी गोली खानी जानी,
तूने भी अपने लोहू से खेली होली ।"[1]

अमर सिंह की फांसी पर तथा ब्रानिवारियों के दमन पर भी बच्चन जी ने लिखा । उनकी दृष्टि से उस समय सारे देश के लोग, प्रत्यक्ष तथा परोक्ष के लोग केवल एक नेता से प्रभावित थे । वह था गांधी जी का । उन्होंने "खादी के फूल" कविता में लिखा है –

"बापू कितने ही तेरे एक इशारे पर
फांसी वाले तख्तों पर झूले हंस-हंसकर,
कितनों ने निर्दय गोली की बौछारों में
निर्भय होकर अपनी चौड़ी छाती खोली ।"[2]

"स्वाधीनता आन्दोलन में बंगाल का महत्वपूर्ण योगदान रहा । 20 जुलाई 1905 के बंग-भंग प्रस्ताव से लेकर 1942 के भयंकर अकाल तक की घटनाओं ने हिन्दी कविता को प्रभावित किया है । श्री मन्मथनाथ गुप्त

---

1. बच्चन रचनावली भाग , पृ0 469.
2. वही, पृ0 469.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लिखते हैं कि 1942 के 16 अक्टूबर को बंगाल के दक्षिणी जिलों विशेषकर मेदनीपुर और घोषित परगने में इतना प्रबल तूफान आया कि हज़ारों लोग बेघर हो गये। खेत नष्ट हो गये। पर इसके कारण मेदनीपुर वालों पर 1942 के आन्दोलन में भाग लेने के कारण जो अत्यंत अत्याचार हो रहे थे इसका परिणाम यह हुआ कि वहां दुर्भिक्ष शुरू हो गया। 1943 में सारा बंगाल एक अत्यंत दुर्भिक्ष के पंजों में फंस गया। यह प्राकृतिक कारणों से नहीं बल्कि सरकार की दुर्व्यवस्था और अत्याचार के कारणों से था। 1942 में बंगाल में जो क्रान्तिकारी कार्य हुए थे उसके प्रतिशोध में यह दुर्भिक्ष डाला गया था। सब बातों को तोलने पर प्रतीत होता है कि इसमें सत्य का बड़ा अंश है। कम से कम इसमें इतना तो सत्य है कि सरकार की सैनिक और असैनिक नीति के कारण यह दुर्भिक्ष पड़ा। यदि सरकार चाहती तो इसे रोक सकती थी। ब्रिटिश सरकार ने अन्न तथा बंगाल के लोगों की नावें, साइकिलें तथा यातायात के साधन छीन लिये थे। उसे डर था कि जापानी इसका उपयोग करेंगे। नौकरशाही को यह समझना चाहिये था कि बंगाल में मछली पकड़ना खेती के बराबर ही महत्वपूर्ण रोजगार है और यह काम तभी ढंग से हो सकता है जब नावें हों। इसलिये नावें छीन कर जनता से उनकी रोटी का सबसे बड़ा साधन छीन लिया। इस कार्य के बन्द हो जाने से दुर्भिक्ष को बल मिला।[1]

बच्चन जी ने "बंगाल का अकाल" नाम से एक लम्बी कविता लिखी है —

"दीनता से अतंक अपार,
पेट खला,
हाथ पसार,
पांव उंगलियां बांध
मुंह तक ला,

---

1. कांग्रेस के सौ वर्ष, पृ0 155.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भीतर घुसी हुई आंखों से
आंसू ढार,
मानव होने का सारा सम्मान विसार
घूमती गांव-गांव,
घूमती नगर-नगर,
बाजारों-हाटों में, दर-दर, द्वार-द्वार।"[1]

और अन्त में मानव में स्वाभिमान जगाते हुए यह सम्बोधन देखिये—

"तुम्हें जानना है मनुष्य तुम !
और मानवी अधिकारों पर
जबकि खड़े होगे तुम डटकर
कोई शक्ति नहीं ऐसी जो
तुम्हें हटा दे तिलभर पीछे;
तुम्हें आत्म विश्वास चाहिये !
तुम्हें जानना है, मनुष्य तुम !
जीवन में जो कुछ भी जीने
के लायक है, उसकी रक्षा
में यदि प्राण गंवाना हो तो;
नहीं हिचकना कभी उचित है;
लेकिन भिन्न आत्म-हत्या से
तुम्हें आत्म बलिदान चाहिये !
इन्क़लाब जिन्दाबाद।"[2]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 417.
2. वही, पृ0 443.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

डा० बच्चन की इस रचना का "कालेकवले बांगला" के नाम से इसका अनुवाद हुआ । श्री भूपेन्द्रनाथ ने इसका अनुवाद किया ।

"मधुबाला", "मधुकलश", और निशा निमंत्रण" से लेकर "आकुल अन्तर" तक उत्साह के स्थान पर निराशा, उल्लास के स्थान पर असन्तोष और उन्माद के स्थान पर अभावजन्य व्यथा ही देखने को मिलती है और इसके लिये वैयक्तिक पृष्ठभूमि है अभाव की । जिसे बच्चन ने लिखा है –

"गिर-गिर टूट गये घट-प्याले,
मुझ दीप गये सब वर्ण में, "[1]

उन्होंने "हलाहल" कविता में अपने वैयक्तिक जीवन की दुर्भाग्यपूर्ण अवस्था को प्रस्तुत किया है । "हाला" के प्रतिरोध में अब उन्होंने "हलाहल" को प्रतीक रूप में सामने रखा।–"हलाहल" के दो पद देखें –

"सुरा पी थी मैंने दिन चार,
उठा था इतने में ही ज्वर
नहीं रुचि ऐसी मुझको प्राप्त,
रहूं सब दिन मधुता में डूब ।
हलाहल ने की है पहचान,
लिया उसका आकर्षण मान
मगर उसका भी करके पान
चाहता हूं जीवन दान ।"[2]

इधर व्यापक दिशेगता हो गई और कवि का जीवन एकाकी रह गया । घोर निराशा ही इन गीतों में व्यक्त हुई है –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 108.
2. वही, पृ० 397.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"पुजारी बन, है निराशा से भरा क्यों गान मेरा ?
एक दिन मैंने लिया था काल से कुछ श्वास का ऋण,
आज भी उसको चुकाता, ले रहा वह क्रूर गिन-गिन,
व्याज में मुझ से उगाहा है हृदय का गान उसने,
किन्तु होने में उऋण अब शेष केवल और दो दिन,"[1]

+ + + + + +

"गीत कह इनको न दुनिया, यह दृगों की भाप मेरे !
गान हो जब गूँजने को विश्व में, क्रन्दन करूँ मैं,
हो गमकने को सुरभि जब विश्व में आहें भरूँ मैं,
विश्व बनने को सरस हो जब, गिराऊँ अश्रु मैं तब,
विश्व-जीवन-ज्योति जागे, इस लिये जलकर मरूँ मैं !
बोल किस आवेश में तू स्वर्ग से यह माँग बैठा ?
पुण्य जब जग के उदय हों, तब उदय हों पाप मेरे ।"[2]

कवि की स्वतन्त्रतापूर्व वैचारिक रचनाओं में "धूल की माला", "खादी के फूल", तथा "बंगाल का अकाल" ऐसी रचनाएँ हैं जिनमें सच्ची क्रान्तिकारी और मानवतावादी विचारधारा का प्रकाशन हुआ है । इनमें "धूल की माला" और "खादी के फूल" गांधी जी को केन्द्र बनाकर लिखी गई हैं, जिनका प्रकाशन 1948 के आसपास हुआ । गांधी जी के महाप्रयाण को दृष्टि में रखकर गांधीवाद को उभारा गया है । वे समन्वयवादी संस्कृति के प्रतीक थे और इसीलिये उनका व्यक्तित्व सभी सम्प्रदाय के लोगों को प्रिय था । आजादी और भारतीय संस्कृति दोनों का ही वह प्रतीक हैं । बच्चन जी कहते हैं –

"एक हजार बरस की जिसने कर दी दूर गुलामी,
उस मेलाओं के मेला को एक हजार सलामी,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 131
2. वही, पृ० 134.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किया योग्य उसने अयोग्य को यौगिक शक्ति जगा के ।
आपस में कटते-मरते थे, भूले देश भलाई,
सिखलाया उसने है हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई,
मन्त्र मुहब्बत का दोनों के कानों में बिठला के ।

- - - - -

भारतीय जीवन का सबसे उज्जव रूप दिखा के,
भारतीय संस्कृति का सबसे व्यापक अर्थ बता के,
साथ हुआ गांधी, गायत्री, गीता, गौ, गंगा के ।"[1]

इन रचनाओं में कई राजनैतिक संदर्भ जुड़े हुए हैं । इतिहास की मदद से उन संदर्भों को खोलकर देखा जा सकता है –

"नोआखाली कलकत्ते में, औ बिहार, दिल्ली के बीच,
इसी मन्त्र से बापू लाये, दानव को मानव तक खींच ।"[2]

खादी के फूल में कवि ने मूलतः सर्वधर्म समभाव और साम्प्रदायिक सद्भाव की ही आवश्यकता पर बल दिया है । और इसीलिये गांधी जी के निर्वाण को एक सुनहरे दीप का निर्वाण मानते हुए बच्चन कहते हैं –

"विश्व घृणा से देश का वातावरण पहले हुआ सविकार,
खून की नदियां बहीं, फिर बस्तियां जलकर गई हों क्षार,
जो दिखाता था अन्धेरे में प्रलय के, प्यार की ही राह,
बच न पाया, हाय, वह भी; इस घृणा का क्रूर, निन्द्य प्रहार;
सौ समस्यायें खड़ी हैं, एक का भी हल नहीं है पास,
क्या गया है रूठ प्यारे देश भारतवर्ष से भगवान,
हो गया क्या देश के सबसे जरूरी दीप का निर्वाण।"[3]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 479.
2. वही, पृ0 552.
3. वही, पृ0 452.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वतन्त्रता के साथ देश का बटवारा और पाकिस्तान का निर्माण दो ऐसी घटनायें हैं जिनसे भारतीय इतिहास और जनजीवन प्रभावित हुआ। बच्चन ने इन घटनाओं को भी नज़रन्दाज नहीं किया, वे कहते हैं—

"हम देश — विभाजन मूल्य चुकाके बैठे हैं,
"हम लाखों का बलिदान चढ़ाने बैठे हैं
था शान्ति-हेतु हमने बटवारा मान लिया,
फिर भी बजती सीमाओं पर रण की भेरी।"[1]

"थी अभी चितायें चटक रहीं रावी तट पर,
वे अभी हज़ारों भटक रहे बेघर-बेदर।"[2]

एक महत्वपूर्ण बात बच्चन की रचना में यह है कि निराशा की पृष्ठभूमि से शुरू होकर इनकी समाप्ति आशा के साथ हुई है। व्यक्ति आते हैं और चले जाते हैं पर जीवन की परम्परा कभी क्षीण नहीं होती। मनुष्य की यह यात्रा अमित भी है, अजित भी है। अमित का अर्थ है अतुलनीय और अजित का अर्थ है अजेय। कवि के यह दो पुत्रों के भी नाम हैं। और इसी श्लिष्ट सौन्दर्य के सहारे कवि कहता है —

"जो अमित-अजित की गूंज रही किलकारी,
उसमें भविष्य मानो मुझ से कहता है,
ढह जाय वृक्ष चाहे भारी से भारी,
जीवन का नद आगे को ही बहता है।"[3]

सन् 40 के बाद की महत्वपूर्ण रचनाओं का संस्करण "धार के इधर उधर" नाम से प्रकाशित हुआ है। उनका कहना है कि "बंगाल के काल" के बाद यह मेरी दूसरी रचना है। जिसका सम्बन्ध प्रायः सामयिक

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 517.
2. वही, पृ0 517.
3. वही, पृ0 553.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परिस्थितियों और घटनाओं से है । काव्य का काम है सामयिक को दूर शाश्वत बनाना, कम से कम चिरजीवी बनाना।"[1]

द्वितीय महायुद्ध और बंगाल का दुर्भिक्ष देश की प्रमुख घटनायें हैं । द्वितीय महायुद्ध के दौरान फौज में भरती जारी हुई । हज़ारों की तादाद में लोग सरकारी फौज तथा युद्ध सम्बन्धी नौकरियों में भरती हो रहे थे एक देश जिसमें आधे पेट भर खाने को नहीं पाते हैं उसमें जैसे एक तरफ साम्राज्यवादी युद्ध का विरोध अनिवार्य था उसी प्रकार यह भर्ती भी अनिवार्य थी । इसी समय गांधी जी ने भारत छोड़ो प्रस्ताव रखा । करो या मरो आन्दोलन का प्रस्ताव पं० जवाहर लाल ने पेश किया और पटेल ने इसका समर्थन किया । नौ अगस्त को अगस्त क्रान्ति का आरम्भ हुआ । बम्बई में सभी नेता गिरफ्तार कर लिये । नेताओं की गिरफ्तारी से देश में विस्फोटक स्थिति पैदा हो गई । क्रान्ति का घोर दमन हुआ । उधर सुभाष जर्मनी में थे । 21 अक्टूबर 1943 को आज़ाद हिन्द सरकार की स्थापना हुई और सुभाष इसके सर्वाधिनायक फौजी तथा वैदेशिक मंत्री तथा प्रधान सेनापती हुए । मन्मथनाथ गुप्त का यह कथन उचित है कि आज़ाद हिन्द फौज केवल भारतीय स्वतन्त्रता की एक गौरवमय चेष्टा ही नहीं थी बल्कि इसने बाद की भारतीय राजनीति पर कुछ गहरे प्रभाव डाले । इसने भारत में नवीन क्रान्तिकारी धारा को जन्म दिया । जनता में आज़ाद-हिन्द-फौज की ब्रिटिश भारतीय फौज में जिन अंकुर विस्फोटों का सूत्रपात हुआ और बराबर होता रहा उनके कारण ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पैर उखड़ने में बहुत सहायता मिली । सरकार को विश्वास नहीं रहा इसी कारण उसे बाद को अपने आप भारत छोड़ने की एक तारीख तय करनी पड़ी । आज़ाद-हिन्द-फौज ने साम्प्रदायिक एकता का सूत्रपात किया।[2]

---

1. वचन रचनावली भाग 1, पृ० 134.
2. कम्पनि के सौ वर्ष, पृ० 158.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

युद्ध पर बच्चन जी की रचना है –

"युद्ध की ज्वाला जगी है ।
था सकल संसार बैठा
बुद्धि में बारूद भर कर,
क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, मद की,
प्रेम सुमनावलि निठुर कर;
एक चिन्गारी उठी, लो, आग दुनिया में लगी है ।
युद्ध की ज्वाला जगी है ।"[1]

अथवा

"आज निर्मम हो गया इन्सान ।
किन्तु इसका अर्थ क्या है,
सहज ले मानव बहा है,
स्वयं उर में घाव करता,
स्वयं घट में रक्त भरता,
और अपना रक्त अपने आप करता पान ।"[2]

नौ अगस्त 42 पर इनकी रचना इस प्रकार है –

"नौ अगस्त !
नौ अगस्त !
नौ अगस्त !
क्रान्ति की ध्वजा उठी,
जाति की भुजा उठी,
निर्विलम्ब देश एक हो बढ़ा हुआ समस्त ।
+ + + + +

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 141.
2. वही, 145.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देश चोट खा गिरा,
अन्ति - आपदा घिरा,
और बन्द जेल में पड़े हुए वतन-परस्त ।

\+ + + +

पर न हो निराश मन,
क्योंकि दुरतम दमन,
भी कभी न कर सका स्वतन्त्र राष्ट्र-स्वप्न दमन ।"[1]

सुभाष बाबू को दृष्टि में रखकर कवि ने "दीपक" की रचना की है । इसकी अन्तिम चार पंक्तियाँ बड़ी मार्मिक हैं –

"बिछड़े दीपक फिर मिलते हैं, मिल कर मोद मनाते हैं,
किसने क्या झेला क्या भोगा, आपस में बतलाते हैं ।
किन्तु नहीं लौटा है, अब तक मेरा भोला, अनजाना
दीप गया था जो प्राची को लाने मेरा स्वर्ण विहान ।"[2]

बच्चन इस संघर्षपूर्ण भारतीय राजनीतिक परिस्थितियों में एक वीर सिपाही की तरह तन कर खड़े रहे । उनको जीवन को वैयक्तिक प्रेम संबंधों तक ही नहीं देखा जाना चाहिये क्योंकि पचास फौजी सिपाहियों की युनिवर्सिटी ट्रेनिंग जो छह सप्ताह के फौजी प्रशिक्षण के लिये ऑफिसर्स ट्रेनिंग स्कूल मद्रास में हो रही थी उसमें अध्यापक अफसरों की जरूरत थी उसके लिये अन्य अध्यापकों के साथ आप भी प्राथमिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिये सुन्दर, स्नेहमयी पत्नी और प्यारे पुत्र को छोड़कर मद्रास गये ।

यद्यपि कवि को सदैव दुखों ने ही घेरा परन्तु वह टूटे नहीं । उन्होंने तो एक वीर योद्धा की भूमिका निभाई । कवि ने खिचार सतरंगिनी की

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 148.
2. वही, पृ० 153.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भूमिका में देखिये – "मुझे आंधी और आंधियों ने बहुत झिंझोड़ा, बहुत तोड़ा था, पर वे मुझे झुका नहीं सकी थीं। मेरे अन्दर कहीं इस्पात की शलाका थी जो मुड़ नहीं सकती थी, इसी ने मुझे सम्भाला हुस्यिर रखा, बचाया, जिलाया।"[1]

उनकी यह रचना संघर्षशील व्यक्ति के लिये जबदस्त जीवन का सन्देश देती है –

"अग्नि पथ ! अग्नि पथ ! अग्नि पथ !
वृक्ष हों भले खड़े,
हों घने हों बड़े,
एक पत्र छांह भी मांग मत, मांग मत, मांग मत !

× × × ×

तू न थकेगा कभी !
तू न कभी !
तू न मुड़ेगा कभी ! कर शपथ ! कर शपथ ! कर शपथ !

× × × ×

यह महान दृश्य है –
चल रहा मनुष्य है
अश्रु, स्वेद- रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ !"[2]

बच्चन की रचनाओं में समकालीन परिवेश –

कवि का सबसे पहला गुण है अपने परिवेश तथा अपने समय के साथ जुड़े रहना, उससे बंधे रहना। अपने समय का सही चित्र प्रस्तुत करना।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1 पृ0 307.
2. वही, पृ0 246.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह नये कवियों की विचारधारा है इसी से ही नये और पुराने कवियों का अन्तर स्पष्ट होता है । उनकी दृष्टि में वही कवि श्रेष्ठ है जो अपने युग का जीवन्त चित्र प्रस्तुत करता है तथा अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने की क्षमता रखता है । बच्चन की काव्य रचना अपने समकालीन कवियों की काव्य-रचना की मौलिकता में जोड़ है । समकालीन का अर्थ है सम-सामयिक विचार पद्धति को आधार देना ।

आज मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना है कि वह अपने आपको अकेला, बेसहारा, असहाय तथा अजनबी समझने लगा है । उसे अपने जीवन की नाना प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है । समाज की विषमतायें अलग मुंह फैलाये खड़ी हैं । मनुष्य अपनों से ही अलग हो गया है । ऐसी स्थिति में उसे अपने पर भी विश्वास नहीं रहा । "बहुत दिन बीते" तथा" कटती प्रतिमाओं की आवाज" का कवि भी विभिन्न परिस्थितियों से गुजरा है । हमारे समाज का जीवन्त चित्र इन विभिन्न रचनाओं में देखा जा सकता है । युगीन विडम्बना का चित्र इस उदाहरण में स्पष्ट है -

"भारत के सांपों के ऊपर
पुस्तक एक प्रकाशित की है
केंचुल से चिकने कागज पर
कई तिरंगी तस्वीरों की -
जिल्द बंधी,
जहिर है, महंगी ।
और बहुत से लोग छपा हैं,
भारत की गरीब जनता तक
कैसे यह पुस्तक पहुंचेगी ।
भारत की नंगी-भूखी जनता के आगे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बड़ी समस्यायें कितनी हैं
उनमें क्यों दी गई प्राथमिकता इनको,
यह साँपों का ज्ञान बढ़ाये।
सहमत उनसे, किन्तु, नहीं मैं।
भारत के इतिहास, धर्म, संस्कृति के पीछे
साँपों ने भूमिका अदा की जो
वह किससे छिपी हुई है।
टिकी हुई है भूमि साँप ही के फन पर तो।
ज्ञान मिले साँपों का कितनी ही कीमत पर
वह सस्ता है।
+ + + +
पुस्तक भर में
भारत के सबसे ज्यादा जहरीले साँपों का
कोई भी चित्र नहीं।"[1]

"बदलती प्रतिमानों की आवाज" में कवि ने भिन्न-भिन्न रचनाओं में युग की विडम्बनाओं का सही खाका खींचा है। इस संदर्भ में लिखी गई रचनायें "बया", "दो रूप दो नक्श," "परिवार नियोजन", "अतीजे", "सुरंग", "प्रतिध्वनि", इसी काव्य संकलन में हैं। "उभरते प्रतिमानों के रूप" में भी युगीन विडम्बनाओं के सम्बन्ध में अनेक रचनायें हैं। जैसे– "सितार", "शुद्ध दूध", "कमरे में सवेरा", "बन्दरों का संघर्ष" आदि। गांधी, नेहरू जैसे महान नेताओं के आदर्शों की आड़ में गरीब जनता का रक्त चूसा जा रहा है। बच्चन जी के विचार "बीस", "अड़तालीस", "अड़सठ" कविता में देखिये –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ० 150.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"टिन मत छोटा करो,
न ऐसे हिम्मत हारो,
धीरज धरो,
अभी नहीं कुछ बिगड़ा है,
होता है भगवान भेड़ियों का भी भाई,
माना यह कि हमारे आगे
अब गांधी की ढाल नहीं है
औ' गांधी की बकरी की जो खाल
बहुत टिन हमने ओढ़ी,
उसे लोग अब भांप गये हैं,
किन्तु पोल पर मढ़ कर उसको
ढोल बनाने से भी हमको
रोक नहीं कोई सकता है -
औ" मौके से घाती जयंती आ पहुंची है ।
उसे हाथ से नहीं निकल जाने देंगे हम,
इस अवसर पर पूरा दम खम लगा
ढोल हम यह पीटेंगे,
रहो देखते, इन हथकण्डों, इन डंडों के जोर
अभी हम एक पड़ाव और जीतेंगे ।"[1]

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में मानव सम्बन्धों के संगठन और विघटन की अनेकों कहानियां मिलती हैं । आज समाज का रूप इतना बिगड़ गया है कि इसमें रहने वाला मानव अपने प्रति निश्चित नहीं है और उसमें असुरक्षा की भावना घर कर गई है ।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 339.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतीय समाज में गत वर्षों में जो जन चेतना का विकास हुआ है वह हिन्दी कविता में उपलब्ध है। बच्चन का काव्य भी यही जन-चेतना का स्वर लिये है। 62 के चीनी आक्रमण और 65 के पाक आक्रमण के फलस्वरूप जनजीवन की मनःस्थिति में जो परिवर्तन दिखाई देता है उसके कारण मानव सम्बन्धों में टूटते हुए मूल्य, बदलते हुए रिश्ते तथा नये पुराने का संघर्ष कविताओं के माध्यम से व्यक्त हुआ है।

टूटते मानव मूल्य – बच्चन के परवर्ती काव्य "बहुत दिन बीते" और "कटती प्रतिमाओं की आवाज" में हमें दिखाई देते हैं। टूटते मानवीय मूल्य वह वह मूल्य हैं जो मनुष्य की प्रगति में सहायक होते हैं, इतना ही नहीं मानव के जीवन का निर्माण करते हैं। इनके बिना मनुष्य शून्य है। आज हम देखते हैं कि न श्रद्धा रही, न प्रेम रहा। इनका स्थान पाखण्ड और व्यापार ने ले लिया है। मानवीय सम्बन्धों में भी दुहरा के स्थान पर औपचारिकता आ गई है। उसकी दृष्टि अपने ही जैसे समान-धर्मा व्यक्ति की खोज में घूमती है। इसका एक उदाहरण लीजिये –

"तुम्हारा जी ऊबा-ऊबा है,
मेरे पास आ जाओ,
मेरा भी जी ऊबा ऊबा है।
आमने सामने बैठकर
एक दूसरे की आँखों में आँखें डालें,
एक दूसरे के दिल में झाँकें,
शायद कहीं और घनी हों समतायें।"[1]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, बहुत दिन बीते, पृ० 187.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुराने मूल्य बताते हैं कि मनुष्य अपनी त्रुटियों को सुधारने का सतत प्रयत्न करता था परन्तु आज वह अपनी त्रुटियों को नजरन्दाज करके दूसरों के दोष ढूंढता है। "कटती प्रतिमाओं की आवाज" में टूटते मानव मूल्यों की रचनायें व्यंगात्मक शैली में हैं। आज मनुष्य की कीमत केवल कौतूहल के खेल की सी हो गई है। वह हर दम पिसता है। बदले में मिलता है अपमान और उपेक्षा। उसकी विद्रोह करने की क्षमता मानों मर गई है। वह केवल अपनी दुर्बलताओं पर हंस सकता है और अतीत पर पश्चाताप कर सकता है —

"तुम्हें अपनी बीती पर
पश्चाताप है ?
यह एक बड़ी उपलब्धि
अपने आप है।
तुम अपने पर
हंसते हो ?
कौन कहता है कि
तुम सस्ते हो ?"....[2]

यही है जीवन की विडम्बना और जीवन मूल्यों का टकराव। प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने इस कविता के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है—

"सामने की घुने-घुती दीवार पर
जो दीमक
माटी की लकीरें बना रही हैं
मेरी समान धर्मा है।
वह लकीरें भीतर से पोली हैं
जिनमें वह बनती है।

---

1. "कटती प्रतिमाओं की आवाज" पृ० 121.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैं भी तो इन सफेद कागजों पर
लकीरें ही खींच रहा हूं -
शायद वैसी ही बोझली ।
फर्क सिर्फ इतना है
कि यह पहले लकीरें बनाती है,
फिर अन्दर चलती है,
और मैं पहले अन्दर चलता हूं,
फिर लकीरें बनाता हूं ।"[1]

बदलते मानवीय सम्बन्ध - आज समय के साथ-साथ मनुष्य के आपस के सम्बन्ध बदल चुके हैं । स्त्री,-पुरुष, पिता-पुत्र, भाई-भाई आदि सब सम्बन्ध संघर्षमय हो गये हैं । पड़ोसी-पड़ोसी के दुख-दर्द में क्या सहायक होगा जबकि वह दोनों एक दूसरे की शक्ल से भी परिचित नहीं हैं । बच्चन के काव्य में भी बदले मानवीय सम्बन्धों का जीवन्त चित्र मिलता है । "बहुत दिन बीते" काव्य संकलन में "बदली दुनिया", "टूटा हुआ इंसान," जैसी कविताएँ मानवीय मूल्यों के विघटन को स्पष्ट करती हैं। "बदलती प्रतिमाओं की आवाज" में भी "बया", "भतीजे", "तिनांजलि", आदि रचनायें संकलित हैं । "न जीने में न मरने में" शीर्षक कविता में मनुष्य की संकीर्ण मनोवृत्ति का चित्र है -

"कोई भी दुर्भाग्य
बड़ा इससे
मेरी कल्पना से परे,
तुम कछुए-से

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, बदलती प्रतिमाओं की आवाज, पृ0 200.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सिमिट रहो अपने अंगों में
और प्रतीक्षा करो कि दुनिया
आ देखे तुमको अचरज से,
और न आये तो
तुम कुण्ठित रहा करो यह सोच
तुम्हारी रत्ती भर परवाह
नहीं कोई करता है ।"[1]

अथवा-

"क्या, क्या, क्या,
क्या में अब कुछ नहीं क्या,
झुके हुए सलाम हैं,
चकी के गुलाम हैं ।"[2]

नये-पुराने का संघर्ष - बच्चन की परवर्ती रचनाओं में नये-पुराने सम्बन्धों का संघर्ष कई स्थानों पर उभरा है । नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी का संघर्ष अतीत और वर्तमान का संघर्ष है । "बदलती प्रतिमाओं की आवाज" में "दो पीढ़ियाँ", "नयी उम्र का नया सूरज", "दरख्त: पौधा", "पाँच पीढ़ियाँ" आदि कविताएँ इस संघर्ष को इसी संघर्ष को प्रतीक रूप में व्यक्त करती हैं -

"आबादी बढ़ गई
घटना चाहिये,
सब जानते हैं,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, बदलती प्रतिमाओं की आवाज, पृ0 25।
2. वही, पृ0 234.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर ज्वानों को बच्चे न पैदा करना चाहिये
इसे हम बुद्धों का षड्यन्त्र मानते हैं।"[1]

समन्वयशीलता – बच्चन का परवर्ती काव्य समन्वय का काव्य है।

"कटती प्रतिमाओं की आवाज" में नये और पुराने संघर्ष के साथ-साथ नये और पुराने का समन्वय भी कहीं-कहीं अभिव्यक्त हुआ है। "मध्यम पीढ़ी का वक्तव्य" नामक शीर्षक की कविताओं में नये और पुराने की मध्यम पीढ़ी के माध्यम से दूरी कम करने का सरल प्रयत्न किया गया है। नये और पुराने मूल्यों में समन्वय का प्रयास कवि ने इन पंक्तियों में दर्शाया है –

"बहुत पुराने
बहुत नये में
दूरी होना स्वाभाविक है,
इसीलिये मध्यम पीढ़ी पर
एक बड़ा दायित्व आज है –
वह दोनों के बीच,
अगर उसमें साहस हो
सेतु बनाए एक,
सेतु वह पुल बन जाए।
आज यही दुःसाहस करके
मध्यम पीढ़ी खड़ी हुई है।"[2]

"नाना का कुआं", "सुबह शाम" आदि रचनायें भी इसी भावना की जीवन्त उदाहरण हैं। "नाना का कुआं" शीर्षक रचना की पंक्तियां –

1. बच्चन रचनावली भाग 3, कटती प्रतिमाओं की आवाज, पृ० 235.
2. वही, पृ० 258.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"माना
कि नाना जी ने जो कुआ खुदाया था
उसका पानी गंदा है,
पर मेरे नाना को दोषने
और पुराने कुएं को कोसने से
पानी साफ होगा.....
ये हैं तुम्हारे मोगाले ।
गंदा पानी साफ होगा
सिर्फ कुए को ओगारते
ओगारते
ओगारते ।"[1]

काव्य सृजन - कवि का कथन है कि कविता आज मान्य और स्वीकृत रूपों को छोड़ कर युग-जीवन के अनुरूप नये स्वरूप, नये स्वभावों की खोज में है । यह परिस्थितियाँ जहाँ काव्य प्रतिभा के लिये बड़ी भारी चुनौती हैं, वहाँ बड़ा अनुकूल अवसर भी हैं -- पुराने तथ्यों के मलबे के ढेर और नये उभरते यथार्थों के अम्बार से सृजन तत्वों को छटा-चुन लेने और एक अभिनव सृष्टि को साकार करने का और, यदि वैसी, परिवेश भेदी दृष्टि प्राप्त हो सके तो युग-जीवन के विकास और उत्थान के लिये, अन्तिम रूप से ही सही, नये मूल्यों अथवा नये आदर्शों, कम से कम, नये सदर्भों, नयी राहों को निरूपित अथवा निश्चित करने का भी । समय-सापेक्ष रहते हुए समयातीत बनना उच्च कोटि के सृजन का निकष भी है, विरोधाधिकार भी । . . . .

कविता वह है जिसे कवि कविता कह कर दे, जिसे पाठक कविता समझकर ले, और समय जिसे कविता सिद्ध कर दे ।"[2]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3 , कटती प्रतिमाओं की आवाज, पृ० 264.
2. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ० 226.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आज जीवन तेजी से बदल रहा है । इसका प्रभाव साहित्य पर पड़ना भी स्वभाविक है । कविता भी युग जीवन के अनुरूप ही बदल रही है । काव्य-सृजन की प्रक्रिया में बदलती हुई परिस्थितियों का विशेष हाथ होता है । कुछ पुरानी कविताएं इतनी अच्छी होती थीं कि वह बारम्बार पढ़ी जाने पर भी नवीन ही लगती हैं । आज की अधिकांश कविताएँ आज की परिस्थितियों पर लिखी जाती हैं और उनका मूल्य कुछ समय बाद पुराने अखबार की तरह रह जाता है ।

"बहुत दिन बीते " संकलन की बहुत सी कविताएँ इसी संदर्भ में देखी जा सकती हैं " "कठिन साध्य" "घबराया कवि", "अनकही बात", " "बदली दुनिया" और "ईर: वीर: फत्ते हम" आदि रचनाएं हैं । कटती प्रतिमाओं की आवाज" संकलन की "कविता और कविता", "दार्शनिक और कवि", "कवि और विदूषक", "साहित्य:उन्नान", कवि और राजनीति" आदि रचनायें कवि की काव्य-सृजन प्रक्रिया पर तथा आज की परिस्थितियों पर लिखी गई कविता हैं –

"प्रतीक्षा है
तुम्हें पद की
मुझे पद की
औ, पदों के आहटों की;
धार के बदले हुए
अखबार की तुमको पड़ी है,
और मुझको
धार को बांधे तटों की ।"[1]

अथवा- कवि का आत्म संघर्ष देखिये "कवि का संघर्ष" शीर्षक कविता की पंक्तियों में –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 271.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"लिखा हुआ अपना
मैं खुद ही मिटा रहा हूं
मिटे-अध-मिटे के ऊपर मैं फिर लिखता हूं,
लिखे हुए पर फिर लिखता हूं
आड़ी, तिरछी, गोल लकीरें खींच रहा हूं,
लिखता क्या हूं,
अब तो कीचमकीच रहा हूं ।
एक मरुस्थल सींच रहा हूं ।"[1]

यौवन और वार्धक्य – यौवन और वार्धक्य के आधार पर लिखी हुई कविताएँ बच्चन जी के परवर्ती काव्य में अपना एक विशेष स्थान रखती हैं । "बहुत दिन बीते" कवि की साठोत्तरी रचना है । इनकी रचनाओं के शीर्षक बड़े सांकेतिक होते हैं । "बहुत दिन बीते" रचना की सांकेतिक व्यंजना यह है कि प्रणय की स्वप्निल भावनाओं को बीते बहुत दिन हो गये । अब उनमें कवि का कोई आकर्षण नहीं रहा है । बुढ़ापा अपने किये हुए कर्मों को गहराई से सोचने, मनन करने तथा चिन्तन करने का सुअवसर है । यह सुअवसर बहुत कम लोगों को ही प्राप्त होता है । जिस प्रकार नदी के दो तट हैं उसी प्रकार जीवन के भी दो छोर हैं, यौवन और वार्धक्य । दोनों का अपना अस्तित्व है । "बहुत दिन बीते" संकलन में "मेरा अभिनन्दन", "जरी गैर जरी", "क्यों जीता हूं", "साठवीं वर्षगांठ पर", "बहुत दिन बीते", नाम्क उल्लेखनीय रचनायें हैं । इसी प्रकार कटती प्रतिमाओं की आवाज में भी कवि की निम्न रचनायें वार्धक्य अवस्था को स्वीकारती हुई अतीत पर विचार करती हैं जैसे –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 287.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"दांत का दर्द", "वसीयतनामा", "मोह भंग" "कीमतें और कीमतें," "लाल सलाख", "उभरते प्रतिमानों के रूप " में भी "कवि यात्री, और "प्रण भंग" आदि शीर्षक कवितायें इसी संदर्भ में लिखी गई हैं । "बहुत दिन बीते " नामक कविता की कुछ पंक्तियां जो कवि की वार्धक्यानुभूति का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करतीं हैं –

"मैं अपनी वृद्धावस्था में
अपनी माटी की काया की
शक्ति क्षीणता अनुभव करते,
हाथ पांव का दर्द झेलते,
अक्सर यह सोचा करता था –
क्या विडम्बना !
जीवन की अन्तिम श्रेणी पर
जब कि ज्ञान-अनुभूति समन्वित
किसी सूक्ष्म का
किसी सत्य का
दर्शन मुझ को हो जाना था,
तब शरीर की चिन्ता मुझको व्याप रही है,
उल्टे, अन्तर की पीड़ा भी,
आज बाहरी बनती जाती ।
+ + + +
कविता भी तो नहीं बन सकी
तेरी लौकिक और पारलौकिक मायूसी-
मिला खुदा भी नहीं विसाले सनम भी नहीं –

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ थक-थक थक
बीते, रीते ।"[1]

कवि की यह पंक्तियां यौवन के दिनों की याद दिलाती है –

"बाल सिर के सफेद हो चले आपके ।"
"दर्पण से तो मुझे ऐसा नहीं लगता"
"बुढ़ापा कभी कभी आंखों से भी उतरता है "।[2]

प्रेम, सौन्दर्य और प्रकृति – "सुधियां", "सपने और सच्चाई" आदि कविताएँ "बहुत दिन बीते" काव्य संकलन में संकलित हैं । इन कविताओं में कवि की रागात्मक भावना की व्यंजना है । यहाँ कवि प्रेम, सौन्दर्य और प्रकृति का आनन्द लेता हुआ भी प्राकृतिक छटा से उदासीन है । लेकिन इनके सहारे अपने भाव व्यक्त करता हुआ कहता है–

"सुधियों की घाटी में
चुपके से घुस जाना
कहाँ कठिन है ?
पत्र, चित्र, उपहार पुराने
पट से राह बना देते हैं,
और समय की दूरी
कैसे जादू की आभा से उलझे हुए है ।
+ + + + +
मोती हर आंसू का कण है,
क्रन्दन भीतर से गायन है,
और समस्यायें जितनी भी सुलझ गई हैं,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, बहुत दिन बीते, पृ0 220.
2. बच्चन रचनावली भाग 3, जाल समेटा, पृ0 406.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मन में कोई गाँठ नहीं है।"[1]

इसके अतिरिक्त अन्य रचनायें भी हैं जिनमें कवि मधुर स्मृतियों के सहारे अपने अतीत के निकट पहुँच जाना चाहता है। बदली दुनिया" में देखिये –

"मेरा मन इस बदले-बदले जग में आज नहीं लगता है।"[2]

इसमें कोई सन्देह नहीं कि बच्चन जी को परवर्ती काव्य के यथार्थ दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने में अपने रागात्मक दृष्टिकोण को छोड़ना पड़ा परन्तु हम देखते हैं कि नये परिप्रेक्ष्य में लिखी गई कविताओं के बीच भी कहीं-कहीं कवि के मधु काव्य की झलक दिखाई देती है। कवि इस बात को स्वीकार भी करते हैं – "ये (परवर्ती रचनायें) किसी न किसी रूप में बीसोत्तरी से जुड़ी हुई हैं, जिनमें पहले पहल मेरा कण्ठ फूटा था"।[3]

जीवन सत्य – बच्चन के परवर्ती काव्य में कहीं कवि का चिन्तन दिखाई देता है तो कहीं जीवन का शाश्वत सत्य। कवि की दृष्टि में सुख-दुख एक दूसरे के पूरक हैं। जन्म-मरण की प्रक्रिया एक दूसरे की आवश्यकता की पूर्ति के लिए है। कवि के विचार से संघर्ष तथा आनन्द जीवन के आवश्यक अंग हैं। कवि की महत्वपूर्ण रचनायें "मंजिल" "दृष्टि और दृष्टि" इस भाव को स्पष्ट करती हैं। यह "कटती प्रतिमाओं की आवाज" में संकलित हैं। "रिडर्तल" शीर्षक कविता में जीवन का सत्य निहित है, देखिये –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, बहुत दिन बीते, पृ0 175.
2. वही, पृ0 156.
3. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 141.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"सोना
मरने का रिहर्सल है,
जो इन्सान हर दिन करता है,
पर मौत के स्टेज़ पर आते
डरता है ।"[1]

उभरते प्रतिमानों के रूप की अधिकांश कविताएँ कवि के विदेश भ्रमण के दिनों में लिखी गई रचनाएँ हैं । कवि की भ्रमण अनुभूतियाँ कविता में स्पष्ट व्यक्त हुई हैं । यहाँ तक देखा गया है कि उनके शीर्षक तक उनकी भ्रमण अनुभूतियों के प्रतीक हैं । इन कविताओं की मूल संवेदना सम-सामयिक जन-जीवन के संस्कारों की ही प्रतिच्छवि है ।

अन्त में हम कह सकते हैं कि बच्चन के परवर्ती काव्य में युग चेतना और जीवन की गहरी अनुभूतियाँ हैं । जिस कवि ने सबसे पहले मधु-प्रतीकों से आत्मदमन की अकुलाहट को वाणी दी थी वह धीरे-धीरे ऐसी भूमि पर आ गये जहाँ यथार्थ की क्रूर और बेचैन कर देने वाली स्थितियाँ हैं । उनकी इन तीनों आलोच्य कृतियों में उनका निजी सांसारिक अनुभव है । "बच्चन का परवर्ती काव्य अपने परवर्ती काव्य का अगला कदम तो है ही, समसामयिक परिवेश और यथार्थ के बदलते हुए परिप्रेक्ष्य का चित्रण भी है, जो कहीं सीधा-सपाट तो कहीं व्यंग्य पूर्ण ।"[2]

जीवन आस्था के कवि : बच्चन - " गीतों के पथ पर चलते हुए जिसने
हृदय में अट्टहास किया है, नयनों
से चिरह के दर्द के तथा अभावों के परवश आँसुओं के निर्झर बहाये हैं,

---

1. बच्चन रचनावली भाग ३, कटती प्रतिमाओं की आवाज", पृ० 289.
2. हरश्वरूप पारीक, बच्चन का परवर्ती काव्य, पृ० 61.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीवन में सुख सपनों का अनन्य अनुराग, प्राणों में निष्ठुर जग की धधकती हुई आग और तृषित कण्ठ में असीम अतृप्ति के विकल राग की स्पष्ट अनुभूति को जिसने "कवि का सत्य समझ कर मोहक प्रकृति के मधुवन में, तुने मरघट की ठंडी राख में, धुंधले अतीत के सोने खण्डहरों में, कठोर वर्तमान के भीषण दुर्ग में और स्वप्निल भविष्य के कल्पित भवन में अपनी सरल अभिव्यक्तियों को यथार्थ की तुलिका से चित्रांकित किया है, जिसने यौवन-वासना की फेनिल मदिरा के नशे में काल-जीवन का "हलाहल" घटाघट पी लिया है, स्थूल प्यार की एकटक मनुहार में जिसने जड़-प्रकृति के अंग प्रत्यंग की मांसल शोभा को रागात्मक बना दिया है और एक कुशल चित्रकार की भांति जिसने काव्य की कला को जनरुचि की गीत संवेदना में साकार करने का मानो संकल्प ही ले लिया है, अभिष्ट की रक्षा के लिये सतत संघर्ष के नारे बुलन्द किये हैं, अपेक्षित मानकता के समर्थन में आज की दुष्ट आलोचनाओं, उसके क्रूर नीति-नियमों और अनुशासनों की शृंखलाएं तोड़ने की चुनौती जगाई है, जिसने अपने व्यक्तित्व और कवि कर्म का आदर्श ही यह स्थापित किया है -

"बनकर आग नहीं बैठा जो, कब उसको स्वीकार किया है,
बनकर राग नहीं निकला जो, कब उसका इजहार किया है -

वह है अंग्रेजी साहित्य का मर्मज्ञ, पारंगत विद्वान और हिन्दी का प्राणवन्त गीतकार डा० हरिवंशराय बच्चन।"[1]

बच्चन की कविता जीवन-आस्था की कविता है लेकिन बच्चन की जीवन सम्बन्धी अवधारणायें दृढ न होकर परिवर्तनशील रही हैं उन्होंने अपने जीवन में जो भोगा और सहा वही अपनी कविता में अभिव्यक्त किया है।

---

1. डा. जीवन प्रकाश जोशी, बच्चन-व्यक्तित्व और कवित्व, 31.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"बच्चन" का काव्य उत्तर भारत के करोड़ों नर-नारियों के गले का हार बना हुआ है । इसका कारण यह है कि उनके काव्य की साधना उनके जीवन की साधना के साथ-साथ चली । उन्होंने लिखा भी है - "हैं लिखे मधुगीत मैंने हो खड़े जीवन समर में ।[1] उन्होंने अपने जीवन में जो भी दुख सुख अनुभव किया उसी की छवि उनके काव्य में दिखाई देती है। "तेरा हार" से लेकर "जाल समेटा तक का काव्य जीवन-आस्था का काव्य है लेकिन जीवन सम्बन्धी धारणायें निश्चित न होकर बदलती रहीं । यौवनावस्था की यह पंक्ति "उल्लास उमंग उन्माद तरंग[2] कवि की मन:स्थिति का जीवन्त प्रमाण है । जो मधु काव्य में व्यक्त हुई है । उल्लास का एक उदाहरण मधुशाला में देखिये -

"हाथों में आने से पहले, नाज दिखायेगा प्याला,
अधरों पर आने से पहले, अदा दिखायेगी हाला,
बहुतेरे इन्कार करेगा साकी आने से पहले,
पथिक न घबरा जाना, पहले मान करेगी मधुशाला"[3]

कवि की पहली पत्नी श्यामा देवी की मृत्यु हो जाने पर उन्होंने अनुभव किया कि जैसे उनका आधा अंग ही कट गया हो । जीवन संगिनी के चले जाने से कवि नितांत अकेला रह गया और मधु काव्य लिखने वाले कवि की काव्यधारा का प्रवाह आंसुओं में बदल गया । उनकी निराश जिन्दगी की पहली, एक उदास शाम है - अगर शाम को घर जायें भी तो किसके लिये और क्यों ? जबकि वहीं भी सुबह से थके हारे शाम को अपने बसेरे की ओर बड़ी उत्सुकता से लौटते हैं । कवि की विकलता की यह पंक्तियां साक्षी हैं -

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 136.
2. वही, पृ0 97.
3. वही, पृ0 46.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"मुझ से मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊं किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को,
भरता उर में विह्वलता है ।
दिन जल्दी जल्दी ढलता है ।"[1]

।निशा निमन्त्रण ।

यह ठीक है कि निशा निमंत्रण के गीतों में निराशा है, अवसाद है, इतने से ही कवि के प्रति कोई निश्चित धारणा बना लेना ठीक नहीं इससे कवि के जीवन के एक पक्ष पर ही विचार किया जा सकता है पूरे व्यक्तित्व पर नहीं । कोई निर्णय लेने से पूर्व उसके पूरे व्यक्तित्व पर विचार करना होगा ? कवि के जीवन में एक से एक बड़ी घटनायें घट गईं । उनका प्रभाव कुछ समय तक मन पर रहना स्वाभाविक है और वह रहा भी । बच्चन जी का कहना है – "मुझ में जो जिजीविषा थी, जीने की कामना थी, उसके प्रति मैं सचेत था, । "फिर भी जीवन की अभिलाषा।"।; मैं एक जगह बैठकर साँसे गिनना नहीं चाहता था, आगे बढ़ना चाहता था – ध्येय न हो आगे तो भी – । ध्येय न हो, पर हे मग आगे, बल थकता चल तू पग आगे "। इसी से अपने से पूछा था – तू क्यों बैठ गया है पथ पर ?" और अन्त में अपनी यह इच्छा व्यक्त की थी -- "चिता निकट भी पहुंच सकूं मैं अपने पैरों-पैरों चल कर"– मर कर भी चलने को तत्पर । इससे अधिक साहसी और स्वाभिमानी आकांक्षा की अभिव्यक्ति मैंने नहीं जानी है । निराशा का सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह होता है कि वह मनुष्य को आत्म-केन्द्रित अथवा अपने में संकुचित कर देती है। मेरी निराशा में यह नहीं है । "निशा-निमन्त्रण" का गायक कहता है–

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 161.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"जय हो है संसार तुम्हारी ।
जहाँ झुके हम वहाँ तनो तुम,
जहाँ मिटे हम वहाँ बनो तुम,
तुम जीतो उस ठौर जहाँ पर हमने बाजी हारी ।"[1]

यद्यपि आलोचकों के द्वारा "बच्चन" की रचनाओं की काफी आलोचना की गई है परन्तु सहृदय श्रोता और प्रबुद्ध पाठकों के द्वारा उनके काव्य की मुक्त कण्ठ से भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है । "मधु काव्य को "वासना की उपासना" कहा गया तथा वेदना से भरे काव्य पर मृत्यु पूजा तथा पलायनवादिता का आरोप लगाया गया जबकि बच्चन की निराशा तथा वेदना, उनके जीवन की तत्कालीन परिस्थितियाँ तथा उनकी मन:स्थिति थी, न कि यह धारणा उनके जीवन का मूल दृष्टिकोण । जब वेदना असह्य हो गई तब उन्होंने अपनी मानसिक दशा को इन पंक्तियों में अभिव्यक्त किया –

"मेरे पूजन आराधन को,
मेरे सम्पूर्ण समर्पण को,
जब मेरी कमजोरी कह कर,
मेरा पूजित पाषाण हंसा ।
तब रोक न पाया मैं आंसू "[2]

– एकान्त संगीत ।

---

1. नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 107.
2. एकान्त संगीत, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 231.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीवन की प्रवंचनाओं और अभावों के कारण कहीं कहीं बच्चन के काव्य में नियतिवादी दृष्टिकोण भी उभरा है । परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि वह नियति के आगे नत है । उनके ललकार के स्वर को हम अनसुना कैसे कर सकते हैं ? वह तो लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिये कृत संकल्प हैं —

"पर मेरी तो यह अभिलाषा—
चिता निकट भी पहुंच सकूं मैं अपने पैरों पैरों चल कर।[1]

—।निशा-निमन्त्रण।

डा० नगेन्द्र ने लिखा है - "निशा-निमन्त्रण" और "एकान्त संगीत" का रचनाकाल "बच्चन" के लिए आत्म-साक्षात्कार का समय है। इन कविताओं में भाग्य चक्र के नीचे कुचले मानव के चीत्कार और ललकार दोनों के मिले जुले स्वर स्पष्ट सुनाई पड़ते हैं, "— ।आस्था के चरण। न जाने आलोचकों ने इन्हें कैसे निराशावादी कवि कह दिया - कवि की अडिग विश्वास की दृढ़ भावना की यह पंक्तियां देखिये —

"प्रभंजन मेघ दामिनि ने
न क्या तोड़ा, न क्या फोड़ा
धरा के और नभ के बीच
कुछ सांचित नहीं छोड़ा,
मगर विश्वास को अपने
बचाये कौन बैठा है
अंधेरी रात में दीपक

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, निशा निमन्त्रण, पृ० 198.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जलाये कौन बैठा है ।"[1]

— । जुगनू ।

या

"गहनांधकार में पाँव धार,
युग नयन फाड़, युग कर पसार,
उठ-उठ, गिर-गिर, कर बार-बार,
मैं खोज रहा हूं अपना पथ, अपनी शंका का समाधान ।"[2]

-।आकुल अन्तर।

अब धीरे-धीरे कवि आत्मगत दृष्टिकोण से निकलकर वस्तुगत दृष्टिकोण की ओर कदम बढ़ाता है । प्रत्येक व्यक्ति को अपना सुख-दुख अकेले ही सहना है । यह अनुभव कवि को अकेलेपन में भी सम्बल देता है । और वह अपनी शक्ति का भी अनुमान लगाने लगता है —

"तन मन अपना जीवन अपना
अपना ही जीवन का सपना
जहाँ और जब चाहे कर दे तू सब कुछ बलिदान
अकेलेपन का बल पहचान ।"[3]

"निशा-निमन्त्रण" में घोर अन्धकार के साथ-साथ प्रकाश की रेखायें भी यदा-कदा दिखाई देती हैं । यद्यपि "एकान्त संगीत" में कवि उस वेदना पर, अन्धकार पर विजय पाने में सफल हो जाता है ।उसने अपने जीवन के अन्धकार को अन्तिम सत्य का जामा नहीं पहनाया था ।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, सतरंगिनी, पृ0 334.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, आकुल अन्तर, पृ0 294.
3. वही, पृ0 289.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवि की विचारधारा सतरंगिनी में देखिये - "अंधकार के ऊपर प्रकाश, विध्वंस के ऊपर निर्माण, निराशा के ऊपर आशा और मरण के ऊपर जीवन की जीत का गीत है। यह कोई मामूली बात नहीं है। यह "अश्रु, स्वेद रक्त" का मूल्य चुकाकर उपलब्ध किया गया है।[1] कवि ने अपनी वेदना को अपने गीतों में व्यक्त कर अपने आपको एकदम हल्का कर लिया है। परिणामस्वरूप "सतरंगिनी" अत्यन्त आकर्षक इन्द्रधनुषी रंगों के साथ सामने आई। "जो बीत गई सो बात गई" कह कर कवि ने अतीत की गहनतम वेदना से बाहर कदम रखा और अपने आपको जीवन के नये स्वप्न सजाने के लिये तैयार कर लिया। कवि "सतरंगिनी" में एक चिड़िया को मुंह में तिनका ले जाते हुए देखता है जो भयंकर तूफान को भी चुनौती देती हुई आगे बढ़ रही है। यह कविता इस भाव को स्पष्ट करती है -

"जो बसे हैं, वे उजड़ते हैं
प्रकृति के जड़ नियम से
पर किसी उजड़े हुए को
फिर बसाना कब मना है ?"[2]

- ।सतरंगिनी।

अथवा

"कब अम्बर शोक मनाता है
कब रोता है कब चिल्लाता है ?"[3]

अथवा

"एक चिड़िया चोंच में तिनका लिये जो जा रही है,
वह सहज में ही पवन उनचास को नीचा दिखाती है।
नाश के दुख से कभी दबता नहीं निर्माण का सुख
प्रलय की निस्तब्धता से सृष्टि का नव गान फिर-फिर।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, सतरंगिनी, पृ0 310.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 340.
3. वही, पृ0 344.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नीड़ का निर्माण फिर-फिर!
नेह का आह्वान फिर-फिर ।[1]

"सतरंगिनी के गीतों का आशामय आह्वाद अनुभूतिमय प्रेरणा के संस्पर्श से संजीवित होने के कारण केवल बुद्धि को ही "अपील" नहीं करता, हृदय को भी बहुत गहराई से छूता है । विश्व भर की अवहेलना और अपशगुन अब उसके मंगलमय मार्ग का अवरोध नहीं कर पाते । कवि को सृष्टि के कण-कण से आनन्द और उल्लास की रात-रात लहरें उमड़ती हुई दिखाई पड़ती हैं । अन्धकार है तो रहे । कवि निर्भय हो चुका है- "है अँधेरी रात तो दीवा जलाना कब मना है ?" "सतरंगिनी" वास्तव में आशा का एक दीप नहीं पूरी दीवाली है ।"[2]

"निशा-निमन्त्रण" और "मिलन यामिनी" वियोग शृंगार और संयोग शृंगार की अभिव्यक्ति हैं । इन दोनों के बीच की कड़ी है "सतरंगिनी"। यह दोनों की भावना को मिलाने का सेतु है । इसके गीतों में प्रणय, साहस, सृजन के स्वर सुनाई देते हैं । "बच्चन" जी ने स्वयं लिखा है -"सतरंगिनी आग से राग के संसार में पदार्पण का बोध कराती है । "मिलन-यामिनी" राग के संसार को जीने, भोगने की अनुभूति है ।"[3] "मिलन यामिनी" में कवि अनुभव करता है "डूबना है व्यर्थ पिछले आँसुओं में ।"[4]

"बच्चन" ने जब अपना दुःख दर्द सबको बाँटा है तो आनन्द के स्रोत को अपने तक सीमित कैसे रख सकते थे । उनके उल्लास तथा आनन्द के गीतों का संकलन "मिलन यामिनी" और "प्रणय पत्रिका" है । "मिलन यामिनी"

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, सतरंगिनी, पृ० 349.
2. डा० रमेशचन्द्र द्वारा अनूदित - बच्चन : निकष पर, पृ० 16.
3. नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 354.
4. बच्चन रचनावली भाग 2, मिलन यामिनी", पृ० 33.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की यह पंक्तियाँ देखिये –

"ठीक है मैंने कभी देखा अँधेरा
किन्तु अब तो हो गया फिर से सवेरा ।
भाग्य किरणों ने छुआ संसार मेरा
प्रात मुकुलित फूल सा है प्यार मेरा।"[1]

अब "बच्चन" की काव्य-यात्रा वेदना से मुक्त होकर आत्मिक प्रसन्नता प्राप्त कर रही है । कवि अपने जीवन की नई उपलब्धियों को देखता है और कह उठता है –

"मैं जलन का आग अपने भोग आया,
सब मिलन का यह संयोग आया,
दे चुका हूँ इन पलों का मोल पहले"[2]

"मिलन यामिनी" का मूल स्वर जीवन का स्वर है । वह जीवन जो मनुष्य को हर मूल्य पर प्यारा है । देखिये इन पंक्तियों को –

"फूलों से चाहे आँसू से
मैंने अपनी माला पोही,
किन्तु उसे अर्पित करने को
बाट रहा जीवन की जोही
गई मुझे ले मृत्यु बुलावा
दे अपनी दुर्गम घाटी में
किन्तु वहाँ पर भूल भटक कर
खोजा मैंने जीवन को ही

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, मिलन यामिनी, पृ० 18.
2. वही, पृ० 31.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीने की उत्कट इच्छा में
था, मैंने आ मौत पुकारा
वर्ना मुझको मिल सकता था
मरने का सौ बार बहाना
प्यार, जवानी, सत्य इनका
जादू मैंने सब दिन माना" - [1]

बच्चन कोरी कल्पना में विश्वास नहीं करते । उन्होंने अपने सारे जीवन में सत्य और स्वप्न दोनों को ही महत्व दिया है और दोनों में ही सन्तुलन बनाये रखा है । इसी लिये उन्होंने जीवन में सत्य और स्वप्न का अनुपात इस प्रकार माना है –

"एक सत्य के ऊपर होती,
सौ-सौ स्वप्नों की कुर्बानी ।"[2]

मानव जीवन में स्वप्नों का आना स्वाभाविक है लेकिन स्वप्नों की सार्थकता इसी में है कि वह मानव में प्रेरणा का संचार करे । कई बार देखा गया है कि स्वप्न पूरा होने से पहले ही टूट जाता है किन्तु उन टूटे हुए स्वप्नों के साथ जीवन टूट नहीं जाता और ना ही उसकी गति रुकती है । " बच्चन" जी की यह पंक्तियाँ इसी बात की पुष्टि करती हैं–

"और छाती पर करके
सत्य तीखा
आज यह
स्वीकार मैंने कर लिया है
स्वप्न मेरे

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, मिलन यामिनी, पृ0 43.
2. वही, भाग 1, मिलन यामिनी, पृ0 343.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अवस्त तारे हो गये हैं
किन्तु इस गतिमान जीवन का
यही तो अन्त नहीं है
अभी तो चलना बहुत है
बहुत सहना देखना है ।[1]

"बच्चन के काव्य में मृत्यु कामना के स्वर "निशा निमन्त्रण" में भी सुनाई पड़ गये हैं परन्तु कुल मिलाकर वे जिजीविषा के कवि हैं। जीवन के सभी रूपों के प्रति उनका अत्यन्त आकर्षण रहा है । " नहीं रुके, दो पद भी चल, कभी जीवन का दामन छोड़" का दावा करने वाले कवि ने जीवन के फूल-फूल और धूप-छांह दोनों का एक जैसा स्वागत किया है । "प्यार जवानी और जीवन के जादू को मानने वाले कवि ने अपनी अदम्य जीवन-आस्था के कारण ही चिता की राख में से भी जीवन के कण खोज निकाले है । "बच्चन के लिये जीवन का अर्थ संघर्ष रहा है और उन्होंने अस्थि, स्वेद और रक्त से लथपथ मनुष्य को ही मानव की महत्तम प्रतिमा के रूप में वन्दित अभिनन्दित किया है "देवता मेरे वही हैं जोकि जीवन में पड़े संघर्ष करते ।"[2]

कवि आन्तरिक तथा बाह्य अंधकार को अपने गीतों के दीपक से दूर कर विश्व को आलोकमय करना चाहता है - मिलन यामिनी की यह पंक्तियाँ इसकी पुष्टि करती हैं -

"एक दुनिया है हृदय में, मैं मानता हूं,
वह घिरी तम से, इसे भी जानता हूं,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, त्रिभंगिमा, पृ0 420.
2. डा0 रमेश गुप्त द्वारा अनुदित, बच्चन : निकष पर, पृ0 16.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छा रहा है किन्तु बाहर भी तिमिर घन,
गीत मेरे, देहरी के दीप-सा बन ।"[1]

जीवन चाहे कितना भी कांटों से भरा क्यों न हो परन्तु जीवन जीने के लिये ही होता है । मृत्यु शैय्या पर पड़ा हुआ व्यक्ति भी जीने के लिये भरसक प्रयत्न करता है इसमें चाहे उसे असफल ही रहना पड़े यह पंक्तियां इसकी साक्षी है –

और मेरे पेट पर जीवन का पहिया है
लेकिन जो मुक्त में था
देव बन
पशु बन
सबको समेट कर
मैंने उसे पकड़ा है
पंजों में जकड़ा है ।"[2]

नश्वर जगत से मुक्त होकर अमरत्व की ओर अग्रसर होने की भावना भी एक बड़ी मानसिक साधना है । "हलाहल" का शाब्दिक अर्थ है मृत्यु पर विजय की साधना, निर्भयता की साधना –

"मरण था अब के अन्दर व्याप्त
हुआ निर्भय तो विष निस्तत्व
स्वयं हो जाने को है सिद्ध
हलाहल से तेरा अमरत्व ।"[3]

"बच्चन" की व्यष्टि चेतना की अपेक्षा समष्टि चेतना अधिक जागृत रही है । वे व्यक्ति की आत्मनिष्ठ अनुभूतियों के कवि रहे हैं । उन्होंने

---

1. बच्चन रचनावली , पृ0 39.
2. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 348.
3. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 400.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह लिखा भी है - "मैं अपने हृदय की गहराई मापता हूँ और दूसरे के हृदय की गहराई मप जाती है, परन्तु इस व्यक्ति-सजगता के मूल में समाज-विमुखता का लेश भी नहीं है। "बच्चन" का अकेलापन उसकी जीवन स्थितियों की विवशता है, यह नहीं कि वे समाज से विच्छिन्न होकर अपने अहम् के घोंघे में बन्द रहना चाहते हों। अपने अकेलेपन के घेरे से बाहर निकलने के लिये वे प्रारम्भ से ही सजग रहे हैं -

तू एकाकी तो गुनहगार।
अपने प्रति होकर दयावान
तू करता अपना अनुपान,
जब बड़ा माँगता दग्ध विश्व
तेरे नयनों की सजल धार।"[1]

"बच्चन मानव की महिमा और जीवन की गरिमा के गायक हैं, मानव वही नहीं, जो गौतम और गांधी बनता है, जो खिन्न और विपन्न है वह भी मानव है और बच्चन उससे भी लगाव अनुभव करते हैं। मुझे मनुष्य सब जगह महान है, कवि को यदि स्वर्ग की मिट्टी भी मिल जाए तो उसमें भी वह किसी देव-किन्नर की नहीं, मानव की ही मूर्ति गढ़ेगा। "बच्चन" के काव्य में मानव और जीवन के अनेक रूप अनावृत्त हुए हैं, अनेक आयाम उद्घाटित हुए हैं, पर, कहीं भी, किसी भी, रूप में मानव और जीवन का तिरस्कार नहीं है। चाहे कितनी ही घनघोर निराशा क्यों न हो, कितना ही कठोर संघर्ष क्यों न हो, जीवन है जीने के लायक, जीवन कुछ करने के लायक। " मनुष्य गिरता है, फिर उठता है, जीवन में एकबार अन्धकार छाता है, फिर प्रकाश की किरणें चमकने लगती

---

1. डा० रमेश गुप्त द्वारा अनुदित बच्चन निबन्ध पर, पृ० 19.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं । यह सही है कि जीवन एक संघर्ष है, पर जीवन को कोरा संघर्ष कहना भी एक अधूरे सत्य को स्वीकार करना होगा –

"जीवन एक प्रहार है मधुमय
पर इससे अतिरिक्त बहुत कुछ ।"[1]

इसमें सन्देह नहीं कि "बच्चन" जीवन और यौवन के कवि रहे हैं, "बच्चन" का दृष्टिकोण कभी भी अहंता का शिकार नहीं हुआ । जीवन की सार्थकता जीते रहने में है यतिमय जीवन का ही कवि ने सदैव अभिनन्दन किया है जीवन में सुख की घड़ियाँ भी आईं और गहनतम दुःख की भी लेकिन कभी भी "बच्चन" जी विचलित नहीं हुए । निरन्तर आगे ही आगे बढ़ते रहे। यह पंक्तियाँ कवि के आशावादी दृष्टिकोण को व्यक्त करती हैं –

"मैं जहाँ खड़ा था कल, उस थल पर आज नहीं
कल इसी जगह फिर पाना मुझको मुश्किल है।"[2]

बच्चन की रचनाओं का क्रमिक परिचय

1. प्रारम्भिक रचनायें – । सन् 1930 से 33 के बीच लिखित ।

बच्चन जी की प्रारम्भिक कविताएं "प्रारम्भिक रचनायें" नामक दो काव्य संग्रहों में सन् 33 में प्रकाशित हुई थीं । इससे पूर्व सन् 32 में "तेरा हार" शीर्षक काव्य संग्रह भी प्रकाशित हुआ था । "प्रारम्भिक रचनायें" भाग एक । : प्रथम प्रकाशन 1943 भारतीय भण्डार, प्रयाग, से प्रकाशित हुआ । इस संग्रह की पहली अट्ठाईस कविताएँ प्रथम बार

---

1. डा० रमेश गुप्त द्वारा उद्धृत : बच्चन निकष पर, पृ० 20
2. बच्चन रचनावली भाग 2, मिलन यामिनी, पृ० 68.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"तेरा हार" शीर्षक से प्रकाशित हुई थी । यह काव्य संग्रह श्रीकृष्ण और चन्द्रमुखी " को समर्पित है। "प्रारम्भिक रचनाएं भाग 2" में 39 कविताएं संकलित हैं । बच्चन जी की प्रारम्भिक कृतियों में प्रकृति सौन्दर्य और सुख दुख के उद्गार हैं । इन कृतियों में कवि का कृतित्व अधिक सुन्दर" उभरा है । इनकी कविताओं में इतनी घनिष्ट आत्मीयता है कि पाठकों का मन बरबस ही अपनी ओर खींच लेती हैं । लेकिन यह उद्गार छायावादी कवियों के उद्गारों से भिन्न हैं । इनमें कल्पना के स्थान पर जीवन का जीवन्त स्वर प्रबल है ।

"जीवन का तो चिन्ह यही है सो कर फिर जग जाना,
क्या अनन्त निद्रा में सोना नहीं मृत्यु का आना।[1]

\+ + + +

किसको जीवन अच्छा लगता किसको प्रिय न मरण होता,
यदि न जगत में सबका कोई अपना आकर्षण होता।"[2]

आरम्भिक रचनाओं में कवि ने प्रेम, प्रकृति, यौवन, जीवन और जगत विषयक अनेकों पंक्तियां लिखी हैं ।"आदर्श प्रेम" नामक कविता की यह पंक्तियां देखिये –

"प्यार किसी को करना लेकिन, कह कर उसे बताना क्या,
देकर हृदय हृदय पाने की, आशा व्यर्थ लगाना क्या ।[3]

× × × ×

याद नहीं मुझे तुझे देखा पहले या प्यार किया ।[4]

कवि की "प्रारम्भिक रचनायें" काव्य जगत में प्रवेश की रचनाएं हैं ।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 458.
2. वही, पृ0 549.
3. वही, पृ0 466.
4. वही, पृ0 467.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह काल कवि की कल्पना शक्ति के जागरण का काल है । बच्चन जी का प्रकृति चित्रण पंत जी के प्रकृति चित्रण के समान ही है । परन्तु जो सहजता पंत जी की प्रकृति विषयक रचनाओं में मिलती है वह बच्चन की प्रारम्भिक रचनाओं में नहीं मिलती है । इनकी "कोयल" "उपवन" और "गीत विहग" नामक कविताएँ है । बच्चन की प्रारम्भिक रचनाओं में राजनैतिक तथा सामाजिक संघर्ष का स्वर मुखर हुआ है ।

प्रारम्भिक कविताओं में कवि की यौन चेतना की कविताओं का बाहुल्य है । इन रचनाओं से बच्चन को अधिक ख्याति नहीं मिली है । कहना अधिक उचित होगा कि "प्रारम्भिक रचनायें" कवि की आत्मकथात्मक रचनाओं का संकलन है । इन रचनाओं में प्रकृति के माध्यम से कवि की किसी किशोर मन की भावनायें सहज रूप से अभिव्यक्त हुई हैं । यह काव्य-शिल्प की दृष्टि से उतनी सफल नहीं है ।इसमें सन्देह नहीं कि बच्चन की "प्रारम्भिक रचनायें" बहुत महत्वपूर्ण है । उनका साहित्य में अपना अलग ही स्थान है । कवि की प्रारम्भिक रचनाओं में "अतीत की प्रतिध्वनियाँ" नामक काव्य संकलन "बच्चन रचनावली भाग 3 में पहली बार 1985 में प्रकाशित हुआ है । "अतीत की प्रतिध्वनियाँ" में कवि ने "अपने पाठकों से" लिखा है कि "अतीत का गीत" और मरघट" नामक काव्य संकलन प्रायः नष्ट हो गये थे[1] टीक करती हुई दो अधूरी पाण्डुलिपियाँ कवि के सामने थीं । उस पाण्डुलिपि में कुल 24 कविताएँ थीं । "मरघट" के 12-14 पृष्ठ थे वह भी "मरघट" नाम से प्रकाशित हो गये हैं । पीने वाले मधुशाला से जब विदा होते हैं उसकी ध्वनि इन पंक्तियों में –

---

1. दृष्टव्य - बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 435.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"जलकर कभी न बुझने वाली, मधुशाला की आग विदा,
उठ कर कभी न दबने वाले मधुबाला के राग विदा,
विदा यक्ष के ऊपर सोयी सुरा-निमज्जित मालाओ,
तन-मन रंजित करने वाले मधु से खेले फाग विदा !

× × × × ×

मधु घट से प्यालों में गिरने वाली मधु की धार विदा,
पीने वालों के साकी के इसरारो - इनकार विदा,
विदा इशारे जिन पर सौ-सौ अर्थ निछावर होते थे
पल भर में घुल जाने वाले सपनों के संसार विदा ।"[1]

"अतीत की प्रतिध्वनियाँ" नामक रचना में 48 चतुष्पदियाँ हैं । कवि ने "अतीत का गीत" पाण्डुलिपि का नाम बदल कर "अतीत की प्रतिध्वनियाँ" रखा है । यह पाण्डुलिपि कवि ने चम्पा और कर्कल की स्मृति में समर्पित भी की है । इस रचना में कवि के अपने जीवन की वेदना की झलक मिलती है । उसका अन्तर्द्वन्द्व इन पंक्तियों में स्पष्ट दिखाई देता है –

"मैं किसी उन्माद का अवशेष हूं,
मद-रहित क्या देखना मैं शेष हूं,
स्वप्न देखा था कभी उद्यान का
वास्तव में मैं रहा मरु-देश हूं।"[2]

अन्तर पीड़ा इन पंक्तियों में भी मुखर हुई है –

"भेंट सब कुछ कर दिया था प्यार को,
रख लिया था दर्द भर आधार को,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ० 451.
2. वही, पृ० 445.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हाथ, पीड़ा भी न अब अपनी रही,
गीत में रख दे चुका संसार को ।" 1

2. मधुशाला -- मधुशाला सन् 1935 में प्रकाशित हुई । इस समय तक "खाइयत उमर खैयाम" की समता पर मधुशाला में 75 रुबाइयां थीं, दिसम्बर 1933 तक जब इनमें से कुछ "सरस्वती" में प्रकाशित हुईं, इनकी संख्या 108 तक पहुंची और '34 तक, जब यह संग्रह-रूप में छपने को अभ्युदय प्रेस, प्रयाग में दी गई गयी छपी नहीं । अपने वर्तमान रूप में आयी । क्रम आदि में भी बहुत से परिवर्तन किये गये । अब "मधुशाला" पर चार नयी रुबाइयां प्रस्तुत हुई हैं । "मधुशाला" के प्रकाशित होते ही बच्चन जी की ख्याति काव्य गगन को छूने लगी । उनके स्वर की गूंज देश भर में फैल गई । इस कृति में पूरी सहजता, स्पष्टता और स्वच्छन्दता के साथ मानव-मन की यौन चेतना खुलकर व्यक्त हुई । भारत के करोड़ों लोगों ने उनकी आवाज को अपनी आवाज समझा, उनके स्वर में स्वर मिलाया । "मधुशाला" तथा "मधुबाला" की लोकप्रियता का कारण बच्चन जी के ही शब्दों में - इसमें जनता के भाव हैं, जनता की भाषा है । मैंने उसी के धरातल पर खड़े होकर उसकी बात कही थी, इसीलिये जनता ने उसे पसन्द किया ।"2 जनता में इतना लोकप्रिय कवि अन्य नहीं हुआ, ना ही उसकी रचना ।

बच्चन का काव्य अतृप्ति और उसकी मनोमयी परितुष्टि का काव्य है । जिस युग में बच्चन पैदा हुए थे वह अन्धविश्वासों से ग्रस्त सामाजिकता का युग था । वहां अतृप्ति की बात करना गुनाह था, बच्चन के प्रारम्भिक काव्य को समाज अश्लील कहने में भी नहीं चूका जबकि प्रत्येक युवा मन ने आत्म विभोर होकर उसका स्वागत किया, कवि के हृदय की

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 445.
2. बच्चन रचनावली भाग 9, साक्षात्कार, पृ0 35.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वाणी हमें "मधुकलश" में सुनाई पड़ती है –

"इस कुपथ पर या सुपथ पर
मैं अकेला ही नहीं हूं,
जानता हूं, क्यों जगत फिर
उंगलियां मुझ पर उठाता
मौन रह कर इस लहर के
साथ संगी बह रहे हैं,
एक मेरी ही उमंगे
हो उठी हैं व्यक्त स्वर में।"[1]

अतृप्ति प्रत्येक युग में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में काव्य के माध्यम से व्यक्त हुई है। "कामायनी" में भी प्रसाद जी ने इसी अतृप्तिबोध को अपूर्णता के रूप में प्रस्तुत किया है। बच्चन के काव्य को जन-मानस ने अत्यधिक प्रभावित किया इसलिये उनके काव्य में अतृप्ति के बोध को दार्शनिकों की सी भाषा में व्यक्त नहीं किया गया। इसके अतिरिक्त इसके निराकरण के लिये भी कवि ने कोई आध्यात्मिक रास्ता नहीं बताया।

बच्चन जी के काव्य की मुख्य विशेषता यह है कि इन्होंने अपनी अनुभूतियों को जनमानस की अनुभूतियों में रूपान्तरित किया है। कवि को अनेकों अग्नि-परिक्षाओं से गुजरना पड़ा। उनका पारिवारिक परिवेश भी उनके मनोनुकूल न था। राजनीतिक क्षेत्र में स्वाधीनता की नव-चेतना उठ रही थी उससे युवा पीढ़ी में आत्म विश्वास और साहस की भावना का उदय हो रहा था। सामाजिक क्रान्ति ने तथा पारिवारिक अंध-विश्वास ने उन्हें जीवन और जगत के प्रति सोचने के लिये बाध्य किया, ऐसी गम्भीर स्थिति में वह अपनी अनुभूतियों को निःसंकोच व्यक्त करते हैं –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, मधुकलश, पृ0 135.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"मैं निज मन के उद्गार लिये फिरता हूं
मैं निज उर के उपहार लिये फिरता हूं।"[1]

बर्लिन के शब्दों में युवा बच्चन की मनःस्थिति के विषय में उनके विचार देखिये - "कवियों के तप-त्यागी उद्गारों ने संसार को व्यथित कर दिया था इसीलिये संसार ने उनका तिरस्कार कर दिया था। पर अपनी बारी आने पर वह स्वयं संसार को दुत्कार देते हैं।" उस समय बच्चन जी ने अपने आपको इसी राजनीतिक और सांस्कृतिक संघर्ष के बीच खड़ा पाया। तेईस वर्ष का युवक, जीवन की उद्दाम पिपासा लिये, अपनी उल्लास प्रेरणा से परिचालित होने का अभिलाषी, अपने स्वप्न आदर्शों के अनुसार सोचने, जीने का इच्छुक, पल-पल में विरोध, पग-पग पर बाधायें। ऐसी स्थिति में कवि ने अहंकार समाज को पागल कहा और समाज ने कवि को-

"पागल सब संसार कह उठा
स्वर्ग कह उठा ज्ञानी,
भाग्य पटल पर विधि ने लिख दी
कवि की जटिल कहानी।"

जिस समय बच्चन जी ने काव्य-यात्रा शुरू की थी उस समय एक तो स्वच्छन्दतावादी कवियों के द्वारा अभ्युत खड़ी बोली का प्रचलन था तो दूसरी ओर द्विवेदी-युगीन कवियों की अधिक प्रधान काव्य भाषा का। मैथिलीशरण गुप्त, नवीन, सोहनलाल द्विवेदी का रास्ता मस्ती अल्हड़ता और उदासीनता का था। यही मार्ग बच्चन जी ने भी अपने काव्य के लिये अपनाया और काव्य भाषा को एक नया उत्कर्ष प्रदान किया। "आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियों में डा० नगेन्द्र कहते हैं कि - बच्चन के आरम्भिक काव्य में पाठक को पहली बार समाज विरोध की अभिव्यक्ति

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, सतरंगा, पृ० 112.
2. द्रष्टव्य : प्रगीतकार बच्चन और अंग्रेज, पृ० 40.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से परिचय हुआ । यह सच है कि यह विरोध मधुशाला के ग्रन्थोत्तिजनी विषय वस्तु के माध्यम से प्रेरित हुआ ।

"मधुशाला" के कवि की मधु-प्रतीकों के अर्थ के विषय में धारणा निरन्तर बदलती रहती है । कभी वह अपने मृदु भावों को हाला कहता है तो कभी प्रियतम को ही । यह पंक्तियाँ इसकी पुष्टि करती हैं –

"मृदु भावों के अंगूरों की आज बना लाया हाला,
प्रियतम अपने ही हाथों से आज पिलाऊंगा प्याला,
पहले भोग लगा ले तेरा फिर प्रसाद जग पायेगा,
सबसे पहले तेरा स्वागत करती मेरी मधुशाला ।"[1]

"मधुशाला" में कवि की जीवन व्यवस्था सम्बन्धी धारणाएं व्यक्त होती हैं और आशा, निराशा, भय, अवसाद के भाव कविता में आते हैं । कवि का नियति के आगे असमर्थता का बोध स्पष्ट उजागर हो जाता है –

"मानव-बल के आगे निर्बल,
भाग्य हुआ विधान में,
"भाग्य प्रबल, मानव निर्बल
का पाठ पढ़ाती मधुशाला।"[2]

मधुशाला" में जीवन की क्षणभंगुरता का चित्र देखिये –

"छोटे से जीवन में प्यार कर, पी ले हाला,
आने के साथ जगत में कहलाया "जाने वाला,
स्वागत के ही साथ विदा की होती देखी तैयारी,
बन्द लगी होने खुलते ही, मेरी जीवन-मधुशाला।"[3]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 45
2. वही, पृ0 58.
3. वही, पृ0 54.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जो लोग सुख की प्रतीक्षा के बाद टूट जाते हैं और उन्हें जीवन में सुख नहीं मिलता उनको जीवन का संदेश देते हुए कवि कहते हैं —

"दो दिन ही मधु मुझे पिलाकर, ऊब उठी साकी बाला,
भरकर अब खिसका देती है वह मेरे आगे प्याला,
नाज, अदा, अंदाजों से अब, हाय, पिलाना दूर हुआ
अब तो कर देती है केवल फर्ज-अदाई मधुशाला।"[1]

कवि का कथन कितना सटीक है कि जीवन में रस खत्म हो जाने पर दुनिया उपेक्षा करती है। इसलिये सुख जब भी मिले उसे स्वीकार करते चलो उससे कष्टों को सहन करने की शक्ति बनी रहती है। जीवन की सार्थकता उसको छोटे बड़े रूप में आंकने में नहीं है उसकी सार्थकता तो जीने में है और चेतना के साथ जीने में है। उदाहरण के लिये यह पंक्तियां प्रस्तुत हैं —

"हाथों में आने से पहले नाज़ दिखाएगा प्याला,
अधरों पर आने से पहले अदा दिखायेगी हाला,
बहुतेरे इंकार करेगा, साक़ी आने से पहले,
पथिक, न घबरा जाना, पहले मान करेगी मधुशाला।"[2]

"मधुशाला" के माध्यम से कवि धार्मिक झंझाओं को आहूत की निकृष्ट भावना को सदैव के लिये मिटा देना चाहते हैं। मानवता के धरातल पर हिन्दू और मुसलमान दोनों एक हैं इनके झगड़े मन्दिर और मस्जिद तक ही सीमित हैं —

"मुसलमान और हिन्दू हैं दोनों, एक मगर, उनका प्याला,
× × × × ×
बैर बढ़ाते मन्दिर-मस्जिद, मेल कराती मधुशाला।"[3]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 54.
2. वही, पृ० 46.
3. वही, पृ० 52.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री सुमित्रानन्दन पंत के शब्दों में, "बच्चन की मदिरा चैतन्य की ज्वाला है, जिसे पीकर मृत्यु भी जीवित हो उठती है।..... बच्चन की मदिरा गम गलत करने या दुख को भुलाने के लिये नहीं है, वह शाश्वत जीवन सौन्दर्य एवं शाश्वत प्राण-चेतना-शक्ति की प्रतीक है।"[1]

3. मधुबाला — (सन् 1936)

मधुबाला की कविताओं की रचना 1934-35 में हुई थी। इसका प्रथम संस्करण 1936 में प्रकाशित हुआ। पहले तीन संस्करण सुषमा निकुंज से, चौथे से छठा भारती भण्डार से, सातवाँ और आठवाँ सेंट्रल बुक डिपो, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। इसका आरम्भ मधुबाला के आत्मकथ्य से होता है —

"मधुबाले"

"मधुवर्षिणि,
मधु बरसाती चल
बरसाती चल,
बरसाती चल।
झंकृत हों, मेरे कानों में,
चंचल, तेरे कर के कंकण,
कटि की किंकिणि,
पग के पायल -,
कंचन पायल,
"छन - छन" पायल।[2]

---

1. अभिनव सोपान : बच्चन भूमिका, पृ0 21.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 80.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस कृति पर "उमर खैयाम" की रुबाइयों का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। खैयाम के निराशावाद को देखते हुए यह कहना पड़ेगा कि कवि की रचनाओं में जीवन के आशावादी दृष्टिकोण या रचनात्मक पक्ष को ही अधिक उभरा हुआ पाते हैं। जो सुख जितना क्षणिक होता है उतना ही अधिक मन मोहक होता है। चार दिन की चाँदनी भी जीवन का सत्य है चाहे वह थोड़े दिनों का ही जीवन क्यों न हो —

"चाहे जितनी मैं हूं हाला,
चाहे जितना तू पी प्याला,
चाहे जितना बन मतवाला,
सुन, भेद बताती हूं अन्तिम,
यह शान्त नहीं होगी ज्वाला।...
मधु कौन यहाँ पीने आता,
है किसका प्यालों से नाता,
जिसके चिर तन्द्रिल नयनों पर
तनती मैं सपनों का जाला।"[1]

जिस प्रकार आर्य लोग सोमरस का पान करते थे उसी प्रकार आधुनिक युग में "मदिरा" भी एक पेय के रूप में प्रयोग की जाती है। सुख-दुख, जीवन-मरण में मनुष्य इसका सेवन करता रहा है। मदिरालय, मदिरा और मदिरा पिलाने वाली साकी का अपना विशेष महत्व है और अगर साकी बाला भी उन्मादक हो तो नशा दुगना हो जाता है। साकीबाला जिधर भी कदम बढ़ाती है उधर ही आश्चर्यजनक घटनायें घटती ही है है —

मरुस्थल मधुवन बन लहराते
पाषाण पिघल होते पानी

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 83.
2. वही, पृ0 110.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इतना ही नहीं मधुबाला की ध्वनि सुनकर कवि कह उठता है –

"हो शान्त जगत के कोलाहल
रुक जा री जीवन की हलचल
मैं दूर पड़ा, सुन लूं, दो पल,
संदेश नया जो लाई है
यह बाल किसी की मस्तानी ।"[1]

पथ जो वास्तविक लक्ष्य तक पहुंच सके वह पथ रहस्यवादी पथ से सर्वदा भिन्न है –

"दूर स्थित स्वर्गों की छाया
से विश्व गया है बहलाया
हम क्यों उन पर विश्वास करें
जब देख नहीं कोई आया ।"
अब तो इस पृथ्वी तल पर ही
सुख स्वर्ग बसाने हम आये ।"[2]

कवि का दृष्टिकोण जीवन की क्षणभंगुरता और अमरता के विषय में भी अन्य लोगों की अपेक्षा भिन्न हैं । कवि उन लोगों को पसन्द नहीं करता जो वर्तमान की उपेक्षा कर भविष्य में अमरत्व प्राप्त करने का स्वप्न देखते हैं–

"है ज्ञात हमें नश्वर जीवन,
नश्वर इस जगती का क्षण-क्षण
है, किन्तु अमरता की आशा
करती रहती उर में क्रन्दन,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 110.
2. वही, पृ0 88.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नश्वरता और अमरता का
अब द्वन्द्व मिटाने हम आये ।"[1]

"मधुबाला" संग्रह में उच्चकोटि की प्रतीकात्मक रचनायें हैं । "मधुशाला" में उनके राष्ट्रीय संग्राम के अन्तर्विरोध निहित हैं । और कवि के अपने जीवन की घटनाओं की झलक भी मिलती है । प्रकारान्तर और श्री कृष्ण ने मिली निराशा और श्यामा की मृत्यु का दुख । बच्चन जी के अपने वैयक्तिक दुख और पीड़ा पूरे जन जीवन की नियति से जुड़ गये हैं । "मधुशाला" के द्वारा ही कवि अपने काव्य जगत का स्पष्टीकरण करता है, तब देखा जाये तो कवि सांसारिक तंत्रों से बचने के लिये इसमें स्वप्न लोक में विचरण करता है –

"यह स्वप्न - विनिर्मित मधुशाला
यह स्वप्न - रचित मधु का प्याला
स्वप्निल-तृष्णा स्वप्निल हाला
स्वप्नों की दुनिया में भूला
फिरता मानव भोला-भाला ।"[2]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने स्वप्न व्यापार का कितना अनूठा वर्णन किया है । कवि की मधुशाला, उसका प्याला सब तो स्वप्न हैं ही उसकी तृष्णा भी स्वप्निल है । "मधुशाला", "हाला", "प्याला" के प्रतीक यहाँ आत्मकथात्मक शैली में अपना परिचय देते हैं । "प्याला" नामक रचना में कवि ने बड़े मार्मिक शब्दों में सृष्टि की प्रक्रिया के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है –

"मिट्टी का तन, मस्ती का मन,
क्षण भर जीवन मेरा परिचय ।
× × × ×

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 88.
2. वही, पृ0 84.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जिस मेरस करों का परस आज
करता जाग्रत जीवन नवीन ।"[1]

कवि संसार में रह कर तो जीवन देख ही रहे हैं, मृत्यु के बाद की स्थिति की कल्पना भी करते हैं –

"इस पार प्रिये मधु है, तुम हो
उस पार न जाने क्या होगा ?
प्याला है पर पी पायेंगे
है ज्ञात नहीं इतना हमको,
इस पार नियति ने भेजा है
असमर्थ बना कितना हमको –,
× × × × × ×
अब तो हम अपने जीवन भर
उस दुर कठिन को भोग चुके,
उस पार नियति का मानव से
व्यवहार न जाने क्या होगा ।"[2]

"मधुशाला" की कविताओं से बच्चन की काव्य प्रतिभा अधिक विकसित हुई। रामस्वरूप चतुर्वेदी का यह कहना ठीक है कि गहराई तथा भाषा की सरलता ने कवि के उद्गारों को अत्यन्त मर्मस्पर्शी बना दिया है ।"[3] इसका कारण स्पष्ट है कि उनकी यह अनुभूति व्यक्तिगत थी । जिन दिनों उन्होंने "मधुशाला" और "मधुबाला" के गीत लिखे उन दिनों की कवि की मानसिक तथा पारिवारिक स्थिति उन्हीं के शब्दों में देखिये –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 95.
2. वही, पृ० 106.
3. श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी, आलोचना का "बच्चनालोचन" विशेषांक.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"यह तीन वर्ष जो मैंने अग्रवाल विद्यालय की सेवा में बिताए, मेरे लिये कितने मानसिक तनाव, शारीरिक श्रम, संघर्ष, आर्थिक संकटों और अप्रत्याशित, अवांछित और अप्रिय घटनाओं के वर्ष रहे हैं। पर इन्हीं वर्षों में मैंने "मधुबाला" और "मधुकलश" के गीत लिखे। वे सारे के सारे कटु वस्तु सत्य तो कालान्धकार में विलुप्त हो गये पर उसके बीच से मेरी पंक्तियां अब भी कौंध मारती हैं, शायद वे मेरी धुंधली पड़ती स्मृतियां ही उन दिनों की साक्षी रह गई हैं --

तुमने समझा मधुपान किया ? मैंने निज रक्त प्रदान किया
उर क्रन्दन करता था मेरा, पर मुख से मैंने गान किया,
मैंने पीड़ा को रूप दिया, जग समझा मैंने कविता की।
मैं एक सुराही मदिरा की।

× × × ×

तप्त आंसू से झुलसे गाल किये कोई मदिरा से लाल,
इसी का तो करती संकेत खिल रही वन में पाटल माल।

× × × ×

चुभ रहा था जो हृदय में एक तीखा शूल बनकर,
विश्व के कर में पड़ा वह कल्पतरु का फूल बनकर;
सीखता संसार अब है ज्ञान का प्रिय पाठ जिससे,
प्राप्त वह मुझको हुई थी एक भीषण भूल बनकर;
था जगत का और मेरा यदि कभी सम्बन्ध तो यह --
विश्व को वरदान थे जो थे वही अभिशाप मेरे।
गीत कह इसको न दुनिया, यह दुखों की माप मेरे।"[1]

"मधुबाला" में कवि की स्वतन्त्रता की धारणा परिष्कृत हुई है। कवि आदर्श और यथार्थ को सामाजिक विकास का अनिवार्य तत्व मानता है।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 7, पृ0 286.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"मधुकलश" (सन् 1935- 36)

मधुकलश सर्वप्रथम 1937 में प्रकाशित हुआ। 1935 से 36 तक मधुकलश के कई गीत लिखे जा चुके थे। कवि का यह काल बड़ा कष्टदायी था। एक के बाद एक मुसीबत का पहाड़ उन पर टूटता रहा। भाई की बहू और भतीजी के निधन के बाद वह स्वयं बीमार हो गए अभी ठीक हुए ही थे कि 7 नवम्बर 1936 में श्यामा, कवि की पत्नी, का देहान्त हो गया, यही कारण है कि इस पुस्तक में कवि की भिन्न-भिन्न मनःस्थितियों का चित्र स्थापित है। अपनी पत्नी के साथ बिताये इन वर्षों की स्मृतियाँ इस पुस्तक में यत्र-तत्र बिखरी पड़ी हैं। इसकारण से कवि की अकेलेपन की अनुभूतियों के विषाद के साथ साथ उनका स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचार तथा जीवन सम्बन्धी दार्शनिक चिन्तन भी इस पुस्तक में निहित है।

"मधुकलश" में बारह खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड सोद्देश्य लिखा गया है प्रत्येक का अपना इतिहास है। मधुकलश की प्रारम्भिक पंक्तियों में ही "मधुबाला" की जिज्ञासापूर्ण प्रतिध्वनित होती है। बच्चन जी ने मधुकलश की भूमिका में लिखा है --"मधुकलश" नाम को सार्थक करने वाली तो स्पष्टतः लिखी पहली कविता है-- "है आज भरा जीवन मुझ में, है आज नहीं मेरी गागर" - यह उचित स्थान सम्भवतः मधुबाला के नाम होता....."।[1] कवि पर लगाये गये शिराजावादिता के आरोप की प्रतिक्रिया "पथ-भ्रष्ट" तथा "कवि का उपहास" जैसे खण्डों में मुखरित हुई है। "कवि की वासना" शीर्षक में बनारसीदास चतुर्वेदी के प्रति कवि की प्रतिक्रिया है।[2]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 117.
2. द्रष्टव्य- बच्चन रचनावली भाग 1, पृ०118.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मधु काव्य का प्रवर्तन मधुशाला से शुरू होकर मधुकलश पर समाप्त होता प्रतीत होता है । "मधुकलश" मानवीय देह का प्रतीक है । युवा मन की भावनाएं ही मधुशाला का निर्माण करती हैं । यह मनोमय स्थल है जहाँ मनुष्य की स्थूल भौतिक आवश्यकतायें स्वप्न बनकर रह जाती हैं । कवि ने अपने माध्यम से समस्त युवा पीढ़ी का यौन आक्रोश वृद्ध पीढ़ी के प्रति व्यक्त किया है । जो वास्तविकता को झुठलाकर आदर्शों के ढोंग रचते हैं और जीवन की वास्तविक मांगों की उपेक्षा कर उसे अभावों का अनुभव होने देते हैं । उसकी पंक्तियां देखिये –

"प्राण प्राणों से सके मिल किस तरह दीवार है तन,
काल है घड़ियां न गिनता बेड़ियों का शब्द झन-झन,
वेद लोकाचार प्रहरी ताकते हर चाल मेरी
बद्ध इस वातावरण में क्या करे अभिलाष यौवन ?"[1]

सहज जीवन जीना यदि सम्भव न हो पाये तब मनुष्य गुप्त रूप से मन चाहा जीवन जीना आरम्भ कर देता है जिस प्रकार जल का प्रवाह रोकने से रुकता नहीं है, उसी प्रकार मनुष्य की भावनाओं के वेग को रोकना कठिन है । कवि का उल्लास भरा जीवन्त स्वर देखिये –

"है आज भरा जीवन मुझ में,
है आज भरी मेरी गागर ।"[2]

विद्यापति, सूर, घनानन्द, प्रसाद आदि कवियों की रचनाओं में भी इसी मूल चेतना की मांसल अभिव्यक्ति पायी जाती है । कवि ने बड़ी दृढ़ता से रूढ़िगत पीढ़ी के प्रति अपने विचार प्रकट किये हैं –

"वृद्ध जग को क्यों अखरती है, क्षणिक मेरी जवानी ?
मैं छिपाना जानता तो जग मुझे साधु समझता,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 128.
2. वही, पृ0 125.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शत्रु मेरा बन गया है छल रहित व्यवहार मेरा,
कह उठा जग वासनामय हो रहा उद्गार मेरा।"[1]

x x x x

इस कुपथ पर या सुपथ पर मैं अकेला ही नहीं हूं
जानता हूं क्यों जगत फिर उंगलियां मुझ पर उठाता
मौन रह कर इस लहर के साथ संगी बह रहे हैं,
एक मेरी ही उमंगें हो उठीं हैं व्यक्त स्वर में....
पाप की ही गैल पर यह चलते हुए ये पांव मेरे,
हंस रहे हैं उन पगों पर जो बंध रहे हैं आज घर में।"[2]

"मधुशाला" को बारबार पढ़कर मैंने यह सोचा है कि उसमें तो बच्चन नामक कवि (व्यक्ति) ने अपने ही जीवन की घटनाओं, पीड़ाओं और उसे मुक्ति दिलाने वाली मानवीय शक्तियों को ध्वनित किया है। जग-निन्दा के प्रति कड़ी सफाई भी पेश की है। फिर मधुकलश से हमारा क्या नाता है? हमें उससे क्या मिलता है? और मूल आपत्ति तो यह है कि मधुकलश नितान्त व्यक्तिपरक काव्य है।[3]

जब भी व्यक्ति को पुराने सामाजिक मूल्यों से, अवांछनीय धारणाओं से और स्वतन्त्रता विरोधी भावनाओं से टकराना पड़ेगा, लांछित होना पड़ेगा तो वह विराट की सत्ता के आगे भी नहीं झुकेगा। वह कह उठेगा –

"हाथ ले बुझती मशालें, जग चला मुझ को जलाने
जल उठी छूकर मुझे वे धन्य अन्तर्दाह मेरी।"[4]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 129.
2. वही, पृ0 135.
3. जीवन प्रकाश जोशी : बच्चन : व्यक्तित्व और कवित्व, पृ0 136
4. बच्चन रचनावली भाग 1, मधुकलश, पृ0 139.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"मधुशाला" का "व्यक्तिवाद" निश्चय ही व्यक्ति के अस्तित्ववादी दर्शन का व्यक्तिवादी राग बनकर मुखरित हुआ है।[1] कवि "मधुबाला" की भूमिका में लिखते हैं, "मेरे जीवन का जो उत्साह, उल्लास और उन्माद -- जो उसमें एक अभाव, एक असन्तोष, एक निराशा की व्यथा भी घुली-मिली थी -- "मधुशाला" और "मधुबाला" में व्यक्त हुआ था, वह अब उतार पर था। मेरे भावना-स्वप्नों का एक रंगीन संसार यथार्थता और वास्तविकता की चट्टान से टकराकर चकनाचूर हो गया था। "मधुबाला" के "आलाप" में इसका प्रतीकात्मक संकेत है, "पांच पुकार" शीर्षक कविता में भी --

"गिर-गिर टूटे घट प्याले
कुछ दीप गये सब क्षण में।"[2]

कवि के जीवन में उल्लास और अवसाद इतनी तीव्र गति से आ चुका था कि उनका भार वहन करने में भी कवि अपने को अशक्त अनुभव कर रहे थे। यह पंक्तियां इसकी साक्षी हैं --

"विस्मृति की आधी है बेला, कर पान्थ, न इसकी अवहेला,
आ, भूलें हास-रुदन दोनों मधुमय होकर दो-चार पहर।"[3]

जिस समय कवि आन्तरिक और बाह्य संघर्षों से जूझ रहे थे तब यह गीत ही उनके मन बहलाव का साधन बने, इनसे ही कवि ने बल संचय किया, स्वप्निल भावनाओं को सत्य का रूप देने की शक्ति प्राप्त की। उदाहरण के लिये यह पंक्तियां इसकी साक्षी हैं --

---

1. जीवन प्रकाश जोशी, बच्चन : व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ० 196.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 116.
3. वही, पृ० 127.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"आज अपने स्वप्न को मैं सच बनाना चाहता हूं,
दूर की इस कल्पना के पास जाना चाहता हूं,
चाहता हूं तैर जाना सामने अम्बुधि पड़ा जो,
कुछ विभा उस पार की इस पार लाना चाहता हूं.[1]

× × × × ×

अवनि अम्बर की तराजू, सामने रख दी गयी है,
क्यों न तोलूं आज अपनी, शक्ति इस पर गर्व से धर ?[2]

इस संग्रह के गीतों में कवि की परिष्कृत शैली के सर्वोत्तम उदाहरण हैं ।

निशा निमन्त्रण – (सन् 1938)

"निशा-निमन्त्रण" का प्रथम संस्करण सन् 1938 में हुआ । यह बच्चन जी का त्रासद तथा लोकप्रिय गीतिकाव्य है जो – "स्वर्गीता श्यामा को समर्पित" है । श्यामा देवी, कवि की प्रथम पत्नी के मरणोपरान्त कवि ने "निशा-निमन्त्रण", "एकान्त संगीत" तथा "आकुल अन्तर" के गीतों की रचना की । इनकी समस्त कृतियों में यह कृति सर्वोत्कृष्ट है । यह कवि का एकाकीपन से भरा पुंज है । कवि भाग्य के आघात से बच नहीं सका, प्रेम की दुनिया धोखा दे गई, पत्नी का देहावसान हो गया, जीवन विशृंखल हो गया साल भर के लिये लिखना बिल्कुल बन्द रहा । फिर कवि की वेदना, कवि की निराशा और उसका एकाकीपन "निशा-निमन्त्रण", "एकान्त संगीत" और "आकुल अन्तर" के गीतों में मुखरित हुआ है ।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 142.
2. वही, पृ0 140.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

खड़ी बोली के गीत संग्रहों में "निशा-निमन्त्रण" का अपना अलग स्थान है । सायंकाल से लेकर पौ फटने तक की विरह की भयंकर काली रात में कवि की विभिन्न मन: स्थितियों का वर्णन है । यह सौ गीतों का संग्रह है । "निशा-निमन्त्रण" के पीछे नियति का भयंकर प्रहार तथा उससे उत्पन्न मर्मभेदी चीत्कार का स्वर है । डा० नरेन्द्र देव वर्मा का कथन है - "निशा-निमन्त्रण" एक महत वियोग काव्य है । किन्तु इससे भी अधिक यह हृदयानुभूति की विशुद्ध अभिव्यक्ति है । इस संग्रह के गीतों में जहाँ एकाकीपन का बोध है, अस्तित्व की निस्सहाय स्थिति, स्मृति-असंग और विरह क्रन्दन है वहाँ प्रकृति की दृश्यमयी पीठिका पर मानवीय भावनाओं का आख्यान भी है ।"[1]

"निशा-निमन्त्रण" मात्र विरह-विषाद के गीतों का संग्रह ही नहीं है अपितु एक असहाय, अकेले विधुर मानव की मानसिक प्रक्रिया के फलस्वरूप उतरे शब्द चित्रों का सजीव एलबम है ।[2]

"निशा-निमन्त्रण" के गीतों में स्वत: एक आकार बन गया है जिसमें पहले तीन गीत सायंकाल की स्थिति का वर्णन करते हुए दिखाये हैं ।

"निशा-निमन्त्रण" के प्रथम गीत में ही कवि की आन्तरिक भावना दिखाई देती है -

"दिन जल्दी-जल्दी ढलता है ।
हो जाये न पथ में रात कहीं
मंजिल भी तो है दूर नहीं -
यह सोच थका दिन का पंछी भी जल्दी जल्दी चलता है ।
. . . . . .
मुझ से मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊँ किसके हित चंचल ?

---

1. डा० नरेन्द्र देव वर्मा, प्रगीतकार बच्चन और अंचल, पृ० 53.
2. डा० जीवन प्रकाश जोशी, बच्चन व्यक्तित्व और कवित्व, पृ० 46.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है ।[1]

प्रकृति की भी विचित्र लीला है जो प्राकृतिक उपकरण व्यक्ति को सुख देते हैं वह व्यक्ति को दुख भी पहुंचा सकते हैं । कवि को भी प्रकृति से दारुण दुख का अंगार ही मिला है –

"संध्या सिन्दूर लुटाती है
× × × ×
उपहार हमें भी मिलता है
अंगार हमें भी मिलता है
आंसू की बूंद कपोलों पर शोणित की सी बन जाती हैं ।

कवि की अनुभूति तथा वेदना का जितना हृदयस्पर्शी चित्रण "निशा-निमन्त्रण" के गीतों में मिलता है उतना खड़ी बोली के गीतों में मिलना कठिन है । देखिये एक चिरही-हृदय की तुलना जल से भरे बादल से – दोनों की स्थिति में कितनी समता है –

"आज मुझ से बोल बादल !
तम भरा तू तम भरा मैं, गम भरा तू गम भरा मैं,
आज तू अपने हृदय से, हृदय मेरा तोल बादल।"[2]

"निशा-निमन्त्रण" के प्रकृति चित्रण में छायावादी वायवीय मानवीकरण न होकर मांसल मानवीकरण है । यह विशेषता बच्चन के गीतों को समानियत और यथार्थ की सेंधि पर गूंजने का पूर्ण अधिकार प्रदान करती है ।"[3]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 161.
2. वही, पृ0 162 .
3. डा0 जीवन प्रकाश जोशी : बच्चन : व्यक्तित्व और कवित्व, पृ0 48.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"निशा-निमन्त्रण" के कई गीतों में मानवतावादी स्वर है। व्यक्ति-व्यक्ति के जीवन की घटनायें, उसके संघर्ष अलग- अलग हो सकते हैं लेकिन सुख दुख की अनुभूति समान होती है। व्यक्तिवादी निराशामयी ध्वनियाँ अधिकांश गीतों में ध्वनित होती हैं। इन गीतों में कवि का अन्तर्द्वन्द्व इन मार्मिक पंक्तियों में देखा जा सकता है -

"अतुल प्यार का अतुल घृणा में मैंने परिवर्तन देखा है"[1]
"ऐ चिता की राख कर में मांगती सिन्दूर दुनियां।"[2]
"ऐ पतझड़ की शाम सखे" [3]
"मैंने खेल किया जीवन से "[4]
"अब ये मेरे गान कहां हैं" [5]
"बीते दिन तब आने वाले"।[6]
"राग सदा ऊपर को उठता, आंसू नीचे ढर जाते हैं।"[7]
"मधुप, नहीं अब मधुवन तेरा"[8]

डा० मुल्कराज आनन्द काव्य को एक साहसिक कृत्य मानते हैं।" निस्सन्देह काव्य का प्रयोजन यही है। बच्चन जी ने भी अपने अन्तर की वेदना को बड़े साहस से व्यक्त किया है। जैसे-जैसे रात्रि का अन्धकार

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, निशा-निमन्त्रण, पृ० 186.
2. वही, पृ० 189.
3. वही, पृ० 165.
4. वही, पृ० 187.
5. वही, पृ० 188.
6. वही, पृ० 188.
7. वही, पृ० 173.
8. वही, पृ० 194.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बढ़ता जाता है और वह सीमातीत हो जाता है पशु-पक्ष, घर-अघर सब ही कवि के पर्याय बन जाते हैं। अन्त में कवि जग के दुख को अपना दुख समझ लेता है। यह भावना कवि और जग के बीच में एकात्म भाव पैदा करती है। कवि अपने दुख से यह भलीभांति समझ जाता है कि और किसी पर दुख आने से पहले ही उसको बचा लेना हितकर है। अत: विनाशकारी तूफान के आने से पूर्व ही पक्षियों को सावधान करता हुआ कवि कहता है --

"हटो विहंगम, उड़ जाओ[1]
अब निशा देती निमन्त्रण[2]
"स्वप्न की छल जागरण भी[3]
"आ, लौटने से पहले गा लें[4]

निशा निमन्त्रण" के यह गीत गम्भीर चिन्तन के गीत हैं। नियति के आगे मानव की हार का वर्णन है --

"काल प्रहरी ने उलझा,
जीवन की लड़ियां विशृंखल,
इन्हें जोड़ने को आ अपने गीतों की हम गांठ लगा लें[5]

नियति की निर्ममता और जग की क्रूरता सहृदय व्यक्ति को इतना व्यथित कर देती है कि कवि की असह्य पीड़ा इन शब्दों में मुखरित हो

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 165.
2. वही, पृ0 167.
3. वही, पृ0 168.
4. वही, पृ0 168.
5. वही, पृ0 182.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उठती है –

"रो तू अक्षर-अक्षर में ही,
रो तू गीतों के स्वर में ही,
शान्त किसी दुखिया का मन हो, जिसको तुनेपन में गाकर
क्यों रोता है जड़ तकियों पर ।"[1]

साठवें गीत से पूर्व के गीत कवि की निराशा, वेदना के गीत हैं । इसके बाद के गीतों में कवि का खोया हुआ सम्मान जग जाता है । उसमें आत्म निरीक्षण की क्षमता आ जाती है वह जीवन में निर्ममता का अस्तित्व समझ जाता है । अतः वह अपने प्यार के भार को स्पष्ट कर देता है कि प्यार का क्षण कितना महत्वपूर्ण है –

"झुक कर पाये माप न जिसकी, मैंने ऐसा क्षण देखा है ।[2]

धीरे-धीरे रात का गहन अंधकार कवि मन से हटने लगता है । प्रकाश की किरण फूटने लगती है –

"शुरू हुआ उजियारा होना ।
हटता जाता है नभ से तम,
संख्या तारों की होती कम,
ऊषा झांकती उठा क्षितिज से बादल की चादर का कोना ।[3]

× × × ×

"मुर्दा गा रहा था बैठ जलती चिता पर ।[4]

शनैः शनैः कवि में आत्मविश्वास बढ़ने लगता है । उसकी अभिलाषा

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 182
2. वही, पृ0 186.
3. बच्चन रचनावली भाग 1, निशा निमन्त्रण, पृ0 191.
4. वही, पृ0 193.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह है कि "चिता-निकट भी पहुंच सकूं मैं, अपने पैरों-पैरों चलकर ।[1]
इतना ही नहीं आगे कवि अपने आपको सम्बोधन करके कहता है -
"साथी, सब कुछ सहना होगा । जैसे जन सहता आया है, उसी तरह से सहना होगा ।"[2] "निशा-निमन्त्रण" के गीतों में यह गीत कितना सारगर्भित है । अगर दुख को कोई व्यक्ति अपने साथ चिपकाये रखना चाहे तब भी नहीं रख सकता । अधिक दुख सहते सहते व्यक्ति दुख सहने का अभ्यस्त हो जाता है और एक स्थिति यह आती है कि दुख ही दवा बन जाता है । इसलिये दुख स्थायी नहीं रह सकता -

"साथी, साथ न देगा दुख भी ।
काल छीनने दुख आता है
जब दुख भी प्रिय हो जाता है,
नहीं चाहते जब हम दुख के बदले में लेना फिर सुख भी ।
साथी, साथ न देगा दुख भी ।
जिस परवशता का कर अनुभव
अश्रु बहाना पड़ता नीरव,
उसी विवशता से दुनिया में होना पड़ता है हंसमुख भी ।
साथी साथ न देगा दुख भी ।"[3]

"निशा-निमन्त्रण के गीतों को लिखते समय मैंने एक साथी की कल्पना की थी । कई गीत उसको सम्बोधित करते हुए लिखे गये थे । जैसे - "साथी, सो न कर इस बात" आदि । "निशा-निमन्त्रण के अन्त में मैंने उस साथी से विदा ले ली थी, "जाओ कल्पित साथी मन के"।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, निशा निमन्त्रण, पृ0 198.
2. वही, पृ0 199.
3. वही, पृ0 199.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शायद मेरे मन में यह आया होगा कि जो अन्धकार मेरे सामने आया है उसे एकदम एकाकी होकर देखूं - छाया - रूप साथी से भी विरक्त-विलग होकर,

"तलाशो-यार में क्यों ढूंढिये किसी का साथ,
अपना साया भी हमें नागवार राह में है ।

"निशा-निमन्त्रण" के सब गीत कवि ने रात के घने अन्धकार में लिखे हैं । विषाद की अनुभूति इतनी सघन थी कि कवि ने 100 गीतों की रचना की, लेकिन 100 गीतों में एक गीत को छोड़कर चांदनी की छटा का कहीं भी वर्णन नहीं आया और जहां एक जगह चांदनी का वर्णन आया भी है तो वह भी क्षीणतम रूप में -

"दे रही कितनी दिलासा,
आ झरोखे से ज़रा सा,
चांदनी पिछले पहर की पास में जो सो गई है ।
रात आधी हो गई है ।"[1]

महात्मा गांधी के सत्याग्रह आन्दोलन में भी कवि ने सक्रिय भाग लिया । युनिवर्सिटी छोड़ दी । जगह-जगह धरने दिये । कुछ समय इस सत्याग्रह में बीत गया । जब आन्दोलन ठंडा पड़ा तब कवि कहते हैं कि- "मैंने अपने आपको जग और जीवन के समक्ष पाया संघर्ष में धंसा, समस्याओं में उलझा, अनुभवों में डूबता उतरता,।[2]

जहां "निशा निमन्त्रण" के गीतों में अतीत की याद है, विवशता का अहसास है, निराशा है, घनघोर अन्धकार है, वहां कुछ गीत रात के अन्धकार से मुक्त भी दिखाई देते हैं । कवि अपनी मौन वीणा को पुनः झंकृत करना चाहते हैं, अतीत की वेदनामयी स्मृतियों के बन्धन से मुक्त करना चाहते हैं।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 208.
2. वही, पृ0 152.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस प्रकार हम देखते हैं कि बच्चन के गीत संघर्षों से भरे होते हुए आत्म-बलिदान के भी हैं। जिस कवि को विश्व ने दुख देने में कोई कसर बाकी नहीं रखी उसी विश्व को कवि उपहार देने के लिये उद्यत है। प्रस्तुत गीत "निशा निमन्त्रण" के गीतों की अंतिम भेंट है –

"विश्व को उपहार मेरा।
पा जिन्हें धनवान, अभिधन,
हो जिन्हें साम्राट, निर्धन,
भावनाओं से भरा है, आज भी भंडार मेरा!
विश्व को उपहार मेरा।
थकित, आजा! व्यथित, आ जा!
दलित, आ जा! पतित, आ जा!
स्वागतम् किसको न कहता स्वप्न का संसार मेरा!
विश्व को उपहार मेरा।
ले तृषित मरु, होठ तेरे,
लोचनों का नीर मेरे।
मिल न पाया प्यार जिनको आज उनको प्यार मेरा!
विश्व को उपहार मेरा।"[1]

इस गीत में कवि की कितनी सुन्दर अभिव्यक्ति है। पहले पद में कवि उन भावनाओं के मूल्य को आंकता है जिसके बिना बड़े-बड़े धनवान अभिधन हैं। वह भावनायें करुणा और प्रेम की हैं। कवि इन अमूल्य भावनाओं को बांटने के लिये तैयार है। इन भावनाओं के बिना बड़े-2 साम्राज्य तथा महान आत्मायें भी श्रीहीन हैं। अन्तिम पद में कवि की सहृदयता, सरलता, संवेदनशीलता देखिये, जो कवि स्वयं दुखी था वह विश्व

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, निशा निमन्त्रण, पृ0 200.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को स्नेह का अन्तर उपहार दे रहा है । अपने दुख से कवि हृदय इतना परिमार्जित हो गया है कि वह किसी को दुखी नहीं देख सकता । कवि के हृदय की विशालता है कि वह प्यासे जन की प्यास अपनी आँखों के नीर से बुझाने को तत्पर है । यह भावना साधारण मनुष्य की नहीं हो सकती यह तो प्रशस्त हृदय मानव की ही हो सकती है ।

एकान्त संगीत । सन् 1938 - 39 में लिखित ।

एकान्त संगीत : प्रथम प्रकाशन 1939, पहला संस्करण, सुधा निकुंज से प्रकाशित हुआ । एकान्त संगीत के सौ गीतों में से चौवालीस गीत किंग एडवर्ड होस्टल में लिखे गये थे, इससे आगे के गीत इलाहाबाद में और बरेली में लिखे गये । "एकान्त संगीत" कवि की नितांत अकेलेपन की कृति है जिसे उन्होंने केवल अपने को समर्पित किया है । "एकान्त संगीत" मेरा एकमात्र संग्रह है जिसमें गीत उसी क्रम से रखे गये हैं, जिसमें उनकी रचना हुई थी । मेरी सृजनात्मक वृत्ति (मूड) के सहज, स्वाभाविक, क्रमिक गीत इस काल विशेष में जानने-समझने के लिये "एकान्त संगीत" अपने ढंग का एक ही संकलन है ।"[1]

"एकान्त संगीत" के गीतों में पाठकों ने कवि की उदासी में अपनी उदासी का साक्षात्कार किया था । "एकान्त संगीत", "निशा-निमन्त्रण" से एक कदम आगे की स्थिति है । निशा-निमन्त्रण के गीतों में कवि की अपनी वेदना, अपना विषाद और अपना एकाकीपन मुखर हो गया है परन्तु एकान्त संगीत में आकर वही विषाद अन्तर्मुख हो गया है । कवि अपने एकान्त के क्षणों का सही भोग करना चाहता है और वह अपने एकाकीपन में ही खो गया है । जीवन प्रकाश जोशी का कहना है — "जैसे वह किसी की

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 208.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साँसों में समा गया हो । मन में घुमड़ गया हो, जैसे जग, जीवन, समाज नियति, प्रकृति, प्रेम ने व्यक्ति का कुछ मुख्यतम लूट कर उसे अपने संविधान से बहिष्कृत और निष्कासित कर दिया हो ।"[1] कितना अकेलापन है और कितनी पीड़ा है इस काव्य संग्रह के अन्तिम गीत की इन पंक्तियों में –

"कितना अकेला आज मैं ।
संघर्ष से टूटा हुआ, दुर्भाग्य से लूटा हुआ
परिवार से छूटा हुआ, कितना अकेला आज मैं ।[2]

यह बच्चन का अपना विषाद है । बच्चन जिस युग में पैदा हुए थे वह युग बड़े विषाद का युग था । भारत विभाजन के समय हर किसी का मन उचाट था, उखड़ा हुआ था, टूटा हुआ था । इसीलिये "एकान्त संगीत" की हर पंक्ति व्यक्तिगत न होकर जन-जीवन की पीड़ा से जुड़ी हुई थी ।

"एकान्त संगीत" का प्रत्येक गीत इतना मार्मिक है और इससे यह स्पष्ट भी होता है कि बच्चन ने अपने अकेलेपन को जिया है, बहुत निकट से अनुभव किया है, इससे पलायन नहीं किया । पल-पल मृत्यु का साक्षात्कार किया है, अपना आत्म साक्षात्कार किया है । उसी अकेलेपन की द्योतक "एकान्त संगीत" की सबसे पहली पंक्तियाँ कितनी हृदय को छूने वाली है –

"तट पर है तरुवर एकाकी,
नौका है, सागर में,
अन्तरिक्ष में खग एकाकी,
तारा है, अम्बर में,
भू पर वन, वारिधि पर बेड़े,
नभ में उड़-खग मेला,

---

1. बच्चन व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ० 51.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 257.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नर नारी से भरे जगत में
कवि का हृदय अकेला ।"[1]

यद्यपि कवि को अकेलेपन का अहसास कितना दुख दे रहा है परन्तु इससे भी कवि को प्रेरणा मिलती है । भू पर वन देखे, सागर में नौका देखी, अन्तरिक्ष में पक्षी और आकाश में तारा देखा, सबका अकेला अस्तित्व था । अकेलेपन की एक स्थिति ऐसी भी हो जाती है जब आत्मा परमात्मा का मिलन होता है लेकिन इतने से भी कवि का अकेलापन समाप्त नहीं होता, वह समग्र का अनुभव करता हुआ भी अपने आपको इस नर-नारियों से भरे जगत में नितान्त अकेला पाता है । कवि-हृदय अकेला है । बच्चन जी के काव्य की बड़ी विशेषता यह है कि उनकी निजी वेदना ही मानव मात्र की वेदना है। 'एकान्त संगीत' के प्रथम गीत में कवि का उपालम्भ अपने सिरजनहार के प्रति है । कवि कहता है कि यह जो निर्माण का नाटक हो रहा है इसे अब बन्द करो । कई गुन बीत चुके हैं परन्तु तुम अभी तक भी मेरा निर्माण नहीं कर पाये । खिलवाड़ ही किया है । कहने की तथा सब कुछ सहने की एक सीमा होती है । मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो । मैं अपना निर्माण खुद कर लूंगा। कवि की व्यंजना देखिये —

"कहने की सीमा होती है,
सहने की सीमा होती है,
कुछ मेरे भी वश में, मेरा कुछ सोच समझ अपमान करो
अब मत मेरा निर्माण करो ।"[2]

'एकान्त संगीत' में जीवन की निस्सारता की प्रतीति अधिक है कवि कभी तो एकाकीपन के धुंधलके में खो जाता है और कभी वह जीवन को

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 214.
2. वही, पृ0 215.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्यर्थ समझता है ।"[1] यद्यपि यह कहा जाता है कि बच्चन जी आत्मरति से ग्रस्त हैं, व्यक्तिवादी हैं, और निराशावादी हैं आदि परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि कविता से कवि के हृदय का कितना गहरा सम्बन्ध होता है । कवि अपने युग का प्रतिनिधि होता है । बच्चन ने कहा है — "मेरी कविता मेरे जीवन से इतनी निकटता से जुड़ी है जैसे मेरी नस-नाड़ियों में बहता हुआ रक्त ।"[2]

मृत्यु का साक्षात्कार बच्चन जी के अनेक गीतों में उतरा है इस रचना का दसवाँ गीत इसका साक्षी है —

"छाया पास चली आती है ।
. . . . . .
हाथों में कुछ है प्याला सा,
प्याले में कुछ है काला सा,
जान गया क्या मुझे पिलाने यह साकीबाला लाती है ।"[3]

यह साकीबाला "मधुशाला" की है जो अब मृत्यु का प्याला लिये आ रही है । कवि ने अपनी इस पीड़ा को मुखर नहीं होने दिया और पीड़ा को चुपचाप पी गये —

"कितनी रातों को मन मेरा
चाहा, कर दूं, चीख सवेरा
पर मैंने अपनी पीड़ा को, चुप-चुप अश्रु कणों में धोया ।"[4]

---

1. डा० नरेन्द्र देव वर्मा, प्रगीतकार बच्चन, पृ० 55.
2. बच्चन रचनावली भाग 7, पृ० 319.
3. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 219.
4. वही, पृ० 219.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवि का अनन्त विषाद इतना शक्तिशाली हो गया है कि वह प्राकृतिक उपकरणों को अपने दुख का साथी मानकर कह उठता है --

"डूब रही है नौका मेरी,
बन्द जगत हैं आँखें तेरी,
मेरी संकट की घड़ियों के साथी नभ के तारे ।[1]

अथवा

"योग्य नहीं यदि मैं जीवन के,
जीवन के चेतन लक्षण के,
मुझे छुड़ा ले दो मत जीवन, मरने का अधिकार मुझे दो ।[2]

जीवन में मधु के प्यासे को गरल ही पीना पड़ा था, और उस गरल ने उसके जीवन के सारे बाह्य चिन्हों को मिटा दिया था । तब वह कौन आन्तरिक शक्ति थी, कौन आस्था थी जो मुर्दे को उठकर चलने की ही नहीं उससे गाने की भी प्रत्याशा कर रही थी --

"गरल पान करके तू बैठा
फेर पुतलियाँ, कर-पग ऐंठा,
यह कोई कर सकता, मुर्दे अब उठ गाना होगा ।[3]

आस्था के कवि हैं बच्चन । चरम पीड़ा ने कवि की आत्मा को देह के स्तर से ऊपर उठा दिया है और कवि की चेतना ने अपना साक्षात्कार किया है । यही है कवि का आत्म-मन्थन । इन पंक्तियों में देखिये --

"हताशा, मगर, नाशा नहीं ।
मिट्टी है, अश्रु बहाती है,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 222.
2. वही, 232.
3. वही, 252.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेरी सत्ता तो गाती है ।
अपनी १ ना-ना, उसकी पीड़ा की ही मैंने कुछ बात कही।"[1]

ट्रेनिंग स्कूल से घर वापिस आते समय कवि ने चौवालीसवाँ गीत लिखा है । इसमें कवि की मन:स्थिति विचित्र हो रही है क्योंकि यात्रा की थकावट बड़ी दुखद होती है लेकिन कवि का न कहीं बसेरा और न ही कोई नौकरी । ऐसी स्थिति में कवि की शोचनीय हालत निम्न-पंक्तियों में देखिये –

"आ रहा तूफान हर-हर,
अब न जाने यह उड़ा कर,
फेंक देगा किस जगह पर ।
तुम रहो खिलाते महकते कवि-प्रसून-समान ।
बुल-बुल जा रही है आज ।"[2]

कवि ने सामाजिक विकलता का प्रस्तुतीकरण बहुत सुन्दर ढंग से किया है । हर व्यक्ति अपने ही दु:ख में लीन है –

"हर जगह जीवन विकल है
तृषित मरुथल की कहानी
हो चुकी जग में पुरानी
किन्तु वारिधि के हृदय की प्यास उतनी ही अटल है ।"[3]

कवि के अकेलेपन में उसके वेदना से भरे गीत ने एकान्त को मूर्त रूप दिया है । वह चाँदनी रात में अकेला नहीं है । उसके साथ उसकी आत्मा है, उसकी छाया है, कितना आत्मीय अहसास है कवि का इन पंक्तियों में–

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 238.
2. वही, पृ0 234.
3. वही, पृ0 245.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"होंठ इतने भी हिलाये,
हाथ इतने भी उठाये,
आज मेरी ही व्यथा के गीतों ने सुख संग पाया है –
चाँदनी में साथ छाया है"।

"एकान्त संगीत" में स्वांत: सुखाय" स्वर मुखरित है। इस सृजन को सामाजिक दृष्टि से भले ही सम्मान न मिला हो परन्तु प्रत्येक व्यक्ति कभी न कभी इसको अनुभव अवश्य करता है। इसमें मानव के हृदय पक्ष की प्रबल अभिव्यक्ति है। कितनी सचाई है –

"ममता यदि मन से मिट पाती,
देवों की गद्दी हिल जाती!
प्यार, हाय मानव जीवन की सबसे बड़ी दुर्बलता है।
मेरा जोर नहीं चलता है।[2]

"एकान्त संगीत" बच्चन जी की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसमें आत्मोद्घाटन का मार्मिक स्वर निहित है। कवि का अन्तर्नाद स्पष्ट सुनाई पड़ता है।

आकुल अन्तर –

"आकुल अन्तर" का प्रथम प्रकाशन 1943 में भारती भण्डार से, दूसरा संस्करण सेंट्रल बुक डिपो, प्रयाग से तथा तीसरा राजपाल एण्ड संस से प्रकाशित हुए। डा० रमेशचन्द्र गुप्त द्वारा सम्पादित "बच्चन : निकष पर" ग्रन्थ में इसका समय 1942 दिया है, जो ठीक नहीं है।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 239.
2. वही, पृ० 252.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इससे पूर्व "एकान्त संगीत" में जिस अवसाद और कवि-व्यथा का चित्रण हुआ था उसकी अपेक्षा भावुकता और आत्मकेन्द्रितता से ऊपर उठकर यह आगे आया है । आकुल अन्तर के गीतों में तम से ज्योति की ओर जाने का प्रयत्न किया गया है । इस संकलन में 71 गीत संकलित हैं और यहां कवि जगत की भावनाओं के साथ तादात्म्य करता दिखाई देता है । उनका 39वां गीत इस सत्य का साक्षी है –

मेरा जीवन सबका साक्षी !
कितनी बार दिवस बीता है,
कितनी बार निशा बीती है,
कितनी बार तिमिर जीता है,
कितनी बार ज्योति जीती है,
मेरा जीवन सबका साक्षी ।

चौथे संस्करण की भूमिका में बच्चन जी ने इस प्रकार स्वीकार किया है – "निशा निमन्त्रण" में जिस अवसाद की छाया उतरी थी उसके अभिनाम और सघनतम रूप को देखने के लिये मैं "एकान्त संगीत" सुनता हुआ "आकुल अन्तर" की गुहा में बैठ गया, जहां अन्धकार सघनतम है वहीं प्रकाश की पहली किरन है । उसी के धुंधले किन्तु निश्चित प्रकाश की ओर हाथ फैलाता हुआ मैं "आकुल अन्तर" से निकलकर सतरंगिनी के आंगन में पहुंच गया । तम से ज्योति की ओर जाने की यह कामना इतनी प्राचीन और व्यापक है कि "आकुल अंतर" में मेरे गीतों के सहारे इसकी अनुभूति करना मेरी समझ में सहज और सुखकर होगा ।"[1]

इन रचनाओं में एक प्रकार की विकलता है और काम इनकी दुर्निवारिता । नारी सौन्दर्य आकुल अन्तर के गीतों में निहित है । यह

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 262.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गीत उनकी व्यक्तिगत परिस्थितियों और जीवनगत घटनाओं से जुड़े हैं। जीवन के एक छोटे से क्षेत्र को इन गीतों में ईमानदारी के साथ प्रतिबिम्बित करने का प्रयत्न किया गया है। इन गीतों में कवि ने तीन दृष्टियों से स्वयं को व्यक्त किया है। कहीं तो वह तटस्थ रह कर अपनी बात कहते हैं और कहीं निकटस्थ रह कर, और कहीं जगत और घटनाओं के साथ तादात्म्य रख कर। इनमें भी तीसरी शैली में कही गई रचनायें साधारणीकरण की दृष्टि से अधिक जागृत और समर्थ हैं। यह बात सत्य है कि कविता घटनाओं का इतिहास नहीं है। घटनाओं ने कवि के मन में संवेदना जागृत की। कविता उनको अभिव्यक्त करने का साधन अवश्य है। यदि उनसे वैसी ही भावनायें सहृदय पाठकों और श्रोताओं में जागृत हो सकें तो कविता अपने आपमें सार्थक है इसीलिये "आकुल अन्तर" की भूमिका में बच्चन ने कहा है -- "मैं अपने जीवन की घटनायें और परिस्थितियाँ बताने नहीं जा रहा हूँ। "कैसे भेंट तुम्हारी लेलूं" मैंने किससे कहा है। "आज ही आना तुम्हें था", जब मैंने तुम्हें कहा था तब कौन आया था। "क्या करूं संवेदना लेकर तुम्हारी" मैं मुझे किसकी संवेदनायें निस्सार प्रतीत हुई थीं। "आज मैं पहले पहल कुछ पीने चला था, पास मेरे आज ही क्यों विश्व आ जाना तुम्हें था।"[1] इन संरचनाओं में किसी ऐसे व्यक्ति के आगमन का संकेत मिलता है जिसे स्वीकार करने में भी कवि को एक बेचैनी और व्याकुलता का अनुभव होता है। उस मिलन और आकर्षण को मानता हुआ भी वह स्वीकार करने को तैयार नहीं है।

"आकुल अन्तर" की पहली कविता इसी द्विविधा को व्यक्त करती है--

"गंध कलिका का नहीं उद्गार, उसकी विकलता है,
फूल मधुवन का नहीं गलहार, उसकी विकलता है,
कोकिला का कौन सा व्यवहार, श्रुतिपति को न भाया ?

---

1. द्रष्टव्य, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 263.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कूक कोयल की नहीं मनुहार, उसकी विकलता है ।
गान गायक का नहीं व्यापार, उसकी विकलता है,
राग वीणा की नहीं झंकार, उसकी विकलता है,
भावनाओं का मधुर आधार, सांसों से विनिर्मित,
गीत कवि उर का नहीं उपहार, उसकी विकलता है ।"[1]

इस रहस्यमय व्यक्ति का खुलासा बच्चन ने अपनी आत्मकथा में दिया है — "आइरिस के प्रति मेरे आकर्षण ने मेरे अन्दर रागात्मकता का जो दीप जलाया था, उसकी लौ को, भ्रम, भय, संशय, सन्देहों की आंधी के झकोरे बराबर कंपाते रहे थे । "आकुल अन्तर" निश्चय अन्धकार से उभर उठने का संकेत देता है, पर प्रकाश के प्रति किसी ललक का नहीं, वस्तुत: उसके प्रति एक उदासीनता, एक निरपेक्षता का भाव है —

मैं पुलक उठता न सुख से,
दुख से तो क्षुब्ध होता,
इस तरह निर्लिप्त होना,
लक्ष्य तो मेरा नहीं था,
हाय क्या जीवन यही था ।

"आकुल अन्तर" का मूल स्वर प्राप्त इसी उदासीनता, निरपेक्षता, निर्लिप्तता का है और उसके ऊपर उस धैर्य, साहस, शौर्य का , कि अब जो कुछ आये सुख, दुख, हर्ष, विषाद उसे बिना किसी शिकवा-शिकायत के सहना है, सहना चाहिये । मैं समझता हूं यहां मेरा कवि निर्जन पर मेरा व्यक्ति सवार हो गया है । यदि ऐसा न होता तो आइरिस से जो निराशा मुझे मिली थी, उससे एकबार फिर मैं "निशा-निमन्त्रण"

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 267.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के अन्धकार में डूब जाता । मेरा शारीरिक रूप से अस्वस्थ हो जाना शायद इसका संकेत है, कि यह धक्का मेरे शरीर ने ही झेल लिया था । "निशा निमन्त्रण", "एकान्त संगीत" काल में आघात मेरे मन पर पड़ा था, मेरे तन को कुछ भी न हुआ था ।"[1]

कविता में हृदय और मस्तिष्क दोनों का सामन्जस्य होता है । अनुभव-जनित भावना और विश्लेषणात्मक बुद्धि दोनों ही मिल जुलकर कविता को जन्म देते हैं । आकुल अन्तर की कविताओं में हृदय और बुद्धि दोनों का समन्वय हुआ है । कवि कहते हैं - "कवि की महत्ता इसी में है कि वह हृदय और मस्तिष्क को एक साथ सजग और सक्रिय रखता है । सहृदय पाठक कवि के अनुभवों का तो भागी होता है पर मस्तिष्क की उस प्रक्रिया को नहीं जान पाता जिसके द्वारा कवि का अनुभव उसे सुलभ होता है, कवि ने 21वें गीत में कहा है -

"मेरे सूने पन के अन्दर
है कितने मुझ से नारी नर
जिन्हें सुखों ने ठुकराया है
मुझ उनका प्यार मिला है ।

अपने निजी संकटों के कारण कवि आत्मकेन्द्रित हो गया है । अब वह अपने से हटकर बाहर जीवन को भी देखने का प्रयत्न करता है । और इसीलिये वह अपने एकाकीपन को अपराध मानता है । यहाँ कवि तटस्थ और निकटस्थ रहने की अपेक्षा तल्लीन और तादात्म्य का अनुभव करता है । डा० नरेन्द्र देव के शब्दों में - "आकुल अन्तर" में बच्चन अपने आपको रिपीट करने लगते हैं यही कारण है कि बच्चन की गीतात्मकता छीजने लगती है और भावनाओं की पुनरावृत्ति से उकता जाता रहता है । ऐसा लगता है कि कवि इस दीर्घकालिक अन्तराअनुशीलन से

---

1. नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 202.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अब पुरा है, वह प्रत्यावर्तित होकर नयी काव्यानुभूति की प्राप्ति के लिये बाह्य जीवन का अनुशीलन करता है ।"[1]

"तू एकाकी तो गुनहगार ।
अपने प्रति हो कर दयावान
तू करता अपना अनुपान,
जब खड़ा मांगता दग्ध विश्व तेरे नयनों की सजलधार ।
अपने अन्तराल की कराह,
पर तू करता है आहि-आहि,
जब ध्वनित धरणि पर, अम्बर में फिर फिर विश्व का चीत्कार
तू एकाकी तो गुनहगार ।
तू अपने में ही हुआ लीन,
बस इसीलिये तू दृष्टिहीन,
इतने ही एकाकी-ग्रसीन,
इतने ही जीवन ज्योति क्षीण,
अपने से बाहर निकल देख है विश्व खड़ा बाहें पसार ।
तू एकाकी तो गुनहगार ।

जहाँ तक इन रचनाओं का भाव चेतना का प्रश्न है हम बच्चन जी के ही शब्दों में कह सकते हैं –

"भाग्य के आघात से मैं नहीं बच सका ।प्रेम की दुनिया धोखा दे गई, पत्नी का देहावसान हो गया । सालभर तक लिखना बिल्कुल बन्द रहा । फिर मेरी वेदना, मेरी निराशा, मेरा एकाकीपन "निशा-निमन्त्रण" , "एकान्त संगीत" और आकुल अन्तर के गीतों में मुखरित हुआ ।"[2]

आकुल अन्तर टूटे हुए मनों का काव्य है । इसीलिये इन रचनाओं को

---

1. प्रतीतकार बच्चन और अंचल , पृ.55.
2. आधुनिक कवि : बच्चन, पृ0 9.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वप्न भंग की रचनायें भी कह सकते हैं। 71वाँ गीत इसका साक्षी है। जो कुछ उन्होंने कहा उससे इसी भाव की पुष्टि होती है --

"गाता विश्व व्याकुल राग।
है स्वरों का मेल टूटा,
नाद उखड़ा ताल टूटा,
लो रुदन का कण्ठ फूटा,
मुग्ध युग-युग वेदना सहता पड़ी है जाग।
गाता विश्व व्याकुल राग।
वीणा के निज तार कस कर
और अपना साधकर स्वर
गान के हित आज तत्पर
तू हुआ था किन्तु अपना ध्येय गायक त्याग।
गाता विश्व व्याकुल राग।
उँगलियाँ तेरी रुकेंगी,
बज नहीं वीणा सकेगी,
राग निकलेगा न मुख से,
यत्न कर सारे थकेंगी,
करुण क्रन्दन में जगत के आज ले निज भाग। - 71वाँ गीत।

<u>सतरंगिनी</u> - सन् 1942 से 44 में लिखित।

1942 से 1944 तक लिखी गई बच्चन की रचनाओं का यह संकलन है। "सतरंगिनी" प्रथम प्रकाशन 1945, पहला संस्करण भारती भण्डार से, दूसरा - तीसरा सैंट्रल बुक डिपो, प्रयाग से और आगे के सब संस्करण राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, से प्रकाशित हैं। "सतरंगिनी" में प्रवेश गीत के बाद सात-सात गीतों के सात खण्ड हैं। जीवन के सतरंगे पक्षों का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चित्रण इन गीतों में हुआ है । इसीलिये इसका प्रवेश गीत "इन्द्र धनुष की छाया में" शीर्षक से लिखा गया है । बच्चन जी ने प्रायः अपनी सभी रचनाओं में कविता के निर्माण पक्ष सम्बन्धी एक दो बातें कहीं हैं । इसकी भूमिका में भी उन्होंने कविता के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं । कवि का यह बराबर आग्रह रहा है कि अन्य रचनाओं की तरह उसकी यह रचना भी कवि जीवन की किसी मनः स्थिति विशेष की अभिव्यक्ति है । बच्चन की रचनाओं में एक क्रम है हम इसे भाव क्रम कह सकते हैं । और यही भाव क्रम एक कथाक्रम का निर्माण करता है । उन्होंने कहा है – "मैं अपने यौवनकाल से अपनी अनुभूतियों और कल्पनाओं को निरंतर मुखरित करता रहा हूं । इस कारण मेरे जीवन और मेरे वाङ्मय की गति प्रायः समान्तर चली है । मुझे रचनाक्रम में पढ़ना, मेरे विकास को सहज समझना, मेरे साथ यदि आप मुझे पूरी सहानुभूति दे सकें तो – एक विकास-क्रम से स्वयं गुजरना है । शायद कविता इसी प्रक्रिया से संस्कारों को बनाने और उन्हें संवारने में सहायक होती है ।"[1]

बच्चन जी जीवन के तमाम दुख, संकट और संघर्ष के बावजूद जीवन को जीने योग्य मानते हैं । अपनी तमाम दुर्बलताओं के बावजूद मानव प्यार करने योग्य है । इसीलिये कवि जीवन की व्यर्थता देखते हुए भी उसे सार्थक बनाने का प्रयत्न करता है । यों इसका आभास उन्हें स्वयं "आकुल अन्तर" में हो गया था । उन्होंने जीवन की अगली मंजिल का आभास पा लिया था । उन्होंने कहा है –

"यहीं नहीं यह कथा खत्म है
मन की उत्सुकता दुर्दम है
चाह रही है देखें आगे
ज्योति जगी या सोया तम ।"[2]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 304.
2. वही, पृ० 290.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस प्रकार "सतरंगिनी" तम भरे, गम भरे बादलों के ऊपर सुख की आशाओं के इन्द्र धनुष रचने का प्रयास है । सतरंगिनी की पहली कविता में ही कहा गया है –

"काले घनों के बीच में,
काले घनों के बीच में,
उठने गगन में लौ लगी,
यह रंग-बिरंग विहंगिनी ।"[1]

इस प्रकार जीवन पर छाये अवसाद विषाद का कोहरा काट कर निर्माण और आशा की अदम्य भावना का विकास कवि में हुआ । "सतरंगिनी" की "निर्माण", "जुगनू", "अंधेरे का दीपक" तथा "विश्वास" रचनायें सतरंगिनी के मूल भाव को स्पष्ट करती हैं । तीनों कविताओं की कुछ पंक्तियाँ देखिये –

"नाश के दुख से कभी दबता नहीं निर्माण का सुख,
प्रलय की निस्तब्धता से सृष्टि का नव गान फिर-फिर,
नीड़ का निर्माण फिर-फिर ! स्नेह का आह्वान फिर-फिर ।
। निर्माण ।
× × × ×
प्रभंजन, मेघ, दामिनि ने न क्या तोड़ा, न क्या फोड़ा,
धरा के और नभ के बीच कुछ साबित नहीं छोड़ा,
मगर विश्वास को अपने बचाये कौन बैठा है,
अंधेरी रात में दीपक जलाये कौन बैठा है ?
× × × × ।जुगनू ।
मृत्यु पथ पर भी बढ़ूंगा मौत से यह गुनगुनाता

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1 , पृ0 328.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अन्त यौवन, अन्त जीवन का, मरण क्या,
दो नयन मेरी प्रतीक्षा में खड़े हैं । ।विश्वास ।

जहाँ तक "सतरंगिनी" की प्रेरणा का प्रश्न है उन्होंने अपनी आत्म-कथा में इस रहस्य का उद्घाटन कर दिया है । इसमें काम चेतना के साथ-साथ मातृ करुणा का भी योगदान है । बच्चन जी विवाह संस्था को मातृ-करुणा के विकसित भाव के साथ ही जोड़कर देखते हैं । इसीलिये तेजी के आगमन को - एक अतृप्त प्यास की तृप्ति को वह "सतरंगिनी" का मूल प्रतिपाद्य मानते हैं । उन्हीं के शब्दों में सुनिये - "यौवनाकर्षण से लैंगिकाकर्षण - ध्यान देंगे कि दोनों में अन्तर है - लैंगिकाकर्षण से आत्म-संरक्षण, आत्म-संरक्षण से जाति-संरक्षण की यात्रा में ही मनुष्य ने विवाह की संस्था की नींव डाली होगी । इसी प्रकार मनुष्य व्यक्ति-जीवन की सुरक्षा से सामूहिक जीवन की सुरक्षा की ओर गया होगा, और सामूहिक जीवन को व्यवस्थित करने की प्रक्रिया में परिवार की नींव पड़ गई होगी । मानव संस्थाओं को विकृत होते देर नहीं लगती । परिवार का व्यवस्थापक शरीर ही उसका रक्षक और स्वामी बन गया होगा । हमारे "पति" शब्द का अर्थ "स्वामी" सर्वविदित है- राष्ट्रपति, सेनापति, सभापति, कुलपति - मुझे किसी संस्कृतज्ञ ने बताया था कि "पति" शब्द जिस मूल धातु से बना है उसके अर्थ रक्षक होते हैं- "पा" से, जैसे "पाहिमाम्" । परिवार के विकास क्रम में नारी अपनी शारीरिक अल्प-बलता से- अबला वह कहलाती ही है- अथवा सुरक्षा के कारण ही न्यून बल हो, सुरक्षा से अधिक दुर्बल बनाने वाला कुछ भी नहीं - पुरुष के साथ अपना सम पद क्रमशः खोती हुई व्यक्ति से वस्तु हो गई होगी- देने लेने की चीज- "कन्या-दान" की प्रथा में क्या इसका स्पष्ट संकेत नहीं है ? क्या वह जुए के दाँव पर नहीं लगी ? क्या वह बेची खरीदी नहीं गई ?.....

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुंठाएँ सबसे अधिक दमित यौन - भावनाओं से जन्म लेती हैं । मुझे अपने जीवनारम्भ में जैसा संसर्ग मिल गया था उससे मुझे अपनी यौन-भावनाओं को दमित करने को बाध्य न होना पड़ा था । शायद इसी का बदला लेने को, या इसका परिष्कार करने को आत्म-संयम मेरे प्रथम परिणीत जीवन का आवश्यक अंग बन गया । अब मैं ऐसा समझता हूं कि यौनाकर्षण को अवरुद्ध न किया जाना चाहिये, पर लैंगिकाकर्षण को संयमित करना जरूरी है । फिर भी इन दोनों अवस्थाओं में मैंने अपने को सहज अथवा स्वाभाविक न पाया था -- दीवार, बेड़ियों, प्रहरियों के बीच कौन सहज हो सकता है, क्षुधा को आहार बनाकर कौन स्वाभाविक? इनके तनाव में यदि कविता मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम न बन जाती तो मैं निश्चय टूट जाता या भटक जाता । यौन और लैंगिक भावना की तृप्ति के लिये सहज-स्वाभाविक स्थिति की खोज में जो संघर्ष मुझे करना पड़ा उसमें इन दोनों का सब्लिमेशन-उदात्तीकरण हो गया । मैं अब ऐसी धार से प्यास बुझाना चाहता था जिसका आदि स्रोत करुणा-मातृ करुणा में हो । अदृश्य ने तेजी में मेरी यह कामना पूर्ण कर दी ।"[1]

"सतरंगिनी" की योजना बनी । सच कहूं तो इसकी कल्पना मेरे मन में पांच वर्ष पूर्व उठी थी, उतनी कल्पना नहीं जितनी यथार्थ की स्वाभाविक परिणति लगती-सी । अंधेरा सब दिन छाया नहीं रह सकता, जो अंधकार से लड़ता है वह एक दिन प्रकाश देखता है । प्रकाश को मैंने देख लिया था । जब प्रकाश बादल के आंसुओं को पार करता है तो इन्द्रधनुष अनुरंजित होता है । अपनी अधूरी शिक्षा-दीक्षा पूरी करने के साथ ही ज्ञान प्रकाश और आदित्य प्रकाश मेरे जीवन में आ गये थे । अब तो मेरी आँखें इन्द्रधनुष की प्रतीक्षा कर सकती थीं । और जब एक दिन आकस्मिक से मेरा परिचय हुआ तो मुझे लगा कि वह प्रत्याशित इन्द्र धनुष या "इन्द्र धनुषी" ।जैसा कि दिनकर ने

---

1. नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 264 - 266 तक.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उसके लिये अपनी "उर्वशी" में प्रयोग किया है, मेरे जीवन में उदय हो गई है। क्या आप जानते हैं कि आइरिस के अर्थ अंग्रेजी में इन्द्रधनुषी होते हैं ? —इन्द्रधनुष —सतरंगा, इन्द्रधनुषी सतरंगिनी। मुहावरा कल्पना की उड़ान का है। पर जीवन जो उड़ान लेता है उसे देखकर कल्पना अपने को पंगु समझती है। मैंने दो ढाई वर्ष आइरिस को अपने जीवन में पाने की कल्पना की थी और जीवन ने तेजी को मेरी बाहों में डाल दिया था, आइरिस मेरे जीवन में आ जाती तो सतरंगिनी का क्या रूप होता, कौन बताए। मेरी कविता जीवन की अनुगामिनी बनकर - जैसा उसे सदा रहना ही चाहिये— "सतरंगिनी" को जो रूप दे सकी है वह आपके सामने है। आइरिस के साथ जो आकर्ष-विकर्ष मेरे मन ने झेला, उससे प्राप्त उदासीनता- उदासी नहीं— "आकुल अन्तर" के पूरे वातावरण में छाई है, जिससे उभरता है मेरा निर्लिप्त अहम् जिसे उदासी नहीं दबा पाई थी उसे उदासीनता क्या दबा पाती। स्वाभाविक गति से यह अहम् कहाँ जाकर टकराता, कुछ नहीं कहा जा सकता। पर जीवन ने कुछ अस्वाभाविक करके मुझे जहाँ ला खड़ा किया था, वहाँ से मुझे अपनी पुरानी भूमि से सम्बन्ध बनाना ही था, इसके बिना मुझे चैन नहीं मिल सकता था, मैं शान्त नहीं हो सकता था। अपने से अपना सामन्जस्य नहीं बैठा सकता था। स्वस्थ अनुभव नहीं कर सकता था। मेरे मन में जो आ रहा था, उठ रहा था वह उन्हीं दो स्थितियों में कोई सम्बन्ध या सूत्र खोजने या बनाने को। "सतरंगिनी" स्वर शब्दों का वह सेतु है जो मैंने अपनी कल्पना और अपने जीवन के बीच में निर्मित किया है। इसका एक छोर मेरी कल्पित संगिनी (संग से) पर टिका है, दूसरा मेरी जीवन-सहचरी पर, मध्य भाग,— इतना तो आपको मालूम ही होगा कि कविता का मध्य ज्यामिति का मध्य नहीं होता- उन प्रश्नाओं के स्तम्भ पर जो समस्त काल में मेरे जीवन में आती जाती रहीं, और कोई भाग उस अदृश्या की टिगुनी पर भी वैसी ही अदृश्य जैसी गंगा जमुना के संगम पर सरस्वती है — जिसका संकेत पहले मैं "अ" ° से कर चुका हूं। एक बात के लिये आपको आगाह कर दूं,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भावनाओं का सेतु उतना सीधा, सपाट, सिलसिलेवार नहीं होता जितना लोहा- लक्कड़-पत्थर से बना पुल, और खम्भे भी एक दूसरे से इतनी दूरी पर नहीं होते कि एक दूसरे पर अपनी छाया न छोड़ सकें, कहीं-कहीं तो ये एक दूसरे को छूते भी हैं, एक दूसरे का आलिंगन भी करते हैं। उलझे-सुलझे और गंठीले जीवन को-- और जीवन तदा ही ऐसा होता है - सीधे सादे शब्दों की डोरियों से बांधने की मुश्किल को कवि ही जानते हैं। हाफिज का एक शेर है -

"शबे तारीक ओ बीमे मौज ओ गिरदाबे चुनी हायल
कुजा दानन्द हाले मां सुबुकसाराने साहिल हा।

(रात का अंधेरा है, लहरें उठ रही हैं, भंवरें चक्कर में डाल रही हैं। जो किनारे पर आराम से खड़े हैं वे हमारा हाल क्या जानें।।"[1]

डा० विजयेन्द्र स्नातक ने ठीक ही कहा है कि - "सतरंगिनी" के एक दर्जन से अधिक गीत ऐसे हैं जो आशा और उमंग से पाठक के अन्तर को आप्लावित कर देते हैं। "जुगनू", "अन्धेरे का दीपक", "निर्माण", "तुम गा दो", "जग", "विश्वास" आदि गीतों का स्वर जितना आशामय है उतना ही प्राणवान भी। इन गीतों में ओज और तेज का वर्चस्व तो है ही, साथ ही उल्लास और उत्साह की दीप्ति भी इनमें व्याप्त है। "सतरंगिनी" का कवि जीवन के प्रति पूरी जागरूकता लेकर चला है और उसका ध्यान इस तथ्य पर रहा है - मृत्यु के क्षणों में भी जीवन के स्वप्न देखने वाला व्यक्ति ही इस संसार में सफलता प्राप्त कर सकता है। पथ के रोड़े जिसे रोक नहीं पाते, मंजिल जिसके पास चली आती है ऐसी दुर्दान्त शक्ति वाला ही जीवन के यथार्थ को समझ पाता है -

---

1. नीड़ का निर्माण फिर, पृ० 306, 307.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"पहाड़ टूट कर गिरा,
प्रलय पयोद भी घिरा,
मनुष्य है कि देव है
कि मेरुदण्ड है तना ।
अजेय तू अभी बना ।"

महानाश की छाती पर नव-निर्माण करने की दुर्निवार इच्छा रखकर तिमिराच्छन्न जगत् में स्वर्ण विहान करने की साध जिसके पास है वही जीवन को सही तौर पर जीने का अधिकारी है । जीवन की पूरी परिभाषा तो आशा और उमंग में छिपी है –

"सुन यदि तुने आशा छोड़ी
तो अपनी परिभाषा छोड़ी,
तुझे मिली थी यह अमरों की केवल एक निशानी
मानी, देख न कर मनमानी ।"[1]

"खतरंगिनी" एक प्रतीकात्मक गीत संकलन है । इसका यदि प्रतीकार्थ स्पष्ट करना चाहें तो कह सकते हैं कि जीवन के परिवर्तनों का चित्रण ही इन रचनाओं में कवि को अभीष्ट है । "पांच-पक्षी" प्रतीकों के माध्यम से कवि जहाँ अपने काव्य विकास के क्रम को स्पष्ट करना चाहता है वहाँ वह जीवन के सोपानों को भी व्यक्त करना चाहता है । "अरुण शिख " (मुर्गा और सूर्य किरण) , कोकिल, बुलबुल, पपीहा और मयूर उसके जीवन की विभिन्न स्थितियों को चित्रित करते हैं । "अरुण शिख" यौवनारम्भ की तैयारी है जिसकी अभिव्यक्ति मधुशाला में हुई है । "कोकिल" यौवनोल्लास और हर्षोन्माद का प्रतीक है जो "मधुबाला" में चित्रित हुआ है । "बुलबुल" प्यास और मादकता की प्रतीक है । जिसकी अभिव्यक्ति "मधुबाला" और "मधुकलश" में हुई है । इसकी दो पंक्तियाँ देखिये –

---

1. द्रष्टव्य - बच्चन : निशा निमंत्रण, पृ० 107.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"तुरा पी मद पी कर मधुमान
रही बुलबुल डालों पर बोल "[1]

या

"थी तुरा गीत जल की, ला लिये अंगार मैंने "[2]

"निशा निमन्त्रण", "एकान्त संगीत" और "आकुल अन्तर" में व्यक्त भावनाओं के लिये कवि ने "पपीहे " को प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया है । "पपीहा" अभाव और अतृप्ति के माध्यम से अपनी बात कहता है । देखिये —

"यह पपीहे की रटन है ।
बादलों की घिर घटायें, भूमि की तेती बलायें,
खौल दिल देती दुवायें, देख किस दिल में जलन है ।
यह पपीहे की रटन है ।"[3]

जीवन की परिस्थितियों में "बुलबुल" चली गई है । "पपीहा" आ गया है । "एकान्त संगीत" में कहा है —

"बुलबुल जा रही है आज "[4]

"सतरंगिनी" में मयूरी और मयूर के प्रतीक माध्यमों से कवि ने परित्यक्ता नारी के उन्माद को व्यक्त किया है । नागिन को यदि वह प्रमदा नारी का प्रतीक मानते हैं तो मयूरी को समर्पिता, परित्यक्ता का। "चार पक्षी" शीर्षक की उन्होंने चर्चा इस कविता में की है —

"उदय शिखर से अरुण शिखा की, उठी जागरण की वाणी,
सुषुप्ति के उपवन से कूकी कुहु कुहु कोयल मस्तानी

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 102.
2. वही, पृ० 128.
3. वही, " 176.
4. वही, पृ० 233.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कातर स्वर से बुलबुल बोली अन्तराल की घाटी में,
प्राण पपीहे का पागल स्वर वीर बला पत्थर पानी,
एक विहंगम भरे हृदय से करता बैठा स्वर साधन
इन्द्रधनुष की छाया में ।"[1]

मयूरी एक तरह तेजी है जो बच्चन रूपी मयूर के सामने समर्पित है । और हर्षोल्लास की मानसिकता को कवि ने मयूरी के माध्यम से स्पष्ट किया है । समर्पिता नारी के लिये मयूरी से बढ़कर दूसरा प्रतीक ढूंढना कठिन था । - यहां अरुण शिखा, कोकिल, बुलबुल, पपीहा, "सतरंगिनी" से पहले मेरे जीवन अथवा बाङ्मय के चार सोपानों के प्रतीक हैं - पांचवां विहंगम जो इन्द्र धनुष की छाया में बैठा स्वर साधन कर रहा है ।सामंजस्य के लिये । मयूर है । इन्द्रधनुष की रंग छाया ही जैसे उसके पंख में उतर आयी है ।

यह इन्द्रधनुषी मयूर "मयूरी" शीर्षक कविता में मयूरी पर निछावर होता है -

"निछावर इन्द्रधनुष तुझ पर,
निछावर प्रकृति, पुरुष तुझ पर।

और मयूरी-मयूर के सम्बन्ध पर सनातन प्रकृति-पुरुष सम्बन्ध की मुहर लगा दी जाती है ।

जैसे इन्द्र धनुष ही मयूर है, वैसे ही सतरंगिनी (पहले रंग की पहली कविता में। ही मयूरी है -- "यह रंग-बिरंग विहंगिनी" ।रंग-बिरंग का श्लेषार्थ भी समझने योग्य है । और इसी सतरंगिनी के लिये कहा गया है कि-

अति क्षुद्र मेघों की कज्जल,
अति क्षुब्ध विद्युत की कज्जल

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 327.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर पा गई सहसा विजय तेरी रंगीली रागिनी ।

यह "मेघों" की कड़क" और "विद्युत की तड़क" उसी नागिन का पूर्व संकेत करती है जो आने वाली है –

"तू प्रलय काल के मेघों का कज्जल-सा कालायन लेकर,
तू नवल सृष्टि की ऊषा की नवद्युति अपने अंगों में भर,
वड़वाग्नि विलोड़ित अम्बुधि की उत्तुंग तरंगों से गति ले,
स्खलित रवि-शशि को बन्दीकर दृग-कोषों का रव बन्दीघर,
कौंधती तड़ित की जिह्वा-सी विष-मधुमय दांतों में दाबे,
तू प्रकट हुई सहसा कैसे मेरी जगती में, जीवन में ?
नर्तन कर, नर्तन कर नागिन, मेरे जीवन के आंगन में ।

यदि आपको पहले ही भान नहीं हो चुका तो मैं ही सूत्र कर कह दूं कि नागिन प्रमदा और मधुरी परिणीता नारी के प्रतीक हैं । ओज और माधुर्य की जिस शैली में, जिस आकार में ये दोनों कवितायें क्रमशः लिखी गई हैं, उसी से प्रमदा और परिणीता का अन्तर स्पष्ट हो जाना चाहिये । प्रमदा को अपने रूप, यौवन, आकर्षण, प्रभाव और शक्ति का गर्व है, वह परस्पर प्रतिकूल गुणों के संघात की एक विषय संज्ञा है, जिससे वह अपने प्रेमी को अभिभूत कर देती है, उसे अपने प्रेम-पाश में बांधकर ।प्रेम-हार पहनाना लेकिन प्रेम-पाश फैलाना क्या"--प्रारम्भिक रचनायें भाग एक । दास बना लेती हैं, और आत्म समर्पण के लिये बाध्य करती हैं ।क्या लज्जा आत्म-समर्पण में। रहती है स्वयं स्वतन्त्र, निर्बन्ध, विमुक्त । परिणीता स्वयं समर्पिता है, वह अपने "साजन" की सुधि आते ही मगन हो जाती है नाचने लगती है "आंगन-आंगन"– आंगन घर का प्रतीक है, वह गृहिणी है न– – नाचती नागिन भी है, नहीं, नहीं वह नर्तन करती है – नर्तन कर, नर्तन कर, नागिन" – वह नाचती भी तन कर है, नाचने में भी तन्मय नहीं, तनी हुई – मैं ध्वनि से भी बहुत कुछ कहता हूं । मधुरी अपने साजन की खोज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"मधुवन-मधुवन करने को निकल पड़ती है -- मगन-मन से मंदिर-मन, उन्मत्त होती हुई, उद्धत नहीं जैसी कि नागिन है । तभी मधुर आकर उस पर "निछावर" होता है । वह मधुर को भेंट हो जाती है --

"तू जिसे लेने चला था भूलकर अस्तित्व अपना,
तू जिसे लेने चला था बेचकर व्यक्तित्व अपना,
दे गया है कौन वह उपहार ? -
वीणा बोलती है ।

वह उपहार पाने के लिये "आत्म समर्पण" नहीं करता । निछावर और आत्मसमर्पित होने में अन्तर है । पुरुष का आत्म-समर्पण उचित नहीं उसका निछावर होना ही शोभन लगता है । आत्म समर्पण करके नारी ही सौभाग्यवती होती है । पुरुष प्रकृति का यह सम्बन्ध हमारे धर्म, दर्शन की परम्परा, हमारी संस्कृति, सभ्यता, इतिहास की श्रृंखला में बराबर दुहराया गया है -- शिव-पार्वती, सत्यवान-सावित्री, राम-सीता, गौतम-यशोधरा, चैतन्य-विष्णुप्रिया, गांधी-कस्तूरबा, जवाहर-कमला -- सब उसी की कड़ियाँ है ।

सही नारी की खोज में मैंने परम्परा का अन्धानुकरण नहीं किया है, जीवन मेरे लिये प्रयोग है । यह और बात है कि अपने प्रयोग में भी मैं परम्परा-सिद्ध परिणाम पर पहुँचा हूं । प्रमदा, जीवन का विरोधकर हमारे आधुनिक जीवन का एक बहुत बड़ा विकार है , बहुत बड़ी चुनौती भी । उसके साथ प्रणय, जिसमें वासना का आकर्षण ही अधिक हो तो, संघर्ष बन जाता है । आधुनिक मनोविज्ञान के "बार आफ सेक्सेज़" से उसे प्रश्रय मिलता है । "राका" में उदय शंकर भट्ट ने इसे ज़रा भौंड़ी तरह व्यक्त किया था -- "लिंगो" में संघर्ष हो रहा है । पंत जी ने लिखा, "योनिमात्र रह गई मानवी" वह यह भी लिख सकते थे, "लिंग मात्र रह गया मानवा"। नागिन भी "नागयोनि " है । लेकिन प्रणय योन-संघर्ष मात्र नहीं । मैंने "लहरंगिनी" में ही आगे किसी कविता में लिखा है । "प्यार को संघर्ष मत, सुन्दरि,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बनाओ, तुम समझती हो नहीं भाषा प्रणय की" । नर-नारी सम्पर्क में यौन-सम्बन्ध की महत्ता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता । पर प्रमदा उसके सुजनशील परिणाम को वहन करने से इन्कार कर देती है । यौन-संघर्ष की बन्ध्या परिणति के रूप में रह जाती है । केवल विजेता और विजित दोनों की दर्प-स्फीत और दैन्य-क्षीण-रुग्ण झुर्रायें । नागिन अपनी संतान को खा जाती है, परिणीता प्रणय परिणति में माती है, —

"फुल्ल कमल, गोद नवल, मोद नवल
गेह में विनोद नवल ।
बाल नवल, लाल नवल,
दीपक में ज्वाल नवल !
दूध नवल, पूत नवल,
पंक्ति में विभूति नवल,
नवल हृदय, नवल दृष्टि,
जीवन की नवल सृष्टि ।

प्रमदा जीवन को अवरुद्ध करती है, परिणीता जीवन को विकसित, प्रमदा जीवन की विशृंखलता को उच्छृंखलता में बदल देती है । परिणीता जीवन की विशृंखलता को सामञ्जस्य प्रदान करती है । जीवन का पोषक सामंजस्य है न कि विशृंखलता अथवा उच्छृंखलता, परिणीता न कि प्रमदा, प्रतीक की भाषा में मधुरी न कि नागिन ।"[1]

हलाहल (1936-45)

1936 से 45 लिखी हुई बच्चन की रचनाओं का यह संकलन है ।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 317 – 319.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"हलाहल" प्रथम प्रकाशन 1946, पहला संस्करण भारती भण्डार, प्रयाग से और आगे के तब संस्करण राजपाल एण्ड संज, दिल्ली से प्रकाशित है, बच्चन जी ने अपनी यह कृति डा० प्रकाश जोहरी को इन पंक्तियों के साथ समर्पित की –

"तरल मद नयनों का आशीष
बनाता कटुता को मधुमान,
गरल को करती अमृत स्वरूप
सरल मृदु अधरों की मुस्कान।"

बच्चन जी ने "हलाहल" की भूमिका में लिखा है, "1936 मेरे जीवन में एक भीषण भूकम्प का समय था। "हलाहल" जिन प्रवृत्तियों का प्रतीक बनकर मेरे मन में उदित हुआ था उनको दुत्कारकर नहीं बल्कि उनको चुनौती देकर ही मैं अपने अन्दर बल संचित कर सकता था, अपने को दुरुस्त रख सकता था। यह चुनौती मैंने "मधुकलश" में दी।"[1]

"हलाहल" की रचना सन् 1935 के अन्त तथा 1936 के आरम्भ की थी लेकिन उसकी कुछ रचनाएँ अधूरी थीं वह 1945 में पूरी की। अपनी माता की मृत्यु पर कवि ने पुनः मृत्यु का साक्षात्कार किया और यह अनुभव किया कि माता की आत्मा शरीर से अलग बैठकर सांसों की लीला देख रही है। हलाहल में सूक्ष्म दार्शनिक चिन्तन है और चिन्तन का विषय है जीवन का सत्य जो इन पंक्तियों में देखा जा सकता है –

"न जीवन है रोने का ठौर न जीवन दुख का होने का ठौर
न होने का अनुरक्त, विरक्त मगर कुछ करके देखो गौर,
कभी तो उठती मन में बात कि बस तब धुन-धन्धों को छोड़
एक अवरज से मुख-दृग खोल एक टक देखूँ जग की ओर।"[2]

उपरोक्त पंक्तियों में "हलाहल" भाग्य के मारे हुए खंडित व्यक्तित्व

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 373.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, हलाहल, पृ० 388.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की पहचान है और जिस तरह पंत की परिवर्तित कविता में नियति की कठोरता के अनेक दृश्य बिन्दु देखने को मिलते हैं उसी प्रकार इस रचना में भी 82वें पद से लेकर 148 वें पद तक उत्थान-पतन के, मिलन-विछोह के, निर्माण और ध्वंस के चित्र प्रस्तुत किये । एक ऐसे काल्पनिक देश की खोज में बच्चन हैं जहाँ काल के क्रूर हाथों की पहुंच नहीं हो सकती--

"हलाहल पीकर लेगा जान स्वयं निज सीमा का विस्तार,
कि तू है संसृति से भयभीत, कि तुझ से भय खाता संसार।"[1]

भारतीय दार्शनिक चिन्तन का आधार व्यक्तिवादी अस्तित्व है जो "हलाहल" में भी दिखाई देता है --

"अहर्निश मेरा यह आश्चर्य कहां से पाकर बल विश्वास
बबूला मिट्टी का लघुकाय उठाये कन्धों पर आकाश [2]

यहाँ मानव के अस्तित्व का बोध कितना प्रबल है -

"आसरा मत ऊपर का देख सहारा मत नीचे का मांग"[3]

"हलाहल की पूर्ण कवित्व शक्ति को समझने के लिये जीवन के निर्मम मुक्त से, व्यतीत से, और क्रूर काल क्रम से व्यक्ति को जूझने की तीव्र प्रेरणा और मानवीय शक्ति अर्जित करनी होगी । यदि व्यक्ति का व्यक्तित्व इस प्रकार का बन चुका है, यदि उसका व्यक्तित्व काल-कर्म-जयी बन गया है तो हलाहल की कवित्व शक्ति को समझना कठिन होना चाहिये ।"[4] लेकिन कितने कवि होंगे जो जीवन के प्रति आस्था रखते हैं और कितना उनका सृजन होगा । प्रस्तुत पंक्तियां इसकी साक्षी हैं -

"सुरा पीने को था बाजार, हलाहल पीने को एकान्त
सुरा पीने को सौ मनुहार हलाहल पीने को मन शान्त,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, हलाहल, पृ0 401.
2. वही, पृ0 399.
3. वही, पृ0 399.
4. जीवन प्रकाश जोशी : बच्चन व्यक्तित्व और कवित्व ,पृ0 138.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हलाहल पीने में भी साथ किसी का चाहो, तो नादान,
अकेला पन है पहला घूंट हलाहल का, तो इनको जान"[1]

कवि अपनी दुर्लीन परिस्थितियों से इतना तंग हो गया था कि वह अपने लिये नया मार्ग चाहता था जितनी कि उसको चाह थी, प्यास थी, आवश्यकता थी । उसको पाने के लिये भी वह प्रयत्नशील था । चाहे वह मधु हो या विष । बच्चन जी को अपने कवि पर अटूट विश्वास था देखिये इन पंक्तियों में –

"रुक गया है अब पथों में, नाम जितनों के गिनाऊं
स्थान बाकी है कहाँ पर एक अपना भी बनाऊं
विश्व तो चाहता रहा है बंध राह बनी-बनाई
किन्तु इस पर किस तरह मैं कवि चरण अपने बढ़ाऊं ?
राह जल पर भी बनी है लहर, पर न हुई कभी वह
एक तिनका भी बना सकता यहाँ पर मार्ग चूतन ।

रहस्यवादी और छायावादी परम्परागत काव्यधारा से हटकर कवि ने मधु-काव्य की रचना की । लेकिन वह उनके लिये रूढ़ि न बन सकी । "कुल मिलाकर बच्चन के काव्य-सृजन में "मधुबाला" अज्ञेय पौरुष का प्रतीक-सा अनुभव होता है । और हलाहल ? वह तो अज्ञेय मन का मंथित पदार्थ है, प्रसाद है । हलाहल, मधु का सहजन्मा, उसका सहोदर । जिसे पान कर शिव अमर हैं, असीम हैं, महिमावान हैं ।"[2]

"हलाहल पीकर लेगा जान कि तू है कितना महिमावान,
नहीं है उनमें तेरा स्थान कि जिनका होता है अवसान,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 384.
2. डा० जीवन प्रकाश जोशी, बच्चन व्यक्तित्व और कवित्व, पृ० 139.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हुई है फिर-फिर जग की सृष्टि हुआ है फिर-फिर जग का नाश
कि तू दोनों स्थितियों में भिन्न, तुझे हो फिर-फिर यह विश्वास।[1]

अमरत्व का नाम है मृत्यु को निर्भय स्वीकार करना। भय में ही मृत्यु निहित है फिर जिसने हलाहल का पान कर लिया उसके लिये मृत्यु का क्या भय? देखिये इन पंक्तियों में –

"मरण था भय के अन्दर व्याप्त हुआ निर्भय तो विष निस्तत्व
स्वयं हो जाने को है सिद्ध, हलाहल से तेरा अमरत्व।"[2]

"अमरत्व वस्तु सत्य नहीं, व्यक्ति सत्य है, वह हमारा गुण नहीं, हमारी साधना, हमारी उपलब्धि है। इसी प्रकार हलाहल के अनेक पदों में अपनी रागात्मकता के झरोखे से मैंने सृजन, सौन्दर्य, प्रेम, आनन्द, समर्पण आदि उद्दात मानवीय गुणों में अमरत्व की झांकी पाई है। "तमसो मा ज्योतिर्गमय" का जो संघर्ष मैंने अपने जीवन और काव्य में झेला था, उसी का एक दूसरा पहलू "मृत्योर्माऽमृतंगमय" के संघर्ष का है। उस संघर्ष में मैं विजयी होकर निकला हूं, ऐसा तो मैं आज भी नहीं कह सकता। पर मेरी सत्ता में निहित राग-तत्व ने "हलाहल" में निश्चय ही मृत्यु से वह संधि-समझौता कर लिया है जिसमें उसका गौरव और मान अक्षुण्ण रहा है और मृत्यु भी अपने भाग से वंचित नहीं रखी गई – उसपर पूर्ण विजय प्राप्त करने का काम शायद योगियों का है कवियों का नहीं –

"हुआ करती जब कविता पूर्ण,
हुआ करता कवि का निर्माण,
अमर हो जाता कवि का कण्ठ
गूंज कर मिट जाता है गान।"[2]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 400. 2. वही, पृ0 400.
3. नीड़ का निर्माण फिर, पृ0 314 से 315.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आज के युग में मधु का और हलाहल का समझना और उनका मूल्यांकन करना बहुत कठिन है । बच्चन जी का कहना है – "मधु का वास्तविक स्वाद उन्हें दुख के हलाहल का पान करने पर ही ज्ञात हुआ है ।"[1] "हलाहल" में बच्चन जी की व्यक्तिपरक अभिव्यंजना के पीछे नियति का बड़ा हाथ है । कवि का कहना है – "हलाहल" के वर्तमान रूप में उसका कितना पुरातन सन्निहित है और कितना मेरे नवीन अनुभव से समाहित हुआ है इसे बता सकना मेरे लिये असम्भव है । "हलाहल" का धरातल एक बार बन चुका था और मेरा नया अनुभव भी, जिसने हलाहल के प्रतीक के अर्थ ही मेरे लिये बदल दिये, उसमें आमूल परिवर्तन नहीं कर सका, फिर भी यह मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि यदि मैंने हलाहल को 1936 अथवा 1940 में समाप्त कर दिया होता तो उसका यह रूप कदापि न होता जो आज हमारे सामने है ।"[2]

बच्चन जी का इस रचना में मुख्य स्वर भाग्यवादी हो गया है, इसीलिये जीवन के खट्टे मीठे अनुभवों को पहचानने की दुर्निवार स्थिति कवि के सामने है । वे कहते हैं –

"मधुर कितना मदिरा का नाम, मदिर कितना मदिरा का ध्यान,
मोहमय कितना मधु का पात्र, मुक्तिमय कितना मधु का पान ।
मगर आ इस दुनिया के बीच, अरे ओ भाग्य-मलिन इंसान,
बहुत-से रस हैं जिनके साथ तुझे करनी होगी पहचान।"[3]

जो निराशावादी स्वर "आकुल अन्तर" और "एकान्त संगीत" में फूटा वही अपूर्णता का बोध "हलाहल" में भी है । संसार भाग्य के संकेत पर ही नाच रहा है । इस मलिन भाग्य मानव को यदि एक क्षण भी सुख रूपी मदिरा का आस्वाद मिल जाता है तो वह आशावादी कल्पना के सहारे आगे बढ़ता है ।

---

1. हलाहल, 32वाँ गीत.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 377.
3. वही, पृ0 382.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सुख दुख दोनों ही जीवन के लिये अनिवार्य हैं। उन्होंने कहा है –

"जरा सी मधु मदिरा में भूल, सभी सुखदुख पल भर में भूल,
समय-बन्धन से हो स्वच्छन्द रहा सपनों का झूला झूल।
मगर जो अभिमानी इंसान, दुखों की मोह तमिस्रा त्याग,
उसे भी आँखें खोल निहार हलाहल का जो तेरा भाग "[1]

यह देखते हैं कि बच्चन में जीवन के प्रति बड़ी आस्था है। जैसे प्रसाद जी का मनु प्रलय का गीत लेकर भी अरुण-केतन हाथ में लेकर आगे बढ़ता है वैसे ही बच्चन का कवि भी इन संघर्षों से न छिटकता है और न भयभीत होकर भागता है। वे स्वयं कहते हैं –

"न छिटका औ न हुआ भयभीत, न भागा ही लेकर प्राण,
दिखा जब मुझको आता काल कफन का ले हाथों में थान,
बढ़ाया पट जब मेरी ओर उठा तैयार हुआ तत्काल,
निकट जो मेरे थे वरदान दिया, पर, उतने उन पर डाल।"[2]

यद्यपि मनुष्य स्वेच्छया हलाहल का पान करना नहीं चाहता, परन्तु हलाहल का पान भी करना पड़ता है। सुख दुख दोनों ही मनुष्यत्व की पहचान कराते हैं, दोनों को पृथक-पृथक नहीं देखा जा सकता। उनका महत्व एक-दूसरे के साथ है। बच्चन जी लघुता में ही विराटता की खोज को "हलाहल" का मुख्य स्वर मानते हैं। उदाहरण के लिये यह पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं –

"हलाहल तो है ऐसा तत्व कि इससे डरते हैं सुर लोग,
अमरता का जिनको अधिकार उन्हें मरने के डर का रोग,
अवश्मे मैं हूं मैं दिन-रात पिला क्या है मुझको आधार

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 382.
2. वही, पृ0 391.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कि जो तू हो इतना निर्भीक हलाहल से करना खिलवार ।"[1]

बंगाल का काल –

"बंगाल का काल " 1943 में लिखित रचना है । इसका प्रथम प्रकाशन 1946 में भारती भंडार से हुआ । स्वाधीनता आन्दोलन, महात्मागांधी और बंगाल का काल तीन ऐसे केन्द्र बिन्दु हैं जिन्हें लेकर बच्चन जी ने राष्ट्रीय रचनायें कीं हैं । "बंगाल का काल" साधारण घटना नहीं थी । 1942 के उग्र दमन ने लेखकों की लेखनी को एक प्रकार से कुंठित कर दिया था इसलिये बच्चन ने बंगाल के अकाल को एक दयनीय रूप में प्रस्तुत न कर एक क्रान्तिकारी चेतना के रूप में प्रस्तुत किया है । वह इसे नपुंसक सहिष्णुता का परिणाम मानते हैं । बच्चन जी को इस रचना पर लिखे गये एक व्यक्तिगत पत्र में इसी तथ्य का समर्थन करते हुए लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो० डी०पी० मुखर्जी ने लिखा-- "बंगाल के इस काल का अनुभव अपनी हड्डियों में किया, रक्त और नसों में किया और अपनी समस्त शक्ति लगाकर अपना मुंह बन्द रखा ।" यह रचना एक हजार पंक्तियों में है और करीब 36 घंटे के अनवरत परिश्रम से लिखी गई है । महादेवी जी ने बंगाल के अकाल पर लिखी हिन्दी कविताओं का एक संकलन प्रकाशित किया और उसमें इस रचना के कुछ अंश छपे । इस रचना के तीन अनुवाद हुए हैं एक भूप्रेन्द्र दास द्वारा 1948 में "कालेर कबेल बांगला" नाम से बंगला अनुवाद, दूसरा अविनाश जोशी द्वारा 1973 में "बंगाल चा काल " मराठी अनुवाद और तीसरा शं.ष. जोशी द्वारा द्वारा "बंगाल चा दुष्काल" नाम से मराठी अनुवाद , जैसे अंग्रेजी कवि बाइरन परतन्त्र यूनान के दुख से दुखी थे और उन्होंने "यूनान सम्बन्धी काल" लिखा था वैसे ही बच्चन के लिये बंगाल था । उन्होंने सुजलां सुफलां मलय

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 399.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गंधिला बंग की पुण्य मेदिनी के पुराने सांस्कृतिक वैभव से लेकर वर्तमान स्थिति तक का चित्रण इस रचना में किया था। जैसे दिनकर ने हिमालय के प्रति कविता में मिथिला से और अयोध्या से उनके खोये हुए सांस्कृतिक वैभव से पूछा था –

"तू पूछ अवध से राम कहां,
वृंदा बोलो घनश्याम कहां,
ओ मगध कहां मेरे अशोक
वह चन्द्रगुप्त बलराम कहां।"
या
"ओरी उदास गंडकी बता
विद्यापति कवि के गान कहां"

ठीक इसी प्रकार बच्चन भी पूछते हैं –

"बोल बंग की वीर मेदिनी,
अब वह तेरी आग कहां है,
आजादी का राग कहां है,
लगन कहां है, लाग कहां है!"[1]

× × ×

बोल बंग की वीर मेदिनी
अब तेरा मान कहां है
अब वह तेरी शान कहां है
बोल अभय पुत्रों की जननी
जीने का अरमान कहां है।[2]

और फिर वह बंगाल के युवकों को उनकी खोई हुई शान का भान

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 423.
2. वही, पृ0 423.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कराते हुए कहते है –

"तू होती, माँ,
अगर निर्बल,
अगर न दुर्बल,
तो तेरे यह नव-नव-सुत
वंचित रह कर उसी अन्न से
उसी धान्य से,
जिस पर है अधिकार इन्हीं का,
क्योंकि इन्होंने अपने श्रम से
जोता, बोया,
इसे उगाया,
सींच स्वेद से
इसे बढ़ाया
काटा, माड़ा ओसाया,
भूख-भूख कर,
सूख-सूख कर,
पंजर-पंजर,
गिर धरती पर
यों न तोड़ देते अपना दम
और नृशंस मृत्यु न मरते ।[1]

आत्मावलम्ब, आत्म सम्मान और आत्म बलिदान जगाने के लिये वह उस दैन्य का विरोध करते हैं जो सहायता और राहत राशि के नाम पर उन्हें कमजोर बना रही है और इसीलिये वह चुनौती भरे स्वर में कहते हैं –

"सुनकर तुम दुर्भिक्ष निपीड़ित
हुआ द्रवित है सारा भारत,
जगह-जगह पर कष्ट हुए हैं,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 424.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जगह-जगह धंदा होता है,
कर मुशायरा, कवि-सम्मेलन,
नाटक, मेघ, नुमाइश, नर्तन,
लोग इकट्ठा धन करते हैं,
और तुम्हें पहुंचाते रहते ।
पर विश्वास अटल है मेरा,
कुछ न बनेगा इन धन्दों से,
कितने दिन इनको झाओगे ?
और चिओगे इन पर कब तक ?[1]

× × × ×

तुम्हें जानना है मनुष्य तुम ।
और मानवी अधिकारों पर
जब कि खड़े होंगे तुम डटकर
कोई शक्ति नहीं रोती जो
तुम्हें हटा दे तिलभर पीछे,
तुम्हें आत्म-विश्वास चाहिये ।"[1]

यह रचना मुक्त छन्द में है और अनुवाद करने में इस बात से सरलता भी हुई ।

खादी के फूल और सूत की माला --

भारतीय जनता को गांधी जी ने पूर्णतया प्रभावित किया है । राजनीतिक, आध्यात्मिक और सर्वोदयी पहलुओं पर गांधी के व्यक्तित्व की पूर्ण छाप रही है । गांधी के बलिदान पर एक राष्ट्रीय अभाव का बोध

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 442.
2. वही, पृ० 443.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवि को हुआ और उन्होंने उनकी हत्या के लगभग एक सप्ताह बाद से लेकर लगभग तीन माह के बीच 204 कविताएँ लिखीं। इनमें 93 गीत खादी के फूल के नाम से और 111 गीत तुलसी की माला के नाम से प्रकाशित हुए। विषय की दृष्टि से इन्हें श्रद्धांजलि गीत कहा जाना चाहिये। शोकगीत के रूप में तुलसी की माला का पहला गीत लिया जा सकता है –

"उठ गये आज बापू हमारे
झुक गया आज झंडा हमारा।

इसमें जीवन और मृत्यु पर एक ओर भारतीय दर्शन से अनुमोदित धारणाओं को व्यक्त किया गया है तो दूसरी ओर कुलघ्न भारतीय के काले कारनामे को उजागर किया गया है। प्रायश्चित और पश्चाताप के स्वर में बच्चन जी कहते हैं –

"राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे,

किये जायें पिस्तौली गोली से उनके सीने पर वृण –

सदियों की आहत जनता की सेवा जो अविराम करे।
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे!
लिये जाएँ उनकी छाती से जीवन-ओछु के तर्पण–
देश जाति पर तन-मन-अर्पण अपना जो निष्काम करे!
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे!
जाति कुलघ्न तुम्हारा कैसे आज करे अभिनंदन–
खून सने हाथों से कैसे तुमको देश प्रणाम करे।"[1]

खादी के फूल में बच्चन जी ने नज्में भी लिखीं हैं नज्म में उन्होंने

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 507.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"चकबस्त" से लेकर फिराक, हसरते मुहानी, जिगर मुरादाबादी और जाफिर को याद किया है तथा हिन्दी में मैथिलीशरण गुप्त, निराला, महादेवी, दिनकर, सुमित्रानन्दन पन्त, शिवमंगल सिंह सुमन और राष्ट्रीय कवि सरोजिनी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और इकबाल को याद करते हुए गांधी जी की हत्या के बाद बने हुए मातमी वातावरण में आस्था का दीप जलाने के लिये कवि आह्वान करता है । उन्हें विश्वास है कि गांधी मर कर भी जीवित रहेगा —

"यह गांधी मर कर पड़ा नहीं है धरती पर,
यह उसकी काया-काया होती है नश्वर,
गांधी संज्ञा वह जो है जग में अजर अमर,
दी केवल उसने जीवन की चादर उतार
. . . . . .
बापू का मरना सौ जीने से जोरदार ।"[1]

मिलन यामिनी—

मिलन यामिनी की रचनायें सन् 1945 के आसपास पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रही थीं किन्तु मिलन यामिनी पुस्तिका के रूप में 1950 में प्रकाशित हुई । कुल संकलित रचनायें 99 हैं जो 33, 33 के क्रम से पूर्व उत्तर- और मध्य तीन भागों में सजाई गई हैं । मिलन यामिनी जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है प्रणयानुभूति के विविध पक्षों की अभिव्यंजना है ।

वीणा के प्रथम तारों को कसने से एक झंकार उत्पन्न होती है तो देह की वीणा को पुलक की अंगुलियों में कसने से अजित और अमित की किलकार उत्पन्न हुई । वीणा की झंकार के प्रतीक से कवि दाम्पत्य सुख और उसकी स्थूल

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 461.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परिणति की चर्चा इन गीतों में करना चाहता है । उन्होंने "समर्पण" की पंक्तियों में स्पष्ट करते हुए लिखा है –

"जिसके तन की विमल कल्पना
अजित अमित की बन किलकार
पुलक उठी मेरे आंगन में ।"

प्रणय के मामले में बच्चन कुंठित नहीं है । कुंठायें जैसा कि स्वयं फ्राइड ने कहा है दमित यौन भावनाओं से जन्म लेती है । बच्चन की मान्यता है कि यौनाकर्षण को अवरुद्ध नहीं किया जाना चाहिये । पर लैंगिकाकर्षण को सीमित करना जरूरी है । इनके तनाव में यदि कविता बच्चन की अभिव्यक्ति का माध्यम न बन पाती तो वह निश्चय ही टूट जाते या भटक जाते। उन्होंने मातृ करुणा के स्रोत से अपनी प्यास बुझाई । विवाह काम क्षुधा का उदात्तिक रूप है । उन्होंने दाम्पत्य जीवन के प्रारम्भ में जो कुछ अनुभव किया उसी का वर्णन मिलन यामिनी में है । अपनी आत्मकथा में उन्होंने लिखा है – सुहागरात का वर्णन ? "मिलन यामिनी" मैंने किन लिये लिखी है, कविता जो काम कर चुकी है गद्य इसे जब करना चाहता है, तब उसके हाथ पांव फूल जाते हैं । आप यहां यह पुस्तक बन्द कर "मिलन यामिनी" खोल कर बैठ जायें । "मिलन यामिनी" की तेजी मातृ-मना होते हुए भी मातृ-तना बन गई है । यह जीवन के देहरी द्वार पर ऐसा मणिदीप था जिसका उजाला भीतर और बाहर दोनों ओर फैलता है । दूज का चन्द्रमा जैसे पूर्णिमा बन रहा था । सोलह दिनों का नहीं सोलह वर्षों का बसन्तोल्लास जो था इसीलिये बच्चन जी ने कहा –

"पीले पत्तों के नीचे अंकुर की लाली
नूतन जीवन का चिन्ह लिये डाली डाली
तरुवर तरुवर पर लक्षित यौवन का उभार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बहती है मधुवन में अब पतझर की बयार ।"

(गीत मंथ भाग 4)

"मिलन यामिनी" की प्रेरणा के पीछे धर्मशाला कांगड़ा का मनोरम प्राकृतिक वैभव भी है । इस मनोरम स्थान में जहां एक ओर हिमाच्छादित धवली धार पर्वत माला खड़ी है और दूसरी ओर अनेक पहाड़ी नालों और झरनों से निनादित और अभिसिंचित कांगड़ी की उर्वरा घाटी फैली है जिसकी दक्षिणी सीमा पर व्यास नदी दूर दूध की रेखा के समान दिखाई देती है । मैं अपनी वाणी पर नियंत्रण न रख सका । यहीं "मिलन यामिनी" पूर्ण हुई । और यहीं मैंने उसके गीतों का क्रम आदि स्थापित किया एवं प्रेस कापी भी तैयार की ।"[1]

हम डा० नरेन्द्र देव के इस कथन से सहमत नहीं है कि "मिलन यामिनी के गीतों में हार्दिकता का ऐसा प्रत्यक्ष आस्फालन नहीं हुआ है जितना उनके भावोन्मेष के काव्य में घटित हुआ है ।"[2]

इसके विपरीत डा० जीवन प्रकाश जोशी के इस कथन से हम पूर्णत: सहमत हैं कि "दु:स्वप्नों की रात के गीत "निशा निमन्त्रण" के हैं और स्वप्नों की रात के गीत "मिलन यामिनी" के हैं । पर इन दोनों के बीच "सतरंगिनी" के गीत जीवन में प्रणय, साहस, संघर्ष, आशा और सृजन के नये स्वरों-दृश्यों से पूरित हैं । आगे "प्रणय पत्रिका" के गीतों को पढ़ते हुए ऐसा लगता है कि बच्चन का गीतकार अनुभूति की तीव्रता के साथ शिल्प के सन्तुलन पर भी ध्यान देता है । पर संयोग शृंगार की जो सरस पदावली और शृंगारी भावना को उद्दीप्त करने वाले प्रकृति के वातावरण की रंगीन सृष्टि "मिलन यामिनी" के गीतों को पढ़ते हुए अनुभव होती है, वह तो

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, आमुख.
2. प्रगीतकार बच्चन और अंचल ,पृ० 58.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अन्यत्र दुर्लभ है । इसके साथ ही मिलन यामिनी के कई गीतों और गीतांशों में ऐसी अभिव्यंजना भी है, जिसके स्पर्श से मनुष्य को जीने के नवीन स्थल उद्‌भासित होते हैं । यहाँ वह अपनी उपलब्धियों के नये क्षितिजों को देखता है । वह आस्था, संकल्प एवम् विश्वास के साथ जीवन को स्वीकारता है –

"व्यर्थ कोई भाग जीवन का नहीं है
व्यर्थ कोई राग जीवन का नहीं है ।
× × × । गीत 12 ।

"मैं जलन का भाग अपने भोग आया
तब मिलन का यह संयोग आया
दे चुका हूं इन क्षणों का मूल्य पहले
× × × × – । गीत 16 ।

जो असम्भव है उसी पर आँख मेरी
चाहती होना अमर मृदु राख मेरी,
–। गीत 2 ।

संवेदना एवम् सहानुभूति की वाणी जहां भी और जितनी भी व्यक्त हुई है वह अत्यन्त सहज और व्यापक है –

"अश्रु दुख के जबकि अपना हाथ भीगे,
अश्रु सुख के जबकि कोई साथ भीगे,
––। गीत 27।"[1]

"प्रेम कविता की अनिवार्यता है । जीवन में अधिक व्यापक होने के कारण प्रेम की अभिव्यक्ति विविध रूपों में होती है । दाम्पत्य प्रेम, वात्सल्य प्रेम, प्रकृति प्रेम, मानव प्रेम, देश प्रेम, श्रद्धा, भक्ति सख्य सभी प्रेम के अन्तर्गत है, परन्तु प्रेम का स्थायी, आदर्श एवम् सर्वोत्तम रूप दाम्पत्य

---

1. डा० जीवन प्रकाश जोशी, बच्चन व्यक्तित्व और कवित्व, पृ० 62.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रेम है ।"[1]

डा० जगदीश गुप्त ने भी इस संदर्भ में कहा है-- "स्वच्छन्द काव्य में प्रेम को आत्मा का शाश्वत धर्म मानते हुए उसे विश्व के लिये ईश्वरीय वरदान की संज्ञा से अभिहित किया गया है । प्रेम स्वच्छन्द कवियों के निकट ऐसा पारस है जिसके संस्पर्श मात्र से मन क्षुद्र संवेगों से मुक्त हो, जड़ता से विरहित हो स्व के बन्धनों को अतिक्रमण करता हुआ ऊर्ध्वमुखी हो उठता है ।"[2]

बच्चन प्रेम की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं –

"यदि प्रणय जागा न होता इस निशा में
सुप्त होती विश्व की सम्पूर्ण सत्ता
यह मरण की नींद होती जड़ भयंकर
और उसका टूटना होता असम्भव
प्यार से संसार सो कर जागता है
इसलिये है प्यार की जग में महत्ता ।

-- (गीत 19)

एक लम्बी निराशा और उदासी के बाद कवि के जीवन में यह चाँदनी रात आई है । कवि को इस मंजिल तक पहुँचने के लिये अनेक आशा और निराशा के क्षण जीने पड़े हैं । इसका साक्ष्य कवि की पंक्तियों में–

ओ अँधेरे पाख क्या मुझको डराता
अब प्रणय की ज्योति के मैं गीत गाता --(गीत 17)

जीवन में बहुत कुछ ऐसा भी कवि के साथ घटता रहा है जो उसके हाथ में आकर भी स्थायी नहीं रह सका । यों तो उसके जीवन में आइरिस का

---

1. डा० रामेश्वर लाल खण्डेलवाल : आधुनिक कविता में प्रेम और सौन्दर्य, पृ० 124.
2. हिन्दी की स्वच्छन्दतावादी काव्यधारा का विवेचन, पृ० 91.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आगमन भी हुआ था पर "एकान्त संगीत" के जिन गीतों में आह्वरित को सम्बोधित किया गया है वह कवि के आत्मबोध के गीत हैं । पर वह आत्म-बोध एक खालीपन का आधार ही सिद्ध हुआ । बच्चन ने अपनी आत्मकथा में कहा है कि "वह किसी संयोग, किसी घटना, किसी विधान से मेरे समीप आ गई थी । जब वह मेरे समीप रहती थी वह मुझे तन मन से संलग्न रखती थी । जब से वह दूर हो गई थी एक खालीपन, एक शून्यता मुझे खाती रहती थी —

"शून्यता एकान्त मन की,
शून्यता जैसे गगन की,
खाए जाती है न इसका मृत्तिका असहाय ।
मिट्टी हीन कितनी हाय ?"[1]

इसीलिये निशंक होकर बच्चन तेजी को सम्बोधित करते हुए मिलन यामिनी में कहते हैं —

"मैं जगत के ताप से डरता नहीं अब,
मैं समय के शाप से डरता नहीं अब,
आज कुंतल छाँह मुझ पर तुम किये हो,
प्राण, कह दो, आज तुम मेरे लिये हो ।
× × × × —गीत 23 ।
ठीक है मैंने कभी देखा अंधेरा,
किन्तु अब तो हो गया फिर से सवेरा —गीत 24।

मिलन यामिनी में जीवन के प्रति गहरी आस्था है । वह प्यार के सहारे जो आत्मविश्वास जगाती है, उससे मृत्यु पर भी विजय पाई जा सकती है —

---

1. बच्चन रचनावली भाग 7, पृ० 380.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"जी उठा मैं और जीना प्रिय बड़ा है
सामने पर ढेर मुर्दों का पड़ा है
पा गया जीवन सजीवन खोजता हूं" - (गीत 28)

अथवा

"मैं रखता हूं हर पांव दृढ़ विश्वास लिये
ऊबड़ खाबड़ तम की ठोकर खाते-खाते
इनसे कोई रक्ताभ किरण फूटेगी - गीत 2।

अथवा

"मैं तमोमय ज्योति की पर, प्यास मुझको
है प्रणय की शक्ति पर विश्वास मुझको, --(गीत 6)

मिलन यामिनी के मध्य भाग में यह जीवन का स्वर और भी मुखर हो चुका है। और इसीलिये जटिल से जटिल परिस्थितियों में भी कवि ने अपना विश्वास नहीं छोड़ा। जीने की इच्छा जीवन का उच्चतर मूल्य है और यह "मिलन यामिनी" के मध्य और उत्तर भाग में स्थान-स्थान पर देखा जा सकता है --

"फूलों से या हो आंसू से
मैंने अपनी माला पोही
किन्तु उसे अर्पित करने को
बाट सदा जीवन की जोही
गई मुझे ले मृत्यु भुलावा
दे अपनी दुर्गम घाटी में
किन्तु वहां पर भूल भटक कर
खोजा मैंने जीवन को ही " -- (गीत 3 म.भा.)

कवि का विश्वास है कि यदि धरती पर प्रेम न होता तो सृजन और निर्माण नहीं हो सकते थे --

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"सजीव है गगन किरण-पुलक भरा,
सजीव गंध ले बली बसुन्धरा,
पवन अभय लिये प्राण कहानियाँ,
डरा-मरा न स्नेह ने जिसे छुआ। -- (गीत उ.भा. 33)

और सब कुछ खोकर जूझने के लिये निरन्तर खड़ा रहता है वह मनुष्य कवि की दृष्टि में महान है। इसीलिये कवि घोषणा करता है --

"हजार हार से न डर सका कभी,
मनुष्य की मनुष्यता विचित्र है! -- (गीत उ.भा. 30)

कवि आशावादी है। वह जानता है कि बुरे समय में भी मनुष्य सुख का अनुभव कर सकता है। आत्मविश्वास और प्यार के लिये कोई अवस्था नहीं, जीवन का संकल्प चाहिये। अतः यह कहना कि मिलन यामिनी के गीतों में केवल मानवता है या है कल्पनाओं की रंगीनी, उचित नहीं। इन गीतों में जीवन की एक गति है, जहाँ सृजन का उदात्त पक्ष उद्घाटित होता है। इसीलिये कवि कहता है --

"हर दंत समय का जो लगता
मानो विष दंत नहीं होता
दुख मानव के मन के ऊपर
सब दिन बलवन्त नहीं होता
आहें उठतीं, आंसू झरते
सपने पीले पड़ते लेकिन
जीवन में पतझर आने से
जीवन का अन्त नहीं होता --(गीत 10 म.भा.)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रणय पत्रिका --

1950 से लेकर 52 तक बच्चन के ये गीत, पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए, यह प्रणय पत्रिका नाम से 1955 में सेंट्रल हिंदी प्रयाग से प्रकाशित हुए । अपने इंग्लैंड के प्रवासकाल में लगभग 111 कविताएँ कवि ने लिखीं । जिनमें 10,12 मुक्त छन्द की रचनायें थीं शेष गीत थे । कवि ने प्रस्तुत संग्रह में 59 गीत संकलित किये और लगभग 100 गीत "आरती और अंगारे " में रखे जो इसी अंचला के अन्तर्गत 1958 में प्रकाशित हुए । प्रणय-पत्रिका की भूमिका में कवि कुछ बोझिल हो गया है । यहां उन्होंने आत्मानुभूति , कल्पना और जीवन सक्रियता की चर्चा की है । इन गीतों की प्रेरणा इंगलैंड प्रवास के कारण तेजी और बच्चन की दैहिक दूरी है । और इसीलिये इंग्लैंड की केम नदी पर अकेले हंस को तैरते देखकर जहां अपने प्रवास की अनुभूति को स्मृति और कल्पनाओं की वीथियों में छोड़ देता है, वहां वह अपने जैसे एकाकी हंस से पूछता है --

"कौन सरसी को अकेली और सहमी
छोड़ तुम आये यहाँ हो, कुछ बताओ ।

इस तरफ से रोज आना रोज जाना
आज सालों से लगा मेरा बराबर,
याद पड़ता है नहीं लेकिन देखा
है कभी पहले तुम्हें मैंने यहां पर,
यह अचम्भे की नज़र हर कंज दल पर
तुण्ड लहर पर और पेड़ों की उदासी
जो छिपाने से नहीं छिपती, बताती
है, यहां के वासते तुम हो प्रवासी,"[1]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 118.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवि ने अपने प्रेम की स्मृति को इन रचनाओं की मूल प्रेरणा स्वयं स्वीकार किया है । कवि स्वयं कहता है - "मैं तो इसे सौभाग्य ही मानता हूं कि सृजन के नये उन्मेष में अनुभूति और कल्पना का एक नया क्षेत्र सहसा मेरे सामने खुल गया । एक दिन दोपहर को भारत में हूं, दूसरे दिन प्रातःकाल इंग्लैंड में हूं । विदा का दृश्य अब तक याद है --

"पुष्प गुच्छ माला ही सबने, तुमने अपने अश्रु छिपाये ।
पहली ही मंजिल पर सारे फूल और कलियां कुम्हलाईं,
मुरझाये कुसुमों पर किसने आज तलक ममता दिखलाई,
कलक बहुत हो उनकी, फिर भी अलग उन्हें करना पड़ता है
सुधि के अंग बने ये जल कण जो कि तुम्हारे दृग में छाये ।

ऊपर से नीचे देखने की उत्सुकता ने चौबीस घंटे हवाई जहाज में पलक ही न झपकने दी । नीचे का जो चित्र स्मृति ने सजाया था उस पर होता हुआ मन न जाने कितनी बार घर लौटने को आकुल हुआ--

"हर रात तुम्हारे पास चला आता हूं ।
समतल भू-तल, बत्ती की पांतों के पहरे
में सुप्त नगर
अम्बर को दर्पण दिखलाते सरवर, सागर,
मधुवन, बंजर
हिम-तरु-मण्डित, नंगी पर्वत-माला, मरु स्थल
जंगल, दलदल--
सबकी दुर्गमता के ऊपर मुस्काता हूं ।"[1]

"प्रणय पत्रिका" के गीतों में बच्चन को अपने पिछले गीतों की अपेक्षा भाषा, भाव, अभिव्यक्ति तथा कल्पना कौशल की दृष्टि से आगातीत

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 88.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सफलता मिली । सरलता की दृष्टि से बच्चन के गीतों में बड़ा आकर्षण और मिठास है । किन्तु कवि जीवन की जलन और मानवता के कल्याण-पथ पर होना नितान्त अनिवार्य है, नहीं तो यह जलन राख से अधिक कुछ न बन सकेगी--

"जलना अर्थ उन्हीं का रखता जो अंधेरे में खोयों को,
हाथों के ऊपर अवलम्बित आकुल, शंकित, दृग कोयों को
आशा का आश्वासन देकर जीवन का संदेशा सुनाते,
जो न किरण की रेख बनोगे, धूलि-धूसर की धार बनोगे ।
हे मन के अंगार, अगर तुम लो न बनोगे, क्षार बनोगे।"[1]

बच्चन की "प्रणय पत्रिका", "विनय पत्रिका" की शैली में लिखी गई है । अन्तर इतना है कि "विनय पत्रिका" भक्ति और वैराग्य का ग्रन्थ है और प्रणय पत्रिका संयोग-वियोग का । बच्चन स्वयं इसे "विनय पत्रिका" की शैली की रचना मानते हैं । पर यह एक तरह का संदेश काव्य है जो "हंस मिथुन" से जुड़कर समृद्ध हो गया है "हंस मिथुन" से जुड़े हुए सात गीत "सप्त पदी" "हंस पदी" नाम से पुकारे जा सकते हैं ।

मुक्तिनन्दन पंत ने इस सम्बन्ध में ठीक ही लिखा है कि "प्रणय पत्रिका " में जहाँ अनेक सरस गीत हैं वहाँ "हंस मिथुन" से सम्बन्धित कवि के सात गीत अपने भाव, वैभव, रचना-नैष्ठव एवम् कल्पना सौन्दर्य के कारण तारा पुंज में सप्त ऋषियों की तरह विशेष रूप से ध्यानाकर्षण करते हैं । "हंस मिथुन" के इन गीतों में कवि अधिक दार्शनिक हो गया है । जीव की सीमा महत्वाकांक्षा, यथार्थ बोध, ब्रह्माण्ड की महत्ता, जीवनेच्छा, आत्मविश्वास सभी कुछ तो इन गीतों में निहित है । उन्होंने लिखा है --

"पंख टूटा है, मगर यह खैरियत है, पांव तो टूटा नहीं है,
जल-तरंगों से सघन सम्बन्ध मेरा तो अभी छूटा नहीं है,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 127.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रक्त बहता जाय, कहता जाय, जीवन की पिपासा की कहानी,
जान लो यह, मुक्ति अपनी मांगने आया नहीं हूं मैं मरण में ।
बाण-बिद्ध मराल-सा मैं आ गिरा हूं अब तुम्हारी ही शरण में।"[1]

हंसिनी कवि की प्रिया का प्रतीक बन कर आई है । उसके नीर भरे भीगे नेत्र की प्रतीक्षा और पंकजों के लोचनों में आंसुओं की बूंदें जैसे दो रस ध्वनि युक्त चित्र प्रस्तुत कर कवि नायक के प्रणय की स्मृति को साकार कर देता है । भारतीय जनमानस में रचापचा एक शकुन कथ्य की कल्पना को सहज बना देता है । भारतीय नारी की जीवन पिपासा और विश्वास इन पंक्तियों में मुखरित हुआ है —

"कह रही है पेड़ की हर शाख, अब तुम आ रहे अपने बसेरे ।
आज दक्खिन की हवा ने आ अचानक द्वार मेरे खड़खड़ाये,
हलचली है मच गई उन बादलों में जो कि थे आकाश छाये,
जोकि सुन सो प्रश्न मेरे चुप खड़ी थी आज बारम्बार झुक झुक,
कह रही है पेड़ की हर शाख अब तुम आ रहे अपने बसेरे ।
× × × × × × ×
याद आयी आज होगी वे तरंगे दूब पर जो आह भरतीं,
और बूंदे आंसुओं की पंकजों के लोचनों में जो सिहरतीं,
और अपनी हंसिनी के नीर-भीगे नेत्र की अपलक प्रतीक्षा,
दाहिनी मेरी फड़कती आंख, अब तुम आ रहे अपने बसेरे ।
कह रही है पेड़ की हर शाख, अब तुम आ रहे अपने बसेरे।"[2]

"प्रणय पत्रिका" में शृंगार के रस रंजित चित्र उकेरे गये हैं । उदाहरण के लिये एक गीत लीजिये —

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 122.
2. वही, पृ0 120, 21.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"आज खड़ी हो छत पर तुमने होगा चांद निहारा
फूट पड़ी होगी नयनों से सहसा जल की धारा
इसके साथ जुड़ी जीवन की कितनी मधुमय घड़ियां,
यह चांद नया है नाव नयी आशा की।"[1]

प्रणय पत्रिका का 39वां गीत रूप सौन्दर्य का उत्कृष्ट चित्र प्रस्तुत करता है। 37वां गीत मानवीय कृत प्रकृति के सहारे अपनी लय और तल्लीनता को व्यक्त करता है। प्रणय पत्रिका की पृष्ठभूमि भारतीय ही है --

"आरती बेला हुई है शंख घंटे
घंटियों के साथ बजते नगारे
देव बालक दो प्रसादी ले उतरते
सीढ़ियों से आ गये हैं जल किनारे।"[2]

धार के इधर-उधर --

सन् 1940 से लेकर 56 तक के बीच विशेष अवसरों पर लिखी गई रचनाओं का संकलन "धार के इधर-उधर" नाम से 1957 में राजपाल एण्ड संज से प्रकाशित हुआ इसमें राष्ट्रीय भावनाओं से सम्बन्धित रचनायें संकलित हैं। प्रतिभा की दृष्टि से इस संकलन में गत्यावरोध अधिक दिखाई पड़ता है। आलोचकों ने तो इसे प्रतिभा का विघटन ही माना है। डा० नरेन्द्र देव का यह लेख उल्लेखनीय है कि "धार के इधर-उधर" की कुछ कवितायें कवि के प्रतिभा विघटन को सूचित करतीं हैं जैसे -

"जहां घृणा करती है वास,
जहां शक्ति की अनुबुझ प्यास,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 107.
2. वही, पृ० 119.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"जहाँ न मानव पर विश्वास,
उसी हृदय में, उसी हृदय में, उसी हृदय में वहीं-वहीं
जग की व्याकुलता का केन्द्र ।

यह कैसी कविता है इस संदर्भ में ओडेन का कथन याद हो आता है कि जिसके पास अधिक अभिव्यक्ति करने के लिये कुछ भी निश्चित वस्तु नहीं होती वह अपनी आंतरिक क्षय-ग्रस्तता को छिपाने के लिये शब्दों का नद-प्रवाह बहा सकता है । असल में आन्तरिकता के आमूल परिवर्तन से बच्चन जी में स्वाभाविक रूप से रिक्तता आती है । कवि इसको छिपाने के लिये बाह्य घटनाओं और ऐतिहासिक संदर्भों की खोज करता है और इतिवृत्तात्मक कथ्य के माध्यम से अपनी रक्षा करना चाहता है । "मनुष्य की मूर्ति", "आजाद हिन्दुस्तान का आह्वान", "देश के नाकों से", "आजादी की दूसरी वर्ष गांठ" इसी तरह की रचनायें हैं । कवि स्वयं अपने विघटन से परिचित है । इसीलिये वह "ओ मेरे यौवन के साथी " में स्पष्टीकरण देता है –

"मैं वह जिसने होना चाहा था, रवि ठाकुर का प्रतिद्वन्दी,
और कहाँ मैं पहुंच सका हूं बतलायेगी यह तुकबंदी ।
ओ मेरे यौवन के साथी ।[1]

"युद्ध की ज्वाला" इस संग्रह की शाश्वत रचना है । द्वितीय महायुद्ध को लेकर विश्व में जो साहित्य लिखा गया उसमें टूटी हुई मानवता के अस्तित्व को ही खतरा हो गया । इसीलिये अस्तित्ववादी लेखकों के साहित्य में मानव जीवन की शून्यता और सारहीनता की ही अनुभूति का चित्रण अधिक हुआ है ।

---

1. द्रष्टव्य- प्रणीतकार बच्चन और अंचल, पृ० 59.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

युद्धोत्तर पराजित पीढ़ी का गान योरप में वर्षों तक गूंजता रहा। युद्धकालीन कविता में आरम्भ से ही जहाँ युद्ध के प्रति जनता के उत्साह का चित्रण हुआ है वहाँ भयानक और कारुणिक मृत्यु विषयक गीत भी लिखे गये हैं। थॉमस हर्डी की "दि सौंग आफ दि सोल्जर" रचना में सैनिकों की स्फूर्ति की काव्यात्मक व्यंजना की गई है तो हेमिल्टन सोर्ले की कविताओं में युद्ध के प्रति जिज्ञासा का भाव समाहित है तथा मानवीय संकट का भी बोध है। विदेश के अनेक संवेदनशील कवियों को युद्ध ने प्रभावित किया था। सिगफ्रेड सैसून की "डफोडिल्स मर्डरर" युद्ध की विभीषिका को लेकर लिखी गई एक ऐसी रचना है जिसमें युद्धरत सैनिकों के प्रति तीव्र सहानुभूति भरी पड़ी है। सैसों की एक कविता का अंश लीजिये –

"और फिर उसने सोचा
कल रात को हम कुछ करेंगे,
खंदकों में और मेरे जूते सड़ गये हैं।
पाँच मंजिल तक के दल दल में, सर्द हवाओं में
जहाँ गंदगी के सिवाय सब कुछ भुला दिया गया है।
आज रात तो वह मोर्चे में
और वह जल्दी ही मर जायेगा
और युद्ध तो चलता ही रहेगा,
वह नहीं जानता क्यों ?"[1]

बच्चन जी युद्ध के प्रति संवेदनशील हैं। "युद्ध की ज्वाला", "मानव रक्त", "देश पर आक्रमण", "देश विभाजन" इसी प्रकार की रचनायें हैं–

"युद्ध की ज्वाला जगी है।
था सकल संसार बैठा
बुद्धि में बारूद भर कर –

---

1. आधुनिक पाश्चात्य काव्य, पृ0 158.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष मद की,
प्रेम सुमनावलि निदर कर,
एक चिंगारी उठी, लो, आग दुनिया में लगी ।"[1]

"9 अगस्त 42", "क्रान्ति दीप", "घायल", "हिन्दुस्तान" तथा "स्वतन्त्रता दिवस" इनकी राष्ट्रीय रचनायें हैं क्योंकि अंग्रेजों के दमन से लेकर भारत की आजादी तक का विश्वास इन रचनाओं में छिपा हुआ है –

"नौ अगस्त !
नौ अगस्त !
नौ अगस्त,
देश चोट खा गिरा,
अति- आपदा घिरा,
और बन्द जेल में पड़े हुए कान-परस्त ।[2]

अंग्रेजों के राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता कवि इस गर्वोक्ति पर व्यंग करता है –

"पश्चिम से घन अंधकार ले उतर पड़ी है काली रात,
कहती, मेरा राज अखण्टक होता जब तक नहीं प्रभात [3]

स्वतन्त्रता दिवस पर गाँधी जी के प्रति श्रद्धांजलि भी है –

" आज से आजाद अपना देश फिर से ।
ध्यान बापू का प्रथम मैंने किया है,
क्योंकि मुर्दों में उन्होंने भर दिया है,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, 141.
2. वही, पृ0 147.
3. वही, पृ0 148.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नव जीवन का नया उन्मेष फिर से !
आज से आजाद अपना देश फिर से !"[1]

सुभाष और पटेल के प्रति तथा देश के नवयुवकों, नेताओं और कवियों के प्रति रचनायें भी इस संकलन में हैं । सरोजिनी नायडू की मृत्यु पर "हो गई मौन बुलबुले हिन्द" शोक गीत भी इसमें संकलित है ।

"शहीदों की याद में" रचना भी उल्लेखनीय है "हिन्द और रूस" तथा "भारत – नेपाल-मैत्री" विषयक रचनायें समाहित हैं । अमित, अजित और राजीव के जन्म दिवस पर पद्यबद्ध शुभकामनायें भी इसमें संकलित हैं । इस संग्रह के अन्तिम दो गीत, भारतीय सैनिकों का "सागर-प्रयाण" शाश्वत रचना है । जिसमें राष्ट्रीय रक्षा का भाव निहित है और जो सदा सर्वदा ताजे रहेंगे । कुछ उदाहरण लीजिये --

"भारत माता के बेटे हम चलते सीना तानके !
धर्म अलग हों, जाति अलग हों, वर्ण अलग हों, भाषाएं,
पर्वत, सागर-तट, वन, मरुस्थल, मैदानों से हम आएं,
फौजी वर्दी में हम लगते पहले हिन्दुस्तान के !
भारत माता के बेटे हम चलते सीना तान के !

× × × ×

औरों की धरती के ऊपर आँख नहीं हम रखते हैं,
पर अपनी पर औरों का अधिकार नहीं सह सकते हैं,
. . . . . .
लौटेंगे तो जय करके ही, निकले हैं प्रण ठान के !
भारत माता के बेटे हम चलते सीना तान के ।"[2]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 150.
2. वही, पृ० 174 और 75.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आरती और अंगारे --

सन् 1950 से 57 तक की रचनाओं का संकलन "आरती और अंगारे" नामक श्रृंखला से 1958 में राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। यह काव्य संकलन तेजी जी को समर्पित है। यह संकलन उस समय लिखा गया था जब साहित्य में दिन पर दिन परिवर्तन हो रहा था। उस स्थिति में कविता इसके प्रभाव से कैसे वंचित रह सकती थी। कवि के हृदय का उद्वेलन हास, रुदन सभी कुछ नये रूप में अभिव्यक्त हुआ। इस कृति का नाम "आरती और अंगारे" रखने में भी कवि का विशेष प्रयोजन रहा होगा। दोनों ही शब्द प्रतीकार्थ हैं। "आरती" का प्रयोजन मन की सात्विक भावनाओं से है और "अंगारे" का अर्थ इसके विपरीत। या यूं कहें कि प्राचीन परम्पराओं का नवीनीकरण। बच्चन जी के ही शब्दों में देखिये -- "जहाँ मेरे कल का व्यक्तित्व आज के व्यक्तित्व में समा गया है और उनकी अलग कोई सत्ता नहीं रह गई वहाँ मेरी कल की कविता भी मौजूद है और आज की भी मौजूद है। जैसे मेरे कल के व्यक्तित्व में आज का व्यक्तित्व बीज रूप में विद्यमान था वैसे मेरे आज के व्यक्तित्व में कल का व्यक्तित्व भी समाया है -- वैसे ही "मधुशाला" में भी "आरती का कुछ प्रकाश और"अंगारे" की कुछ चिंगारियाँ मौजूद हैं। "आरती और अंगारे" में "मधुशाला" का रंग राग किसी न किसी रूप में समाया है और इसी प्रकार मेरी आगे की रचना में भी "आरती" का कुछ धूप, "अंगारे" का कुछ ताप रहेगा, मेरी इस प्रथम रचना की क्षमतायें-- इसमें शक्तियाँ और कमजोरियाँ दोनों सम्मिलित हैं।"[1]

इस काव्य संकलन में 100 गीत हैं। उनके अलग-अलग रंग हैं। तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 181.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतीय संस्कृति का भी उल्लेख किया गया है । इस काव्य संकलन के सम्बन्ध में श्री कन्हैयालाल मिश्र "प्रभाकर" के यह शब्द उल्लेखनीय हैं -- "आरती और अंगारे" लिखकर बच्चन जी ने इस युग की कविता का बड़ा पुन्य कमाया है । धरती से लेकर आकाश तक देखता है यह आदमी।"[1]

"आरती और अंगारे" की प्रथम भाग की कविताओं में उन कवियों की स्तुति है जिन्होंने जन जीवन की भावनाओं को प्रस्तुत किया है --

"ग़ालिब यह गलबा ला दो मेरे जीवन में
जिससे मेरा अंदाजे बयां कुछ और बने!
क्यों शोर तुम्हारे मुझको ऐसे लगते हैं
जैसे बोले हों जीवन की सच्चाई में
जैसे बोले हों वे प्राणों की भाषा में
जो नहीं पड़ा करती है हाथापाई में .....
उन सब कविताओं को मैं मरी समझता हूं
एरियल कान का जिनको नहीं पकड़ता है
रेडियो जयां का जिन्हें नहीं खिलाता है
उनका हर अक्षर क्रीम-कीटों का कोर बने

--।गीत 22 ।

"आरती और अंगारे" में कवियों के प्रति श्रद्धान्जलियां हैं । वेदों के कवियों और महाभारत के कवियों के प्रति जहां रचनायें लिखी गई हैं, वहां कालिदास, जयदेव, पंडितराज जगन्नाथ, चन्द्रवरदायी, विद्यापति, जायसी, सूर, तुलसी, केशव, रहीम, भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त, मीर, गालिब, इकबाल, अंग्रेजी कवि ईटूस के साथ साथ सांची, अजन्ता, खजराहो, भुवनेश्वर, कांगड़ा की मूर्ति कला और चित्रकला पर भी इस संकलन के प्रथम भाग में रचनायें हैं । यह काव्य और संस्कृति

---

1. द्रष्टव्य - डा० जीवन प्रकाश जोशी : बच्चन व्यक्तित्व और कवित्व, पृ० 84.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की दृष्टि से ऐतिहासिक कही जा सकती है ।

"आरती और अंगारे" की कुछ कविताओं में कवि ने अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किये हैं ।

"मैं हूं उनका पौत्र", "बाबा के संग दादी की भी", " ललितपुर को नमस्कार है जहां पिता जन्मे थे मेरे", "हर खुशी में हर मुसीबत में मुझे, हे पूज्य, तुम हो याद आते", "जीभ को तुमने सिखाया बोलना", "राह कल्पना की तुमने ही सबसे पहले थी दिखलायी", "मैं तुम्हें पत्नी समझ पाया कहां था" "खेल की तुम थीं सहेली" आदि रचनाओं में कवि के पारिवारिक जीवन की झलक है । यह पंक्तियां इसकी साक्षी हैं –

"था सबल समझा कभी तुमने मुझे या भावनाओं में बहे थे,
याद हैं वे शब्द मुझको जोकि तुमने मृत्यु-शैया पर कहे थे-
मैं बड़ा सौभाग्यशाली उस पिता को और उस मां को समझता
हूं कि जिसके पुत्र के मजबूत- पायेदार कांधे लाश उसकी हैं उठाते।"[1]

अथवा

"आंख जो ऊपर उठायी तो सितारे हो रहे थे कर इशारे,
और तब से आज तक चलता रहा हूं एक उनके ही सहारे ।
उस तिमिर की श्यामता में क्यों छिपा था तेज,
मुझको यह पहेली ।
मैं तुम्हें पत्नी समझ पाया कहां था,
खेल की तुम थीं सहेली ।"[2]

"आरती और अंगारे" की कवितायें इसी विघटन के फलस्वरूप लिखीं । ऐसा लगता है कि कवि की हृदयानुभूति की सरिता सूख गई

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 215.
2. वही, पृ0 219.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और उसका प्रतीकात्मक शिल्प भी कुंठित हो गया है। अनुभूति की हीनता के कारण कवि की उक्तियाँ पद्यात्मक तुकबन्दी बनकर रह गई हैं। और शिल्प विघटन के फलस्वरूप एक भ्रष्ट गद्यात्मकता का परिचय भी इनमें मिलने लग गया है।"[1]

प्रस्तुत संकलन में बच्चन जी की परम्परागत भावना के अनुरूप श्रृंगारी रचनायें भी हैं। कुछ कविताओं का सम्बन्ध उनके विगत जीवन की रागात्मक घटनाओं से जुड़े हुए पात्रों से तो कुछ कविताओं का सम्बन्ध तेजी से है –

"न तुम सो रही हो, न मैं सो रहा हूँ,
मगर यामिनी बीच में ढल रही है।"[2]

अथवा

"कल तक मैं इस प्रतीक्षा में खड़ा था तुम हृदय का द्वार खोलो,
और जिह्वा, कण्ठ, तालु के नहीं, तुम प्राण के दो बोल बोलो,"[3]

कुछ रचनायें अन्योक्ति शैली में भी हैं –

यह कमल का वास है, दादुर,
इसे पहचान तू सकता नहीं है।[4]

उपर्युक्त रचना समीक्षकों के लिये लिखी गई है। मेरी दृष्टि में 100वीं रचना को लिखने का कवि का उद्देश्य भी यही हो सकता है। कवि की मनः स्थिति इन पंक्तियों में दृष्टव्य है –

---

1. डा० नरेन्द्र देव वर्मा, प्रगीतकार बच्चन और अंचल, पृ० 60.
2. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 237.
3. वही, पृ० 240.
4. वही, पृ० 247.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"मैं अभी जिन्दा, अभी यह शव परीक्षा में तुम्हें करने न दूंगा।"[1]

इतना ही नहीं इस संकलन के उत्तरार्ध की कविताओं में कवि ने समाज के दम्भी चरित्रों के प्रति करारा व्यंग किया है। कवि जन जीवन के प्रति संवेदनशील है और उसकी रचनाओं में मानवतावादी स्वर मुखरित हुआ है। दृढ़ता और आत्मविश्वास का अभाव कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होता। बच्चन जी ने कहा भी है – " मेरी अन्तिम रचना ही बतायेगी कि मेरी पहली रचना की क्या दिशा थी "। तब देखा जाये तो आरती और अंगारे में मानव का आस्थावादी स्वर ही प्रबल है। मानव की पूजा ही उसकी आरती है –

गीत वही बाँटेगा सबको, जो दुनिया की पीर सके ले।
दे मन का उपहार सभी को, ले चल मन का भार अकेले।"[2]

कवि ने जीवन के अनेक पहलुओं को देखा है, अनुभव भी किया है और भोगा भी है। इसीलिये कवि जीवन के यथार्थ कटु सत्य को प्रस्तुत पंक्तियों में उद्घाटित करते हैं –

"मन में सावनभादों बरसे जीभ करे, पर, पानी पानी
चलती-फिरती है दुनिया में बहुधा ऐसी बेईमानी"[3]

× × × ×

घर की छत के ऊपर चढ़कर जो चिल्लाते, शोर मचाते,
अपना पोलापन दिखलाते अपना बौनापन बतलाते
. . . . . .
हल्के उठ जाते हैं ऊपर, भारी भार लिये हैं नीचे,
जो आगे-आगे इतराते, देख उधर ले, वे हैं पीछे,"[4]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 259.
2. वही, पृ0 255.
3. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 246.
4. वही, पृ0 224.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संघर्ष के बिना भी जीना क्या जीना है –

साफ, उजाले वाले, रक्षित
पंथ मरों के कंदर के हैं ।[1]

मानव के प्रति स्नेह और संवेदना भी "आरती और अंगारे" में व्यक्त हुई है –

"बढ़ता है अधिकार सदा आतंक जमाकर
स्नेह प्रतीक्षा में अपलक पथ जोहा करता"[2]

आज के युग की समस्यायें इतनी जटिल हैं कि अपने जीवन का बोझ उठाना ही कठिन है । दिन पर दिन जीवन-मूल्य बदल रहे हैं । और हर व्यक्ति को अपनी समस्याओं से स्वयं ही जूझना पड़ता है । तभी उन समस्याओं का निवारण होता है । कहा भी गया है कि भगवान भी उनकी सहायता करते हैं जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं । जब सभी अपनी-अपनी समस्या में उलझे हैं तो कौन किसकी मदद करेगा । कवि की यह पंक्तियां जीवन की वास्तविकता व्यक्त करने में समर्थ हैं –

"जिसके सिर का बोझ कम है
जो औरों का बोझ उठाये
होठों के सतही शब्दों से
दो तिनके भी कब हट पाये .....
कटती है हर एक सुराही
एक तरह बस ढले-ढले ।[3]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 231.
2. वही, भाग 2, पृ0 234.
3. वही, पृ0 254.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बुद्ध और नाचघर --

सन् 1944 से लेकर 57 तक के बीच लिखित रचनाओं का संकलन। इस नामकरण का आधार इस संकलन की "बुद्ध और नाचघर" नामक एक लम्बी कविता है। अपने ऐतिक परिवेश के प्रति संदेह और अविश्वास लेकर बुद्ध के निर्गमन को रचना की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया है, जीवन की सचाई को जानने के लिये बुद्ध की तरह एक वेदना मनुष्य के मन में हो तभी तो वह बुद्ध के प्रति आस्थाशील कहा जा सकता है वह बुद्ध जिसने मानवता का संदेश दिया जिसके संदेश से भारत, ब्रह्मा, लंका, श्याम, तिब्बत, मंगोलिया, जापान, चीन, अनुरंजित हो उठे। बच्चन के शब्दों में --

"उठ खड़े मठ, पैगोडा, विहार,
जिनमें भिक्षुणी भिक्षुओं की कतार
मुंडा कर सिर, पीला चीवर धार
करने लगीं प्रवेश
करतीं इस मंत्र का उच्चारण:
"बुद्धं सरणं गच्छामि,
धम्मं सरणं गच्छामि,
संघं सरणं गच्छामि।"[1]

पर आज बुद्धवादी देशों में ही मद्य, मांस और डांस की जो हवा तेजी से बह रही है उसे देखते ही कि बुद्ध केवल किताबों में हैं, जीवन और आचार में नहीं। मूर्ति के रूप में उनकी पूजा होती है और वह भले ही चरित्रहीन हों पर अमीरों के ड्राइंग रूम में एक कोने में खड़े सुशोभित हो रहे हैं। कवि व्यंग करते हुए लिखते हैं --

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 350.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"पेकिंग से शिकागो तक
कोई नहीं बुद्धियों की दुकान
जहाँ भले ही और न हो कुछ
बुद्ध की मूर्ति न मिले जो मांगो"[1]

और तब कवि बुद्ध को सम्बोधित करते हुए कहता है –

"और आज
देखा है मैंने,
एक ओर है तुम्हारी प्रतिमा
दूसरी ओर डांसिंग हाल
है पशुओं पर दया के प्रचारक,
अहिंसा के अवतार,
परम विरक्त,
संयम साकार,
मची है तुम्हारे सामने रूप यौवन की ठेल-पेल,
इच्छा और वासना झुककर रही हैं खेल,
गाय, सूअर के गोश्त का उड़ रहा है कबाब
गिलास पर गिलास
पी जा रही है शराब --
पीया जा रहा है पाइप, सिगरेट, सिगार,
धूआंधार,
लोग हो रहे हैं नशे में लाल ।
युवकों ने युवतियों को खींचा–
लिया है बाहों में भींच,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 352.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छाती और सीने आ गये हैं पास
होठों और अधरों के बीच
शुरू हो गई है बात,
शुरू हो गया है नाच,
आर्केस्ट्रा के साज़—
ट्रम्पेट, क्लेरिनेट, कारनेट- पर साथ
बज उठा है जाज़,
निकलती है आवाज
बुद्धं शरणं गच्छामि
धर्मं शरणं गच्छामि
संघं शरणं गच्छामि"।[1]

बच्चन जी बुद्ध से प्रभावित रहे। 31.5.56 को नई दिल्ली आकाशवाणी से "आधुनिक हिन्दी में बुद्ध" वार्ता प्रसारित हुई थी। उनकी मान्यता रही है कि भारत भारती में सर्वप्रथम मैथिलीशरण के श्रद्धायुक्त भाव प्रकट हुए —

"हिंसा बढ़ी ऐसी कि मानव दानवों से बढ़ गये,
शूद्र से न भार सहा गया अधिकार ऊपर चढ़ गये,
सहसा हमारा यह पतन देवा न प्रभु से भी गया,
तब शाक्य मुनि के रूप में प्रकटी दयामय की दया।"

इसके बाद पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने एक स्वतन्त्र रचना बुद्ध पर लिखी जिसे "पंचपात्र" में संगृहित किया गया है। इस रचना की कुछ पंक्तियां देखिये—

"छूट गये तुम अब बन्धन से,
यह केवल उपहास,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 350.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मानव हृदय हुआ बंदीगृह
वहीं तुम्हारा दान

भारतीय संस्कृति और साहित्य का इतिहास बुद्ध के बिना पूर्ण कैसे हो सकता है । भारतीय बुद्धिजीवियों में गांधी ने बुद्ध को पुन: स्थापित कराया । प्रसाद ने भी "वरुणा की कछार" नाम से एक सुन्दर गीत लिखा है, क्योंकि वरुणा के किनारे बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश दिया था । अत: "वरुणा की कछार" को सम्बोधित करते हुए प्रसाद ने लिखा है –

"सुनाने आरण्यक संवाद तथागत आया तेरे द्वार,
दुख का करके सत्य निदान प्राणियों का करके उद्धार "

निराला जी ने कठिन तपस्या में पहुंचे लक्ष्य को तथागत कहकर जहां बुद्ध के प्रति श्रद्धा व्यक्त की वहीं मोहन लाल द्विवेदी ने "वासवदत्ता" लिखकर भगवान बुद्ध की करुणा का प्रतिपादन किया । सुमित्रानन्दन पंत की बुद्ध के प्रति लिखी गई एक रचना 'वाणी' में संकलित है । यह रचना 1957 में लिखी गई थी । इसमें बुद्ध के प्रति अंधभक्ति छोड़कर बुद्ध के दर्शन पर व्यंग करते हुए कहा गया था –

"हास विकास फूलों का होता
मानव मन भव गति का दर्पण
क्षमा एशिया के प्रकाश
फूलों ने शुभ किया तम वितरण ।"

"एशिया का प्रकाश" एडविन आर्नाल्ड की "लाइट ऑफ एशिया" से रहित है । यह पुस्तक जवाहर लाल और गांधी को बड़ी प्रिय थी । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ब्रजभाषा में इसी के आधार पर "बुद्ध चरित" काव्य लिखा था ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बच्चन जी की बुद्ध सम्बन्धी रचना सन् 1950 के आसपास लिखी गई जब वह केम्ब्रिज में थे। यह कविता बुद्ध पर व्यंग नहीं संसार पर ही व्यंग थी।

"बुद्ध और नाचघर" 28 गीतों का संग्रह है जो मुक्त छन्द में लिखी गई है। मुक्त छन्द का प्रयोग अमरीकी कवि विटमैन ने प्रभावशाली ढंग से किया है। "बुद्ध और नाचघर" की भूमिका में बच्चन जी ने मुक्त छन्द पर शास्त्रीय दृष्टि से विचार किया है। उन्होंने कहा है कि कभी-कभी इसे स्वच्छन्द तथा मुक्त काव्य भी कहा जाता है। किसी समय छिद्रान्वेषी समालोचकों ने इसे खर, केंचुआ और अंगारे की संज्ञा भी दी थी। मुक्त शब्द छन्द का प्रयोग मैंने केवल इस कारण किया है कि ऐसी कविताओं के लिये यह विश्लेषण प्रचलित हो गया है। मुक्त छन्द का अर्थ है स्वच्छन्द और बंधा हुआ। स्वच्छन्द और बंधा हुआ एक साथ ही कैसे सम्भव है। जनसाधारण के मस्तिष्क में इस शब्द को मान्यता देने का एक सूक्ष्म कारण हो। शायद मुक्त छन्द से लोगों को ऐसी कविता का बोध होता है जो अपनी अभिव्यक्ति में तो स्वच्छन्द हो पर अपने भाव विचारों में बंधे। मैं इन रचनाओं को विषमलय की रचनायें कहना अधिक पसन्द करूंगा।"[1]

बच्चन जी ने विषमलय में "बंगाल का काल" नाम की रचना की। विटमैन से अतुकान्त छन्द लिखने की कविता बंगला में और बंगला से निराला में आई। इन मुक्त छन्दों की विशेषता यह है कि इनमें बोलचाल की भाषा का प्रयोग होता है। बच्चन जी का कहना है - "तुकान्त हिन्दी कविता से तो छायावाद की कोषवासिनी संस्कृतमयी दुरूह अमूर्त पदावली हट गई है। पर हमारे मुक्तक छन्द पर वह अब भी छायी है। यह तो कवियों के सोचने की बात है कि भाषा में गद्य से दूर न जाकर भी वह कौन सा ऐसा गुण है जिसे लाने से छन्द मुक्त पंक्तियों का गद्य समझा जायेगा। इसके लिये कवित्व के कहीं अधिक विशुद्ध रूप की खोज करनी

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 266.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होगी ।[1]

नयी बोली नयी तकनीक द्वारा व्यक्त होने वाली नयी काव्य-चेतना इस संकलन में थी । इस लिये बच्चन ने स्वयं पाठकों और श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए लिखा, "मैं कहूंगा कि नयी बोली, नयी तकनीक द्वारा व्यक्त होने वाली नयी चेतना का वे स्वागत करें । कम से कम उसके प्रति वे जिज्ञासु हों । साहित्य में शैली का परिवर्तन जीवन के भौतिक और मानसिक क्षेत्रों में परिवर्तन की अचूक निशानी है ।"[2]

"बुद्ध और नाचघर" की दूसरी विशेषता विषय वैचित्र्य है । प्यार, वासना, मिलन और सपनों के कुहासे से निकल कर कवि जीवन के व्यापक क्षितिज की ओर उन्मुख हुआ है । इसी को कुछ आलोचकों ने यथार्थ की अभिव्यंजना माना है और इस धारणा की पुष्टि इन पंक्तियों से होती है –

"विधाता के मुख पर थूक
दुनिया को लगा दो लात
कर लूंगा आत्मघात ।"[3]

पूजा, सृष्टि और तप जहां ब्रह्माण्ड के प्रति आकर्षण पैदा करने वाली हैं वहां वरदान रचना भी है । झुलसे हुए परिवेश का स्वागत करने का आह्वान भी –

"आ रहा है, भूमि
तेरी ओर,
× × × ×
उठ पड़ा है बादलों का दल- महाबल

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 273.
2. वही, पृ0 274.
3. वही, पृ0 308.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गोद में हिलकोर- जिसकी
ले रहे हैं,
अगनित सर, सरित , निर्झर
और सीमा हीन सागर
× × × × ×
ओ, तप-दग्ध
ओ, तप-तप्त,
स्वागत के लिये मुंह खोल,"[1]

"हिन्दू और मुसलमान" रचना सामाजिक और धार्मिक मतभेद और वैमनस्य की पृष्ठभूमि है । "डैफोडिल" रचना में कैम नदी का उल्लेख है जिसके किनारे कैम्ब्रेज बसा है । एक कविता में नाचघर आदि का उल्लेख है । हिन्दुस्तान के विषय में जो धारणा है उसका निराकरण इस लम्बी रचना में किया गया है । और इसीलिये बच्चन कहते हैं कि --

"न मैं हूं मदारी,
न कोई जादूगर
मेरे पास नहीं है सांपों की पिटारी
न जादू की हांडी
न जादू का सोंटा,[2]

"पपीहा" और "चील कौए" तथा "चांद और बिजली की रोशनी" इस संकलन की ऐसी रचनायें हैं जो विरोधी परम्पराओं और अनमान विचारधाराओं को व्यक्त करती हैं । "बहुत दिन बीते" में संकलित रचनाओं के ही वैचारिक धरातल इन रचनाओं में मिलते हैं । "दो तरह के लोग" और " नीम के दो पेड़" "जीवन विश्वास", सहज ज्ञान,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 281.
2. वही, पृ0 297.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सहज अनुभूति और जीवन आस्था को व्यक्त करने वाली रचनायें है । दिल्ली के परिवेश में रहते हुए भारतीय ग्रामीण परम्परा के संस्कारशील के रूप में प्रखरतर होकर अभिव्यक्त हुए। इसीलिये कवि कहते हैं –

"मैं कभी दो पुत्र अपने
साथ ले उस पुण्य थल को
देखना फिर चाहता हूं ।
क्योंकि प्रायश्चित न मेरा
पूर्ण होगा
उस जगह के तर नवाये ।
और सम्भव है कि मेरे पुत्र दोनों
व्यंग से, सन्देह से कुछ मुस्कराएं ।"[1]

दो चट्टानें --

सन् 1962 से 1964 तक के बीच में लिखित कविताओं का संग्रह है । इसका प्रथम प्रकाशन 1965, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली से प्रकाशित हुआ है । यह रचना स्वर्गीय गजानन माधव मुक्तिबोध की स्मृति में तथा वीरेन्द्र कुमार जैन, भवानी प्रसाद मिश्र, शिवमंगल सिंह सुमन और गिरजा कुमार माथुर को समर्पित की है । इस उत्कृष्ट कृति का नाम "लिलिपकन बरक्स हनुमान" रखना चाहते थे क्योंकि इस संग्रह की सबसे बड़ी कविता का शीर्षक भी यही था लेकिन पाठकों को यह शीर्षक रुचिकर न लगा । इस संग्रह की रचनाओं के शीर्षक "दो" से अधिक जुड़े हुए हैं जैसे – "दो फूल", "दो रातें", "दो पुलों में" आदि । इसलिये दो चट्टानें" इस संग्रह का नाम अधिक उचित समझा गया ।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 336.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समय की गति नित्य बदलती है और अपनी छाप पीछे छोड़ती हुई आगे बढ़ जाती है। डा० दशरथ राज ओझा का मंतव्य है कि - वह प्राचीन एवं नवीन के बीच की कोमल कड़ी बना हुआ भविष्य के लिए अपने रस की धारा बहाता रहता है। अतीत एवं वर्तमान की चट्टानों से ही शक्ति का संचय करता हुआ वह गतिशील रहता है। अतीत हमारी अनुभूति, हमारा ज्ञान, हमारी अखण्ड सांस्कृतिक धारा हमें वर्तमान की परिस्थिति रूपी चट्टानों से टकराने का सामर्थ्य दान देकर गतिशील रखने में सहायक होता है।[1]

बच्चन जी ने दो चट्टानों में अतीत और वर्तमान में समन्वय का मार्ग अपनाया है। इन दोनों की उपेक्षा कर नये मार्ग पर नहीं चला जा सकता। उद्घाटन नये से पुराने का होता है -

सृजन पुराने से नये का होता है।
"एहि क्रम कर अथ-इति कहुं नाहीं।[2]

हरस्वरूप पारीक का कहना है - "दो चट्टानें बच्चन के परवर्ती काव्य की ऐसी दृढ़ चट्टानें हैं जिस पर खड़े होकर कवि यदि नयी कविता की श्रेणी में आ गया है, उसका यह आगमन आरोपित नहीं है। यही कारण है कि इस संग्रह की अधिकांश रचनाएं बहुत से नये कवियों से भी श्रेष्ठ हैं। व्यंग, तीक्ष्ण यथार्थ, स्वार्थपरता, विषमता और मानव सम्बन्धों की विकृतियां जितनी गहराई से इन रचनाओं में व्यक्त हुई हैं, उतनी ही गहराई से अस्तित्ववादी विचारधारा को भी पर्याप्त प्रोत्साहन मिला है।"[3]

---

1. डा० रमेश गुप्त द्वारा संपादित ग्रन्थ बच्चन निकष पर, पृ० 110.
2. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ० 100.
3. बच्चन का परवर्ती काव्य, पृ० 25.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"दो चट्टानें" शीर्षक रचना 53 कविताओं का संकलन है । और 53 कविताओं में एक गीत है "भिगाये जा रे....." अन्य सब मुक्त छन्द की कवितायें हैं । प्रस्तुत काव्य संकलन में कविताओं का मूल स्वर बाह्य है । अधिकांश कवितायें समसामयिक संघर्षों पर आधारित हैं । अन्य सामाजिक जीवन के अनेक संदर्भों को उद्घाटित करती हैं । प्रारम्भ में चीनी आक्रमण से सम्बन्धित कुछ कवितायें हैं, लुमुम्बा की स्मृति में "भोलेपन की कीमत" "बाढ़ पीड़ितों के शिविर में " "युग और युग", "द्वीप-लोप", नेहरू निधन पर" 27 मई" "मूल्य चुकाने वाला" "26.1.63", "शिवपूजन सहाय के देहावसान पर", "ड्राइंग रूम में मरता हुआ गुलाब" गजानन माधव मुक्तिबोध की स्मृति में "विक्रमादित्य का सिंहासन", "गांधी" "युग-पंक "युग-ताप" "आधुनिक निंदक", "वृद्ध युवा बनाम वृद्ध वृद्ध", "शृगालासन", "सार्त्र के नोबेल-पुरस्कार ठुकरा देने पर" इन कविताओं के अतिरिक्त अन्य कवि की अनुभूतिपरक कविताएं भी इस संकलन में संकलित हैं । जैसे "संघर्ष", "कवि से " , "ईर्ष्या", "सृजन और सांचा", "दिये की मांग", "दयनीयता" "दो रातें", "जीवन परीक्षा" आदि कविताएं कवि की मन: स्थिति पर प्रकाश डालती हैं । इनके अतिरिक्त इस संकलन की तीन कवितायें विशेष महत्व की हैं तथा अपने समय की प्रतिनिधि कवितायें हैं । जैसे - "खून के छापे", "सार्त्र के नोबेल पुरस्कार ठुकरा देने पर" और "दो चट्टानें" अथवा सिसिफस बरक्स हनुमान ।

इस संकलन की सबसे लम्बी कविता "सिसिफस बरक्स हनुमान" है । इस कविता के माध्यम से कवि यूनानी संस्कृति और भारतीय संस्कृति की दो कथाओं के आधार पर अपनी आस्था तथा अपनी विचारधारा प्रकट करना चाहता है । यद्यपि कवि पाश्चात्य साहित्य से बहुत प्रभावित है परन्तु अपनी संस्कृति का भी उपासक है । पाश्चात्य संस्कृति केवल भौतिकवादी मूल्य प्रदान कर सकती है जबकि जीवन के आन्तरिक आनन्द की प्राप्ति केवल भारतीय संस्कृति से ही प्राप्त हो सकती है । पाश्चात्य परम्परा विज्ञान के बल से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मृत्यु पर विजय पाने का जहाँ सतत प्रयत्न करती है वहाँ भारतीय परम्परा अपने आराध्य में अटूट और अगाध विश्वास से भक्ति द्वारा दीर्घ जीवी होने की कल्पना करती है । कवि अपनी धारणा प्रतीकों के माध्यम से स्पष्ट करते हुए हनुमान के वरदान की मांग के रूप में अपने विचार प्रस्तुत करते हैं –

"अंजनि नन्दन ने उनसे यह वर मांगा था
"यावत राम कथेयं ते अवेल्लोकेषु राघव
तावज्जीवेयमित्येवं.....
राघु विनायक राम,
तुम्हारी कथा लोक में रहे जब तलक
तब तक जीऊँ इसी तरह में ।
दशरथ नन्दन ने "तथास्तु" कह
उनको यह वरदान दिया था
एक तरह से अंजनि सुत ने
अमर बने रहने का ही तो वर मांगा था"
क्योंकि स्पष्ट था उनके मन में
सिया राम की कथा अमर है
और उसे सुनने की तृषा अमर है "[1]

प्रस्तुत संकलन में कवि ने युग के यथार्थ की प्रतिक्रिया को सीधे सरल शब्दों में व्यक्त किया है । "खून के छापे" "अनालतन", "कवि से केंचुआ" आदि व्यंगात्मक शैली में अभिव्यक्त कविताएं हैं । ये कविताये युग जीवन के प्रति जागरूक बने रहने का संदेश देती हैं । उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हैं यह पंक्तियां –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृष्ठ 130.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"जिस तरह जयकार सुनने का
किन्हीं को रोग होता है
मर्ज होता उन्हीं को
जय बोलने का "[1]

प्रस्तुत कृति की कुछ कविताएँ कवि की मन: स्थिति को ध्वनि प्रदान करती हैं । कवि का अन्तर्द्वन्द बाह्य द्वन्द के धरातल पर पहुँच कर समाप्त होने लगता है –

"यात्रा पूरी हुई
या नहीं ?
इसको कौन निश्चय से बताए
किन्तु यात्री
आज पूरा हो गया है ।"[2]

आज का बुद्धिजीवी अपना अस्तित्व किसी भी कीमत पर बनाये रखना चाहता है । "जियो और जीने दो" की भावना ही उसमें शेष रह गई है । इन पंक्तियों में यही भावना उद्धृत है –

"मैं न -मिटने के लिए
कुछ भी करने में न झिझकूंगा ।
जीना ही तो पहला धर्म है, "[3]

यहाँ तक देखा गया है कि आज मानव अपने हित के लिये दूसरों को मिटाने में भी नहीं झिझकता । यह पंक्तियाँ इसकी साक्षी हैं –

अपना अस्तित्व बनाये रखने को
सबका अस्तित्व मिटाना भी पड़े

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 56,
2. बच्चन रचनावली भाग 3, दो चट्टानें, पृ0 81.
3. वही, पृ0 54.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तो भी नहीं झिझकूंगा
लेकिन मिटा भी सकूं
तो मैं उन्हें मिटाऊंगा नहीं,
उन्हें कम करके, घटा करके
नीचा दिखा करके छोड़ दूंगा,
तुलना में अपने को उनसे अधिक
उनसे बढ़कर, उनसे ऊँचा
सिद्ध कर ही तो मैं अपने अहं को
पोषित करता रह सकता हूं।[1]

भारतीय संस्कृति की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि अलाई कर और कुएं में डाल" ऐसा व्यक्ति इस प्रदर्शन के युग में भी आत्मलीन रहकर अपने कार्य में लीन रहता है। देखिये –

"सबसे यह बढ़कर है,
अपने अनुदान से
अनजान बने रहते हैं,
पृथ्वी पर अहं की वे
सृष्टि नहीं करते हैं"[2]

और –

"मेरे जैसों के श्रम से,
संगीत से, कहां कुछ बदलता है,
पर इतना भी क्या कम है
कि जब मेरा तन श्रान्त है,
मेरा मन शान्त है।"[3]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, दो चट्टानें, पृ० 55.
2. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ० 84.
3. वही, पृ० 85.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवि के विचार में जीवन तो जीने के लिए है ही किन्तु मृत्यु में भी एक रस निहित है । मृत्यु का दूसरा नाम जीवन भी है । देखिये –

"और तब संसार जीने, जिये जाने को विवश था ।
जल्द ही अनुभूति होने लगी इसकी, मरण में भी एक रस था[1]

या

"वाणी का क्षेत्र है
मृत्यु यहां जन्म दिया करती है
भस्म हुई काया की
यश - काया जाती है न मरती है,
काल-जयी युग-युग निखरती है ।"[2]

और

"प्रकृति के यौवन का शृंगार करेंगे कभी न बासी फूल
मिलेंगे वे जाकर अति शीघ्र, आह! उत्सुक है उनकी धूल,
पुरातन का यह निर्मोक सहन करती न प्रकृति पल एक
नित्यनूतनता का आनन्द लिये है परिवर्तन में टेक

--कामायनी ।

महादेवी जी की भी यही धारणा है कि -

"अमरता है जीवन का ह्रास, मृत्यु जीवन का चरम विकास"

बच्चन जी भी यही मानते है –

"और तब संसार जीने के लिये विवश था"

सिसिफस की "मृत्यु पर विजय" व्यक्ति जीवन के लिये अभिशाप बन गई । व्यक्ति जीवन से उकताहट महसूस करने लगा । प्रस्तुत पंक्तियां

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 118.
2. वही, पृ0 76. भाग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवि के अंतव्य को स्पष्ट करती हैं –

"प्रकृति गत अमरत्व कितना
रुग्ण है, दयनीय है, कल्पाजनक है ।
मौत आये ।
मौत आये । की
सदाएं लगीं उठने,
ये दुआएं मांगने कितने लगे
उस मरण से वंचित नार में–
प्रभु, कृपा कर मृत्यु भेजो ।
दया कर तन मुक्त कर दो ।
और सिसिफल
बैठकर प्राय: अकेले सोचता था
मृत्यु को बंदी बनाकर
क्या न गलती कर गया मैं ?"[1]

प्रसाद जी की मान्यता थी कि केवल हृदय द्वारा मानव विकास सम्भव नहीं है इसमें श्रद्धा की भी उतनी ही आवश्यकता है । बिना श्रद्धा के मानव विकास सम्भव नहीं । बच्चन जी का भी यही दृष्टिकोण है कि बुद्धि केवल बुद्धि का ही काम कराती है लेकिन पूर्णानन्द की प्राप्ति केवल श्रद्धा और भक्ति से ही की जा सकती है । उदाहरण की यह पंक्तियां इसकी साक्षी हैं –

"इसीलिये ऊंचाई की अन्तिम उठान पर
शक्ति नहीं, रे !
भक्ति चाहिये ।
भक्ति विनत है,
और उसी का किसी जगह अवरुद्ध न पथ है ।"[2]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, 119.
2. वही, पृ0 126.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पौरुष के यह दो प्रतीक ही दो चट्टानें हैं । भक्ति और शक्ति का यह अद्भुत समन्वय देखकर निराला कृत "राम की शक्ति पूजा" की याद आ जाती है । "दो चट्टानें" बच्चन जी की साहित्यिक दृष्टि से बड़ी समर्थ रचना है ।

इस संकलन की सामयिक रचनाओं में मानव को जागृति का संदेश देती हुई कविताएँ हैं । ये मानव को अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा देती हैं । बच्चन जी ने लिखा है "सामयिक स्थिति और मेरी मन: स्थिति का प्रतिबिम्ब इन पर पड़ना स्वाभाविक था ।"[1] इस संकलन की कई कविताएँ अपने युग को चित्रित करती हैं ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व भारतीय जनता में संगठन था , अपने देश के प्रति प्रेम की अटूट भावना थी वह धीरे-धीरे प्रान्तीयता की भावना में संकुचित हो गई । अचानक हुए चीनी आक्रमण के दौरान एक बार पुन: भारतीय जनता ने अदम्य राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया –

"अजदहे, हम किस तरह तुझको सराहें,
दाहिना ही सिद्ध तू हमको हुआ है
गो कि चलता रहा बाएं ।[2]

जब मनुष्य अधिक संघर्षों से निकलकर सफलता प्राप्त करता है तब अन्य लोग ईर्ष्यावश आलोचना करने लगते हैं । आज के संघर्षमय युग में कवि अपने आपको शुद्ध भारतीय परम्परा में दर्शाते हुए लिखते हैं –

"दुनिया बड़ी ओछी है,
औरों को सुखी देख
लोग कुढ़ा करते हैं,
मातम मनाते हैं, जलते हैं मरते हैं ।
हमने तो औरों की खुशियों में
खुशियाँ मनाई हैं ।"[3]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, 19.
2. वही, पृ0 26.
3. बच्चन रचनावली भाग 3, दो चट्टानें, पृ0 86.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था से भी कवि सन्तुष्ट नहीं है । आज समाज में भ्रष्टाचार का बोलबाला है । जितनी रोकथाम की बड़ी व्यवस्था होती है उतना ही भ्रष्टाचार दिन पर दिन बढ़ता जाता है । देखिये कवि का मंतव्य --

"दुध-सी कर्पुर चन्दन चांदनी में
भी नहाकर, भीग कर
मैं नहीं निर्मल, नहीं शीतल
हो सकूंगा,
क्योंकि मेरा तन-वसन
युग-पंक में लिथड़ा-सना है
और मेरी आत्मा युग ताप से झुलसी हुई है ।
नहीं मेरी ही तुम्हारी, औ तुम्हारी और सबकी ।
वस्त्र सबके दाग धब्बे से भरे हैं ।
देह सबकी कीच-कांदों में लिसी, लिपटी, लपेटी ।"

आज मानव मूल्य बदल रहे हैं । हर क्षेत्र की मान्यतायें बदलती जा रही हैं । चाहे न्याय के क्षेत्र में देखें या विश्वविद्यालयों के क्षेत्र में । कवि यह सब अनुभव करता है --

"हर जगह आपाधापी मची हुई है ।
और सरकार कभी होती नहीं
पाबन्द
सच की, न्याय नैतिकता, उचित की,
उचित-अनुचित,
जो बनाए रहे उनकी अडिग सत्ता,
बे-झिझक, बे-झिझक है करनीय उनको ।"[2]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, दो चट्टानें, पृ0 43.
2. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 92.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

× × × ×

विश्वविद्यालय बंधे हैं
विगत मूल्य परम्परा में –
तू रहा जिनका विरोधी–
और अब तो बिक रहे वे
राजनीति खरीदती है ।
आज उनकी डिग्रियां–आनरिस काजा–
योग्यता के लिये
प्रतिभावान को अर्पित न होतीं,
कूटनीतिक कारणों से
दी, दिलाई और पाई जा रही हैं ।" [1]

बच्चन जी को भले ही क्षणिक निराशा ने घेर लिया हो । परन्तु उनका जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण है । अतीत के प्रति आस्था है । कवि जानता है कि निर्माण इतना सहज नहीं है जितना कि हम समझते हैं । उसके लिये न जाने कितनी जानें न्योछावर हो जाती हैं ।

"सार्त्र के नोबल पुरस्कार ठुकरा देने पर" नामक कविता भी इस संकलन की महत्वपूर्ण कविता है । नोबल पुरस्कार की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा है । इसको पाने की ललक सबमें होनी स्वाभाविक है । कवि मन में भी रही होगी । लेकिन 65 का नोबल पुरस्कार हिन्दी के साहित्यकार "अज्ञेय" जी को मिला । कवि ने इस कविता में सार्त्र के महत्व तथा समाज की ईमानदारी तथा न्याय की भावना पर करारा व्यंग किया है । जो पुरस्कार सार्त्र को वर्षों पहले मिल जाना चाहिये था वह उस समय घोषित किया गया जब वह मान-सम्मान की सीमा से ऊपर उठ चुके थे । उस अवस्था

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 91.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में पहुँच गये थे जहाँ नोबल प्राइज़ से उनके सम्मान का महत्व बढ़ने की अपेक्षा सार्त्र को दिये जाने से नोबल प्राइज़ का ही महत्व बढ़ता है। देखिये इन पंक्तियों में –

"व्यक्ति मेरे लिये भी अन्तिम इकाई,
और उसके सामने संसार सारा
धर्म रूढ़ि समाज, शासन तन्त्र सारा
प्रकृति सारी, नियति सारी
और उसको
एक, बस अस्तित्व का अपने, सहारा।"[1]

मनुष्य अपने अथक परिश्रम से जब उस स्थिति को पा लेता है जहाँ मान सम्मान का कोई महत्व नहीं है तब उसके जीवन-मूल्य बदल जाते हैं। यही स्थिति "सार्त्र" की थी।जीवन पर्यन्त साहित्य की सेवा करने के बाद भी उनको विश्वविद्यालय और राज्य शासन ने सम्मानित नहीं किया। कवि का स्वाभिमान यह स्वीकार नहीं कर सकता कि जब चाहे संस्थायें उनका सम्मान कर दें और जब चाहें उनकी उपेक्षा। इस पर कवि का व्यंग देखिये –

"संस्थायें– हों भले ही विश्व वंदित–
यह नहीं अधिकार उनको –
क्योंकि उनके पास धन-बल
जिस समय चाहे दिखायें मान-टुकड़ा,
और प्रतिभा दुम हिलाती
दौड़ उनके पार्श्व चाटे।"[2]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 89.
2. वही, पृ0 94.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा

जिन चीज़ों की चाह मुझे थी,
जिनकी कुछ परवाह मुझे थी
दी न समय ने तूने, असमय क्या ले उन्हें करेगा ।
कुछ भी आज नहीं मैं लूंगा ।"[1]

भारत में ऐसे अनेक साहित्यकार हुए जिन्हें अपने जीवनकाल में सम्मान तो एक तरफ रहा चैन से जीवनयापन करना भी नसीब न हुआ । "शिवपूजन सहाय के देहावसान पर" नामक कविता में कवि का व्यंग हमारी व्यवस्था पर है । इसी संकलन में नेहरू जी के लिये सात कविताएँ संकलित हैं । इनमें कवि ने नेहरू जी और गांधी जी दोनों के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की है । एक कविता कुतुम्बा की स्मृति में भी है । "खून के छापे" कविता जिज्ञासा पैदा करती है कि "खून के छापे" से कवि का क्या तात्पर्य है उसकी क्या कहने की इच्छा है ? अंत में कवि समाज के दूषित वातावरण का दोषी स्वयं अपने को मानता है, क्योंकि जो कुछ भी देश में होता है उसको एकमात्र कवि की लेखनी का आह्वान ही दूर कर सकता है । यह सच भी है कि जिसको तलवार से नहीं मारा जा सकता उसको लेखनी से काटा जा सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं कि कवि की लेखनी में बहुत शक्ति है । अनीति और भ्रष्टाचार के विरुद्ध कवि ही क्रान्ति की ज्वाला जगा सकता है । उन शोषितों और पीड़ितों के खून के धब्बे कवि को अपना उत्तरदायित्व निभाने की प्रेरणा दे सकते हैं । यह पंक्तियाँ इसकी साक्षी हैं –

"लेकिन इस अमानवीय, अत्याचार, अन्याय
अनुचित, अकरणीय, अकरुण का
दायित्व किसने लिया ?.....
जिसके द्वार पर यह छापे लो उसने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पानी से धुला दिया,
चूने से पुता दिया।
किन्तु कवि द्वार पर
छापे ये लगे रहें,
जो अनीति अति की
कथा कहें, व्यथा कहें
और शब्द-यज्ञ में मनुष्य के कलुष दहें।"[1]

अथवा

"कलम से ही,
मार सकता हूं तुझे मैं,
कलम का मारा हुआ
बचता नहीं है।"[2]

इस संकलन की अधिकांश कवितायें मुक्त छन्द में हैं।

त्रिभंगिमा –

त्रिभंगिमा में संकलित रचनाओं का रचना काल 1958 से 60 ई० के बीच दो वर्षों का है। क्योंकि इसका पहला संस्करण 1961 में राजपाल एण्ड सन्स से प्रकाशित हुआ अतः 58 से 61 तक की 77 रचनाओं के संकलित होने से इनकी अवधि तीन वर्ष भी निर्धारित की जा सकती है। छन्द की दृष्टि से इस संकलन की कुछ रचनाएं छन्दोबद्ध हैं, कुछ मुक्त छन्द की हैं तथा कुछ लोकधुनों पर आधारित हैं। त्रिभंगिमा शब्द के मूल में यही भावना है। भंगिमा का अर्थ छवि या कथन शैली है। शैली के तीन प्रकार

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ० 41.
2. वही, पृ० 49.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा छवियाँ इस संकलन में दिखाई पड़ती हैं, इस कारण इस शैली में लिखी गई रचनायें त्रिभंगिमा नाम से संकलित हुईं। कवि की धारणा है कि वही कवि सबसे अधिक सफल समझा जायेगा जो अपने युग समाज की समस्त मूलभूत व्यापक और सत्य पूर्ण संवेदनाओं से स्वयं प्रेरित हो और दूसरों को भी प्रेरित कर सके।[1] समाज की शक्ति और सीमा दोनों का उल्लेख करता हुआ कवि ही प्रेरक हो सकता है। समाज और व्यक्ति दोनों एक दूसरे से पृथक नहीं हैं। युग, सामाजिक निरन्तरता तथा समाजबोध ये सर्जना की तीन भंगिमाएं हैं और भाव-विचार तथा प्रेरणा की समन्वित धारा इन्हीं तीन दिशाओं में घूमकर काव्य सत्य की खोज करती है। कविता का रूप जो चाहे हो यदि पाठक और श्रोता उसमें साझेदारी अनुभव करते हैं और उनकी प्रतिक्रिया का बिम्ब उनमें दिखाई पड़ता है तब कविता की सार्थकता में कोई सन्देह नहीं रह जाता। व्यक्ति सत्य और युग सत्य के बीच कोई खाई नहीं रह जाती।

चाहे मिलन यामिनी हो, चाहे प्रणय पत्रिका, आरती और अंगारे हों या अन्य कोई रचना, बच्चन की एकाकिता और संयोग के स्वर मंद नहीं हुए। बच्चन के प्रणय गीतों का यदि शिल्पगत अध्ययन किया जाये तो उनमें भी एक क्रम है, भाव और कथ्य का क्रम कि मुक्तक होते हुए भी उनमें विलक्षण प्रबन्धात्मकता है। "मेरे और तुम्हारे बीच" शीर्षक से बच्चन आरती और अंगारे के बाद लिखना चाहते थे। निश्चय ही इनमें दो प्रेमियों की अनुभूति, कल्पना, मानसिक लेख तथा निजी संवेदनाओं की अभिव्यक्ति होती है। युग-समाज में इन संवेदनाओं का क्या स्थान है? यह तो अलग बात है पर बच्चन अपने प्रणय संसार का भी तारतम्यिक रूप प्रस्तुत करना चाहते हैं और इस दृष्टि से वह सफल हुए हैं। इस सम्बन्ध में उनका कहना है कि आरती और अंगारे" की भूमिका में मैंने प्रणय पत्रिका और आरती और अंगारे

---

1. रचनावली 2, पृ0 357.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के गीतों को एक विशेष योजना के अन्तर्गत बताया था । मैंने यह भी कहा था कि इसी योजना को पूर्ण करने को भविष्य में मैं गीत "मैं और तुम्हारे बीच" शृंखला में लिखूंगा। इस संग्रह में भी कुछ गीत हैं जिनको मैं इस शृंखला में रखना चाहता पर ऐसे गीत मैं अधिक नहीं लिख सका ।"[1]
और इसका कारण है कि कवि सामयिक जीवन पर अधिक बल दे रहे हैं । वह अपने युग और बदलते परिवेश के प्रति अधिक सचेष्ट हैं तथा जन सामान्य की रुचि और आकांक्षा को स्वर देना चाहते हैं ।

इस संकलन की कविताओं की विशेषता यह भी है कि गीत की तकनीक की दृष्टि से ये रचनायें पूर्ण हैं । गेय होने से ही कोई रचना गीत नहीं हो जाती । गीत वह है जिसमें भाव, विचार, अनुभूति, कल्पना एक शब्द में कथ्य की एकता हो और उसका एक ही प्रभाव पड़े इनमें से किसी को भी आप में, वह अपने आपमें पूर्ण है और अपने अर्थ, व्याख्या अथवा प्रभाव के लिए किसी दूसरे कथ्य पर निर्भर नहीं है ।[2] एक विशेष कालावधि में लिखी गई रचनाओं में साम्य भी होता है अत: कथ्य का परस्पर सम्बद्ध होना भी अनिवार्य हो जाता है । इन दोनों के बीच त्रिभंगिमा के कवि ने संतुलन रखा है।

त्रिभंगिमा में लोकगीत शैली, साहित्यिक गीत शैली और मुक्त छन्द शैली में लिखे गए गीत संकलित हैं । हिन्दी में लोकगीतों की धुन पर बच्चन ने हिन्दी में साहित्यिक गीत सर्वप्रथम लिखे । आचार्य शुक्ल प्रभृति विद्वानों की धारणा है कि साहित्यिक गीतों का विकास लोकगीतों से हुआ है । हिन्दी में मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन, गोपाल सिंह नेपाली, नीरज, शंभुनाथ सिंह तथा ठाकुर प्रसाद सिंह ने लोक तथा साहित्य दोनों दृष्टियों से गीतों की रचना की है । त्रिभंगिमा में 25 गीत ऐसे हैं । उत्तर प्रदेश की एक लोकधुन पर आधारित ठोलक पर सहगान की कुछ पंक्तियां लीजिए –

---

1. रचनावली, पृ0 359.
2. वही, पृ0 359.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चढ़ना हो,
चढ़ना हो जिसे चढ़ जाय, नैया जाती है
चन्दन की यह नाव बनाई
कोमल कमल दलों से छाई
फूलों की झालर लटकाई
रेशम के हैं पाल, छटा छहराती है ।
चढ़ना हो,
फूल चढ़ाया, अतल समाया,
अक्षत जल तल पर उतराया,
सगुन अमंगल मंगल पाया,
हों भगवान सहाय, नैया जाती है ।

उत्तर प्रदेश की अन्य लोकधुन ढिढ़िया पर आधारित "सोन मछरी" उनकी प्रसिद्ध रचना है । स्त्री और पुरुषों के दो दल बनाकर सहगान के लिये इस गीत की रचना हुई है । इसमें लोभाविष्ट व्यक्ति पर व्यंग किया गया है, उसके पास सच्चा प्रेम नहीं होता -

जो है कंचन का भरमाया,
उसने किसका प्यार निभाया,
मैंने अपना बदला पाया,
मांगी मोती की लरी पायी आंसू की लरी
जाओ लाओ पिया नदिया से सोन मछरी ।

इन पंक्तियों में स्वर माधुर्य, वस्तु तथा भावव्यंजना और लयात्मकता पद पद पर दिखाई देती है । नृत्य और गान की समवेत मुद्राओं की दृष्टि से भी कुछ गीत इस संकलन में है जैसे -

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ढोलक तब पर
चलती की घुर घुर
चर्खे की घुर घुर
गागर उठाता है, पायल बजाता है पांव रे ।

इन गीतों में बच्चन तत्सम रूपों के शब्दों को तद्भव रूप में बदल देने में प्रवाह और माधुर्य की तुष्टि देखता है । वह प्रयोग तो उनका साहित्यिक शैली में तत्सम रूप में ही करता है पर उच्चारण के समय उनके तद्भव रूप को महत्व देता है । अवधी बोली के शब्दों को, मुख्य रूप से क्रिया शब्दों को उच्चरित करते समय यह ध्यान रखना ही चाहिये । गाते समय पूर्व को पुरब, दिशा को दिसा, पुष्प को पुहुप, श्वेत को सेत तथा वर्ण को बरन उच्चरित करने से इन बोलों में सहजता आ जायगी पर जब इन्हें लिखा जायगा तब तत्सम शब्दों का ही प्रयोग होगा । जैसे -

पूर्व दिशा में उठकी लाली,
मंदिर बीच बजी घड़ियाली ।
श्वेत वर्ण के आले आले,
कुन्तल मेरे काले काले ।
पलपल रात गई गहराती,
ठंडी छाती ठंडी बाती ।[1]

बच्चन की निशा निमन्त्रण की गीत शैली का जैसा हिन्दी में अनुकरण हुआ, उस शैली का अनुकरण हिन्दी में न हो सका ।

कवि और वैज्ञानिक, ताई आडर, मिट्टी से हाथ लगाये रह, नाट्यशाला, जाल समेटा, कल-जल , सैनिकों के प्रयाण गीत, चित्रलेखा, युग की विकृतियां, अक्षय वट, मिट्टी का द्रोणाचार्य तथा इनसान और कुत्ते

---

1. रचनावली 2, पृ० 375.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अलग-अलग भावभूमियों और मुद्राओं की रचनाएं हैं। चित्रलेखा भगवतीचरण वर्मा द्वारा लिखित चित्रलेखा के नाटक रूप के लिए लिखे गए गीतों का संकलन है। "ये काम पर जाने वाले" कविता श्रम की महत्ता तथा श्रम के शोषण को लक्षित कर लिखी गई है –

दर्द श्रम का ले रंगों में जो गए थे शाम सोने,
देखते थे ही रहे हैं रात को सपने सलोने,
प्रात में ताजे यहीं उठकर प्रभाती गा रहे हैं।
काम पर फिर जा रहे हैं।

भारतीय दर्शन में जगत् को छल तथा माया माना गया है। इसके विपरीत जगत के प्रति भरपूर आकर्षण का अनुभव किया है कवि ने। उन्हों में रचे पचे संसार में जीने की कला मनुष्य को ही आती है, यही मनुष्य की सार्थकता भी है। कवि ने "जादूगर का जादू" रचना में उसी तथ्य को व्यक्त किया है। यहाँ जादूगर परमात्मा को तथा जादू जगत को बताया गया है –

तेरी दुनिया को प्यार किया है मैंने।
ज्ञानी ने मुझसे कहा कि सब माया है,
तूने ना समझी से धोखा खाया है,
रस्सी का टुकड़ा है, गजरा लगता है,
यह सत्य नहीं है, सपने की छाया है।
जादूगर यह अपराध न कहलायेगा,
तेरा जादू स्वीकार किया है मैंने।[1]

अब तक आते-आते कवि में यौवन का उन्माद टूट चुका है, उसमें भोग के विपरीत समर्पण, त्याग की भावना का प्राधान्य दिखाई देता है। कवि में भक्ति तथा अध्यात्म की छाया दिखाई पड़ने लगती है। गीत शेष इस संग्रह की ऐसी रचना है जहाँ उसे अपनी अकिंचनता का, रिक्तता का बोध होने

---

1. रचनावली 2, पृ0 395.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लगता है - प्रायश्चित बोध भी दिखाई पड़ता है -

धीर कहाँ मेरे वचनन का और कहाँ जग के परवाने,
इनसे मिलकर दूषित होने से ऐसा था कौन बचाने,
यह था जिससे चरण तुम्हारा धो सकता तो मैं न लजाता,
अब तुमको अर्पित करने को मेरे पास बचा ही क्या है ?
अब तो जीवन की सन्ध्या में है मेरी आँखों का पानी,
झलक रही है जिसमें निशि की शंका दिन की विषम कहानी ।

इतना होने पर भी कवि को यह भरोसा है कि जब तक आस्था है तब तक देह के ढल जाने पर भी जीवन और आराधना बाकी है । प्रकृति में नित्य उत्साह है -

संगिनि, सूरज कहाँ ढला ?
हर सन्ध्या को हमने देखा,
शेष रही उसकी रक्त रेखा,
उसी तेज से, उसी ओज से फिर प्रातः निकला ।[1]

यह युग जीवन मूल्यों के विघटन का है । कवि यदि विघटन और त्रास के अतिरिक्त और कोई सन्देश देने में असमर्थ है तब कवि अपने कर्म के प्रति ईमानदार नहीं । कवि युग से प्रभावित होता अवश्य है पर युग से ऊपर उठकर मधु-शोणित गीत धारा बहाने की क्षमता भी उसमें होती है । युग के दीप, गीत-निष्ठा तथा विशुद्ध कविता शीर्षक रचनाएं भी इसी उद्देश्य की व्यक्त करने के लिए लिखी गई हैं ।

शहीद दिवस तथा बाल दिवस दो ऐसी रचनाएं हैं जिनमें देश के निर्माण में रत नई पीढ़ी को बलिदान और राष्ट्र प्रेम जैसे मूल्यों का पाठ पढ़ाया गया है । कवि कहता है -

---

1. रचनावली 2, पृ० 399.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जो कलंक धुल सके न जल से,
आँसू से श्रम-सीकर बल से,
उसे छुड़ाने को शहीद का अविरल रक्त बहे ।
उसे कहीं से बोला जाये,
यह इतिहास न कहने पाये,
शीश झुकाकर हमने जीवन में अन्याय सहे।[1]

या

हम गिरि की ऊँचाई लाये, हम सागर की गहराई,
हम पुरब से आये लाये प्रात किरण की अरुणाई ।[2]

भारतीय दर्शन सर्वात्मवादी रहा है । सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह में उसका सदा विश्वास रहा है । अतः किसी प्रकार का भी भेदभाव यदि भारतीय समाज में पनपता है तो वह हमारी संस्कृति और दर्शन के विपरीत है । धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की विशेषता यही है कि वह संकीर्ण मतवादों से ऊपर उठकर मानव मात्र को समान विकास और उत्थान की सुविधा जुटाता है । कवि ऐसे प्रात लेकर चलने वाले नवयुवकों का स्वागत करते हुए आह्वान करता है - यह रचना राष्ट्रदूतों के विविध सदस्यों के भारत आगमन पर लिखी गई सामयिक रचना है । सरकारी नौकरी में रहते हुए बच्चन ने सरकारी आयोजनों को लक्षित करते हुए भी कविताएँ लिखी हैं । इस कविता में नारेबाजी नहीं अपितु भारत सरकार की आन्तरिक तथा विदेश नीति की झलक है जो भारतीय सर्वात्मवादी दर्शन के आधार पर निर्मित हुई है । घाड़ रन लाई के आगमन पर लिखी गई "स्वागत-गान" शीर्षक कविता की पंक्तियाँ लीजिए -

---

1. रचनावली, पृ० 403.
2. वही, पृ० 404.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देश देश के पाहुन भारत के जनगण का स्वागत लो ।
इस पर बसते हिन्दू-मुसलिम,
बौद्ध, जैन, सिख, ईसाई,
और पारसी, और सभी हैं
आपस में भाई-भाई ।
भारत बसता मानवता के नाते में सब लोग चलो ।
देश-देश की सीमाओं की
दीवारों के घेरे में,
एक बड़ा परिवार, मगर है
झगड़ा तेरे-मेरे में ।
शान्ति बसेगी, सुख बरसेगा, पंचशील का व्रत सब लो ।[1]

चीन के आक्रमण पर देश के कवियों ने अपना आक्रोश कविताओं में व्यक्त किया था । पण्डित जवाहर लाल नेहरू इस अप्रत्याशित धक्के से भीतर ही भीतर टूट चुके थे । इस पौरुष राष्ट्र के नागरिकों में पराजय की निराशा से जो क्षोभ पैदा हुआ उसकी अभिव्यक्ति दिनकर की कविता "परशुराम की प्रतीक्षा" में अच्छी तरह देखी जा सकती है । बच्चन की चेतावनी कविता भी इसी क्रम की रचना है । द्रौपदी के केश खींचने की घटना ने जैसे महाभारत को जन्म दिया तथा भीमसेन ने दुश्शासन का वध कर उसका प्रतिशोध लिया वैसे ही गौरीशंकर की चोटियों को भारत माता की लटें मानकर चीन द्वारा किए गए अतिक्रमण पर कवि ने चेतावनी दी है –

दूर दूर तक उठती, छिटकीं, चिटकीं, फैलीं –
अमरनाथ गौरीशंकर – कैलास विद्युन्मित –
ये भारत माता के कंधों पर अवलम्बित
उसकी अलकें, नाग लटें हैं, वेणी-चोटी,
जो कि हमारी जीवित संस्कृति- परम्परा में

---

1. रचनावली 2, पृ0 406.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नारी के गौरव के
सबसे गरीर्य चिह्न हैं,
जिनकी लाज बचाने को,
इज्जत रखने को
मूल्य बड़े से बड़ा चुकाने को हम उद्यत
फिर घालीस कोटि की माँ की भव्य लटा की।

तूने आज इन्हीं को छेड़ा है, बींधा है,
तुझे नहीं मालूम कि तूने कितनी भीषण और भयावह राम किया है,
फिर कहता हूं,
भारत की यह परम्परा है -
जब नारी के बालों को छेड़ा जाता है,
धर्मराज का सिंहासन डोला करता है,
क्रुद्ध भीम के बाहु फड़कते,
गांडीव की प्रत्यंचा कड़का करती है,
कहने का तात्पर्य, महाभारत होता है,
अगर कभी थोथी ममता, दुर्बलता, किंकर्तव्य विमूढ़ता,
व्यापा करती,
स्वयं कृष्ण भगवान प्रकट हो
असन्दिग्ध औ स्वत: सिद्ध
वाणी में कहते,
।उत्तिष्ठ युध्यस्व भारत।[1]

पौराणिक कथा तथा पात्र-प्रतीकों के सहारे युगीन समस्याओं का चित्रण तथा समाधान त्रिभंगिमा के कवि की अन्य विशेषता है। गांडीव की प्रत्यंचा से अर्जुन का बोध कराना इसी शैली का उदाहरण है, कवि को शौर्य तथा अचूक लक्ष्य भेद की व्यंजना के लिये इससे अधिक उपयुक्त उपमान और

---

1. रचनावली - 2, पृ0 434.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्या मिलता । अहिंसा और हिंसा की अन्तात्मक स्थिति में युद्ध का समर्थन राष्ट्रीय आवश्यकता के रूप में उभर कर आया है तथा शांति और युद्ध के पक्ष में गीता का मान्य सिद्धान्त उद्धृत किया गया है । "मिट्टी का द्रोणाचार्य" भी महाभारती कथा है जिसमें राज्य सुख की लिप्सा में आचार्य ने जिघांसु शिष्य से छल किया और आज भी इतिहास जिस कलंक को न मिटा सका । अध्यापक और शिष्य के सम्बन्धों की ध्वनि इस कविता में निहित है और फिर कवि की ये पंक्तियाँ ध्यातव्य हैं –

द्रोण के बलवीर्य-विक्रम की कथा से
हो महाभारत पटा, पर
छल से एकलव्य ने सब पर लिखा है –
द्रोण मेरा,
द्रोण मिट्टी का,
मगर इससे बड़ा था ।[1]

सरकारी नौकरी में रहते हुए भी कवि के स्वर सिमे हुए नहीं रहे । "यह भी देखा यह भी देखा" कविता में गांधीवाद के झूठे दंभ का खुलासा करते हुए कवि ने कहा कि हम आचरण में गांधी से कितनी दूर हैं तथा स्वार्थ-पूर्ति के लिए गांधी के नाम का दुरुपयोग करते हैं – गांधी के स्वाधीनता आन्दोलन तथा आजाद भारत के दो चित्र यहां उद्धृत हैं –

(1) गांधी– अन्याय – अत्याचार का दासत्व सहती
मूर्च्छित – मृत जाति की
जड़ शून्यता में
कड़कड़ाती बिजलियों की प्रबल आंधी
ज्योति – जीवन– जागरण धन का तुमुल उल्लास

(2) गांधी बुत पत्थरों का, मूक मिट्टी का खिलौना
रंग बिरंगा चित्र, छुट्टी का दिवस

---

1. रचनावली 2, पृ० 436.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देशवासियों में पुस्तकालय को
समर्पित किए जाने के लिए
सरकार द्वारा,
आर्ट पेपर पर प्रकाशित, राष्ट्र का इतिहास ।[1]

गणतंत्रदिवस, खुदा, महागर्दभ तथा दानवों का शाप भी प्रतीकात्मक रचनाएँ हैं जिनमें व्यंग का स्वर प्रमुख है । इस संकलन की अन्तिम रचना "अन्धा युग पर गूंगा-बहरा युग नहीं" है । महाभारत के समापर्व में कहा गया कि वह युग और समाज अंधा होता है, जहां दुष्ट लोग फलते फूलते हैं तथा श्रेष्ठ लोग क्षीण होते रहते हैं —

अन्धेनेव युगं नूनं विपर्यस्तं महात्मिव,
कनीयांसो विवर्धन्ते ज्येष्ठा हीयन्त एव च ।

सामाजिक विपर्यय के घेरे में प्रतिभाओं का पलायन होता है, कुंठा, निराशा फलते-फूलते हैं । डा० धर्मवीर भारती ने महाभारत कालीन युग को "अंधा युग " कहा भी है । जिस राष्ट्र और समाज का स्वामी अंधा हो (धृतराष्ट्र) वहां विवेक की आंखों का मूल्य ही क्या है ? कवि अपने युग के अंधेपन को लक्षित करते हुए कहता है कि युग अंधा ही नहीं, बहरा भी है क्योंकि इतिहास के निर्माता इस अंधेपन को नहीं देख रहे हैं, नहीं कह रहे हैं । यह क्या मजबूरी है ? या प्रलोभन जन्य विचारता है । अन्याय को सहना अन्याय करने से कम जघन्य नहीं है ।

सरल जन गण
जो कि जीवन विश्व की सब
हलचलों, आन्दोलनों का
मुख्य, मुखिया भार, अपनी पीठ से उतार उठाते,
और तिल-तिल, पिसे रह कर,
मानवी इतिहास के दुर्ग, दीर्घ दुर्गम

---

1. रचनावली 2, पृ० 448.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जगन्नाथी मान को
आगे बढ़ाते,
तो न केवल हुद्र ऊँचे चढ़ गए हैं –
उच्च नीचे जा पड़े हैं –
उच्चता औ नीचता के भाव जो बाहर नहीं हैं –
हम कभी इतिहास को कहने न देंगे
अंधा युग ही नहीं, यह युग मूक भी था ।
याद हम रखें, कबीरा, सूर, तुलसी की
अमर निर्भीक, आशावान वाणी बोलते हम,
जो कि ऐसे ही कठिन, अंधेर कुण्ठित, अंधयुग में जन्म
जन सम्भव हुई थी ।
और यह दायित्व तुम लो –
तुम कि जो मैथिलीशरण, प्रसाद
नरेन्द्र निराला, पन्त, दिनकर के
स्वरों से प्रेरणा लेते रहे हो –
तुम कभी इतिहास को कहने न दोगे
अंध युग ही नहीं – यह युग बधिर भी था ।[1]

क्या बच्चन इस रचना द्वारा किसी निराशा की सृष्टि करना चाहते हैं ? नहीं, निशंकिया में अपनी पूर्व रचनाओं के समान ही कवि आशावान है । उसका कहना है कि तम जीवन का सत्य नहीं है, सत्य है तम से उबरने की, प्रकाश की खोज करने की लालसा । सीपी तम है, संघर्ष के नीले समुद्र में रहती है पर उसके गर्भ में पलता है प्रभापूर्ण मोती । यह मोती निराशा तथा संघर्ष के वातावरण में घिरे हुए मनुष्य के अन्तर-प्रकाश का प्रतीक है । इसी में सीपी के जीवन की सार्थकता है, इसी में मनुष्य के जीवन की सार्थकता है । "नील परी" इसी भावभूमि पर लिखी गई कविता है जिसका प्रसारण

---

1. रचनावली, 2, पृ० 465.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नवम्बर 1960 में आकाशवाणी केन्द्र लखनऊ से हुआ था ।

सीपी में नीलपरी सागर तरें ।
सीपी में ।
आर नहीं, पार नहीं,
तूल का आधार नहीं,
झेल रहीं लहरों का वार लहरें ।
सहसा उजियार हुआ,
बेड़ा भी पार हुआ ।
पी का दीदार हुआ,
ओट अरी नील परी पी को धरें,
सीपी में ।

चार खेमे चौंसठ खूंटे -

सन् 1960 और 62 के बीच लिखी कविताओं का संकलन है । इस समय तक बच्चन जी 55 वर्ष के हो चुके थे । प्रस्तुत कविता संग्रह में मुख्यत: तीन प्रकार की कविताएं हैं (1) लोकगीतात्मक, (2) साहित्यिक तथा (3) मुक्त छन्दात्मक । निर्गुनिया की परम्परा की ही यह गीत शैली है । वर्षा मंगल तथा ऋतुओं को गुनगुनाती शास्त्रीय संगीत शैली में लिखी गई रचनायें भी है । इन कविताओं में कवि की मन: स्थिति बनजारे की है । अत: चौंसठ खूंटे गाड़कर उसने अपनी जीवन-यात्रा के चार डेरों या पड़ावों का संकेत दिया है । यों कुल संकलित कविताओं की संख्या भी 64 है । इस संकलन पर अपनी टिप्पणी देते हुए डा० जोशी ने लिखा है कि कविता संग्रह के नाम की सार्थकता यानवीनता उसकी चौंसठ कविताओं के नामों में नहीं है ; वह तो इन कविताओं की ध्वनि या व्यंजना में है । यह ध्वनि या व्यंजना न नन्दन वन की है और न किसी अज्ञात लोक की छायावादी रहस्यवादी चिंता की ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसका उत्स तो जीवन, जगत और धरती है । प्रारंभ की दस कविताएं पढ़ जाइए तो आपको लगेगा कि कवि का खेमे का रूपक बहुत कुछ कवित्वमय भाषा में अपनी भूमिका पेश कर रहा है । कवि निर्मित काव्य रूपी खेमे का मात्र आधार धरती है । धरती भी न नई दिल्ली की है न पुरानी की और न लन्दन की । यह धरती सामान्य लोक-सामान्य जीवन की है— ऐसी जहां बंजारे कवि का खेमा गड़ सके, यानी मुक्त धरती, सबकी धरती और जहां से कुतुबमीनार चाहे नज़र में न पड़े लेकिन मुक्त आकाश, मुक्त खेत खलिहान और जीवन जीने की कशमकश, परिश्रम और पसीना साफ दिखाई पड़े—

मेहनत ऐसी चीज़ कि निकले
तेल छलाछल रेत में ।
आशा घर में दीप जलाए
सपना खेले खेत में ।

इन कविताओं के पीछे जगत्व्यापिनी घटनाओं का सक्रिय हाथ है । यहां पर कवि पूर्णत: युगपरिवेश से सम्पृक्त हो गया है । सर्जक और सृजन दोनों युग धर्मी हैं । इसीलिए कवि कहता है कि युग-समाज की- और समाज में मैं व्यक्ति को भी सम्मिलित करता हूं— समस्याओं का रूढ़िगत अथवा परम्परागत हल भी जातियों के पास होता है । रूढ़िगत अनेक धर्म अथवा दर्शन में परम्परागत उनके प्राचीन साहित्य में । जीवन तथा गतिमान और परिवर्तनशील है, इसे आज सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है । महत्ता होते हुए भी रूढ़िगत हलों की सीमा है । परम्परागत हल भी जीवन के नित्य परिवर्तित रूप को समझने के लिए पर्याप्त सिद्ध नहीं होते । समकालीन सर्जकों की, कवियों की, लेखकों की जो रूढ़ और परम्परागत के संस्कारों को आत्मसात करके भी उन्मुक्त हृदय, बुद्धि, मन से नवयुग- नव समाज की समस्याओं का हल निकाल सके नहीं तो उनसे जूझ सकें, कम से कम अपने समकालीनों को उनके प्रति सचेत कर सकें, जागरूक बना सकें ।[1]

---

1. रचनावली, 2, पृ0 475.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"चार खेमों" की व्याख्या स्वयं कवि ने भी की है । उन्होंने चार काव्य शैलियों का प्रयोग इस काव्य में किया है । त्रिभंगिमा की तीन शैलियों के अतिरिक्त एक शैली है मंच गान की । तीन के ऊपर चार उन्नति का क्रम ही हुआ । और ये चार खेमे चौंसठ खूंटों पर खड़े हुए हैं । यानी इसमें कुल मिलाकर चौंसठ कविताएं हैं । चार से बाहरी विधा का ही बोध नहीं होता । आन्तरिक विविधता का भी बोध होता है जो शायद चार से अधिक है । त्रि में तीन ही सीमित था पर चार में बहुत अधिक सन्निहित भी है । चार दिन की चांदनी और चार आदमी की बात में जैसे ।"[1]

पुस्तक की भूमिका में कवि ने मधुशाला से लेकर चार खेमे तक की काव्य रूपक शैली में व्याख्या की है और आश्वस्ति दी है कि जीवन के सफर में वह एक जगह घर बनाकर कभी नहीं बैठा । उसने कहा - जीवन की यात्रा कितनी विविध, कितनी विरोध भरी, कितनी विलक्षण रही है । हर मंजिल पर टूट जाना संभव था । कहीं से टूटा नहीं हूं, साबित हूं कैसे कहूं- जबकि मेरी लयें टूट-बदल गई हैं तो ये चार खेमे लगा दिए हैं, पुराने आवासों के मिले जुले नमूने से कुछ अनोखापन भी लिए । जमीन जगह जगह से दगा देती रही है -- कुछ खूंटों को आकाश में भी गाड़ने की जरूरत पड़ी है । आसमान में कील गाड़ना आसान नहीं । भूचाल, तूफान और विध्वंस के दूतों की कृपा से जितने दिन खड़ा है, खड़ा है । नहीं तो अपना डोरी डण्डा संभाला, तम्बू डेरा समेटा और चल पड़े-

चल बंजारे, तुझे निमंत्रित करती धरती नयी,
नया ही आसमान चल बंजारे ।
दूर गये मधुवन रंग राते,
तरु छाया फल से ललचाते,
भृग-विहंगम उड़ते-गाते,
प्यारे-प्यारे
चल बंजारे ।[2]

---

1. रचनावली 2, पृ0 477.
2. वही, पृ0 486.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बीते दिनों की स्मृतियाँ यहाँ आकर कवि को घेर लेती हैं। दिल्ली आना उनके जीवन की उपलब्धि थी, मजबूरी नहीं। फिर भी यहाँ के कोलाहलपूर्ण जीवन में ऐसा कुछ है जो उन्हें रास नहीं आता। वह कहते हैं—

कहने की कुछ को तो कुछ को
चलने की मजबूरी है।
पास पड़ा सब जाना-जाना,
जाना जाना जो अनजाना,
मेरी आँखों को आकर्षक
अनजानी यह दूरी है।
तथा
शब्द के आकाश पर उड़ता रहा,
पट विहग पंखों पर मिलेंगे।
एक दिन भोली किरण की लालिमा ने
क्यों मुझे फुसला लिया था,
एक दिन घन-गुनगुनाती चंचला ने
क्यों मुझे बहका दिया था।
एक राका ने सितारों से इशारे, क्यों मुझे सो सो फिर ये,
एक दिन मैंने गगन की नीलिमा को, किसलिए जीभर पिया था,
आज इनों की पकी रोमावली में
ये उड़ानें एक धुंधली याद-सी हैं,
उस लगन, आदर्श, जीवट, आन के,
साथी मुझे क्या फिर मिलेंगे।[1]

इस संकलन की रचनाओं में रहस्यवादिता की झलक भी मिलती है जैसे "मैं कैसे हट जाऊं" रचना।

---

1. रचनावली - 2, पृ० 494.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ भी ज्ञात नहीं, क्या मुझ में देखा संग लगाया,
कुछ भी याद नहीं है कब से मुझको अंग लगाया ।
गलत पसन्द जगत में उनकी दर-दर कहलायेगी,
मेरे प्रियतम नाच रहे हैं, मैं कैसे हट जाऊं ?
अम्बर के संग नाच रहे हैं अनगिन रवि शशि तारे,
धरती के संग नाच रहे हैं गिरि तृण तरु छतनारे,
जन्तु-तन्तु के तन्तु-तन्तु में नाच रही अभिलाषा,
अविरत अविरल नर्तक दल से मैं ही क्यों कट जाऊं ?[1]

गंधर्वताल, आगाही, मालिन बीकानेर की तथा बरस-तरस रचनाएं प्रणय विषम, कथोपकथन, लोकधुन, लयात्मकता, कल्पना-प्रवणता तथा शौर्य-प्रणय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को व्यक्त करने के साथ-साथ कथन की सफाई तथा कलात्मकता के नमूने हैं । गंधर्वताल, आगाही, अजब और अजनबी कलश और नींव का पत्थर तथा भीतरी कांटा की व्याख्या कवि ने स्वयं कर दी है ।[1] लयात्मकता लोकधुन का प्रथम गुण है और इस पर पूर्ण अधिकार है कवि का एक चित्र देखिए -

ओढ़नी आधा अम्बर ढक ले,
ऐसी है चित्तौर की,
चोटी है नागौर नगर की,
चोली रनथंभोर की ।
घघरी आधी धरती ढकती है मेवाड़ी घेर की ।
फुल माला ले लो लाई है मालिन बीकानेर की ।[2]

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 495.
2. वही, पृ0 508.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बहुत दिन बीते --

इस संग्रह में कुल 69 कविताएं हैं जो 1965 से 67 के बीच लिखी गई हैं । इनका प्रथम प्रकाशन 1967 में राजपाल एण्ड सन्ज से हुआ था । आदी के फूल में कवि ने घोषणा की थी कि - "है कहा किसी ने जब शायर बूढ़ा होता, उसकी कविता तब नौजवान हो जाती है" इस नवता का तात्पर्य है कि कवि हिन्दी की नवकविता के सिरहाने बैठा है । नव-चुनौन कवियों में प्रगति और प्रयोग की प्रवृत्ति की दृष्टि से केदारनाथ अग्रवाल तथा कुमार विमल बहादुर सिंह तथा नई कविता की उपलब्धियों की दृष्टि से धर्मवीर भारती तथा कुंवर नारायण को कवि ने अपना यह संकलन समर्पित कर अपनी नव-रचना धर्मिता की स्वीकृति दी है । कवि के अनुसार परिवेश, परिस्थिति तथा विविध मन: स्थितियों की छाया इन रचनाओं में है । रचनाएं मुक्त छन्द में हैं ।

प्रगतिशीलता की छाया इन कविताओं में है । एक चित्र देखिए-

लाल घांघरा, काली कुर्ती
काले लालू मोटे जूतों में
बागड़ की
मेहनतकश मजबूत औरतें
सड़क बनाती, मिट्टी ढोती
कोलतार के दुख गरमाती ।

× × × × × ×

खून पसीने की रोटी खाने वाली ये
ऐड़ी से लेकर चोटी तक
सर- मेहनत में,
मार बनावट में डूबी ये नहीं जानतीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसके भी अतिरिक्त कहीं कुछ
दुनियां में होता जाता है ।

× × × ×

बदल रहा मंत्रित्व देश का,
और तुम्हें कुछ खबर नहीं है ।
और न तुममें इसे जानने की उत्सुकता ।
तुम भी क्या हो ?
साऽब, हमारो
ठेकेदार नहीं बदलो है ।
साऽब बड़ो जालम हाकम है ।
साऽब उसे बदलो तो जानें ।"
चली गईं वे इतना कहकर
ड्रम लुढ़काने, मिट्टी लाने
सड़क बनाने
कल का रातिब आज कमाने ।[1]

दो प्रतीक रचना में प्रखर व्यंग है जिसमें गांधी जी के सटकर उकड़ू-मुकड़ू बैठे तीन नपुंसक बन्दरों के सहारे भले व्यक्ति के दबने, बुरे व्यक्ति के अकड़ने तथा अकर्मण्य लोगों के पदासीन होने पर प्रहार किया गया है । और इसकी परिणति" छल युग के कोरस" में हुई है जो आल्हा की "दुइ दुइ पनही" ताल पर लिखा गया है –

जुल्म सुना तो तुमने कानों उंगली कर ली,
भ्रष्टाचार दिखा तो आंखों पट्टी धर ली,
चुप्पी साधी बुलकर खेली गुण्डागर्दी
ओ गांधी के बन्दर तीनों, लाज- हया हो,
लाल करो मुंह अपना-अपना मार तमाचे ।[2]

---

1. रचनावली 3, पृ0 148.
2. वही, पृ0 153.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चार चने शीर्षक कविता में नियतिवादी, अस्तित्ववादी, समष्टिवादी तथा अवसरवादी व्यक्तियों पर प्रहार है । "घबराया कवि" में राजधानी तथा विविध दबावों से भयभीत संवेदनशील मन का चित्रण हुआ है तथा "विस्मृत संगीत" में बीन और ट्रांजिस्टर के प्रतीकों से बदलते हुए सौन्दर्य-बोध का उल्लेख किया गया है । कोयल, कैक्टस तथा कवि भी प्रतीकात्मक रचना है । कैक्टस किसी विवशता से खिलता है । कोयल मीठी बोली का विज्ञापन करती है और कवि दुनियां के मन की गांठ खोलता है । मौन भोगता-जीता है ।

"बहुत दिन बीते" की रचनाएं बुद्धि प्रधान हैं । सिंधु-बिन्दु रचना सागर-सापेक्ष दृष्टि की सूचक है तो संग्रह-संग्रही, मंदिर का दिया देश काल की दूरियों से ऊपर उठे संस्कारों का प्रतीक है । कार्ल यूनिवर्सिटी प्राहा के हिन्दी-अध्यापक" स्मेकल का लोहमुर्ग" रचना भी उल्लेखनीय है । पश्चिम और पूरब की धारणाओं की पृष्ठभूमि पर इस लोह-मुर्ग को सम्बोधित करते हुए कवि कहता है --

मुर्ग, उजले चांद के
वर्तमान से धोखा नहीं खाता,
क्योंकि वह काले सूर्य के
भविष्य को पहचानता है ।

मानस हंसिनी, खड़का, लता-सूखी लकड़ी, ताल तट पर, अंधेरा-उजाला, पहाड़-हिरन, घोड़ा-हाथी, खंडरात का हास तथा यात्रान्त आधुनिक संवेदनाओं पर लिखी गई कविताएं हैं । कवि कल्पना के लोक से यथार्थ की कितनी विषम और लड़खड़ाती भूमि पर उतरा है इस संकलन में । यह इस बात से ही सिद्ध है कि कवि को "क्यों जीता हूं" जैसी रचना लिखनी पड़ी । वह कहता है —

आज दब गया है बड़वानल,
और बवण्डर शांत हो गया ।
बाढ़ हट गई, उम्र कट गई,
सपने सा लगता बीता है,
आज बड़ा रीता रीता है,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कल शायद इससे ज्यादा हो,
उस तकिए के तले
उमर खैयाम नहीं है, जन गीता है ।[1]

कवि प्रणय के उन्माद को छोड़कर पकी उम्र में अनुभवों के किनारे आ लगा है । मंजिल पर पहुंचकर यात्री को अधिक थकावट होने लगती है -

सबसे ज्यादा काई, कीच, सेवार
निकट तट के होते हैं,
और तैरना सबसे मुश्किल छिछले पानी में होता है,
तैराकों की असल कसौटी धारा नहीं किनारा ही है ।
उन्मद नद का पाट पार कर आये साथी -
सच पूछो तो
अधिक सचेत, सतर्क, सजग
रहने की बेला अब आई है ।[2]

"यात्रान्त" में कवि रहस्यवादी हो गया है । गीतांजलि के समान निष्पाप और निस्मंद लोक में पहुंचने की इच्छा जाग गई है उसमें । संघर्षों से ऊबा थका एक अभय मुद्रा का संकेत पाने के लिये । यह इस संग्रह की अन्तिम रचना है -

इस समय आराम, आश्वासन महज मैं चाहता हूं ।
द्वार खोलो- भले ही बोलो- न बोलो ।
थके घोड़ों को ज़रा सा थप थपा दो
और अपने हाथ का देकर सहारा, मुझे नीचे को उतारो।[3]

---

1. रचनावली - 3, पृ0 195.
2. वही, पृ0 201.
3. वही, पृ0 221.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कटती प्रतिमाओं की आवाज -

1967-68 में लिखी गई 92 कविताओं का संकलन है जिनका प्रथम प्रकाशन राजपाल एण्ड संस दिल्ली से हुआ है । कवि के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास -ह्रास - परिवर्तन का संकेत इन रचनाओं में है । इस संकलन के नामकरण के सम्बन्ध में कवि का कहना है कि मैंने इसे "कटती प्रतिमाओं की आवाज" कहा है क्योंकि इनकी कविताएँ लिखते हुए बारम्बार मेरा ध्यान उस विखंडन, विघटन और बिखराव की ओर गया है जो आज हमारे बाहर और बाहर से अधिक भीतर चल रहा है पर इस विघटन और विखंडन के बीच कहीं कुछ निर्मित भी हो रहा है । मैं समझता हूं, इसका भी आभास मुझे है और मेरे सृजन में, शायद किसी अंश में यह प्रतिध्वनित भी हुआ है । मुझे प्रसन्नता है कि कटती प्रतिमाओं में बनती प्रतिमाओं की ध्वनि भी निहित है ।[1] वास्तव में कविता के क्षेत्र में पुराने प्रतिमान टूटते रहे हैं और प्रयोग धर्मा कवि नये प्रतिमानों की निरन्तर खोज करते रहे हैं । पुरानी प्रतिमाएँ केवल श्रद्धा के बल से सुरक्षित नहीं रह सकतीं, वे तो टूटेंगी ही पर उनके स्थान पर आस्था से नई प्रतिमाओं का निर्माण लगातार किया जा सकता है । विघटन की प्रक्रिया यदि अनिवार्य है तो सृजन भी अनिवार्य है -

तू कल राजकमल बन के आया था
आज कलम-विस्फोट बनके गया,
तुमने बहुत कुछ भोगा, जिया, दिया नया ।[2]

दार्शनिक यदि यथार्थ की विसंगतियों से भागता है तो कवि यथार्थ की विसंगतियों को भोगता है । भोगे हुए जीवन को नया रूप देता है । दार्शनिक से कवि की महत्ता इसीलिये ज्यादा है -

---

1. रचनावली 3, पृ0 227.
2. वही, पृ0 233.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दार्शनिक हो, तुम्हें यह सोहता है
कि पंकज को न छुओ,
उसके पास भी न जाओ, बस उसकी बास में बसो ।
कवि हो, तुम्हें यही सोहता है,
कि पंकज के पास ही न जाओ
उसको छुओ ही नहीं, उसके पंक में भी सनो-धसो।[1]

परिवार नियोजन, प्रायश्चित , शब्दों का तरोपा, भतीजे, बच्चा, कवि और विदूषक तथा नये-पुराने पत्ते पूर्व की तरह ही व्यंग प्रधान रचनाएं हैं । युग-नाद रचना सशक्त है जिसमें पराधीन भारत की दुर्दशा, स्वाधीनता संग्राम, हीन पुरुषार्थ की बलवत्ता तथा आजाद भारत की शोषित जनता का आर्तनाद और अवसरवादी नेताओं की पकती फसल का चित्रण किया गया है । खण्डित मूर्तियों की आवाज़ तथा मध्यम पीढ़ी का वक्तव्य नये-पुराने के द्वन्द्व तथा परम्पराओं के विखंडन पर लिखी रचनाएं हैं । कवि इसे प्रक्रिया मानकर विकास की निशानी बताता है । उसका कहना है –

यदि जीवन विकास के पथ पर,
नहीं ह्रास है,
पिता पुत्र से हार मानता सदा चलेगा,
पर पहले भरपूर समर है,
जो भविष्य के हित में लिखकर
यह मंगल कामना हमारी, हरा सको तुम हमें,
और अपने पुत्रों से हार भी सको ।
पाओगे तैयार हमें मरने को यदि तुम मर-मर जी सको।[2]

यह संकलन उस समय की मन : स्थितियों से पूर्ण है जब कवि राज्यसभा

---

1. रचनावली, 234.
2. वही, पृ0 262.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का सदृश्य मनोनीत हुआ है । अत: नेताओं की आपा-धापी, खुदगर्जी, कुर्सी परस्ती आदि पर भी कुछ व्यंग्यात्मक रचनायें कवि ने लिखीं । "कवित्व बरक्स मंत्रित्व" ऐसी ही रचना है । पुराने भड़ौओं की शैली में लिखी गई यह रचना बड़ी जानदार है –

मंत्री बनने को तु तु आउं
क्या कुत्ते ने काटा है ?
राज्यसभा में जब से पहुंचा,
मित्र निकट के आते हैं ।
मुझे अकेले में लेजाकर,
झुनझुना प्रश्न उठाते हैं ।
बंधु तुम्हारे मंत्री बनने का
कब नम्बर आता है ।[1]

कविता और राजनीति, कवि और राजनीतिज्ञ, कविता और रोटी, कवि का संघर्ष ऐसी रचनाएं हैं जिनमें कवि के अहं, युग-सापेक्ष दृष्टि तथा दायित्व की व्याख्या की गई है । कविता का समाज और राष्ट्र की संचालन नीति में क्या कोई योगदान हो सकता है ? कविता की बात यांत्रिक युग में क्या सुनी जा सकेगी ? यही चिन्ता इन रचनाओं का मुख्य स्वर है । "टीका, मेरी समान धर्मा" रचना इस आशय से यहां उद्धृत की जाती है –

सामने की घुने पुती दीवार पर
जो टीका
माटी की लकीरें बना रही हैं
मेरी समानधर्मा है ।
ये लकीरें भीतर से पोली हैं
जिनमें यह पलती है ।

---

1. रचनावली 3, पृ0 270.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैं भी इन तप्त कागजों पर
लकीरें ही खींच रहा हूं -
बायद वैसी ही खोखली ।
फर्क सिर्फ इतना है
कि यह पहले लकीरें बनाती
फिर अन्दर चलती है,
और मैं पहले अन्दर चलता
और फिर लकीरें बनाता हूं ।[1]

कवि का दृढ़ विश्वास है कि टूटने की स्थिति हमेशा नहीं रहती । जुड़ने की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है और यही जीवन की पहचान है -

टूटा होकर कोई शांत नहीं रह पाता
एक समय फिर जुड़ने को तुम व्याकुल होगे,
इधर उधर भटकोगे, अपना सिर पटकोगे ।
तब हम फिर चट्टानों से आवाजें देंगी,
खण्ड-खण्ड को फिर अखण्ड करने को पत्थर से निकलेगी ।[2]

टूटने में भी यदि सृजन का संकल्प है तो भव्य वस्तु की निर्मिति हो सकती है । महान सांस्कृतिक मूल्य विघटन की प्रक्रिया से धारदार होकर निकलते हैं । प्रतीक के रूप में महाबलिपुर' रचना को कवि इस संग्रह की अन्तिम रचना मानता है तथा उसके भव्य, उदात्त और आकर्षक रूप को विखंडन का परिणाम मानता है, यदि पत्थर न टूटते तो ऐसी उदात्त स्थापत्य कृति कैसे प्राप्त हो सकती थी ? कवि का निर्माण भी इसी प्रक्रिया के तहत हुआ है -

' लग रहा, पाषाण की कोई शिला हूं,
और मुझ पर छेनियां रख-रख अनवरत
मारता कोई हथौड़ा
और कट-कट गिर रहा हूं '

---

1. रचनावली 3, पृ0 288.
2. वही, पृ0 291.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उभरते प्रतिमानों के रूप --

बच्चन के पहले दो संकलनों के समान ही जनग्राह्य बोलचाल की भाषा में सामाजिक परिवेश, मानव मूल्य राजनीतिक एवं प्रजातांत्रिक विभीषिकाओं से उत्पन्न अवसाद, कुण्ठा आदि की अभिव्यक्ति इस संकलन में भी दिखाई देती है । समय-सापेक्षता ने कवि को बेहद प्रभावित किया है । समाज व्यापी ईर्ष्या, द्वेष, छलना, कुण्ठा, मशीनी जिन्दगी की दारुण व्यथा तथा अन्य अराजक स्थितियों का चित्रण कवि करते हुए बार-बार यह अनुभव कराना चाहता है कि मनुष्य का उत्थान (अध: पतन) कहाँ तक हुआ है ? यथोचित कवि के अनुभव तथा परिवेश के प्रति हर सजग दृष्टि से सांस्कृतिक विघटन के इन उकेरे हुए चित्रों में संवेदनशीलता की भी कमी नहीं है । आधुनिक जीवन की विषमता और रिक्तता का अहसास पाठक-श्रोताओं को सहज रूप से होने लगता है, यह इन संकलनों की शिल्पगत योजना का परिणाम है ।

सन् 1967 से 68 के बीच लिखी गई 72 कविताओं का संकलन है जो "कटती प्रतिमाओं की आवाज़" का ही पूरक है । पहले संग्रह में कटाव के, विखंडन के स्वरों की प्रमुखता है तो दूसरे संग्रह में नवनिर्मित सृजन के आधारों को उभारा गया है । कवि हर इकाई को सृजन बनाने का संघर्ष करता रहा है । वह विचारों की अंधाड़ियों में उड़ना चाहता है तथा अग्रेक्षी दृष्टि से ब्रह्माण्ड में निहित उस शक्ति को खोज लेना चाहता है जिससे अत्यन्त पुरातन पर नवनिर्माण कर सके । इस संग्रह की अन्तिम रचना "पाँच मूर्तियाँ" की अन्तिम पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत हैं -

पन्नगाशन,
छोड़ भू का संकुचित संपुटित आसन ।
बहुत दिवसों से तुझे आकाश कवि का ढूंढता है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समय ने कमजोर क्या, बेकार पावों को किया है,
किन्तु उड़ने के लिए अब भी हिया है ।
वेनतेय पसार डैने
नहीं मानी हार मैंने,
मैं तमो दुगा उन्हीं में,
आज अपने को,
उड़ा ले जा मुझे ऑधाइयों को- अग्रेदी।
धरा पर ले धरा भी तो ठीक दिखनाई न देती ।
और ज्योति: क्षीण मेरे बहुओं को,
तार्क्ष्य, दे निज दृष्टि भी अंगार वर्षी ।
अभी काम बहुत बड़ा है,
बहुत कुछ जर्जर, गलित, मृत, कालमर्दित
नया वह आया, अयाचह, अनृत,
दुर्दर्शन, अशोभन,
क्षर, अवाञ्छित, अनुपयोगी
घृणित, गर्हित
अन्त करने को पड़ा है ।[1]

डा० हरस्वरूप पारीक का इस संकलन के सम्बन्ध में यह कथन सटीक है कि "उभरते प्रतिमानों के रूप" में ये मान्दण्ड और विश्वास संकलित हैं जो कटती प्रतिमाओं की आवाज के बीच से उभरने का प्रयास कर रहे हैं । मानवीय विघटन, अन्त: संघर्ष, जीवन-दौर्बल्य और समाजव्यापी अराजकतियाँ जब चरम सीमा पर पहुँच गईं तो कवि को ऐसा अनुभव हुआ कि आखिर इस सबसे कब तक काम चलेगा या ऐसी ही विषम परिस्थितियों के सहारे कोई कब तक जी सकता है? इसलिये उसे आवश्यकता हुई कि वह इन टूटती परिस्थितियों में से कुछ ऐसे

---

1. रचनावली, 3, पृ० 373.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रतिमान निर्मित करे जो मानव-आस्था की खोज और जीवन के प्रति तीव्र विश्वास की भावना से प्रेरित हों। कहने की आवश्यकता नहीं कि उभरते प्रतिमानों के रूप में इसी आवश्यकता की पूर्ति का प्रयास है।[1]

इस संकलन में अनेक प्रकार की रचनाएं हैं। विदेश-भ्रमण के दौरान निर्मित रचनायें भी इस संकलन में हैं। "सीवान किनारे" से सम्बन्धित सात कविताओं के अतिरिक्त "वोल्गा से गंगा", "तिबलिसी पहाड़ी पर", "जिप्सी" और "सुखूमी" शीर्षक रचनाएं इसी प्रकार की हैं। युगीन संदर्भ लिए हुए रचनाओं में रंगे सियार, बन्दरों का संघर्ष, प्रजातंत्र और परिवार तंत्र, जवाहर जयन्ती पार्क दो जंगम राजनीतिज्ञों की जड़ मूर्तियां, घेराव, जमाने के बुद्धू उल्लेखनीय हैं। टूटते हुए मानव-मूल्यों और नई-पुरानी पीढ़ी के संघर्ष को व्यक्त करने वाली रचनाओं में तनाव, संगीन और सिक्का, संगीन और संगीन, आस्था, महानगर, गन्दा शहर, पगडंडी, सड़क और ग्राम नामक रचनाएं मानवीय सम्बन्धों के विघटन तथा ग्रामों के नगरीकरण के परिणामों पर प्रकाश डालती हैं। उदाहरण के लिए –

पहले यहां एक पगडण्डी थी
जो शहर से गांव को जाती थी,
अब यहां पर एक सड़क है
जो गांव से शहर को आती है,
और देखते ही देखते
दुनिया बदल जाती है।[2]

आत्माभिनन्दन कविता में स्वयंभू नेताओं तथा सामाजिक कार्यकर्ता के नाम पर विज्ञापन प्रिय आत्म सिद्ध लोगों पर व्यंग है जिनका जनता अभिनन्दन नहीं करती अपितु स्वयं तिकड़म से अभिनन्दन ग्रन्थ लिखवा- छपवाकर अभिनन्दित होने का ढोंग करते हैं –

---

1. बच्चन का परवर्ती काव्य, पृ0 39.
2. रचनावली 3, पृ0 354.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लाला जी
आपने अपना अभिनन्दन ग्रन्थ स्वयं लिखा
स्वयं सम्पादित किया
स्वयं प्रकाशित कर दिया
यह आपने क्या किया ?
"न अपना कोई अनुयायी
न उत्तराधिकारी, आशका न बिगड़े, इससे
खुद कर ली अपनी क्रिया
खुद अपना श्राद्ध कर लिया
खुद अपना पिण्डा पार दिया" ।[1]

आधुनिक जीवन की त्रासदी का चित्र महानगर शीर्षक कविता में है और यह इस संकलन की महत्वपूर्ण रचना है - इसका अंत है -

जो बरसों के बाद मुझे यह ज्ञान हुआ है,
यह भुट सारे नागरिकों का बूढ़ा-जाना,
महानगर कुछ और नहीं,
महानगर के नागरिकों का केवल जाना
समझ रहा हर एक शोध को है वह ज्ञाता
और अन्त में पचा हुआ, अपने को पाता ।[2]

संकलन की कुछ कविताओं में शाश्वत जीवन सत्य पर अपने विचार प्रकट किए हैं । बड़ा बड़प्पन, पत्थर बनना, सीढ़ी, बाँदी की सीढ़ी, शुद्ध दूध, कागज के शेर, साँप ऐसे प्रतीक हैं जो हम सामयिक जीवन के सहारे कुछ बड़े प्रयोजनों को स्पष्ट करते हैं । आस्था शीर्षक कविता कवि के रचनात्मक दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है और नित नये गढ़ने के स्वप्न को पूरा भी करती है -

---

1. रचनावली,3,पृ0 355.
2. वही, पृ0 349.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तुमने प्रतिमा का सिर काट लिया,
पर लोगों ने उसे सिर झुकाना नहीं छोड़ा है ।
तुमने मूर्ति को तोड़ा,
लोगों की आस्था को नहीं तोड़ा है
और आस्था ने
बहुत बार
कटे सिर को कटे धड़ से जोड़ा है ।[1]

बच्चन कटु यथार्थ का चित्रण इसलिये नहीं करते कि संघर्ष और विनाश से हारे लोग आत्म हत्या कर लें, वह इसलिए करते हैं कि विपरीत परिस्थितियों से उनकी जीवन-आस्था की चमक बढ़े और इसी जीवनेच्छा को वह दुर्दमनीय साधन मानते हैं जो प्रकृति से ऊपर मनुष्य के पास है और मनुष्य की शक्ति भी । गणपति वाहन शीर्षक कविता में कवि ने कहा भी है –

नये व्यास फिर
नया महाभारत लिखने को
गणपति का आवाहन करते
सुनते हो,
ओ गणपति के वाहन
बाहर हो, अपने को धन्यवाद दो
प्रायश्चित करने का तुमने अवसर पाया,
सृजन सदा संहार पीठ पर चढ़कर आया ।[2]

कैदी और कोकिला के कवि पण्डित माखन लाल चतुर्वेदी की स्मृति "सन्ध्या की ज्योति ध्वनि" इस संकलन की प्रथम रचना है और शायद कवि के युग-परिवेश के चित्रण में कुहू, आंधियाली में सुप्ता कोकिल, क्षितिज ग्रस्त सूर्य,

---

1. रचनावली, 3, पृ0 369.
2. वही, पृ0 369.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूर्ण हुआ बिन्दु सार्थक प्रतीक है। अन्तिम रचना में "स्वप्नजात स्मानिका" की लाश है और उस लाश में निहित अस्तित्व का पूर्ण तिरोधान सन्ध्या की ज्योति ध्वनि में है। इस प्रकार प्रथम तथा अन्तिम कविता एक दूसरे के पूरक हैं।

जाल समेटा --

अधिकांश रचनाएं 1968 से 1972 के बीच लिखित हैं। बम्बई प्रवास के दिनों की लिखी गई रचनाएं हैं। शिल्पिमा की कुछ पंक्तियों को पुस्तक का शीर्षक बनाया गया है -

जाल समेटा करने में भी
समय लगा करता है मांझी,

कुल संकलित रचनाएं 32 हैं और इसका प्रथम संस्करण 1973 में राजपाल एण्ड संस से हुआ है, यह समय हिन्दी कविता में अकविता आन्दोलन का है। कवि इस आन्दोलन से अपने को अलंपुक्त रखा है। जाल समेटा की भूमिका में कवि ने लिखा है -

"मैंने मुख्यतया कविता के द्वारा अपना पथ प्रशस्त किया था पर जहां तक मैं आ गया हूं उसके आगे मुझे लगता है, कविता से प्रगति संभव न हो सकेगी, अब तो अकविता को उपादान बनाना होगा - यारों ने तो अकविता को भी कविता बना दिया है मुझे यह मोह न व्यापे।"[1]

कविता के व्यापक उत्पादन और उसके घटिया स्तर से कवि चिंतित है तथा विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों के आधार पर कविता के जीवन का मूल्यांकन

---

1. रचनावली 3, पृ0 381.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करने वालों को चेतावनी भी । कविता का सही मूल्यांकन जो जनता के बीच होता है --

कलम के कारखाने हैं,
स्याही की फैक्टरियां हैं
(जैसे सोडावाटर की)
कागज़ के नगर हैं ।
और उनका उपयोग -दुरुपयोग सिखाने के
स्कूल हैं,
कालेज हैं,
यूनिवर्सिटियां हैं ।
और उनकी पैदावार के प्रचार के लिए
दुकानें हैं,
बाजार हैं,
इश्तहार हैं,
अखबार हैं ।
और लोग हैं कि आंखें उठाकर उन्हें देखते भी नहीं।[1]

दिल्ली पर दिनकर की प्रसिद्ध रचना है । बच्चन जी ने भी दिल्ली पर लम्बी कविता लिखी है और इसमें विविध क्षेत्रीय असंगतियों पर प्रकाश डाला है जैसे --

गांधी स्मारक निधि
जिसका था फकीरी ठाट,
उसकी समाधि का नाम है राजघाट ।
x x x x

---

1. रचनावली 3, पृ0 381.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसलिए हे भगवान, तुमसे एक प्रार्थना
भारत का हर प्रधानमंत्री
सौ सौ बरस तक अपनी गद्दी पर रहे बना,
क्योंकि हर एक अमर होकर अमर घेरेगा
कई कई वर्ग मील
दिल्ली बेचारी इतनी जमीन कहाँ से लायेगी ।
बदकिस्मत आखिर को
समाधि और स्मारकों की नगरी बन के रह जायेगी।[1]

कविता तथा कला का जीवन और धर्म से नित्य सम्बन्ध है । एक "पावन मूर्ति" कविता में इस तथ्य पर बल दिया गया है । जगन्नाथ मंदिर के बाहर परिक्रमा में बनी हुई नग्न अश्लील मूर्तियों के प्रतीकों को खोलते हुए कवि कलाकार की जिजीविषा को घोषित करता है और कहता है कि कलाकार के संकल्प को समझने वाला समानधर्मा कवि-आलोचक शायद अभी पैदा नहीं हुआ । श्लील-अश्लील के प्रश्न पर कवि का उत्तर लीजिए –

यदि मूर्ति देख यह
तेरी आँखें नीचे को गड़तीं
लाती है तुझे शर्म
(जीवन के सबसे गहरे सत्य प्रतीकों में बोला करते)
तो तुझे अभी अज्ञात
कला का,
जीवन का,
धर्म का,
गूढ़ गति, गूढ़ मर्म ।[2]

---

1. रचनावली 3, पृ० 388.
2. वही, पृ० 395.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जो कवि-कलाकार पुरस्कृत होने के लिए दांव-पेंच लड़ाते फिरते हैं, उन्हें सत्य-प्रेरणा देने के लिए कवि ने 'अकादमी पुरस्कार' की रचना की है। जिसने ज्यां पाल सार्त्र के नोबल पुरस्कार ठुकरा देने पर कविता लिखी थी उसे चाहिए था कि वह अकादमी पुरस्कार ठुकरा देता। व्यंग देखिए –

सार्त्र के सामने गिरा एक फुटबाल
तो उन्होंने ऐसी किक मारी
कि देखती रह गयी दुनिया सारी,
मैंने भी प्रशंसा में देर तक बजायी ताली
एक रही गौन
तो लिमोन-टि-बुझा।
मेरे सामने गिरा एक पिंग पांग का बाल
तो मैंने उसे उठाया
और जेब में लिया डाल।[1]

बुढ़ापा, कामर, बूढ़ा किसान तथा एक नया अनुभव अन्य उल्लेखनीय रचनाएं हैं। मौत को जीतने का उपाय बुद्ध से लेकर गांधी तक, सभी दार्शनिक खोजते रहे हैं। मौत तो आती है क्योंकि वह अनिवार्य सत्य है पर उसे सृजन और लोक कल्याण के व्रत से जीता जा सकता है। बूढ़ा किसान प्रतीक से कवि कहता है –

अब समाप्त हो चुका मेरा काम
करना है बस आराम ही आराम।
अब न सुरपी, न हंसिया,
न पुरवट न लढ़िया
न रख रखाव, न हर, न हेंगा।

मेरी मिट्टी में जो कुछ निहित था,
उसे मैंने बोत-बो,

---

1. रचनावली, ३, पृ० 396.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अहु-स्वेद-रक्त से सींच, निकाला
काटा,
बलिदान का बलिदान पाटा,
अब मौत क्या ले जायेगी मेरी मिट्टी से-उँगा ।[1]

बच्चन का जीवन दर्शन --

बच्चन जिजीविषा और जीवन आस्था के कवि हैं । दो चट्टानें रचना में एक दंतकथा के सहारे संघर्ष और पौरुष पर उन्होंने आस्था व्यक्त की है । सिसिफस की तरह हनुमान को प्रतीक रूप में लाकर वह भारतीय और भारतीयेतर प्रभाव से मौत के भयंकर कदमों पर जीवन की गहरी छाप का अनुभव करते हैं । दोनों में वह अन्तर करते हुए कहते हैं-- यौरप शक्ति के स्थूल जड़ पर ध्यान देता है तो भारत शक्ति से सूक्ष्म चेतन्य तथा समष्टि गत विराट् पर । निश्चय ही यौरप की व्यक्ति-शक्ति की अपेक्षा शांत संतुलित लोकहितकारी व्यक्ति शक्ति महान है और यही भारत की विशेषता है ।

दूसरी चेतना कवि की मृत्यु और जीवनवादी है । उन्होंने निकट से मृत्यु से जूझते आत्मीय जनों को देखा है । उनके काव्य में ध्वनित दुःख निश्चय ही बच्चन के जीवन का भुक्त दुःख है । इस दुःख ने उनकी सहवेदना का प्रसार भी किया है । दुःख भोग व्यक्ति को निराशावादी या उत्कट संघर्षवादी बनाता है । कवि का दर्शन है कि दुःख व्यक्ति को संकीर्ण व्यक्तिवाद से ऊपर उठाता है --

बड़भागी है दर्द बताए रह सकता है जिसका अन्तर

इस प्रकार वह कुमी और कबीर की परम्परा के हैं जो सुख के स्थान पर

---

1. रचनावली 3, पृ० 407.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दुख का ही वरदान मांगते हैं । दु:खात्मवादी धारणा अभारतीय नहीं है । गीत के दर्शन से भी कवि प्रभावित है । जनगीता के रूप में गीता का अनुवाद उन्होंने इसीलिए किया । भारतीय परम्परा के प्रति उनकी गहरी निष्ठा है । युग की विकृतियां तथा बुद्ध और नाचघर रचनाएं उनके इस दृष्टिकोण को व्यक्त करती है । वह नाथ-सिद्धों के अनुसार पिण्ड-ब्रह्माण्ड की एकता में विश्वास करते हैं तथा प्रभु इच्छा को सर्वोपरि मानते हुए जीवन की गतिशीलता से जुड़े रहते हैं -

प्रभु मन्दिर यह देहरी
क्षिति की क्षमता, जल की समता
पावक दीपक जाग्रत ज्योतित निसि दिन प्रभु का नेहरी ।

पतन से उत्थान होता है, यह कवि की जीवनेच्छा का सबूत है । इसलिए विषाद का हलाहल और पौरुष का मधुकलश वह साथ-साथ लेकर चलता है । शैवागम द्वैत में भी अमृत-अद्वैत इसी भाव से मानता है, विषमता न हो तो समता का पता कैसे चले ?

हुई है फिर-फिर जग की सृष्टि, हुआ है फिर फिर जग का नाश,
कि तू दोनों स्थितियों से भिन्न तुझे हो फिर फिर यह विश्वास ।

कवि छूंछी परम्पराओं, पाखण्ड, थोथे आदर्श, कर्मकाण्ड, क्रूर राजनीति, स्वार्थपरता, खोखली नैतिकता जात-पांत तथा वर्ग वैषम्य के विरुद्ध विद्रोह करना है । हिन्दू-मुस्लिम दंगों से उसे कष्ट होता है । मधुशाला इसी चेतना की कविता है । मधुबाला में सूफियों का प्रेम दर्शन है । मधु के पात्र देह है, मधुबाला परमात्मा है, मधु आनंद है, जीव है पीने वाला । जड़ जगत् में एक शाश्वत आकर्षण है और वह है प्रेम । सुराही ऐन्द्रिक सुखेषणा है । जीवनानुराग जिजीविषा का ही प्रथम रूप है और यहां अस्तित्ववाद के सूत्र मिलने लगते हैं -

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लघुतम गुरुतम से संयोजित,
यह जान मुझे जीवन प्यारा ।
परमाणु कँपा जब करता है,
हिल उठता नभ मण्डल सारा ।

× × ×

हमें जग जीवन से अनुराग, हमें जगजीवन से विद्रोह,
इसे क्या समझेंगे वे लोग, जिन्हें सीमा बंधन का मोह ।

प्रेम और सौन्दर्य के साथ समकालीन परिवेश, युगीन विडम्बना, भ्रष्टाचार, दम्भ, दुश्चरित्र, शोषण, दमन, मानव सम्बन्धों का विखंडन तथा बदलते मानवीय सम्बन्धों का जिक्र कवि ने गीता के शब्दों में - तुम कच्छप से, सिमट रहो अपने अंगों में, और प्रतीक्षा करो कि दुनिया आ देखे तुमको अचरज से" का उपदेश करता है । यहाँ भी कवि आशावादी है -

सहसा उजियार हुआ, बेड़ा भी पार हुआ
पी का दीदार हुआ, मोद भरी नील परी पी को वरे ।

व्यक्ति मस्तक झुका कर दीनता से गिड़गिड़ाए, यह बच्चन को सहन नहीं । तूफानों में खड़ा अविचल वट वृक्ष उनका आदर्श है, और यह उनकी जीवनता का सबसे बड़ा सबूत है -

इसलिए इतिहास के तूफान में
वे रहे अक्षय
क्योंकि मिट्टी से सटे चिपके हुए हैं, बोलिये वट वृक्ष की जय ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चतुर्थ अध्याय

बच्चन के काव्य की कलात्मक पृष्ठभूमि

बच्चन सर्जक कवि हैं । प्राध्यापक, समीक्षक और सहृदय काव्य-अध्येता होने के कारण उनमें इन तीनों का संश्लिष्ट रूप भी मिलता है । बच्चन जी ने जब काव्य-रचना प्रारंभ की तब हिन्दी में छायावाद, प्रगतिवाद का जोर था । बच्चन जी 1930 के लगभग सत्याग्रह आन्दोलन में कूद पड़े । युनिवर्सिटी छोड़ दी, वह एम.ए. प्रथम वर्ष के छात्र थे । उन्होंने 1920 का आन्दोलन भी देखा था और उस समय फुटकल देशभक्ति की रचनाएं भी लिखीं थीं । "युनिवर्सिटी छोड़ देने पर दुनियां की वास्तविकता से टक्कर लेनी पड़ी । उसमें मेरे जीवन के सपने टूट गए । हृदय के अन्दर भावनाओं की तरंगे उठ रही थीं, चारों ओर दीवारें खड़ी थीं । निराशा घिरती आती थी पर आशा अपनी पराजय स्वीकार न करती थी । आकांक्षाएं संसार की सीमा के अन्दर घुट रही थीं, पर अपने विद्रोह को पुकार करके, व्यक्त करके । स्वप्नों के पर कट रहे थे, लेकिन उन्हें फिर से फैलाने की अभिलाषा तो बाकी बची हुई थी । ऐसे समय में मेरे भावों और विचारों में जो प्रथम उथल-पुथल हुई थी उसमें मुझे उमर खैयाम की रुबाइयों में अपने प्राणों की प्रतिध्वनि मिली । रुबाई पढ़ता तो ऐसा लगता जैसे यह मेरे लिए ही लिखी गई है ।"[1] बच्चन जी के इस आत्म कथन से ज्ञात होता है कि संघर्ष के अभाव की पूर्ति के रूप में ही स्वच्छन्दतावादी वृत्ति का जन्म उनकी कविता में हुआ । प्रायड जिस अतृप्ति की पूर्ति का प्रभात कला को मानता है, उसी का प्रकारान्तर

---

1. बच्चन रचनावली भाग 6, पृ0 210.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से समर्थन बच्चन करते हैं । खैयाम की कविता के प्रति उनकी प्रतिक्रिया बहुत ही निजी थी । वास्तविकता से ऊपर उठकर कल्पना की मदिरा से शक्ति संचित कर उन्होंने अपने सपनों का संसार रचना शुरू किया । उनके जीवन में जो कुछ कुत्सित था, वह कविता के पारस को छूकर कुत्सित बन गया । बच्चन के आलोचकों ने इसे पलायन या Escape कहा है पर क्या यह सत्य के, कठोर यथार्थ के विरुद्ध मानसिक विद्रोह नहीं था ? कवि ने स्वयं इसे स्वप्न का विद्रोह कहा है । वह कहते हैं – " मैंने मदिरा नहीं पी, मैंने कविता पी और अगर कविता स्वयं जीवन से पलायन नहीं है तो मैं अपने आपको पलायनवादी कहने को तैयार नहीं हूँ । यदि मुझे इन्हीं दो सम्मतियों में से कि कविता जीवन से पलायन है अथवा उसके प्रति विद्रोह, एक के साथ अपनी सहमति प्रकट करनी हो तो मैं कहूंगा कि कविता जीवन के प्रति विद्रोह है – एक तीसरी अवस्था भी है कि कविता जीवन की तमीज़ है । संभवत: यह तीसरी अवस्था ही अधिक संतुलित है । आज का विद्रोही कल का तमीज़दार हो सकता है पर पलायनवादी फिर लौटने का नहीं । मैं जीवन से भागा कभी नहीं था, मैं कवित्व की शक्ति से सम्पन्न होकर उसका सामना करना चाहता था । कवित्व से उसकी अपूर्णता को पूर्ण करना चाहता था । कवित्व से उसकी कुत्सता को सुत्सता में परिणति करना चाहता था । अगर संसार की वास्तविकता से सहयोग करना ही जीवन की सफलता है तो दुनिया में काव्य और कला की कोई जरूरत नहीं है । संसार की वास्तविकता संसार की एकांगिता है, वह काव्य और कला के स्वप्नों से मिलकर पूर्ण होती है । इसी अर्थ में कवि निर्माता है, नहीं तो स्रष्टा ने अपनी सृष्टि में कहां जगह छोड़ रखी है जहां हमें एक तृण भी अपनी ओर से बनाकर रखने की गुंजाइश हो ? उन्हीं मन सपनों, उन्हीं आदर्शों और उन्हीं कल्पना-क्षणों के कारण एक ओर जहां कवि संसार का अधिक असन्तुष्ट प्राणी है, वहीं दूसरी ओर अधिक संतुष्ट जीव भी । एक ओर जहां वह संसार को अधिक अपूर्ण देखता है, वहीं दूसरी ओर वह उसे अधिक पूर्ण भी बना सकता है । कल्पना का संसार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अगर मनुष्य उस संसार की तुलना में न रखता तो यही संसार उसे स्वर्ग प्रतीत होता, और कल्पना के संसार से अगर वह उसे आलोकित न कर देता तो यही संसार उसे नरक लगता । इसी संसार को स्वर्ग और नरक समझने वाले दोनों ही कला और कवित्व से विहीन हैं । कला इसीलिए सक्रिय और शक्तिमान है कि वह संसार की कुत्सता को स्पष्ट भी करती है और तिरोहित भी ।"[1]

इससे स्पष्ट हुआ कि बच्चन मैथ्यू आर्नल्ड की तरह कविता को जीवन की व्याख्या मानते हैं । कलाकार की दुनियां अकेली नहीं हो सकती, उसकी दुनियां अपने से दूसरों के सम्बन्धों से शुरू होती और बनती है । कविता अभाव की पूर्ति है तथा अभाव को शिव के रूप में परिणत करती है । कविता में आकर्षण इसलिए है कि वह असमानता से उत्पन्न होती है । समानता में कोई आकर्षण नहीं । जीवन की व्याख्या होने से उसका जनजीवन से अधिक लगाव होता है जिजीविषा और निर्माण मानव स्वभाव के अपरिहार्य अंग हैं, ये गतिशील भी हैं । उनके पीछे छूटे हुए रूपों का नाम ही संसार है । कला के द्वारा जीवन मूल्यों का प्रचार होता है, वह स्थायी होता है । वह नसों में रक्त बनकर बैठ जाता है, आत्मा से सम्बन्ध स्थापित कर लेता है । प्रलोभनों से या दबाव से लिखी रचना समर्थ नहीं होती । प्रवास की डायरी।137 । में उन्होंने कहा भी है कि कला अपने से बेईमानी करने वाले को क्षमा नहीं करती यानी उसके लेखन को उपेक्षणीय बना देती है । जनजीवन से जुड़ने के कारण कविता का वास्तविक मूल्य ग्रेक्षणीयता है न कि अलंकरण । अतः बच्चन के काव्य में जितनी भाव प्रवणता है उतना अलंकरण के प्रति आग्रह नहीं ।

बसेरे से दूर में बच्चन ने अपनी साहित्यिक विचारधारा व्यक्त की है । लेखक समाज की उपज है । वह सामाजिक परिवर्तनों के साथ बदलता है । उन्होंने कहा भी है कि अर्थव्यवस्थाएं बदलती हैं तो समाज बदलता है, चिन्तन

---

1. रचनावली भाग 6, पृ0 211.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और अनुभव की प्रक्रियाएं बदलती हैं, साहित्यिक अभिव्यक्तियां बदलती हैं,[1] पर बदलाव का कार्य व्यक्ति करता है अत: व्यक्ति का अधिकार और उसकी निजता नहीं छीनी जा सकती । साहित्य क्योंकि प्रभावकारी असर छोड़ता है समाज पर इसलिए वह रंजन की अपेक्षा ज्ञानवर्धन तथा उपयोगिता के लिए भी काम आता है । बच्चन जी ने कहा भी है - पहले लोग साहित्य को पढ़े लिखे, शिक्षित-दीक्षित, शिष्ट सुसंस्कृत व्यक्ति का मनोविनोद भर समझते थे-- सृजन में भी आस्वादन में भी पर अब नए उसमें कुछ प्रभावकारी, उपयोगी, आकर्षक अथवा ज्ञान वर्धक होने की प्रत्याशा करते हैं । एक स्थिति से दूसरी स्थिति तक पहुँचने में साहित्य के सम्बन्ध में लोगों की धारणाओं में बड़ा परिवर्तन आया है ।[2]

साहित्यकार का सम्बन्ध समाज से ही स्थापित होकर पूर्ण नहीं होता क्योंकि दोनों में थोड़ा सा अन्तर होता है । साहित्यकार वर्तमान से ही जुड़ा नहीं होता, अतीत और भविष्य भी उसकी दृष्टि में रहते हैं । इतिहास की प्रक्रिया से वह जुड़ा रहता है । इसलिये साहित्य में तथ्य की अपेक्षा तथ्य के परिणाम और प्रतिक्रियाएं रहती हैं । जीवन में सिर्फ जीवन ही नहीं अपूर्णताएं भी रहती हैं अत: साहित्य में जीवन की अपूर्ण कामनाएं, सपनें, वासनाएं होती हैं । साहित्य जीवन की इन्हीं अपूर्णताओं को पूर्ण करता है । दुनियाँ के साहित्य का इतिहास देखें तो स्वप्न और सत्य दोनों से उच्चकोटि का काव्य लिखा गया है । आकाश की तरफ भी देखकर, धरती की तरफ भी देखकर आकाशी उड़ान, और धरती उड़ान दोनों अतिशयताएं हैं । आदर्श स्थिति यह है कि गड़ा रहे जमीन में, उठा रहे आसमान में फरहरे या मीनार के समान ।[3]

जहां तक भाषा और कलात्मक अभिव्यक्ति का प्रश्न है बच्चन छायावादी या द्विवेदी युगीन तत्सम-बहुला हिन्दी के कवि नहीं हैं । पंत और कीट्स उनके प्रिय कवि रहे हैं पर पंत की तरह प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण के लिए उन्हें

---

1. टूटी छूटी कड़ियाँ, पृ० 51.
2. वही, पृ० 50.
3. बसेरे से दूर , पृ० 251.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहाड़ों-सागरों में नहीं घूमना- तैरना पड़ा। कवि का कथन है कि मेरा बाल्यकाल शहर की संकरी गलियों में बीता। प्रकृति का निरीक्षण मैंने नहीं किया, सिवा इसके कि ऊपर आसमान है जहां रात को तारे निकलते हैं और उसी में कहीं से बादल आ जाते हैं। सूर्योदय और सूर्यास्त मेरे लिए मकानों के पीछे से हुआ है। प्रकृति का वर्णन प्रकृति प्रेमपरक मेरी कविता में शायद कहीं भी नहीं है। मेरा बाल्यकाल प्रकृति के प्रभाव से अछूता ही रहा है, बाद को जो कुछ घूम फिर कर मैंने देखा है, उसने मेरे हृदय में घर नहीं किया। जब कभी प्रकृति के समीप गया भी हूं तो अपनी भावनाओं से इतना अति रंजित कि उसमें भी मुझे अपनी भावनाओं की ही छाया दिखाई दी है। प्रकृति के प्रतीक मैंने अवश्य ही काव्योपकरण के रूप में स्वीकार कर लिए हैं पर मेरा हृदय सदा भावना द्रवित रहा है अपने और दूसरों के भी सुख दुख, हर्ष विषाद से। मैंने तो अपने हृदय के अन्दर देखा है और लिखा है। दूसरों के हृदयों को देखने का मेरे पास एक ही साधन है और वह है मेरा अपना हृदय। मुझे यह कह कर संतोष होता है कि मैं भावनाओं का कवि हूं। जैसे मैं अनुभव करता हूं वैसा दूसरे भी करते होंगे, यही बल मुझे सदा रहा है। दूसरों ने अगर मेरे उद्गारों में अपनी भावनाओं को मुखरित पाया है तो उसका कारण यही है कि मैंने अपने हृदय को साधारण मानव हृदय का एक नमूना माना है।

मेरी शिक्षा उर्दू और फारसी से आरंभ हुई थी। एकबार स्वामी सत्यदेव परिव्राजक का व्याख्यान सुनकर मैंने उर्दू छोड़कर हिन्दी ले ली। उस समय बाबू शिवकुमार सिंह डिप्टी इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स थे। वे स्वयं हिन्दी के प्रेमी थे और काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापकों में से थे। उन्होंने मुझे प्रोत्साहन दिया। शायद उस दिन स्वामी जी के व्याख्यान में न गया होता तो आज यदि मैं कुछ लिखता होता तो उर्दू में। कभी सोचता हूं कि जीवन की आकस्मिक घटनाओं का भी कितना बड़ा प्रभाव होता है। मेरे पिता हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, फारसी और संस्कृत जानते थे। कविता के प्रेमी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

थे और इन भाषाओं के उच्च कोटि के कवियों के ग्रन्थ उनके पास थे। मैंने उर्दू की बहुत सी कविता स्वयं उनके मुख से सुनी थी। उर्दू में जो कहने की सफाई थी वह उन दिनों भी मुझे अच्छी लगती थी। नज़ीर अकबराबादी के दीवान से पिता जी ने मुझे उनकी कई कविताएं याद कराई थीं। स्तोत्र रत्नाकर से कई संस्कृत स्तोत्र। हिन्दी आन्दोलन के साथ वे सरस्वती भी मंगाने लगे थे। स्कूल के दिनों में बाबू मैथिलीशरण गुप्त और हरिऔध जी की कविताएं मैं विशेष रुचि से पढ़ता था। अपने पिता से प्राप्त भारत भारती की प्रति मेरे पास अब तक सुरक्षित है। संस्कृत भी मैंने हाईस्कूल तक पढ़ी। थोड़ी उर्दू फारसी, थोड़ी संस्कृत जानने का प्रभाव मेरी भाषा पर अच्छा पड़ा। उर्दू के शब्दों से मुझे कभी परहेज नहीं रहा। ज्यादा उर्दू न जानने के कारण मेरी कविता में कभी ऐसे शब्द नहीं आए जो हिन्दी की प्रकृति पर अत्याचार करते जान पड़े। उसी प्रकार संस्कृत का कम ज्ञान भी मेरे लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है। न तो मैं संस्कृत से ऐसा अनभिज्ञ हूं कि साधारण और प्रचलित तथा भावोद्बोधक और सुन्दर शब्दों का उपयोग न कर सकूं और न मैं इतनी संस्कृत जानता हूं कि ऐसे बड़े-बड़े शब्दों को लाकर रख दूं कि उनका अर्थ देखने के लिए कोश उठाना पड़े। मुझे एक बात पर बड़ा संतोष है कि आज तक मुझसे किसी ने यह नहीं कहा कि तुम्हारी कविता मेरी समझ में नहीं आती। कविता की भाषा के सम्बन्ध में मेरी सम्मति यह है कि उसे भाषा छोड़कर भाव बन जाना चाहिए।

अंग्रेजी के विद्वान होते हुए भी उन्होंने हिन्दी के माध्यम से अपनी बात हजारों पाठकों तक पहुंचाई। उन्होंने पद्मा सचदेव को दिए गये साक्षात्कार में कहा – "मैं यह श्रेय तो नहीं लेना चाहता हूं कि मैंने हिन्दी भाषा के लिये कुछ किया। आप कृपया मेरा नाम हिन्दी सेवियों में मत डालिये। मेरे अन्दर किसी तरह का उबाल था, भावनायें थीं, हिन्दी ने इतना ही क्या कम किया कि मुझे एक भाषा दी कि मैं उसके द्वारा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपने भाव व्यक्त कर सका । अगर हिन्दी ने यह भाषा मुझे न दी होती तो मैं भीतर-भीतर घुट जाता । मैंने हिन्दी की क्या सेवा की हिन्दी ने मेरी सेवा की । हिन्दी अपनी एक पंक्ति से जितना उपकार कर सकती है उतना आप लाख पंक्तियाँ लिखकर नहीं कर सकते । तुलसीदास और सूरदास कबीर और मीरा ने अपनी एक एक पंक्ति से क्या सम्पत्ति दी है, भाव सम्पत्ति दी है । आप जीवन भर कलम रगड़ कर उसका क्या नहीं अदा कर सकते ।"[1]

बच्चन की कविता का लक्ष्य है जनमानस तक पैठना, जब उनसे पद्मा सचदेव ने कहा - आपकी इतनी सरल भाषा सुनकर एक सवाल मन में और उठ रहा है कि कायस्थों के घरों में बच्चन से उर्दू पढ़ाई जाती थी । घर की स्त्रियाँ भी उर्दू जानती थीं । तो क्या इसी वजह से आपकी भाषा इतनी सरल है कि जन साधारण समझ लेते हैं । कुछ एक हिन्दी के कवि इतनी कठिन भाषा लिखते हैं, बड़े पांडित्य की भाषा वह अवश्य होती है लेकिन समझ वह किसी को नहीं आती है । तो बच्चन ने कहा- "लिखने का जो सारा मतलब है वह केवल यही तो है कि शब्द के माध्यम से अपने को दूसरे तक पहुंचाना । यानी कविता जो है वह शब्द की कला है । और अगर आपके शब्द आपकी बातों को दूसरे तक नहीं पहुंचाते तो उनका अर्थ क्या हुआ ? शब्द इस वास्ते तो नहीं है कि आप अपना पाण्डित्य दिखलाइये । पाण्डित्य दिखाने के लिये तो और भी माध्यम हो सकते हैं । आप वेदान्त लिखिये, शास्त्र लिखिये, दर्शन लिखिये, नीति लिखिये, राजनीति लिखिये, लेकिन जहां आप अपने हृदय की बात दूसरों से कहना चाहते हैं वहां तो आपको चाहिये कि देखें दूसरे के हृदय का शब्द संसार कैसा है ? तुलसीदास तो बहुत बढ़िया संस्कृत जानते थे और महा पण्डित थे । विनय पत्रिका के कुछ पद आप पढ़िये तो आप आश्चर्य चकित रह जायेंगे कि यह आदमी इतनी संस्कृत जानता था, संस्कृत था क्यों उतने भाषा में

---

1. बच्चन रचनावली भाग 9, पृ0 73.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लिखा ? क्योंकि वह जानता था कि हमने अपनी बात किससे कहनी है । किन्हें इसकी जरूरत है ? इस वास्ते सरल भाषा में लिखा । उनका मापदण्ड यह था-

"सरल कवित कीरति विमल
सोई आदरहिं सुजान,
सहज बैर बिसराय रिपु
जो सुनि करहिं बखान ।"[1]

अर्थात बच्चन की भाषा का आदर्श है सरलता । बच्चन सहज अभिव्यक्ति को महत्व देते हैं । इसीलिये भाषा की दृष्टि से कठिन शब्दों का प्रयोग, अप्रचलित प्रतीकों का प्रयोग या उलझे हुए बिम्बों का प्रयोग वह नहीं करते । उनकी शैली में लगातार परिवर्तन आता रहा है । इसलिये प्रसाद या पंत की तरह उनकी एक स्थिर शैली नहीं है । इस तथ्य का संकेत उन्होंने स्वयं किया है — "मधुशाला" और "मधुबाला" के बाद मेरे जीवन में बड़ी ट्रेजडी हो गई जिसकी वजह से मेरे काव्य का सारा वातावरण जो मैंने बनाया था वह सब का सब जैसे "शेटर" हो गया । और मुझे ऐसा लगा कि मेरे जीवन की अभिव्यक्तियाँ जिस भाषा में, जिस "सिम्बल" में अभी तक हो रहीं थी अब उसमें नहीं हो सकेंगी । कहीं पढ़ा था — 'Style is the man himself' यानी जब जीवन बदलता है तो शैली भी बदल जाती है । हमारे बहुत से कवि ऐसे हैं जिन्होंने एक शैली अपनाई और उसी में बराबर लिखते चले गये । लेकिन मेरी कविता सिर्फ दिमाग से नहीं लिखी गई मेरी कविता मेरी जिन्दगी के साथ चली है । और जैसे-जैसे मेरी जिंदगी में परिवर्तन होते चले गये, वैसे-वैसे मेरी शैली में भी परिवर्तन होता चला गया । "मधुकलश" तक आते-आते अगर आप "मधुकलश" की कविताएँ पढ़े तो आपको मालूम होगा कि मेरे खिलाफ भी एक बवन्डर उठा था उससे और जो मेरे

---

1. बच्चन रचनावली भाग 9, पृ0 80.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्यक्तिगत जीवन में ट्रेजडी हो गई थी उससे मेरी कविता बदल गई, मेरी शैली बदल गई । और करीब एक साल तक मैंने कुछ भी नहीं लिखा और जब मैंने लिखना शुरू किया तो "निशा निमंत्रण", "एकान्त संगीत" और आकुल अन्तर" के गीत आये जिनमें अवसाद भरा है । "मधुशाला" और "मधुबाला" इतनी पापुलर और लोकप्रिय हो गई थीं कि लोग मुझसे कहते थे कि भाई आप पहले ऐसी कविता क्यों नहीं लिखते थे ? मैं कहता था भाई मैं पहले जैसा आदमी नहीं रह गया हूं, मेरी जिंदगी बदल गई है, मेरी शैली बदल गई है । जिन शब्दों को मैंने इकट्ठा किया था वह सब टूट गये । उनको जो कुछ कहना था कह गये । अब मुझे दूसरे शब्द, दूसरी फिजियोलोजी दूसरी शब्द योजना बनानी है ।"[1]

बच्चन के जीवन का जो मनोहर काल तेजी के सम्पर्क से आया उसमें उन्हें एक स्वस्थ जीवन दर्शन मिला । "मिलन यामिनी", "सतरंगिनी" और "प्रणय पत्रिका" के गीत इसी समय लिखे गये । तुलसी ने "विनय पत्रिका" लिखकर वैराग्य के जिस दर्शन की कल्पना की बच्चन ने "प्रणय पत्रिका" लिखकर अनुराग की एक फिलोसफी बनाई । बच्चन इसे कमजोरी मानते हैं । उन्होंने कहा — " यह हिन्दुस्तान की कुछ कमजोरी है, यहां का आदमी-शायद उस पर अपने ट्रेडीशन का इतना जोर पड़ता है कि वह दार्शनिक बन जाता है । वह दर्शन बनाने लगता है और वह जो कमजोरी है वह मुझमें भी आ गई थी लेकिन पता नहीं क्यों यह दर्शन पूरा नहीं हो सका, यह अच्छा हुआ ।"[2]

बच्चन जिन तीनों रचनाएं लिख रहे थे सीधे राजनीतिक संघर्ष से उनका और उनके समकालीन कवियों का कोई सम्बन्ध नहीं था । इसीलिये लोग छायावादी कविता और उनकी कविता को जन जीवन से कटा हुआ मानते हैं पर बच्चन जी ने इसका प्रतिवाद करते हुए कहा है — "तब का

---

1. रचनावली 9, पृ० 108.
2. वही, पृ० 109.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साहित्य लोक संघर्ष से कटा हुआ नहीं था । लेकिन इस प्रकार का साहित्य चिरस्थायी नहीं होता । 1920 से लेकर 47 तक जो बहुत सा साहित्य संघर्ष के लिये लिखा गया वह विलुप्त हो गया, हो जाना चाहिये । उसने अपने युग का काम किया और भुला दियागया - क्योंकि इस प्रकार का साहित्य सामयिक हलचलों से प्रेरणा लेकर लिखा जाता है । उस समय का नाम पूरा करने के बाद यह साहित्य विलुप्त कर दिया जाता है । अगर इसका लेखा जोखा किया जा सकता कि 20 से लेकर 47 तक इस देश की आजादी के संघर्ष के लिये कितनी कवितायें लिखीं गईं तो कितना भी छायावादी साहित्य है वह उसके पासंग के बराबर भी न आता । लेकिन इस प्रकार का साहित्य चिरस्थायी नहीं होता । मैं जानता हूं कि न जाने कितने कवियों ने अपनी वाणी से उस संघर्ष को बल दिया पर आज उस संघर्ष की क्या महत्ता रह गई है । एक बात मैं और आपको बताना चाहता हूं छायावादी साहित्य जिसको कहा जाता है उसके अन्दर भी राष्ट्र-जीवन की पुकारें मौजूद हैं । लेकिन वह ऐसे सूक्ष्म रूप में है कि आज उनको प्रचार या प्रोपैगेण्डा नहीं कह सकते । उसमें जेल, हथकड़ी, नारेबाजी, ऐसी बातें तो नहीं होंगी, लेकिन उसके अन्दर जो राष्ट्रीयता के सूक्ष्म तत्व हैं वह आज भी मौजूद हैं । पंत जी की एक कविता है— उसी राष्ट्रीयता पर "प्रथम रश्मि का आना, रंगिणि तुने कैसे पहचाना कहां-कहां है बाल विहंगिनी पाया तुने यह गाना"-- गांधी की आवाज है यह प्रथम रश्मि आजादी की रश्मि है पर नारेबाजी की तरह नहीं कही गई, जो उस तरह से कही गई है वह आज भुला दी गई है ।"[1]

बच्चन भावना के कवि हैं उन्होंने कविता को जिंदा रखने के लिये अपना आधार छोड़े बगैर अपना प्रभाव ग्रहण किया । अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू और हिन्दी की बोलियों के साहित्य से वे कविता को अभ्यास साध्य मानते हैं । सहज अभिव्यक्ति उनकी दृष्टि में हमेशा कविता नहीं होती । कुत्ते का

---

1. रचनावली - 9, पृ0 118.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आँकना भी सहज है । मगर वह कला नहीं है । सहज कविता में वचन-प्रवीणता या कृत्रिम कला नहीं होती । उदाहरण के लिये बच्चन का कहना है कि पंत की कविता वचन-प्रवीणता की कविता है उन्हें डिक्शन डिक्शनरी से मिला है । डिक्शनरी को सिरहाने रखकर सोते हैं । जीवन को उन्होंने सिमटे से छुआ है । अंगारा उन्होंने हथेली पर नहीं रखा । शब्दावली उन्हें जिंदगी से नहीं किताब से मिली है । मैं शब्दावली जिंदगी से लेता हूं । सरल होना साधना है ।"[1]

कविता में विचार एवम् भावना की हमेशा उन्होंने सत्ता स्वीकार की है । कभी भावना प्रबल होती है तो कभी विचार कविता पर हावी हो जाता है । भावना में बहना नदी में बहने की तरह है और बुद्धि का अनुसरण पहाड़ पर चढ़ने जैसा है । भावना विश्वास माँगती है और बुद्धि तर्कता । काव्यानन्द की अनुभूति की तीव्रता या कविता की गहराई इस बात पर भी निर्भर होती है कि अभिव्यक्ति किस स्तर पर काम कर रही है । वह मात्र सूचनात्मक है या सम्प्रेषणा की बुद्धियों को लेकर चल रही है अथवा पाठक श्रोता में कवि का अहसास जगा रही है । अभिव्यक्ति महान कविता में evocative स्तर को छूती है । इसके लिये पाठक श्रोता का कवि के स्तर पर अनुभव होना जरूरी है। बच्चन का भावोल्लास जितना ऊंचा उठ सकता था "मधुशाला" में उठा और अवसाद जितना नीचे जा सकता था "निशा निमन्त्रण" में गया । इन दोनों कृतियों में किसी विधा है । इसलिये लम्बे अर्से तक जीवित रहेंगी ।

बच्चन ने सृजन को जीने का अंग माना है । सृजन के बिना कवि का जीवन दूभर हो जाता है । कविता जिन्दगी की जरूरत है । बच्चन की कविता ऐसी ही कविता है । अर्थात जीवन की ही कविता है ।

---

1. रचनावली 9, पृ0 141.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भाव संवेदना –

कवि कविता में संवेदनाओं को व्यक्त करता है । इन संवेदनाओं को वह "बिम्बों" में उपस्थापित करता है । मनोवैज्ञानिक शब्दावली में बिम्ब को "प्रतिमा" कहते हैं । "बिम्ब" एक विशिष्ट पैटर्न में व्यवस्थित किये जाते हैं । इन बिम्बों को ऐन्द्रीय संवेदनाओं का मूर्तिकरण कहते हैं । अत: मूर्तिकरण में "प्रतिमा" निर्माण का महत्वपूर्ण स्थान होता है । "बिम्ब" अंग्रेजी के "इमेज" शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है । आज की आलोचना में इस शब्द का भूरिश: प्रयोग हो रहा है । फिर भी काफी हद तक यह अब भी अस्पष्ट बना हुआ है । लेविस बिम्ब को शब्द-निर्मित चित्र मानता है । अनेक बिम्बों द्वारा निर्मित कविता तो अपने आपमें बिम्ब है ही । इसकी परिभाषाएं भी एक नहीं अनेक हैं– "यह ऐंद्रिय माध्यम द्वारा आध्यात्मिक अथवा बौद्धिक तत्वों तक पहुंचने का मार्ग है", "बिम्ब किसी अमूर्त विचार अथवा भावना की पुन निर्मिति है", "बिम्ब पदार्थों के आन्तरिक सादृश्य की अभिव्यक्ति है । "जाहिर है कि इनमें से एक परिभाषा भी बिम्ब को उसकी संपूर्णता में व्याख्यायित नहीं कर पाती ।

सन् 1908 में ह्यूमे और फ्लिन्ट ने बिम्बवाद पर एक घोषणापत्र प्रकाशित किया । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने फ्लिन्ट को ही इसका प्रवर्तक माना है । 1912 से 17 तक लंदन और अमेरिका में बिम्बवाद का एक आन्दोलन ही चल पड़ा । इसके अगुआ थे – एजरा पाउंड । इस आन्दोलन में ह्यूलिटल, डी॰एच॰लारेन्स, लोवेल, कैरोल विलियम्स, रिचार्ड एलिंगटन आदि भी शामिल थे ।

हिन्दी समीक्षा में इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य शुक्ल ने "भाव या मनोविकार" निबन्ध में किया । अपने कुछ निबन्धों में शुक्ल ने इस प्रत्यय को अपने ढंग से पद्धतिबद्ध करने की सार्थक कोशिश की ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुक्ल जी के मतानुसार बिम्ब योजना "विभाव" के अन्तर्गत होती है। चित्रण उसका मुख्य धर्म है। इसकी दूसरी विशेषताएं संश्लिष्ट रूप, विधान बिम्ब, व्यक्ति या विशेष का होना सामान्य या जाति का नहीं। कविता में बिम्ब ग्रहण होता है, अर्थ ग्रहण नहीं। उन्होंने लिखा है काव्य का काम कल्पना में बिम्ब या मूर्त भावना उपस्थित करना है। बुद्धि के सामने कोई विचार लाना नहीं। तात्पर्य यह कि बिम्ब का ऐन्द्रिय संश्लिष्ट होना जरूरी है क्योंकि इसके अभाव में उसका रचनात्मक होना सम्भव नहीं है। इस प्रकार किसी भाव, विचार, वस्तु, घटना आदि का ऐन्द्रिय संश्लेष काल्पनिक प्रतिमा" निर्माण काव्य बिम्ब कहलाता है। "प्रतिमा" निर्माण की मूल भावना को ध्यान में रखकर ही शुक्ल जी इसे"रूप विधान" कहते हैं। यह "रूप विधान" तीन प्रकार का है - 1. प्रत्यक्ष रूप विधान, 2. स्मृति रूप विधान और 3. कल्पित रूप विधान प्रत्यक्ष और स्मृति, कल्पित रूप विधान को जन्म देते हैं। इससे स्पष्ट है कि बिम्ब का सम्बन्ध केवल नवीन संश्लेष अर्थवत्ता से ही न होकर पूरी काव्य संरचना से होता है।[1]

"बिम्बों" का वर्गीकरण अनेक प्रकार से किया है। किन्तु ऐन्द्रिय संश्लिष्टता और भाव तरंग की दृष्टि से बिम्बों का वर्गीकरण दो आधार से हो सकता है। ऐन्द्रिय और मानस। ऐन्द्रिय बिम्ब शब्द स्पर्श, रूप, रस, गंध पांच प्रकार के होते हैं। और मानस रति, वात्सल्य, उत्साह, हास्य, शोक, घृणा, निर्वेद, भय, क्रोध आदि नो प्रकार के।

बच्चन के काव्य में जहां ऐन्द्रिक संवेदना मिलती है वहां शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध प्रतिमाओं का सृजन हुआ है तथा जहां भाव या बौद्धिक संवेदना का चित्रण हुआ है वहां मानस या भाव मूर्ति विधान का उल्लेख मिलता है।

---

1. आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द, पृ0 70.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भाव मूर्ति विधान —

बच्चन का काव्य, जीवन उल्लास से प्रारम्भ होता है । "मधुशाला" में उनका यह उल्लास असाधारण रूप से फूट पड़ता है । वे कहते हैं —

"हाथों में आने से पहले, नाज़ दिखायेगा प्याला,
अधरों पर आने से पहले, अदा दिखायेगी हाला,
बहुतेरे इन्कार करेगा साकी आने से पहले,
पर पिक न धारा जाना, पहले मान करेगी मधुशाला ।"[1]

इस रचना में नीरस और अभावपूर्ण जीवन में रस और भरापूरा पन देखने का प्रयत्न है । उमर खैयाम का क्षणिक जीवनवाद और उसमें हर क्षण को पूरे उत्साह के साथ भोग लेने की मस्ती है । इसीलिये बच्चन दर्द को नशा और पीड़ा को आनन्द कहते हैं । जीवन में जो थोड़ा सा रस है उसे पूरी ताज़गी और उमंग के साथ पीते चलना ही मधुशाला का आदर्श है । वे कहते हैं —

"लाल सुरा की धार लपट-सी कह न इसे देना ज्वाला,
फेनिल मदिरा है मत इसको कह देना उर का छाला,
दर्द नशा है इस मदिरा का विगत स्मृतियां साकी है,
पीड़ा में आनन्द जिसे हो, आये मेरी मधुशाला,[2]
"आज मिला अवसर, तब फिर क्यों मैं न छकूं जी भर हाला
आज मिला मौका, तब फिर क्यों ढाल न लूं जी भर प्याला
छेड़छाड़ अपने साकी से आज न क्यों जी भर कर लूं,
एकबार ही तो मिलती है जीवन की यह मधुशाला,"[3]

---

1. रचनावली - 1, पृ० 46.
2. वही, पृ० 47.
3. वही, पृ० 53.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस जीवन दर्शन से कष्टों का पथ भी तय किया जा सकेगा और जीवन को भी अपनी पूरी सार्थकता के साथ जिया जा सकेगा । जीवन की सार्थकता उसकी लम्बाई या छोटाई में न होकर उसे पूर्ण रूप से भोग लेने में ही है –

"छोटे-से जीवन में कितना प्यार करूं, पी लूं, हाला,
आने के ही साथ जगत में कहलाया जाने वाला,
स्वागत के ही साथ विदा की होती देखी तैयारी,
बन्द लगी होने खुलते ही मेरी जीवन-मधुशाला ।"[1]

"विश्व, तुम्हारे विषमय जीवन में ला पायेगी हाला,
यदि थोड़ी-सी भी यह मेरी मदमाती साकीबाला,
शून्य तुम्हारी घड़ियाँ कुछ भी यदि यह गुंजित कर पायी,
जन्म सफल समझेगी अपना धन्य मेरी मधुशाला ।"[2]

यौवन की उद्दाम तरंगों की सहज सरल वाणी में उन्होंने मधुबाला में प्रस्तुत किया । बच्चन की विशेषता यह है कि खैयाम का निराशावादी स्वर उनमें नहीं है । उनने जीवन के आशावादी सुखद एवम् रचनात्मक पक्ष को उभारा है । इनमें भी जीवन को उल्लास के साथ जीने की उमंग है। मधुबाला के माध्यम से कवि कहते हैं –

"मैं इस आंगन की आकर्षण,
मधु से सिंचित मेरी तितवन,
मेरी वाणी में मधु के कण,
मदमत्त बनाया मैं करती,
यश लूटा करती मधुबाला ।
मैं मधुशाला की मधुबाला" ।

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 54.
2. वही, पृ0 64.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"मुख को छूकर मधु घट छलके
प्याले मधु पीने को ललके
मादक आभा मन कर पलकें,
अंगड़ाई लेकर उठ बैठी
चिरसुप्त विस्मृर्ति मधुशाला"[1]

नश्वर जीवन में भी अमरता पाने की आशा कवि के सुखात्मवादी दृष्टिकोण का समर्थन करती है । तभी वह कहते हैं –

"है ज्ञात हमें नश्वर जीवन,
नश्वर इस जगती का कण-कण,
है किन्तु अमरता की आशा,
करती रहती उर में क्रन्दन,
नश्वरता और अमरता का
अब द्वैत मिटाने हम आये ।"[2]

कहना न होगा यह सुख अल्पायु होने के कारण ही सर्वाधिक सम्मोहक होता है । जीवन नश्वर न हो तो सुख को भोगने की स्पृहा कहां उत्पन्न हो ? इसलिये कवि "सुराही" कविता के माध्यम से अपने भाव व्यक्त करते हैं –

मैं कुम्भकार की चाक चढ़ी, फिर मेरे तन पर बेल कढ़ी
तब गई चिता पर मैं रक्खी, हर ओर अग्नि की ज्वाल बढ़ी
जल चिता गई हो राख-राख, मैं मिट्टी, किन्तु रही बाकी,
मैं एक सुराही मदिरा की
मैं मृत्यु विजय करके आयी,
मैंने दैवी महिमा पायी
मानव के नीरस जीवन में

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 82.
2. वहीं, पृ0 88.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैं अमृत-सा मधुरस लायी
इस गुण के कारण ही तो मैं
बन प्राण गयी मधुशाला की
मैं एक सुराही हाला की ।"[1]

कवि जीवन की नश्वरता में इस बात के प्रति भी सावधान है कि उसे जीवन एक बार संयोग से मिला है यदि उसे वह ठीक तरह नहीं जी सका तो उसका जन्म होना व्यर्थ हो जायेगा । सुख की इच्छा मनुष्य को पुरुषार्थी बनाती है इसलिये कवि बाहरी दर्शन की अपेक्षा अपने जीवन के बारे में अधिक सोचता है । "प्याला" शीर्षक कविता इसी जीवन-दर्शन को स्पष्ट करती है—

"मिट्टी का तन, मस्ती का मन, क्षण भर जीवन-मेरा परिचय,
पल में मृत पीने वाले के कर से गिर भू पर आऊंगा ,
जिस मिट्टी से था मैं निर्मित, उस मिट्टी में मिल जाऊंगा ।
अधिकार नहीं जिन बातों पर, उन बातों की चिन्ता करके,
अब तक जग ने क्या पाया है मैं कर वर्षा, क्या पाऊंगा ?
मुझको अपना भी जन्म-निधन है सृष्टि प्रथम है, अन्तिम लय
मिट्टी का तन, मस्ती का मन, क्षण भर जीवन-मेरा परिचय ।[1]

श्री पंत जी ने कविवर बच्चन के इस दौरान के काव्य के बारे में ठीक ही लिखा है, "बच्चन के अधिकांश काव्य पट में उनकी आत्मकथा के ही बिखरे पन्ने मिलेंगे जिनमें सम्भवत: घटनायें तो अपने स्थूल यथार्थ के कारण प्रच्छन्न हो गई हैं किन्तु तज्जनित संघर्ष, ऊहा-पोह, घात-प्रतिघात तथा सुख-दुख के संवेदनों के मधु तिक्त रस का स्वाद पाठकों के हृदय को स्पर्श कर उनकी सांसों में बहने लगता है और कुछ समय के लिये उनकी अनुभूति का अंग बन जाता है । कवि के उक्त तीन काव्यों में उसके सहज, सरल, प्रेमसिक्त, तरुण प्रेमिका, सम्मोहक हृदय लोक प्रस्तुत हुआ है । बच्चन के मधु काव्य का

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 57.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अध्ययन करना शोभा पाक की स्वर गंगा में अवगाहन करना है, जो देह मन प्राणों में नवीन स्फूर्ति, प्रेरणा तथा आनन्द चैतन्य भर देता है ।"[1]

इस रचनाकाल में चिरकालिक जिजीविषा अपनी सम्मोहक शैली के साथ सामने आई है । कवि को चारों ओर जीवन और जीवन की पुकार सुनाई पड़ती है । इसीलिये वह कहता है –

है आज भरा जीवन मुझ में, है आज भरी मेरी गागर ।
जल में, थल में, नभ मण्डल में, है जीवन की धारा बहती,
संसृति के कूल-किनारों को प्रति क्षण सिंचित करती रहती,
इस धारा के तट पर ही है मेरी यह सुन्दर-सी बस्ती–
सुन्दर-सी नगरी जिसको है सब दुनिया मधुशाला कहती;
मैं हूं इस नगरी की रानी, इसकी देवी, इसकी प्रतिमा,
इससे मेरा सम्बन्ध अटल, इससे मेरा सम्बन्ध अमर ।[2]

कवि के इस उल्लास और भोगवादी दर्शन की रूढ़िवादियों में बड़ी प्रतिक्रिया हुई । यह विद्रोह बूढ़ी परम्पराओं और जर्जर रूढ़ियों के प्रति है । इसीलिये कवि कहता है –

"प्राण प्राणों से लहें मिल, किस तरह दीवार है तन,
काल है घड़ियां न गिनता, बेड़ियों का शब्द छन-छन,
पेट-लोकाचार प्रहरी ताकते हर चाल मेरी,
बद्ध इस वातावरण में क्या करे अभिलाष यौवन ।
अन्धतम कक्षा यहां, मेरी बनी बंदी पड़ी है,
विश्व क्रीड़ा स्थल नहीं रे, विश्व कारागार मेरा ।[3]

और फिर पुरानी पीढ़ी को ललकारते हुए कवि कहता है –

---

1. अभिनव सोपान भूमिका, पृ0 22.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 125.
3. रचनावली भाग 1, पृ0 128.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"कल छिड़ी, होगी खत्म कल प्रेम की मेरी कहानी,
कौन हूं मैं, जो विश्व में रहेगी मेरी निशानी ?
क्या किया मैंने, नहीं जो कर चुका संसार अब तक ?
वृद्ध जग को क्यों अखरती है क्षणिक मेरी जवानी ?
मैं छिपाना जानता तो जग मुझे साधु समझता,
शत्रु मेरा बन गया है छल-रहित व्यवहार मेरा ।"[1]

बच्चन की कविता काम और क्षुधा की कविता है । सौन्दर्य को पंत की तरह देखने की नहीं छूने की वस्तु मानते हैं । इसीलिये वह कहते हैं—

"मूढ़ों, मैंने अब तक उनको कभी नहीं सुषमा समझा ,
जिनके निकट पहुंचते ही आनन्द नहीं मैंने पाया "

और अपनी काम की क्षुधा को कवि ने कभी छिपाया नहीं और उसने स्पष्ट कहा --

"वासना जब तीव्रतम थी बन गया था संयमी मैं,
है रही मेरी क्षुधा ही सर्वदा आहार मेरा "।[1]

कवि अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिये साहस के साथ आगे बढ़ता जाता है निराशाओं से हार मानने वाला नहीं है । वह साहस की संवेदना को जगाता है । यही बच्चन के काव्य की विशेषता है । एक चित्र देखिये —

"आज है अस्थिर गगन, अस्थिर सरित-ताल हो रहा है,
किन्तु अस्थिर हो न, मांझी धैर्य अपना खो रहा है,
झेलने को इस बड़े तूफान के झोंके-झकोरे
मानवी सम्पूर्ण साहस वक्ष बीच संजो रहा है "[2]

अथवा

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 129.
2. वही, पृ0 140.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बन्द था, बाहर हुआ हूँ वक्ष गिरि का चीर कर मैं,
रुद्ध था, द्रुत गति हुआ अज्ञात पथ पर पाँव धर मैं,
मौन था मुखरित हुआ स्वच्छन्दता के गीत गाता,
विश्व के कारागृहों की भित्तियों से हो निडर मैं ।"[1]

बच्चन के काव्य में विद्रोह की भावना या साहसिकता की संवेदना भी दिखाई देती है । विद्रोह, आक्रोश, निषेध, विरोध की मनोवृत्ति स्थान-स्थान पर उनकी कविताओं में दिखाई पड़ती है । जब जब उनका विरोध हुआ, तब-तब उसने समाज के मिथ्या आदर्शों या जर्जरित मान्यताओं पर प्रहार किया । उसने कहा –

जग दे मुझे कलंक, उसे जैसा भाये
लेकिन मैं तो बेरोक सफर में जीवन के
इस एक ओर पहलू से होकर निकल गया

एकान्त संगीत में भी उसने इसी तरह की घोषणा की –

"क्षतशरीर मगर मन शरीर नहीं ।
बनकर अदृश्य मेरा दुश्मन,
लड़ लेने की मेरी हवसें मेरे उर के ही बीच रहीं
चोटों से घबराऊंगा कब,
दुनिया ने भी जाना है जब,

बंगाल का काल तो विद्रोह के मानवीय रूप को प्रकट करता है । वह एकाएक कह उठता है –

"योजित कर दो दिग्-दिगन्त में
भूख नहीं है भीख मांगती

---

1. रचनावली भाग 1, पृ 138.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 238.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भूख नहीं है भीख मांगती
भीख मांगते केवल कायर, केवल कुजटिल"[1]

चार खेमे चौसठ खूंटे में कवि ने युग जीवन के संघर्ष को व्यक्त किया है। उसका विद्रोह स्वर बोल उठता है –

"देश के अनपढ़, गवांर, गरीब लोगों।
आज चौदह साल से आजाद हो तुम,
देश के चौदह वर्ष कम नहीं होते,
और इतना सोचने की तो तुम्हें स्वाधीनता है ही
कि अपने राम ने उस दिन किया क्या ?
देश में चारों तरफ देखो, बताओ"[2]

"शहीद की मां" "स्वाध्याय कक्ष में बसन्त", "कलश आदि" "नीव का पत्थर", "पानी भरा मोती", "आग भरा आदमी", "विभाजितों के प्रति" और "बाढ़ पीड़ित शिविर" उनकी विद्रोहात्मक रचनायें हैं।

नियतिवादी दृष्टिकोण –

उमर खैयाम का अंग्रेजी अनुवाद फिट्जजेरल्ड ने प्रस्तुत किया। योरोप के 19वीं शती के युवक एवम् युवतियों के निराश जीवन को जैसे अभिव्यक्ति मिल गई। इसका पहला स्वर था प्रयत्न एवम् पुरुषार्थ का विरोध, भाग्य में जो लिखा है अटल है। इससे अधिक मनुष्य को नहीं मिल सकता। बच्चन जी लिखते हैं –

"लिखी भाग्य में जितनी बस, उतनी ही पायेगा हाला,
लिखा भाग्य में जैसा बस, वैसा ही पायेगा प्याला,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 426.
2. वही, पृ0 528.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लाख पटक तू हाथ पाँव, पर इससे कब कुछ होने का,
लिखी भाग्य में तेरे जो बस वही मिलेगी मधुशाला ।[1]

नियति जो कराती है मनुष्य बस वही करता चलता है । बच्चन कहते हैं –

"जीवन में दोनों आते हैं मिट्टी के पल, सोने के क्षण,
जीवन से दोनों जाते हैं पाने के पल, खोने के क्षण,
हम जिस क्षण में जो करते हैं हम बाध्य वही हैं करने को,
हंसने के क्षण पाकर हंसते, रोते हैं पा रोने के क्षण,"[2]

नियति के सामने मनुष्य दुर्बल और लाचार है । उसका अपना अस्तित्व नहीं के बराबर है – वह कहता है –

"मनुज के अधिकार कैसे !
हम यहाँ लाचार ऐसे,
कर नहीं इनकार सकते, कर नहीं सकते वरण भी !
स्वप्न भी हम, जागरण भी ।"[3]

मनुष्य स्वप्नों का राजमहल बनाता है और काल के सामने वह धराशायी हो जाता है । वह कहते हैं –

"मुझ से चाँद कहा करता है –
चोट कड़ी है काल प्रबल की,
उसकी मुस्कानों से हलकी
राजमहल कितने सपनों का पल में नित्य ढहा करता है ।"[4]

संघर्ष में मनुष्य टूट जाता है । उसके उल्लास का अन्त हो जाता है तब वह अनुभव करता है –

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 55.
2. वही, पृ0 127.
3. वही, पृ0 168.
4. वही, पृ0 174.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"कितना अकेला आज मैं !
सौंदर्य में टूटा हुआ,
दुर्भाग्य से छूटा हुआ,
परिवार से छूटा हुआ कितना अकेला आज मैं ।"[1]

और तभी कवि घोषणा करता है –

"जीवन में शोक विषाद रहा ।
कुछ टूटे सपनों की बस्ती,
मिटने वाली यह भी हस्ती,
अवसाद बसा जिस खंडहर में, क्या उसमें ही उन्माद रहा ।
यह खंडहर ही था रंगमहल,
जिसमें थी मादक चहल पहल,
लगता है यह खण्डहर जैसे पहले न कभी आबाद रहा ।"[2]

इसी मनोदशा से कवि एक अज्ञात भय से आक्रान्त हो जाता है । और कह उठता है –

"देख रात है कितनी काली !
आज सितारे भी हैं सोये
बादल की चादर में छोये
एक बार भी नहीं उठाती घूंघट घन-अवगुण्ठन वाली ।[3]

या

रात-रात भर श्वान भूंकते ।
इस रव से निशि कितनी विह्वल,
बतला सकता हूं मैं केवल,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 257.
2. वही, पृ0 248.
3. वही, पृ0 176.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसी तरह मेरे उर में भी अनबुझ अरमान भाँकते ।"[1]

नियति का भार ढोते-ढोते कवि इतना बोझ से थक जाता है कि वह मरने के लिये तैयार हो जाता है । यद्यपि अतृप्ति के कारण वह मर भी नहीं सकता –

"मैं न दुख से मर सकूंगा ।
चाहता जो काम करना,
दूर है मुझ से सँवरना,
टूटते दम से विफल आहें महज में भर सकूंगा ।"[2]

हीनत्व और निस्सहायता –

नियतिवाद के कारण कवि में हीनत्व और निस्सहायता की भावना का उन्मेष हुआ । कवि ने कहा –

"व्यर्थ गया क्या जीवन मेरा ?
प्यासी आँखें, भूखी बाँहें,
अंग-अंग की अगणित चाहें,
और काल के गाल समाता जाता है प्रति क्षण तन मेरा ।"[3]

या

"मेरा तन भूखा, मन भूखा ।
इच्छा, सब सत्यों का दर्शन,
सपने भी छोड़ गये लोचन !
मेरे अपलक सूने नयनों में मेरा चंचल यौवन भूखा ।"[4]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 178.
2. वही, पृ० 250.
3. वही, पृ० 217.
4. वही, पृ० 216.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भय, निराशा करुणा, हीनत्व, घृणा और निस्सहायता के अद्भुत चित्र हैं। मिलन यामिनी में उद्दीपन, विभाव के साथ बड़े जीवित चित्र खींचे गये हैं। औतिक सौन्दर्य के चित्र भी मिलते हैं जैसे –

"तुम्हारे नील झील-से नैन, नीर निर्झर से लहरे केश।
तुम्हारे तन का रेखाकार, वही कमनीय, कलामय हाथ
कि जिसने रुचिर तुम्हारा देश रचा गिरि-ताल-माल के साथ,
करों में लतरों का लचकाव, करतलों में फूलों का वास,
. . . . . .
प्रकृति में तुम बिम्बित बहुं ओर कि तुममें बिम्बित प्रकृति अशेष।"[1]

इसी तरह एक और चित्र देखिये –

"रात आधी, खींच कर मेरी हथेली
एक अंगुली से लिखा था "प्यार" तुमने"।
फासला था कुछ हमारे बिस्तरों में
और चारों ओर दुनिया सो रही थी,
तारिकायें ही गगन की जानती हैं
जो दशा दिल की तुम्हारे हो रही थी
मैं तुम्हारे पास होकर दूर तुमसे
अधजगा-सा और अधसोया हुआ था।[2]

एक और मोहक मिलन का चित्र देखिये –

प्राण, संध्या झुक गई गिरि, तरु पर,
उठ रहा है क्षितिज के उर सिंदूरी घाँट,
मेरा प्यार पहली बार लो तुम।

---

1. रचनावली भाग 2, पृ० 116.
2. वही, पृ 110.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हीनत्व की भावना इन पंक्तियों में भी व्यक्त हुई है –

"मैं जीवन में कुछ कर न सका ।
जग में अंधियाला छाया था,
मैं ज्वाला लेकर आया था,
मैंने जल कर दी आयु बिता, पर जग का तम हर न सका ।[1]

कवि में अकेला पन और नितसहायता की भावना भी घर कर गई है तभी वह कहता है –

"मुझसे मिलने से कौन बिजन,
मैं किसके हित होऊँ बंधन,
यह प्रश्न शिथिल करता पद को
भरता उर में विह्वलता है ।[2]

या

जग के विस्तृत अंधकार में
जीवन के शत-शत विचार में
हमें छोड़कर चली गई जो
तिन की मौन संगिनी छाया

कवि इन व्याकुल कर देने वाली नितसहायता में एक व्याकुल ममता की भावना से भर जाता है और वह कह उठता है –

"विश्व को उपहार मेरा !
कवित, आ जा व्यक्ति आ जा ।
दलित आ जा ,पतित, आ जा ।
स्वागतम् किसको न करता स्वप्न का संसार मेरा ।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 223.
2. वही, पृ0 161.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ले तृषित मरू, होंठ तेरे,
लोचनों का नीर मेरे ।
मिल न पाया प्यार जिनको आज उनको प्यार मेरा । [1]

और यही कवि का लक्ष्य भी है । वह कहता है –

"बरस रहा है भू पर बादल,
बरस रहा है जग पर सुख-दुख
सबको अपना-अपना , कवि को
सब का ही दुख, सबका ही सुख ।
जग-जीवन के सुख-दुखों से भीग रहा है कवि का तन-मन । [2]

मृत्यु का सामना करते करते कवि में जहाँ जीने की इच्छा जागृत होती है वहाँ गीतों के माध्यम से अमर होने की भावना भी जागृत होती है । क्योंकि उनका विश्वास है –

"नाश के दुख से कभी दबता नहीं निर्माण का सुख,
प्रलय की निस्तब्धता से, सृष्टि का नव गान फिर फिर ।
नीड़ का निर्माण फिर-फिर ।" [3]

"तुम गा दो मेरा गान अमर हो जाये " रचना का अन्तिम पद भी जीवन आशा को ही चित्रित करता है –

"दुख से जीवन बीता फिर भी शेष अभी कुछ रहता है
जीवन की अन्तिम घड़ियों में भी तुमसे यह कहता,-
सुख की एक साँस पर होता है अमरत्व निछावर,
तुम छू दो, मेरा प्राण अमर हो जाये ।
तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाये ।

भाव की दृष्टि से बच्चन की रचनाओं में शृंगार, वीर, अमर्ष, हास्य,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 201.
2. वही, पृ0 293.
3. वही, पृ0 349.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भय, निराशा करुणा, हीनत्व, घृणा और निस्सहायता के अद्भुत चित्र हैं । मिलन यामिनी में उद्दीपन, विभाव के साथ बड़े जीवित चित्र खींचे गये हैं । भौतिक सौन्दर्य के चित्र भी मिलते हैं जैसे –

"तुम्हारे नील झील-से नैन, नीर निर्झर से लहरे केश ।
तुम्हारे तन का रेखाकार, वही कमनीय, कलामय हाथ
कि जिसने रुचिर तुम्हारा देश रचा गिरि-ताल-मान के साथ,
करों में लतरों का लचकाव, करतलों में फूलों का वास,
. . . . . .
प्रकृति में तुम बिम्बित बहुं ओर कि तुममें बिम्बित प्रकृति अशेष ।" ।

इसी तरह एक और चित्र देखिये –

"रात आधी, खींच कर मेरी हथेली
एक अंगुली से लिखा था "प्यार" तुमने" ।
फासला था कुछ हमारे बिस्तरों में
और चारों ओर दुनिया सो रही थी,
तारिकायें ही गगन की जानती हैं
जो दशा दिल की तुम्हारे हो रही थी
मैं तुम्हारे पास होकर दूर तुमसे
अध जगा-सा और अध सोया हुआ था ।[2]

एक और मोहक मिलन का चित्र देखिये –

प्राण, संध्या हुक गई गिरि, तरु पर,
उठ रहा है क्षितिज के उर सिंदूरी चाँद,
मेरा प्यार पहली बार लो तुम ।

---

1. रचनावली भाग 2, पृ० 116.
2. वही, पृ 110.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस समय हिलती नहीं है एक डाली,
इस समय हिलता नहीं है एक पत्ता,
यदि प्रणय जागा न होता इस निशा में
सुप्त होती विश्व की सम्पूर्ण सत्ता,
हम किसी के हाथ में साधन बने हैं
सृष्टि की कुछ माँग पूरी हो रही है,
हम नहीं अपराध कोई कर रहे हैं,
मत लजाओ और देखो उस तरफ भी –
प्राण रजनी खिल गई नभ के भुजों में,
थम गया है शीश पर निरुपम रुपहरा चाँद,
मेरा प्यार वारम्वार लो तुम ।

इस प्रकार रसों के भावों का संवेदन पूर्ण चित्रण बच्चन ने किया है जो उनकी रमणीय सौन्दर्य शास्त्रीय चेतना को उजागर करता है । रस की शास्त्रीय परिपाटी का निर्वाह बच्चन में नहीं हुआ । यह उनकी स्वच्छन्दता-वादी चेतना का प्रभाव है ।

प्रतिमा निर्माण या बिम्ब विधान –

बिम्ब का अर्थ है प्रतिमा अथवा चित्र जैसे आँखों देखा चित्र हृदय पर प्रभाव डालता है उसी प्रकार काव्यार्थ भी बिम्ब के माध्यम से अर्थ स्पष्ट होता है । प्रतिमा निर्माण, रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श, संवेदनों को लेकर पाँच प्रकार का हो सकता है । बच्चन को इन सभी की योजनाओं में सफलता मिली है । रूप के बिम्ब लीजिये –

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 56.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"दुग्ध-उज्ज्वल मोतियों से युक्त चादर,
जो बिछी नभ के पलंग पर आज उस पर
चाँद से लिपटी लजाती चाँदनी है,
आज कितनी वासनामय यामिनी है।[1]

दूसरा बिम्ब लीजिये -

"तुम्हारे नील-झील-से नैन, नीर निर्झर-से लहरे केश,
करों में लहरों का लचकाव, करतलों में फूलों का वास
उधर झुकती अरुनारी साँझ, इधर उठता फूलों का चाँद।"[2]

एक और बिम्ब लीजिये -

"झुकी झुकी अभिमानी गर्दन,
बंधे हाथ, मुख-निष्प्रभ लोचन।"[3]

"रंगती कभी यह इन्द्र धनु,
रंगती कभी यह चन्द्र धनु
अब पीत घन अब रक्त घन
रंगरेज -रंगराती हवा,
बरसात की आती हवा।"[4]

शब्द बिम्ब -

जहाँ ध्वनि के माध्यम से कवि बिम्ब की सृष्टि करता है जैसे -

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 31.
2. रचनावली भाग 2, पृ0 115.
3. एकान्त संगीत, पृ0 92.
4. रचनावली भाग 1, पृ0 329.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"झर-झर तो, वृष्टि नहीं होने अम्बर के दृग के कोने से,
मन क्यों यों गल-ढल जाता है अभिलाषा पूरी होने से,
अन्तर में उमड़े भावों का इतना ही तो इतिहास नहीं,
मोती की फसलें उगती हैं आँसू की बूँदें बोने से "[1]

गीतिकाव्य की विशेषता है मधुर-ध्वनि योजना । बच्चन के काव्य में यह तीन स्तरों पर घटित दिखाई पड़ती है । 1. शब्द-ध्वनि माधुर्य, 2. लय माधुर्य, 3. अर्थ ध्वनि माधुर्य ।

शब्द ध्वनि में वातावरण को भावानुकूल बनाने की चेष्टा रहती है । दूसरे शब्दों में इसे अनुप्रास योजना भी कहा जा सकता है । जैसे –

"पुकारता पपीहरा - पि..आ, पि..आ
प्रति ध्वनित निनाद से दिया-दिया,"[2]

अथवा

"आज रिमझिम मेघ, रिमझिम है नयन भी "[2]

एक और उदाहरण –

"विष्णु-वितान, प्रचण्ड बवण्डर, मेरे मन के गीत पुराने"[3]

"हुआ अशब्द और लक्ष्य जब गगन,
मुखर वरुण ध्वनित हुए छनन-छनन ।..
चटुल-पुलक तरंग में मगन-मगन
स्वर्ण किंकिणी बजी छनन-छनन ।"[4]

शब्द-योजना में कवि ने अन्तःराग को स्पन्दनों में वर्णित किया है–

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 51.
2. वही, पृ0 76.
3. वही, पृ036.
4. वही. पृ0 60.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"चलते हैं तारे गाते हैं ।
सन्नाटा वसुधा पर छाया,
नभ में हमने कान लगाया,
फिर भी अगणित कण्ठों का यह राग नहीं हम सुन पाते हैं ।"[1]

इसी तरह एक और उदाहरण लीजिये –

"बोलते उडुगण परस्पर,
तरु दलों में मन्द "मरमर"
बात करती सरि लहरियां कूल से जल-स्नात ।[2]

अथवा

सन्नाटे का एक भावात्मक और कलात्मक चित्र प्रस्तुत है –

"सुन रहा हूं, शान्ति इतनी,
है टपकती बूंद जितनी,
ओस की जिनसे दुर्मों का गात रात भिगो गई है ।"[3]

लय, माधुर्य की दृष्टि से बच्चन के ध्वनि बिम्ब देखिये –

"उन चल चरणों की कल छम-छम,
से ही था निकला नाद प्रथम,
गति से मादक तालों का क्रम,
निकली स्वर-लय की लहर जिसे,
जाने सुख की भाषा मानी ।
वह पद ध्वनि मेरी पहचानी ।।
रव गुंजा भू पर, अंबर में,
सर में, सरिता में, सागर में,

---

1. रचनावली भाग 1 पृ0 172.
2. वही, पृ0 175.
3. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 180.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रत्येक श्वास में, प्रति स्वर में,
कित-कित का आश्रय ले कैसे,
मेरे हाथों की हैरानी ।"[1]

लोक धुनों पर आधारित रचनाएं तो इस दृष्टि से बड़ी महत्वपूर्ण हैं । जैसे —

"महुआ के,
महुआ के नीचे मोती झरे,
महुआ के,
अब दिन बहुरे,
जीकी कहरे,
मन बासी पी के मन बगरे "[2]

अथवा

आया डोला
उड़न खटोला,
एक परी घरटे से निकली, पहने पचरंग चीर,
डोला डोले
लिए गंग-जमुन के तीर [3]

ध्वनि-बिम्ब की तीसरी इकाई है अर्थ ध्वनि । टी॰ एस॰ ईलियट ने इसे "रिद्म ऑफ थाट" या अर्थ की लय कहा है । बुद्ध और नागार्जुन में इस लय की रचनायें विशेष हैं । जैसे —

"इनकी भी अच्छी खासी बात,
इनकी क्या बिसात,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 110, 111.
2. वही, भाग 2, पृ0 383
3. वहीं, पृ0 366.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इनमें से कोई अवतार,
कोई स्वर्ग का पूत
कोई स्वर्ग का दूत
ईश्वर को भी इसने नहीं रखने दिया हाथ ।"[1]

स्पर्श बिम्ब --

स्पर्श संवेदन के माध्यम से कवि ने कुछ श्रृंगारी बिम्ब प्रस्तुत किये हैं जैसे --

"मृत सजीवन था तुम्हारा तो परस ही,
पा गया मैं बाहु का बन्धन सरस भी ।"[2]

अथवा

"था मुझे छूना कि तूने भर दिया झंकार से घर,
और मेरी सांस को भी सातु स्वर के लग चले पर,
अब अवनि छू लूं गगन छू लूं, कि सातों स्वर्ग छू लूं,
सब मुझे आसान मेरे साथ जो तू गा रही है ।[3]

अथवा

"एक बिजली छू गयी सहसा जगा मैं,
कृष्ण पक्ष चांद निकला था गगन में,
इस तरह करवट पड़ी थी तुम कि
आंसू बह रहे थे इस नयन से उस नयन में ।"[4]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 351.
2. वही, पृ0 34.
3. वही, पृ0 96.
4. वही, पृ0 110.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रस बिम्ब --

आस्वाद तथा रसात्मक संवेदन को लेकर रसात्मक बिम्बों की सृष्टि कवि ने की है । जैसे --

"तृप्ति कण भी होगी अधर के रस कणों में,
खींच लो तुम प्राण ही इन चुम्बनों से,
प्यार के क्षण में मरण भी तो मधुर है ।"[1]

अथवा

"हे अधर में रस मुझे मदहोश कर दो,
किन्तु मेरे प्राण में सन्तोष भर दो," [2]

अथवा

"देखता था काल बस दो बूंद गिरने का इशारा,
कर दिया अमृत गरल को और बदला दृश्य सारा,
विष-विदग्ध अधर सुधा में हो गये सहसा निमज्जित,
कौन-सा आसव दिया, दृग-कोरकों से डाल तुमने,
डाल दी मेरे गले में आंसुओं की माल तुमने ।"[3]

अथवा

स्वर्ण-घंटी के कटोरों में धरा था झलमलाता नीर,
मैं झुका सहसा पिपासाकुल मगर हो गया गम्भीर--
भेद पानी और पानी, प्यास में औ' प्यास में भी भेद,
तुम बुझाओ प्यास मेरी या जगाये फिर तुम्हारी याद।"[4]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 35
2. वही, पृ0 37.
3. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 357.
4. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 116.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा

ओ पावस के पहले बादल,
उठ उमड़-गरज, फिर घुमड़-चमक
मेरे मन-प्राणों पर बरसो ।[1]

गंध चित्र --

उदाहरण लीजिये --

"तुमने जिन सुमनों से उस दिन केशों को स्वयं सजाया था,
उनका सौरभ तुमसे पहले मुझसे मिलने को आया था,
. . . . . .
चितवन जिस ओर गई उसने मृदु फूलों की वर्षा कर दी,
मादक मुसकानों ने मेरी गोदी पंखुड़ियों से भर दी,
हाथों में हाथ लिये, आये अंजलि में सुमनों के गुच्छे,
जब तुमने मेरे अधरों पर अधरों की कोमलता धर दी,
. . . . . .
गरमी में प्रातःकाल पवन
कलियों को चूम सिहरता जब
तब याद तुम्हारी आती है ।"[2]

अथवा

"सिंगार हार की सुगन्धि आ रही,
सुवास में सुहासिनी नहा रही ।"[3]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 49.
2. वही, पृ0 49.
3. वही, 73.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा

कलियां मधुवन में गंध-गगन मुलकाती हैं,
सुख पर जैसे जादू-सा छाया जाता है,"[1]

"आरती और अंगारे" का 95वां गीत तो बिम्बों की माला कहा जा सकता है । बुद्ध और नायधर की "रात का अपराध" रचना बिम्ब की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है । देखिये –

"उलूकों के दल ने,
पेड़ की नंगी बांहों में,
उस निभृत नीड़ पर –
छुपे सब तरफ से "अनरक्षित ?
पैने डैनों की मार से,
नोकदार पंजों के प्रहार से,
गिरा दिया उसका तिनका, तिनका ?
विहग-विहंगिनी को,
विहग-कुमारों को,
विहग-कुमारियों को,
जिनके अभी उगे थे न बाल-पर भी,
जो थे केवल चंचु वाले मांस के बस लोथड़े,
दबा लिया अपने
आरे से करारे तेज दांतों की कतार में ?
औ उन्हें खा गये ?
और मारे डर के,
सिहर के
गिर पड़े पेड़ के
पत्ते भी रहे-सहे ।"[2]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, 66.
2. वही, पृ0 287.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रति, भय, घृणा के सौन्दर्य संवेदनों को बिम्बों के माध्यम से व्यक्त किया है । "बहुत दिन बीते" में तो इस तरह के बिम्बों की माला ही निर्मित हो गई है । चित्रात्मकता की दृष्टि से रचनावली-2 में "चोटी की बरफ", "सोन मछरी", "नील परी", "कवि और वैज्ञानिक" बिम्ब की अद्भुत सृष्टियाँ हैं ।

निम्नलिखित रचना में संश्लिष्ट बिम्ब का चित्र देखा जा सकता है—

"जल नील-नयन,
शीतल, निर्मल,
जल तल पर सोन-चिरैया रे,
छितवन की,
छितवन की ओट तलैया रे,
छितवन की ।
खिला-रक्त कमल
झल मल - झल मल,
दल पर मोती चमकैया रे,
छितवन की,
छितवन की ओट तलैया रे,
छितवन की,
दर्पण इसमें,
बिम्बित जिसमें,
रवि-शशि-अर गगन-तरैया रे,
छितवन की,
छितवन की ओट तलैया रे,
छितवन की"।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जल में हल चल,
कलकल, छलछल,
झंकृत कंगन,
झंकृत पायल
पहुंचे जल-खेल-खेलैया रे,
छितवन की ।
सांवर मुझको
भी जाने दे
पोखर में कूद
नहाने दे,
लूं तेरी सात बलैया रे,
छितवन की,
छितवन की ओट तलैया रे
छितवन की ।"[1]

रसों के परम्परित उदाहरण --

भारतीय काव्य शास्त्र में रस को काव्य की आत्मा बताया गया है । आचार्य विश्वनाथ रसात्मक वाक्य को ही काव्य कहते हैं । बच्चन भी रस को ही काव्य की आत्मा मानते हैं । मधुकलश में उन्होंने कहा है –

"शुष्क ज्ञानी चाहिये तो चाहिये रस सिद्ध कवि भी"

अथवा

भावना के पुष्प अपनी सूत्र-वाणी में पिरोकर
धर दिये मैंने खुशी से विश्व के विस्तीर्ण पथ पर,
गीत कह इसको न दुनिया यह दुखों की माप मेरे ."[2]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 504, 505.
2. रचनावली 1, पृ0 134.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"आरती और अंगारे" में वाल्मीकि को नमन करते हुए क्रौंच वध से उत्पन्न करुणा को ही वास्तविक कविता कहते हैं। रस और छन्द कविता के प्राण तत्व हैं :-

"ओ, रस के घन-सघन, छन्द के निर्झर प्रवण सुहावन,
अर्थों की सरिता वर्णों के वरुणागार सनातन,
रस-अर्थ रहित ध्वनियों में मैं क्या गाऊं।"[1]

"प्रणय पत्रिका" की भूमिका में उन्होंने लिखा है -- "कि गीत रस है, रस की वर्षा करते हैं, मनुष्य को सारग्राही बनाते हैं, रस जीवन की सहज स्वाभाविक आवश्यकता है। सब अनुभव करते हैं। कारण का विश्लेषण हमें दर्शन की भूमि पर ले जायेगा जहां इस समय मैं नहीं उतरना चाहता।"[2]

बच्चन की रचनाओं में शृंगार, करुण, वीर और हास्य व्यंग्य की प्रधानता है। शांत रस और निर्वेद की उक्तियां भी उनमें मिलती हैं पर यदि प्रधानता की दृष्टि से देखा जाये तो शृंगार प्रधान है और फिर क्रमशः करुण, हास्य, व्यंग्य और वीर का स्थान आता है। संयोग शृंगार का चित्र देखिये -

"ओठ में तुम हो, गगन में चांदनी है,
काल को यह भी निशा तो नापनी है।"[3]

अथवा

"प्रिय शेष बहुत है रात अभी मत जाओ।
शिथिल पड़ी है नभ की बाहों में रजनी की काया,
चांद चांदनी की मदिरा में है डूबा, भरमाया
अलि अब तक झुके-झुके से रस-भीनी गलियों में,
प्रिय, मौन खड़े जलजात अभी मत जाओ।"[4]

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 193.
2. वही, पृ0 86.
3. वही, पृ0 32.
4. वही, पृ0 61.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वियोग शृंगार का एक उदाहरण लीजिये --

"आ गयी बरसात, मुझको फिर आज घेरे हुए बादल
था गगन कहता कि छाती में तुम्हें मैंने छिपाया था,
थीं गिरीं बूंदें कि तुमने और मैंने संग नहाया था,
याद सतरंगी लिये हम इन्द्र धनु की साथ लौटे थे,
सुधि-बसे कितने क्षणों को आज फिर छेड़े हुए बादल,
नभ उधर भरता कि मेरा कण्ठ भर आता अचानक ही।
आ गई बरसात, मुझको आज फिर घेरे हुए बादल।"[1]

अथवा

"यह चांद नया है नाव नयी आशा की।
आज खड़ी हो छत पर तुमने होगा चांद निहारा,
फूट पड़ी होगी नयनों से सहसा जल की धारा,
मैं इनके ही संग-सहारे स्वप्न-तरी में बैठा,
गाता आ जाऊंगा तुम तक एकाकी।"[2]

अथवा

"अब हेमन्त-अन्त निचराया लौट न आ तू, गगन बिहारी
हिम की चादर फाड़ उभरती धरती फिर से तिनकों वाली,
करती है अभिसार कुसुम के रंगों से मधुवन की डाली,
जनज निकल कर जल के तल पर जोह रहे हैं बाट किसी की,
कानों में कुछ भेद भरी-सी कह जाती है बात बहारी।"[3]

प्रिय के मरण पर शोक की गहरी अनुभूति होती है। "निशा निमन्त्रण" "आकुल अन्तर" और एकान्त संगीत इसी संवेदना के बिम्ब में निर्मित हुए हैं। । निशा निमन्त्रण की पृष्ठभूमि बच्चन के जीवन का

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 104.
2. वही, पृ0 107.
3. वही, पृ0 120.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऐसा खेल है जिसने उन्हें अन्दर से पूर्ण तरह गला दिया। शोक वियोग शृंगार में भी होता है पर वहाँ मिलने की आशा रहती है परन्तु करुण में मिलने की आशा समाप्त हो जाती है। इसलिये श्यामा के शोक में लिखी गई रचनायें ही करुण रस में आती हैं। "निशा निमन्त्रण" के पहले गीत में ही कवि कह उठता है --

"मुझ से मिलने को कौन विकल ?
मैं होउं किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है।[1]

अथवा

"यह पतझड़ की शाम, सखे,
नंगी डालों पर नीड़ सघन,
नीड़ों में है मुख-मुख कम्पन,
मत देख, नजर लग जायेगी, यह चिड़ियों का सुखधाम सखे [2]

प्रिय से वियुक्त होकर असहाय प्रेमी की आकुलता का एक चित्र देखिये--

"अन्तरिक्ष में आकुल-आतुर,
कभी इधर उड़ कभी उधर उड़,
पंख नीड़ का खोज रहा है बिछड़ा पंछी एक-अकेला, [3]

टूटते हुए तारे से शरणोन्मुख प्रिय की तुलना कर कवि कहता है --

"देखो, टूट रहा है तारा।
नभ के सीमाहीन पटल पर,

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 161.
2. वही, पृ0 165.
3. वही, पृ0 163.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक चमकती रेखा चल कर,
लुप्त शून्य में होती-बुझता एक निशा का दीप दुलारा [1]

अथवा

"खिड़की से झांक रहे तारे !
जलता है कोई दीप नहीं,
कोई भी समीप नहीं,
लेटा हूं कमरे के अन्दर बिस्तर पर अपना मन मारे । [2]

अथवा

"यह दीपक है, यह परवाना !
इसकी तुलना करने को कुछ देख न, हे मन, अपने अन्दर,
वहां चिता चिन्ता की जलती, जलता है तू शव-साधन कर,
यहां प्रणय की होली में है, खेल जलाना या जल जाना ।" [3]

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि बच्चन में प्रचण्ड जीवन इच्छा रही है यही उत्साह वीर रस में परिणत होता है । और इस उत्साह का वह "निशा निमन्त्रण" में भी स्वागत करता है । वह कहता है —

"मिल न पाया प्यार जिनको आज उनको प्यार मेरा।" [4]

वीर रस का एक और उदाहरण --

"अग्नि पथ ! अग्नि पथ । अग्नि पथ !
वृक्ष हों भले खड़े,
हों घने, हों बड़े,

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 173.
2. वही, पृ0 217.
3. वही, पृ0 286.
4. वही, पृ0 201.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक पत्र छाँह भी माँग मत, माँग मत, माँग मत !
यह महान दृश्य है-
चल रहा मनुष्य है
अश्रु-स्वेट-रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ ।"[1]

अथवा

"बड़-भागी वह इस पृथ्वी पर कहलाता है,
जो काम देश के और जाति के आता है,
हाथों में अपने खड्ग लिये मर जाता है,
ले न्याय पक्ष वे पाँव हटाये रण करते ।"[2]

हास्य और व्यंग में बुद्ध और नायक की अनेकों रचनाएं आ जाती हैं-

"बस हो गया खत्म
भारत का तुम्हारा ज्ञान,
ग्रायड्ड इतना और है तुम्हें मालूम,
कि वहीं है कहीं ताजमहल,
केम्ब्रिज में है इस नाम का होटल। [3]

अथवा

"लोग हो रहे हैं नशे में लाल ।
युवकों ने युवतियों को खींच
लिया है बाहों में भींच
छाती और सीने आ गये हैं पास,
होठों-अधरों के बीच,
शुरू हो गई है बात,
शुरू हो गया है नाच,

---

1. रचनावली, 246.
2. वही, पृ0 510.
3. वही, पृ0 297.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्केस्ट्रा के साज—
निकलती है आवाज
बुद्धं शरणं गच्छामि
धम्मं शरणं गच्छामि
संघं शरणं गच्छामि।[1]

अथवा

गांधी : बुत पत्थरों का, मूक,
मिट्टी का खिलौना,
रंग-बिरंगा चित्र,
छुट्टी का दिवस,
देशान्तरों में पुस्तकालयों को
समर्पित किये जाने के लिये
सरकार द्वारा
आर्ट पेपर पर, प्रकाशित
राष्ट्र का इतिहास।[2]

जगती की नश्वरता को लेकर लिखी गई कुछ निर्वेद परक रचनाएं भी हैं जैसे—

"तेरा यह करुण अवसान।
जब तुझे पहचान पाया,
देखा को जान पाया,
खींच तुझको ले गया तब काल का आह्वान,[3]

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 353.
2. वही, पृ0 448.
3. वही, पृ0 233.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा

"जिसको तारी धरती प्यारी
उसको केसा मोह जगह का।
बैठ कहां जायेगा, पगला ?
पीछे पड़ता पांव न अगला,
पंथ न बदला, पंथी बदला।
शाम न लौटा उसी जगह को
कभी यहाँ पर पांथ सुबह का।"[1]

तुकिमानी शैली में उन्होंने कुछ गीत लिखे हैं जैसे --

अम्बर के संग नाच रहे हैं, अनगिन रवि, शशि, तारे,
धरती के संग नाच रहे हैं गिरि, तृण, तरु, जलधारे,
जन्तु-जन्तु के तन्तु-तन्तु में नाच रही अभिलाषा,
अविरल, अविरल, नर्तन-दल से मैं ही क्यों कट जाऊं।
मेरे प्रियतम नाच रहे हैं, मैं कैसे हट जाऊं।"[2]

निर्गुणिया सन्तों की शैली पर एक गीत है --

"प्रभु-मन्दिर यह देह, री"
क्षिति की क्षमता,
जल की समता,
पावक-दीपक जाग्रत-ज्योतित निशि-दिन प्रभु का नेह, री"[3]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भावानुभूति और बिम्बात्मक भाषा की दृष्टि से बच्चन जी की कविता उत्कृष्ट है। मन और देह के स्तर पर लिखित

---

1. रचनावली भाग 2, पृ० 490
2. वही, पृ० 495.
3. वही, पृ० 495.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की अभिव्यक्ति के कारण जितनी यह रचनाएँ देखिए लगती है उतनी ही
मन की । प्रणयानुभूति के विविध स्तर उनकी कविताओं में सजीव हो उठे ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पाँचवाँ अध्याय

बच्चन की काव्य-भाषा

काव्य भाषा सामान्य अभिव्यक्ति की अपेक्षा एक विशिष्ट अभिव्यक्ति है इसलिये उसमें अभिधा की अपेक्षा लक्षणा और व्यंजना तथा वक्रोक्ति रहती है। भारतीय काव्यशास्त्र में स्वभावोक्ति और वक्रोक्ति भेद से काव्य को विभाजित किया गया है। आचार्य ने वक्राभिधेय शब्दोक्ति अष्टवायामलंकृति कहकर वक्रोक्ति को चमत्कार विधायिका के रूप में ग्रहण किया। वक्रोक्ति से तात्पर्य यहाँ अलंकार विशेष नहीं है। अपितु कवि कर्म कौशल से उत्पन्न वैचित्र्य पूर्ण अभिव्यक्ति ही वक्रोक्ति है। इस प्रकार आचार्य कुन्तक के शब्दों में - "विचित्र कथन ही काव्य है"। भारत में काव्य भाषा के मुख्यत: तीन निर्णायक सम्प्रदाय हैं। 1. अलंकार मार्ग, 2. रीतिमार्ग, 3. वक्रोक्ति मार्ग।

अलंकार भी उक्ति कथन ही है तथा रीति भी शब्द और कथन की पद्धति पर ही आधारित होती है।

डा० रामदुलार सिंह ने लिखा है "वस्तुत: काव्य मार्मिक भावानुभूति जन्य भाषा का एक विशिष्ट पूर्ण कलात्मक रूप ही है। यदि भाव या विचार काव्य का वस्तु पक्ष है तो भाषा उसका अभिव्यक्ति पक्ष पौर्वात्य और पाश्चात्य सभी शास्त्रियों ने कवि कर्म में भाषा की विलक्षणता को स्वीकार किया है।"[1]

---

1. आधुनिक हिन्दी काव्य भाषा, पृ० 17.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छायावाद का समुचित विकास 1920 के लगभग हुआ था । उसी समय के लगभग बच्चन ने लिखना शुरू किया । 32 से 38 के बीच तो वह प्रतिष्ठित हो गये । छायावाद की कृत्रिम भाषा के विरोध में दो धारायें उस समय विकसित हुई एक स्वच्छन्दतावादी और दूसरी राष्ट्रवादी । स्वच्छन्दतावादी धारा में भगवतीचरण वर्मा, बच्चन, अंचल और नरेन्द्र का नाम आता है तो दूसरी धारा में माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर और नवीन का नाम आता है ।" इन कवियों ने भावों के साथ भाषा को भी रहस्यमयता से निकाल कर सहजता प्रदान की और निजी रूप देने का प्रयत्न किया । डा0 नवल किशोर भाम्ब का कथन है कि बच्चन की भाषा न तो द्विवेदी युग के कवियों की भांति अक्खड़पन और ढीली ढाली है और न नवीन जी और माखन लाल चतुर्वेदी की भांति अक्खड़ और जटिल न छायावादी कवियों की तरह गूढ़, लाक्षणिक और जटिल ।[1]

बच्चन ने अनुभूति और प्रेरणा को महत्व दिया । इसलिये उन्हें भाषा की सजावट नहीं करनी पड़ी । उनका स्वयं कहना है - "कि मैं कथ्य को स्वयं कथन में अवतरित होने के लिये छोड़ देता हूं । जहां एक दूसरे से अनिवार्य सम्बन्ध होगा वहां मैं अपने को सफल मानूंगा । रचना की तकनीक पर मैं अपने पाठकों के साथ बात करना ठीक नहीं समझता । वास्तव में काव्य की सफलता इसी में तो है कि कवि ने "जिन भावों को व्यक्त करने के लिये रचना की है रचना से वही भाव पाठक के मन में जाग सके । किन्हीं भाव विचार एवम कल्पना को व्यक्त करने के पहले मैं इस पर ध्यान नहीं देता कि वह अभिव्यंजना में क्या आकार प्रकार ले ।"[2]

भाषा की दृष्टि से बच्चन जी अंग्रेजी में जॉनसन को आदर्श मानते हैं । जॉनसन के अपने गीतों में भावों और विचारों की विदग्धता को वार्तालाप की सजीवता स्वाभाविकता और सरलता से व्यक्त किया है । कविता में चाहे वह

---

1. बच्चन जीवन और काव्य, पृ0 164.
2. रचनावली भाग 2, पृ0 270.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पद्यात्मक हो या गद्यात्मक लय की ही प्रधानता होती है । हम सामान्य विचार विनिमय में भी विभिन्न लयों का उपयोग करते हैं । बिना उसके प्रति सचेत हुए । वर्ड्सवर्थ ने तो गद्य की लय पर भी अंग्रेजी में विस्तृत ग्रन्थ की रचना की । यही कारण है कि बच्चन जी गीत के लिये उसके सस्वर पढ़ने पर बल देते हैं । अच्छी कविता में उच्चारण के अवयवों के संचालन से एक विशेष प्रकार का प्रभाव उत्पन्न होता है । समाज के पूरे परिवेश से जुड़ी होने के कारण कविता समाज की सहज अभिव्यक्ति में होनी चाहिये ।

बच्चन का शब्द विधान अपनी इस विशेषता के कारण समन्वय के आधार पर गठित हुआ है । आवश्यकतानुसार कवि ने काव्य में तत्सम, तद्भव, उर्दू, अंग्रेजी, और देशज सभी शब्दों का प्रयोग किया है । अपनी काव्य भाषा के शब्दों के संदर्भ में उन्होंने कहा है - "थोड़ा उर्दू फारसी, थोड़ी संस्कृत जानने का प्रभाव मेरी भाषा पर अच्छा पड़ा । उर्दू के शब्दों से मुझे कभी परहेज़ नहीं रहा है । ज्यादा उर्दू न जानने के कारण मेरी कविता में ऐसे शब्द नहीं आये जो हिन्दी की प्रकृति पर अत्याचार करते जान पड़े । न तो मैं संस्कृत से ऐसा अनभिज्ञ हूं कि साधारण और प्रचलित तथा भावोद्बोधक सुन्दर शब्दों का उपयोग न कर सकूं और न मैं, इतनी संस्कृत जानता हूं कि ऐसे बड़े-2 शब्दों को लाकर रख दूं कि उनका अर्थ देखने के लिये कोश उठाना पड़े । मुझे संतोष है कि आज तक मुझे किसी ने यह नहीं कहा कि तुम्हारी कविता मेरी समझ में नहीं आती ।"[1]

"बच्चन अधिकार पूर्वक कई भाषाओं के शब्द एक साथ प्रयुक्त करते हैं और प्रभाव डालते हैं । उदाहरण के लिये -

"बात यह थी-
व्यष्टि की लेकर इकाई,

---

1. नये पुराने झरोखे, पृ0 135.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

था उसे तूने बड़ा व्यापक बनाया,
किन्तु उसकी एक सीमा भी बनाई,
जिस जगह पर पा समष्टि
बने दहाड़ें वह हुकार—
हो भले ही मूल्य शून्य
समष्टि का तेरी नज़र में —
गो मुझे आभास होता है
कि मेरा व्यष्टि केवल शून्य,.....
फारमूलों में कभी बन्धता न जीवन,
शब्द-संख्या फारमूले ही नहीं तो और क्या हैं ?
तथ्य केवल,
व्यष्टि, करके मुखरता भी प्राप्त
अपने आप में तब कुछ नहीं है ।"[1]

तत्सम शब्दों की दृष्टि से कहीं-कहीं सामासिक भाषा का प्रयोग भी कवि ने किया है । जैसे —

"गलित, गतायुष, गति रोधी, गर्हित, गर्वी पर
घन हारिणी, प्राणहारिणी, त्राणकारिणी —
जिससे खलदल कभी नहीं हैं बचने पाये ।
क्षरण-प्रस्फुरण पर समत्व स्वामित्व प्राप्त कर
वेद मंत्र ही मूर्तिमान ज्यों —
ॐ आत्मदा बलदा
यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा:
यस्यच्छाया ऽमृतं यस्य मृत्यु

---

1. रचनावली भाग 3, पृ0 91.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कस्मै देवाय हविषा विधेम ?
किसे हविष्य समर्पित करते ?
जो कि आत्म दा,
जो बलदा है,
सारा विश्व
उपासक जिसका,
सारे देव
उपासक प्रत्यंतक जिसके
अमरत्व मृत्यु दोनों जिसकी छाया में पलते
उसे हविष्य समर्पित करते ।"[1]

अवधी और अंग्रेजी का तत्सम खड़ी बोली के साथ एक लय-पूर्ण प्रयोग देखिये –

"और कब
संसार में तेरी प्रतिष्ठा
पुरस्कारभिषेकितों से बढ़ गयी है ।
कलम की महनीयता
स्थापित हुई
स्वाधीनता रक्षित हुई है
औ कलम को मिली ऊँचाई नयी है ।
आहरिया कवि की लिखी
यह पंक्ति
स्मृति में कौंध जाती –

---

1. रचनावली 3 पृ0 137.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"द किंग्स आर नेवर मोर ध्वायल
देन व्हेन एबडिकेटिंग ।"
राज-सी लगता अधिकतम
जब कि राजा
राज-सिंहासन स्वयं ही त्याग देता !
जन तथा तज्जन बिठायें
उर- सिंहासन पर जिसे
उसके लिये कंचन - सिंहासन धूलि मिट्टी ।
प्राण-समर्पित
शब्द-शिल्पी के लिये
आसन उचित केवल वही,
केवल वही है ।
उसी को कुछ अन्य शब्दों में
हमारे पूज्य बाबा कह गये हैं -
"बने तो रघुपति से बने
के बिगड़े भरपूर,
"तुलसी" बने जो आनते "
ता बनिबे पै धुर ।"
और रघुपति कौन हैं ?-
केवल वही है
जो कि है "व्यक्तित्व" की तेरे,
इकाई ।"[1]

लोकोक्ति और मुहावरों ने उनकी भाषा को जीवन्त बना दिया है । कुछ प्रयोग देखिये -

---

1. रचनावली भाग 3, पृ0 96.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"खून पसीना एक किया [1]

"हाथ जैसे विश्व नाराज करता है" [2]

"सिर पर लोट जाता है साँप" [3]

"नेकी कर कुए में डाल

चाट कर तलवे, खिलाकर पूंछ

मैंने नहीं कमाई अपनी रोटी,

रानी रहेगी, लेगी अपना सुहाग

गुरु गुड़ था किन्तु चेला शक्कर निकला [4]

लोग कान ही कान हो रहे [5]

राजनीति में हवा बदलते देर नहीं लगती [6]

तेली का तेल, जले, भड़भूजी की छाती फटे [7]

ठेंगा सिर पर ।[8]

पैदर्भी रीति—

सब ग्रह गाते, पृथ्वी रोती ।

ग्रह-ग्रह पर लहराता सागर

ग्रह-ग्रह पर धरती है उर्वर,

ग्रह-ग्रह पर बिछती हरियाली,

---

1. खाटी के फूल, पृ0 64.
2. फूल की माला, पृ0 71.
3. बुद्ध और नाचघर, पृ0 89, 90.
4. दो चट्टानें, पृ0 71.
5. बहुत दिन बीते, पृ0 12.
6. उभरते प्रतिमानों के रूप, पृ0 94.
7. कटती प्रतिमानों की आवाज, पृ0 127.
8. जाल समेटा, पृ0 17.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रह-ग्रह पर तनता है, अम्बर,
ग्रह-ग्रह पर बादल छाते हैं, ग्रह-ग्रह पर है वर्षा होती ।[1]

अथवा

शब्द "हर हर", शब्द "मर-मर" -
तरु गिरे जड़ से उखड़ कर,
उड़ गये छत और छप्पर, मच गया उत्पात, साथी [2]

अथवा

लक्ष्य क्या तेरा यही था ?
स्वर्ग को आदर्श रखकर
तप करे पृथ्वी कठिन तर
उठे तिल-तिल यत्न कर ध्रुव,
क्रम चले पग-पग निरंतर,
निकट जाकर स्वर्ग के, पर, नरक में गिर जाये ।[3]

गोड़ी--

नगाधिराज, शृंग पर खड़ी हुई,
समुद्र की तरंग पर अड़ी हुई,
स्वदेश में जगह-जगह गड़ी हुई,
अटल ध्वजा हरी सफेद, केसरी ।
समस्त देवता उठाँह हमें सने,
तड़क रही कहीं गुलाम-हथकड़ी ।"[4]

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 142.
2. वही, भाग 1, पृ0 165.
3. वही, भाग 2, पृ0 143.
4. वही, पृ0 158, 159.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा

तरंगिता शिवा कि आंधियां झपट पड़ीं,
प्रकम्पमान भूमि से लिपट पड़ी,
सहस्रवार वज्र अस्त्र कड़कड़ा,
घिरे घुमड़ नयन अवट पयोद भी ।[1]

अथवा

व्याम गिरि पर वह खड़ा है
नग्न और प्रलम्ब शाल स्तम्भ जैसा,
अंग सारे मांसपेशिक,
सन्तुलित, सधे ढले-से ।
भूमि जकड़े जमे पंजे,
सत्य कोई, तथ्य कोई ज्यों दबाये
कसी-मांसल पिण्डलियां,
गज-शुण्ड रानें,
कमर पतली सिंह की-सी
खूब चौड़ी और फूली हुई छाती-पला हो विद्रोह जिसमें
पुष्ट कन्धे, ठोस पुट्ठे,
और बलेदार ऊर्ध्वस्थल भुजाएं ।"[2]

पांचाली --

"साखी, सांझ लगी अब होने !
फैलाया था जिन्हें गगन में,
विस्तृत वसुधा के कण-कण में,

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 75.
2. रचनावली भाग 3, पृ0 111.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उन किरणों को अस्ताचल पर पहुंच लगा है सूर्य संजोने !
साथी, सांझ लगी अब होने ।
खेल रही थी धूलि कणों में,
लोट-लिपट गुह-तरु-चरणों में,
वह छाया, देखो, जाती है प्राची में अपने को खोने !
साथी, सांझ लगी अब होने !
मिट्टी से था जिन्हें बनाया,
फूलों से था जिन्हें सजाया,
खेल घरौंदे छोड़ पथों पर चले गये हैं बच्चे सोने ।[1]

अथवा

"गिरजे से घंटे की टन-टन !
मन्दिर से शंखों की तानें,
मस्जिद से पाबन्द अजानें,
उठकर नित्य किया करती हैं अपने भक्तों का आह्वान !
मेरा मन्दिर था, प्रतिमा थी,
मन में पूजा की महिमा थी,
किन्तु निरभ्र गगन से गिर कर वज्र गदा कर सबका खण्डन !
जब ये पावन ध्वनियां आतीं,
शीश झुकाने दुनिया जाती,
अपने से पूछा करता तब, कहं कहां मैं किसका पूजन ?[2]

अथवा

"मेरे आंगने खड़ा है अनार बिरवा,
अनार बिरवा, अनार बिरवा,
"मेरे आंगने खड़ा है अनार बिरवा ।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 162.
2. वही, पृ0 167.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

डाले हैं पातों में डोरी,
पातों पर हरियाली तोरी,
फूले फूलों से लदा है रंगदार बिरवा,
रंगदार बिरवा, रंगदार बिरवा;
मेरे आंगन खड़ा है छतनार बिरवा,
इस पर पंछी नीड़ बनाते,
गीगे, धूप, तपे जो आते,
उन पर छतरी लगाता छायादार बिरवा,
मेरे आंगने खड़ा है छतनार बिरवा ।"[1]

प्रतीक योजना --

डा० नित्यानन्द शर्मा ने प्रतीक की परिभाषा करते हुए कहा है कि अप्रस्तुत अप्रमेय, अगोचर अथवा अमूर्त का प्रतिनिधित्व करने वाले उस प्रस्तुत या गोचर वस्तु विधान को प्रतीक कहते हैं जो देश काल एवम् सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण हमारे मन में अपने चिर साहचर्य के कारण किसी तीव्र भावना को जाग्रत करता है ।"[2] इस परिभाषा से यह सिद्ध होता है कि अप्रस्तुत का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रस्तुत ही प्रतीक है जो हमारे मन में तुरन्त किसी भावना को जागृत करता है, जो अपने विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है तथा जिस पर उस देश एवम् संस्कृति की छाप रहती है ।

बच्चन ने अपने काव्य में दो प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग किया है । 1. उर्दू और अभारतीय परम्परा से ग्रहीत. 2. भारतीय परम्परा से ग्रहीत । मधुशाला, मधुबाला में पहली प्रकार के प्रतीक ग्रहीत है । इन प्रतीकों को लेकर भी भाव की दृष्टि से आलोचकों ने अन्तर प्रस्तुत किया है । हाला को

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 375.
2. आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रतीक विधान, पृ० 21.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

डा० नित्यानन्द शर्मा ने कल्पना तथा मधुर भावनाओं का प्रतीक माना है। कवि का आशय है कि सहृदय पाठक उसकी कविता सुनने के लिए अतृष्ण है तो वह संसार के दुखों एवं यातनाओं की मधुर कल्पना के द्वारा कविता को नया विषय देंगे।

"आतुरता अंगुर लता से, खींच कल्पना की हाला,
कवि साकी बनकर आया है भर कर कविता का प्याला"

प्याला-हृदय के लिये प्रयुक्त हुआ है। अत: हृदय का प्रतीक है।

"अरता हूं इस मधु से अपने अन्तर का प्यासा, प्याला"।

मिट्टी का प्याला-

नश्वरता तथा क्षणभंगुरता का प्रतीक है। क्षीण, हृद, क्षण भंगुर, दुर्बल मानव मिट्टी का प्याला वह हृदय की समान अनुभूतियों का भी प्रतीक है--

"मुसलमान और हिन्दू है दो एक मगर उनका प्याला"

कवि इन प्रतीकों का प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थों में करता है।

मदिरालय या मधुशाला विश्व का प्रतीक है तो हाला आनन्द। साकी मानव का प्रतीक है तो प्याला हृदय का प्रतीक है। बच्चन ने किसी एक अर्थ में ही इन प्रतीकों का प्रयोग नहीं किया है। वह कहीं साकी को ईश्वर का प्रतीक मानता है तो कहीं कवि का। जैसे -

"साकी, जब की पास तुम्हारे इतनी थोड़ी-सी हाला,
क्यों पीने की अभिलाषा से पिरच किया मतवाला,
एक पांव में साकी बनकर नाचूंगा लेकर प्याला।"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हाला को भी कहीं वह मधुर कल्पना का प्रतीक मानता है –

"प्याला तुझे तो, विश्व तमाकर पूर्ण निकालूंगा हाला"

तो कहीं कठोर काल का प्रतीक मानता है --

"डाल हुआ यम आने को है ले अपनी काली हाला"

रोक के लिये मरसिया और आनन्द के लिये ईद के प्रतीक उन्होंने फारसी परम्परा से ग्रहण किये हैं –

"पढ़े मरसिया दुनिया सारी ईद मनाती मधुशाला",

जैसे नाटक में यवनिका गिरने पर नाटक समाप्त हो जाता है इसी प्रकार जीवन रूपी नाटक को मृत्यु की यवनिका समाप्त कर देती है –

"यह देख यवनिका गिरती है, समझा कुछ अपनी नादानी"

मधुशाला, मधुबाला और मधुकलश काव्य-संग्रहों में दार्शनिक प्रतीकों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है । जैसे--

"मृदु भावों के अंगूरों की, आज बना लाया हाला"[1]

अंगूर – प्रतीक है भगवान को भोग लगाने का – यहाँ भगवान को प्रेम की मदिरा पिलाने के लिये भक्त अपने मृदु भावों का नैवेद्य लाया है ।

हाला – अमृत रस-प्रेम रस

मधुशाला में दार्शनिक तत्व की प्रधानता है । यहाँ भगवान को भोग लगाकर जगत को प्रेम रस (अमृत) वितरण करने का अभिप्राय है ।

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 45.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भगवान भी तो प्रेम के ही भूखे हैं ।

"प्यास तुझे तो विश्व तपा कर,
पूर्ण निकालूंगा हाला,
एक पाँव से साकी बन कर
नाचूंगा लेकर प्याला"[1]

भक्ति रस, प्रेम रस, प्राप्त करने के लिये ही भक्त भक्ति का मार्ग पकड़ता है । यहाँ बच्चन जी का कहना है --

"राह पकड़ तू एक चला चल,
पा जायेगा मधुशाला ।[2]

मधुशाला -- यहाँ प्रेम रस का प्रतीक है

भगवान के मिलने की प्रतीक्षा में सारा जीवन व्यर्थ बीत गया और भगवान नहीं मिले । कवि का कहना है कि --

"मुख से तू अविरल कहता जा,
मधु, मदिरा, मादक, हाला
हाथों में अनुभव करता जा
एक ललित कल्पित प्याला ।[3]

साकी- शराब

इन प्रतीकों में सूफी साधना का भाव निहित है । इन प्रतीकों का प्रयोग "प्रेम-साधना" की अभिव्यक्ति के लिये प्रयुक्त होता है । शराब पिलाने का

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 45.
2. वही, पृ0 45.
3. वही, पृ0 46.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कार्य साकी का है । जिसका प्रतीकार्थ उल्लास, उमंग आदि होता है । शराब के द्वारा मनुष्य उस जगत में पहुंच जाता है जहां "परम पिता" से एकात्म भाव की अनुभूति करता है । शराब ही वह माध्यम है जिसके द्वारा साधक और परमात्मा में सम्बन्ध स्थापित होता है । एक स्थिति ऐसी आती है कि जब वह "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" की स्थिति को प्राप्त कर लेता है । कवि की यह पंक्तियां इसकी पुष्टि करती हैं –

"हर सूरत साकी की सूरत में परिवर्तित हो जाती
आंखों के आगे हो कुछ भी, आंखों में है मधुशाला"। [1]

साकी और प्याला--

सूफी सिद्धान्त के अन्तर्गत साकी और प्याला आते हैं । जब प्रेम की मदिरा को पीकर कवि अपने होशोहवास खो देता है और उसे सांसारिक वस्तुएं प्रभावित नहीं करतीं तब वह जीवात्मा परमात्मा से एकाकार हो जाता है । अन्तिम स्थिति वह हो जाती है जब भक्त को मृत्यु भी भयभीत नहीं कर सकती क्योंकि आत्मा परमात्मा के महा अस्तित्व से सम्बन्ध स्थापित कर लेती है । जब साकी स्वयं अमृत रस का पान कराने के लिये उपस्थित हो तो डर किस बात का । उदाहरण के लिये यह पंक्तियां प्रस्तुत हैं –

"छलक रही हो, तन के घट से
संगिनि, जब जीवन-हाला,
पात्र गरल का ले जब अन्तिम,
साकी हो आने वाला,
हाथ परस भूले प्याले का
स्वाद-सुरा जिह्वा भूले,

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 49.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कानों में तुम करती रहना,
मधु कण "प्याला, मधुशाला ।"[1]

हिन्दी काव्य में बच्चन की प्रतीक योजना नई चेतना लेकर आई । हिन्दी काव्य में प्रतीक योजना का विस्तृत क्षेत्र है । आज का युग वैज्ञानिक युग है । मनुष्य नयी सभ्यता से अपने को अत्यधिक प्रभावित अनुभव करता है । ऐसी स्थिति में प्रतीकों का सृजन ऐसा होना चाहिये जो उसकी चेतना का विस्तार करे साथ ही मानवीय विकास में सहायक बने । मधुशाला की अधिकांश चतुष्पदियों में प्रतीक मिलेंगे ।

संघर्ष के लिये हलाहल तथा दुखी व्यक्ति के लिये विषपायी रसिक के लिये मधुपायी तथा सौन्दर्य के लिये साकी का प्रयोग भी अभारतीय है । जैसे—

"झांक रहा, वह देखो, साकी
कर में एक सुराही बांकी,"[2]

यौवन और सौन्दर्य के लिये पाटल माल और रसिकों के लिये मधुप दल के प्रतीकों का प्रयोग किया है वह मधुबाला में कहते हैं —

"मधुप-दल का करती आह्वान रही खिल वन में पाटल-माल ।"[3]

जीवन के लिये बुलबुल मृत्यु के लिये पतझड़ का प्रयोग कवि ने भारतीय परम्परा और उर्दू परम्परा के मिश्रण से किया है । जैसे —

मधुबाला में वह कहते हैं —

"ऐसा फिर पतझड़ आयेगा कोयल न कुहक फिर पायेगी,
बुलबुल न अंधेरे में गा-गा जीवन की ज्योति जगायेगी ।"

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 56.
2. वही, पृ0 91.
3. वही, पृ0 104.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"मधुशाला" और "मधुबाला" में बच्चन ने विलास की चेतना को व्यक्त नहीं किया । इन प्रतीकों के माध्यम से उसने युग-युग की जड़ सीमाओं और मर्यादाओं को तोड़ा । "मधुकलश" की गुलदजारा भी एक प्रतीकात्मक कविता है जो निर्गुण सन्तों की परम्परा में जीवन की नश्वरता का चित्र प्रस्तुत करती है –

"बीज के जो कोश बाकी थे, गया ने तोड़ डाली,
पीत होकर सब ठिठुरती पत्तियाँ हैं नोक वाली,
मृत्यु शय्या पर पड़े अति रुग्ण की अन्तिम हंसी-सी
यत्न करके खिल रही है एक लघु कलिका निराली ।

हारे हुए जीवन के लिए विहंगम, गृहस्थ के लिये नीड़, उपवन तथा मृत्यु के लिये झंझावात के प्रतीक उन्होंने निशा निमन्त्रण में रखे । उलूक , सियार, तथा उल्कापात विपत्ति के प्रतीक हैं । दीपक प्रिय पात्र और परवाने प्रेमी के प्रतीक हैं । इसी प्रकार दीवाली सुख का और अन्धकार दुख का प्रतीक है । उडुगन नश्वर सुखों के प्रतीक हैं । पपीहा तृषित व्यक्ति का प्रतीक है । मेघ विरही व्यक्ति और दानी का प्रतीक है । श्यामा शुभ संदेश और अरुणाचल परिवर्तन का प्रतीक है । "सतरंगिनी" में इन्द्र धनुष को उन्होंने उल्लास का प्रतीक माना है । इन्द्र धनुष की रचना भी इसी प्रकार की है । कुलचू जहां प्रिय की प्रतीक्षा में बैठे विरही का प्रतीक है वहां उत्साह का भी–

"प्रभंजन, मेघ, दामिनि ने न क्या तोड़ा, न क्या फोड़ा,
धरा के और नभ के बीच कुछ नाचित नहीं छोड़ा,
मगर विश्वास को अपने बचाये कौन बैठा है ।"

चोंच में तृण लिये चिड़िया जीवन निर्माण का प्रतीक है । जैसे–
"एक चिड़िया चोंच में जो तिनका लिये जा रही है,
वह सहज में ही पवन उंचास को नीचा दिखा रही है ।"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"सतरंगिनी" के प्रतीक जिजीविषा के प्रतीक हैं । कवि ने स्वयं स्वीकार किया है कि मयूरी और नागिन जैसे नारी प्रतीकों के लिये दो शब्द चुने । नारी का सुखद रूप मयूरी के प्रतीक से और कुटिल रूप नागिन के प्रतीक से व्यक्त किया गया है । सतरंगिनी की भूमिका में उन्होंने कहा है कि –
"यहाँ अरुण - शिखा, कोकिल, बुलबुल, पपीहा, सतरंगिनी से पहले मेरे जीवन अथवा काव्य के चार सोपानों के प्रतीक पाँचवां विहंगम को इन्द्र धनुष की छाया में बैठकर स्वर-साधन कर रहा है मयूर है । मयूरी परिणीता नारी की प्रतीक है और नागिन प्रमदा ।"[1] संतती के लिये कुछ प्रतीक कवि ने दिये हैं । जैसे दूध नवल, बाल नवल, फुल्ल नवल, ज्वाल नवल, ।

"बहुत दिन बीते", "जाल समेटा", "त्रिभंगिमा"और "कटती प्रतिमाओं की आवाज" में अंग्रेजी प्रतीकों का भी प्रयोग हुआ है । जैसे कैक्टस भारत के सांप, पहाड़ और नदी, संध्या की ज्योति ध्वनि, खोटा सिक्का तथा एक पावन मूर्ति । बाल्य काल को कविता, यौवन को पहाड़ और वृद्धावस्था को हाथी कहना उनकी वृत्ति को ध्यान में रखकर ही निर्धारित किया गया है । दो चट्टानें रचना में सिसिफस पुरानी पद्धति का प्रतीक है । लोक गीतों में अर्थात "जाल समेटा" और "त्रिभंगिमा" रचना में गंगा की लहर, सोन मछरी, कड़ी मिट्टी, भीगी सहेलियाँ तथा नील परी प्रतीकात्मक रचनाएँ हैं । यहाँ नील परी गुह्य रहस्यात्मक सृजन का और मोती प्रकाश की साधना का प्रतीक है । गाँधी जी के बन्दर , नदी भर गई, मिट्टी का द्रोणाचार्य भी प्रतीकात्मक रचनाएं हैं । बच्चन को लंदन प्रवास के दिनों में हंस के प्रतीकों ने बड़ा प्रभावित किया है । प्रणय पत्रिका में हंस और मानसरोवर का कबीर की तरह तात्त्विक प्रयोग किया है पर उनके मूल में हंस और हंसनियाँ के प्रतीकों से प्रवासी, प्रेमी और प्रिया की ही ध्वनि निकलती है । प्रणय पत्रिका के 43 से लेकर 48 तक के गीत इन्हीं प्रतीकों से रचे गये ।

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 317-318.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बच्चन के प्रतीकों का आधार बड़ा व्यापक है उनमें भारतीय तथा अभारतीय दोनों ही प्रकार के प्रतीकों का निर्वाह हुआ है ।

संगीतात्मकता –

बच्चन के काव्य में ध्वनि और लय का प्राचुर्य है वे मूलतः महाभेदना के कवि हैं, और संगीत का तन्त्र उनी भेदना में रचा पचा है । जैसे शून्य में छेड़ा हुआ नाद एक विषाद का वातावरण बनाकर ध्वनि तरंगों में सिमट जाता है उसी तरह स्वाभाविक संगीत से लेकर शब्द रूपों के साधारणीकरण तक बच्चन में एक लयात्मकता दिखाई देती है । गीत यद्यपि स्वच्छन्द रचना है पर प्रत्येक गीत का निजी छन्द चयन कर कवि ने गीत की संगीतात्मकता के महत्व को स्वीकार किया है इसीलिये यद्यपि उनमें गणित जैसा क्रम नहीं है फिर भी संवेदनात्मक संगीत है । वे शब्दों का चयन भी भाव के विस्तार और प्रत्यक्षीकरण के लिये करते हैं । ऐसे स्थलों पर महाकाव्यात्मक भाव की पंक्तियां बच्चन में देखने को मिलेंगी । एक टुकड़ा लीजिये –

गहनांधकार में पांथ थार,
गुम नयन फाड़, गुम कर पसार

यहां अंधेरे में भटके हुए शंका को सार्भौम मनुष्य की खोज का चित्र प्रस्तुत किया गया है । इसी प्रकार तीन पंक्ति लीजिये –

"विष का स्वाद बताना होगा;
"ढाली थी मदिरा की प्याली;
"घुली थी अधरों की लाली "

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यहाँ पुत्री क्रिया भोग के जिस अमर्यादित रूप को प्रस्तुत करती है उसी अपराध के दण्ड के रूप में विष के स्वाद की अनिवार्यता की व्यंजना भी कराती है । ध्वनि से हृदय को कम्पित कर देने की प्रक्रिया से कवि पूर्ण परिचित है। एक चित्र लीजिए --

"पुकारता पपिहरा पिआ-पिआ
प्रतिध्वनित निनाद से हिया-हिया .

यहाँ पिया पपीहे की ध्वनि तो है ही पि..आ के रूप में प्रियतम को बुलाने की गुहार भी है । खेद है कि डा० इन्दुबाला दीवान जैसी शोधकर्त्री ने बच्चन अनुभूति और अभिव्यक्ति प्रबन्ध में संगीत के नाम पर कुछ भ्रांतिपूर्ण मान्यताओं की सृष्टि की । उदाहरण के लिये हलाहल में दो पंक्तियाँ आई हैं –

"उतर आती इस पर हर साल
अनोखी एक वसन्त बहार
हमी कागज के घर में बैठ
उठाया करते दीपक राग ।

शोधकर्त्री ने इन दो शब्दों को पकड़ कर ही इन पदों में वसन्त बहार और दीपक की कल्पना कर ली, जबकि इनमें दोनों ही सांकेतिक राग नहीं हैं । हाँ स्वर आलाप गमक, राग रागिनि, ताल, तान, लय तथा वीणा जैसे शब्दों का प्रयोग कर उन्होंने आवेग की अभिव्यक्ति सफलतापूर्वक कर इन विशिष्ट शब्दों को पकड़ कर गीत की कारीगरी को समझा जा सकता है जैसे –

अल्प गंध विधान अंगन,
गीत वीणा प्रबन्ध चन्दन,
है अलम्बन गमक गुंजन.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक ही गति है कुसुम के प्राण की कवि के वचन की ।
गंध आती है सुमन की "

लोक धुनाधारी गीत लिखने से कहीं कहीं छन्द शैथिल्य दिखाई पड़ता है पर वह वहाँ दोष न कर गुण है । उनका छन्द रूप और लय विधान क्योंकि लोक गीतों से ग्रहीत है अत: उन्हें लोक संगीत के रूप में ही ग्रहण करना चाहिये। बच्चन ने ग्रामीण छन्दों की लय को नागरिक भाषा और नागरिक शब्द प्रदान किये । ये सहगान के लिये लोक पर गाने के लिये अपने गीतों की रचना करते हैं । जैसे --

"अन्तिम शैय्या हो तेरी छैय्या,
छैय्या निभा दे प्रीत रे "

यहाँ शैय्या, छैय्या और दैय्या लय के तकनीक की दृष्टि से सफल प्रयोग है । अन्तिम टेक में किसी महत्वपूर्ण तथ्य को कह देना जहां स्थायी प्रभाव पैदा करता है वहाँ संवादों के माध्यम से कथा गुंथ देना और फिर जानी पहिचानी भाषा में दुनिया के यथार्थ को अभिव्यक्त कर देना भी बच्चन की कला है , उनसे पूर्व यह प्रयोग साहित्य जगत में किसी ने नहीं किये । "त्रिभंगिमा" की पंक्तियाँ देखिये --

"जो है कंचन का भरमाया,
उसने तिनका प्यार निभाया,
मैंने अपना बदला पाया,
मांगी मोती की लरी,
पाई आंसू की लरी ।
सीता ने हिरण मूल मांगा,
उनका मुख लेकर वह भागा,
बस रह गई नयनों में आंसू की लरी ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाद और लय पर बच्चन का असाधारण अधिकार है । इन दो पंक्तियों के साथ हम अपनी बात समाप्त करते हैं –

"ढोलक की लय पर
चक्की की घुर-घुर
चर्खे की घुर घुर
गागर उठाता है, पायल बजाता है पांव रे ।

प्राकृतिक चित्रण --

छायावादी कवियों ने प्रकृति को जीवित सत्ता और दैवीय सत्ता के रूप में देखा । उससे पूर्व प्रकृति का उद्दीपन विभाव के अन्तर्गत ही वर्णन हुआ था । कवि अनुभूति और प्रकृति को कल्पना और भावना के संगम द्वारा व्यक्त करता है । प्रकृति स्वयं तो जड़ और मूंगी है कवि उसे वाणी देता है । मुखरित करता है । डा० विजयेन्द्र स्नातक के अनुसार प्रकृति के विराट सौन्दर्य पर मुग्ध होकर कवि काव्य रचना करता है उसके सौन्दर्य को कल्पना का विषय बनाता है । यह अनुभूति ही अभिव्यक्ति का विषय बनकर कविता का रूप धारण करती है ।"[1]

प्राकृतिक दृश्य चित्रण का काव्य में क्या महत्व है इस पर पं० रामचन्द्र शुक्ल ने चिन्तामणि भाग दो में गहराई से विचार किया है। प्राकृतिक दृश्य चित्रण के सुन्दर उदाहरण वाल्मीकि, कालिदास तथा भवभूति के काव्य में मिलते हैं । वर्ड्सवर्थ तथा टेनीसन के काव्य में भी ऐसे चित्र उपलब्ध हैं । प्रसिद्ध आलोचक हडसन ने ऐसे चित्रों के महत्व को स्वीकार किया है । आधुनिक युग में छायावादी कवियों ने प्रकृति के महत्व को स्वीकार किया

---

1. काव्य और प्रकृति लेख पं० जगन्नाथ तिवारी, अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० 208.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और मुख्य रूप से पंत ने प्रकृति का चित्रण प्रमुख रूप से किया। बच्चन के समसामयिक कवियों में पंत और रामकुमार वर्मा के काव्य में ही प्रकृति के बहुरंगी चित्र मिलते हैं। डा० रामकुमार वर्मा ने ठीक ही लिखा है कि बसन्त में पुष्पों का विकास और उसकी सुगन्धि, शीतल मंद समीर और चारों ओर तरु - लताओं के नवीन तन ग्रीष्म की पृथ्वी और आकाश में ज्वाला परन्तु पक्षियों तक को छाँव की खोज, वर्षा में घटाओं की छटा और झमाके का पानी, शरद में शीतलता और खंजन के दर्शन, हेमन्त में तुषार और शीतल पवन तथा शिशिर में दिनमान की न्यूनता तथा पछवा तथा पुरवी की व्यथा हृदयग्राहिणी हो जाती है। इस प्रकार मानव जीवन का प्रकृति के साथ इतना अविच्छिन्न सम्बन्ध हो जाता है कि अनुभव की प्रत्येक परिस्थिति में प्रकृति सहचरी की भाँति सामने खड़ी हो जाती है।

बच्चन प्रगीतकार हैं। उन्होंने मन की भावनाओं को प्रकृति के विभिन्न रूपों के साथ जोड़कर मनुष्य और प्रकृति को एक दूसरे के स्नेह पाश में बांध दिया है। मधुशाला की भूमिका में प्रकृति का ऐसा ही एक रहस्यात्मक चित्र कवि ने प्रस्तुत किया है। वह प्रकृति को अपने में और प्रकृति में अपने को प्रतिबिम्बित देखता है - "बादल अपना अपनापन अगणित बूंदों में, बूंदें अपना अपनापन जल-धाराओं और नदियों में और नदियां अपना अपनापन समुद्र में खोने को आतुर हैं। और वह समुद्र भी तो हर समय विक्षुब्ध रह कर किसी ऐसे की खोज कर रहा है जिसके चरणों में वह अपनी सम्पूर्ण जल राशि अर्घ्य रूप में अर्पित करके रिक्त हो जाये। पृथ्वी अपना अपनापन अगणित तृण-वेलि- पेड़ों में, तृण-वेलि-पौधे अपना अपनापन पुष्प और कलियों में पुष्प और कलियां अपना अपनापन- अपना सौरभ - समीर में मिश्रित करने को आकुल है। पतंग अपना अपनापन दीपक के आगे, दीपक अपना अपनापन दिवस के आगे, दिवस अपना अपनापन रजनी के आगे और राशि-तारक-मणि मंडित रजनी अपना अपनापन सूर्य के आगे अर्पण करने को व्याकुल है। और वह सूर्य भी तो आदि सृष्टि से किसी ऐसी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महज्ज्योति को प्राप्त करने के लिये तपस्या कर रहा है जिसकी एक बार आरती उतार कर बुझ जाये ।"[1] इस प्रकार बच्चन ने प्रकृति को अपने सुख दुख का सहचर माना है तथा पृष्ठभूमि के रूप में गीत की भावना को तीव्रतम करने के लिये उन्होंने प्रकृति के विविध रूपों का चित्रण किया है । इस दृष्टि से मधुबाला की भूमिका पढ़ने योग्य है ।

कवि प्रकृति के साथ अपना तादात्म्य कर लेता है । देखिये –

"मेघ जित-जित काल पड़ता मैं स्वयं बन मेघ जाता,
हो धरणि चाहे शरद की चाँदनी में स्नान करती,
वायु चाहे हेमन्त की चाहे गगन में हो विचरती,
हो शिशिर चाहे गिराता पीत-जर्जर पत्र तरु के,
कोकिला चाहे वनों में हो वसन्ती राग भरती,
ग्रीष्म का मार्तण्ड चाहे हो तपाता भूमि-तल को
दिन प्रथम आषाढ़ का मैं "मेघ-दूत" द्वारा बुलाता" ।[2]

निशा निमन्त्रण, तारंगिनी, मिलन यामिनी तथा प्रणय पत्रिका में कवि ने प्रकृति के कई मनोरम चित्र प्रस्तुत किये हैं । निशा निमन्त्रण के दो आलम्बन चित्र देखिये –

साथी सांझ लगी अब होने ।
फैलाया था जिन्हें गगन में,
विस्तृत वसुधा के कण-कण में,
उन किरणों को अस्ताचल पर पहुंच लगा है सूर्य समेटने ।
मिट्टी से था जिन्हें बनाया
फूलों से था जिन्हें सजाया

---

1. रचनावली भाग 1, पृ० 40.
2. वही, पृ० 144.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जैसे धरती छोड़ पथों पर चले गये हैं बच्चे सोने।[1]

अथवा

अब निशा नभ से उतरती।
देख है गति मन्द कितनी
पास यद्यपि दीप्ति इतनी।
क्या लवों को जो डराती क्या किसी से आप डरती[2]

अथवा

संध्या सिन्दूर लुटाती है
रंगती स्वर्णिम रंग से सुन्दर
निज नीड़-अधीर खगों के पर,
तरुओं की डाली-डाली में कंचन के पात लगाती है[3]

जिस विषाद और अकेलेपन का अनुभव कवि ने किया है उसे वह प्रकृति में बिखरा हुआ देखता है और इसीलिये वह प्रकृति के माध्यम से अपनी मनोदशा का चित्रण करता है --

"अंतरिक्ष में आकुल-आतुर
कभी इधर उड़ कभी उधर उड़,
पंख नीड़ का खोज रहा है पिछड़ा पंछी एक अकेला"[4]

उपदेश के रूप में भी कवि प्रकृति का चित्रण करता है --

"मुझसे चाँद कहा करता है -
चोट कड़ी है काल प्रबल की,
उसकी मुस्कानों से हल्की

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 162.
2. वही, पृ0 164.
3. वही, पृ0 162.
4. वही, पृ0 163.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राजमहल कितने सपनों का पल में नित्य ढहा करता है ।[1]

अथवा

"एक ही होता इशारा
टूटता रह-रह सितारा,
एक उत्तर सर्व प्रश्नों का । महासन्नाय ।"[2]

"निशा निमन्त्रण" और "एकान्त संगीत" के कई गीत रात के वातावरण से अनुरंजित हैं । आलम्बन रूप में एक निस्तब्धता का चित्र देखिये --

"सुन रहा हूं, शान्ति इतनी
है टपकती बूंद जितनी,
ओस की जिससे दुनों का गात रात भिगो गई है ।
दे रही कितना दिलासा
आ झरोखे से जरा-सा
चांदनी पिछले पहर की पास में जो सो गई है ।"[3]

प्रकृति के संश्लिष्ट चित्र भी बच्चन में बहुत अधिक मिलते हैं जैसे विवृक्त कवि का बुलबुल के माध्यम से दुख निवेदित करने वाला यह चित्र --

"बुलबुल जा रही है आज ।
प्राण सौरभ से भिंटा है,
कंटकों से तन छिदा है,
पाट भोगे सुख-दुखों की आ रही है आज ।"[4]

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 174.
2. वही, पृ0 172.
3. वही, पृ0 180.
4. वही, पृ0 233.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सतरंगिनी में कवि ने नागिन, मयूरी, कोकिल, इन्द्रधनुष, पपीहरा आदि प्राकृतिक प्रतीकों के माध्यम से अपनी अनुभूतियों को व्यक्त किया है । मिलनयामिनी में उद्दीपन के रूप में प्रकृति का चित्रण मिलता है जैसे –

"चाँद निखरा, चंद्रिका निखरी हुई है,
भूमि से आकाश तक बिखरी हुई है,
कारा में भी बिखर सकता भुवन में ।[1]

अथवा

पास मेरे तुम, तुम्हारे पास मरती,
बादलों की गोद में बिजली विहँसती,
मैं भरा-उमड़ा, भरा-उमड़ा गगन भी,
आज रिमझिम मेघ, रिम झिम है नयन भी "[2]

अथवा

"निशंकित पड़ी है नभ की बाहों में रजनी की काया,
चाँद चाँदनी की गदिरा में है डूबा, भरमाया,
अलि अब तक भूले-भूले से रस भीनी गलियों में,
प्रिय मौन खड़े जलजात अभी मत जाओ,
प्रिय शेष बहुत है रात अभी मत जाओ ।[3]

मिलन यामिनी के उत्तर भाग में संध्या, रात्रि, दिवस, शरद, हेमन्त, शिशिर, वसन्त और प्रभात के बड़े मनोरम चित्र हैं । प्रकृति और चमत्कारी भाषा का प्रयोग इन 35 खण्ड दृश्यों में हुआ है ।

उद्दीपन के रूप में ही "प्रणय पत्रिका" का निम्नलिखित प्रकृति दृश्य भी

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 23.
2. वही, पृ0 36.
3. वही, पृ0 61.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उल्लेखनीय है —

"पर अभी नहीं चिड़ियों ने अपने नीड़ों को मोड़े,
हंसों ने लहरों के अंचल-पट अभी नहीं छोड़े,
थोड़े कलियों के अधरों ने हैं अधर अभी भी,
सखि, अभी कहां से रात, अभी तो अम्बर में लाली ।"[1]

इस प्रकार बच्चन में पृष्ठभूमि के रूप में ही प्रकृति के खण्ड दृश्यों का चित्रण हुआ है । स्वतन्त्र प्रकृति को ही लक्ष्य बनाकर उन्होंने नहीं लिखा और इस प्रकार प्रकृति और जीवन के अविच्छिन्न सम्बन्ध की ही अभिव्यंजना में ही उनकी रुचि रही है । बच्चन में प्रकृति के वैसे चित्र अनुपलब्ध हैं जैसे पंत में । उन्होंने स्वयं कहा भी है " प्रकृति सृजन को सृजन का लक्ष्य तो दूर प्रयुक्ता देना भी कभी मेरा ध्येय नहीं रहा "[2] फिर भी आलम्बन, उद्दीपन और अलंकरण के साथ उपदेशात्मकता का संयोग उन्होंने कहीं-कहीं अपने गीतों में रचा है किन्तु ऐसे गीत बहुत कम हैं । एक गीत यहां उद्धृत है —

"चुपके से चांद निकलता है ।
तरु-माला होती स्वयं प्रथम,
फिर आभा बढ़ती है क्रम-क्रम,
फिर सोने का चन्दा नीचे से उठ ऊपर को चलता है ।
सोना चांदी हो जाता है,
जलता बनकर ढो जाता है,
पल-पहले नभ के राजा का अब पता कहां पर चलता है ?
चुपके से चांद चला है ।
अरुण आभा, किरणों की माला
रवि-रथ बारह घोड़ों वाला,
बादल बिजली औ इन्द्र धनुष,

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 114.
2. वही, भाग 1, पृ0 209.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तारक-दल, सुन्दर शशि बाला,
कुछ काल सभी से मन बहला, आकाश सभी को छलता है।
वश नहीं किसी का चलता है।"[1]

अलंकरण--

बच्चन के काव्य में अलंकारों का आग्रह नहीं है पर प्रसिद्ध अलंकारों के उदाहरण मिल जाते हैं कुछ उदाहरण लीजिये--

उपमा--

"तुम्हारे नील झील-से नैन, नीर निर्झर-से लहरे केश"[2]
"सरसिज" से दृग [3]
"नव नील नीरज लोचन[4]
"बाण-विद्ध मराल-सा मैं आ गिरा हूं"[5]
"घायल मृगी-सी आ रही हो
"घायल हिरण सा मैं[6]
जिनकी मखमल-सी शैय्या पर[7]
मानसर का मराल-सा[8]
चांद हंसिया सा नजाने [9]

---

1. रचनावली भाग 1, पृ0 282.
2. रचनावली भाग 2, पृ0 115.
3. प्रणय पत्रिका, पृ0 47.
4. दो चट्टानें, पृ0 84.
5. रचनावली भाग 2, पृ0 122.
6. वही, पृ0 241
7. वही, पृ0 345.
8. वही, भाग 3, पृ० 35.
9. वही, भाग 2, पृ० 112.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपक--

प्राणराका उड़ गयी प्रातः पवन में ।[1]

आकाशी कुसुमों कलियों को रवि किरणों की धार बहाती[2]

आयर मधुवन की कलिका[3]

घाट भवन बह जाते[4]

व्योम स्वर्ग स्वप्न झूंखला[5]

यौवन-मधु ऋतु[6]

मानवीकरण--

संध्या की श्यामल अलकों ने अम्बर का आनन

अवनी की अलसित पलकों पर तन्द्रा तिरती आती क्षण क्षण[7]

शिथिल पड़ी है नभ की बाहों में रजनी की काया[8]

अपह्नुति--

यह घन कुन्तल राशि नहीं है.

पर्दा है जग की आँखों पर,

अधरों पर मधु बिन्दु नहीं है आया रस का सिंधु सिमट कर[9]

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 57.
2. वही, पृ0 63.
3. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 115.
4. रचनावली भाग 2, पृ0 116
5. वही, पृ0 162.
6. मिलन यामिनी, गीत 10.
7. रचनावली भाग 2, पृ0 73.
8. वही, पृ0 61.
9. वही, पृ0 59.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अन्योक्ति --

यह कमल का वास है, दादुर, इसे पहचान तू सकता नहीं है ।[1]

उदाहरण अलंकार--

जैसे इस सागर के अन्दर बिम्बित है नाना नभ मण्डल,[2]

"प्रात पवन के छूने पर ज्यों फूल बिना श्रु पर झड़ जाता"[3]

पुनरुक्ति--

"रात-रात गीतों में हो मुखरित,
कर नव-नव उर में वितरित,
कुछ हल्का तुम कर देती हो मेरे जीवन का व्यथा भार ।
ओ अपरिपूर्णता की पुकार ।"[4]

"भीतर-भीतर जान रहा हूँ जहाँ कुसुम लेकर तुम आये,
और बिछा रख उसके ऊपर टूक-टूक बिखर पड़ेगी,[5]

"याद-याद सी शकल तुम्हारी, भूला-भूला नाम तुम्हारा ।[6]

"घड़ी-घड़ी बहता मधु-रस है, अजित हमारे पियो-पियो।"[7]

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 247.
2. वही, पृ0 99.
3. वही, पृ0 123.
4. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 256.
5. वही, भाग 2, पृ0 123.
6. वही, भाग 2, पृ0 233.
7. वही, भाग 2, पृ0 170.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"मेरी तो हर सांस मुखर है, प्रिय तेरे सब मौन संदेश
एक लहर उठ-उठ कर फिर-फिर-चल कर जाती है"।[1]
"जब प्यास-प्यास कर धरती का पोधा-पोधा मुर्झाता है"[2]

दीपक--

"समझा था जितने मुझको सब
समझाने को वह न रही अब
समझाते मुझको हैं, कुछ न समझने वाले
कैसे आंसू नयन सम्भाले।"[3]

उल्लेख अलंकार--

"फुल्ल कमल, गोद नवल, मोद नवल
गेह में विनोद नवल।
बाल नवल, लाल नवल,
दीपक में ज्वाल नवल।
दृग नवल, पुत नवल,
नवल दृश्य, नवल दृष्टि,
जीवन की नवल सृष्टि।[4]

विरोधोक्ति--

"मन में सावन-भादों बरसे, जीभ करे पर पानी-पानी।
पलती-फलती है दुनिया में बहुधा ऐसी बेईमानी,"[5]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 98.
2. " भाग 1, पृ0 345.
3. वही, भाग 1, पृ0 268.
4. रचनावली भाग 1, पृ0 360.
5. वही, भाग 2, पृ0 246.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विरोधाभास --

"अधरामृत की उस तह तक में पहुंचा विष को भी चख आया,
और गया सुख को पिछुआता पीर जहां वह बनकर छाया".[1]

दृष्टान्त --

"हिल उठे तरु-पत्र सहसा,
शान्ति फिर सर्वत्र सहसा
छा गयी, जैसे प्रकृति ने ली विदा दिन के पवन से ।[2]

विषम--

कहां विरत चैतन्य महाप्रभु, कहां मनुज ममता-रत, कामी,
पर विद्यापति के चरणों के दोनों हैं बरबस अनुगामी" [3]

अतिशयोक्ति--

अग्रसर होता अधर में कल्पना-खग पर संवर जब,
अश्व द्वादश अंशुमाली के न पा सकते मुझे तब,[4]

बच्चन ने अलंकारों के लिये कुछ नये उपमान चुने हैं जैसे - टोर्च जैसी आंख, कुर्सी मेज के नीचे मांस के फर्नीचर जैसा जीवन, स्याही की फैक्टरियां जैसे सोडा वाटर की, पर यह सब उपमान बुद्ध और नाचघर और त्रिभंगिमा जैसी रचनाओं में ही मिलते हैं ।

"प्रणय पत्रिका" के उपमानों में कहीं-कहीं छायावादी सूक्ष्मता भी है।

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 246.
2. वही, भाग 1, पृ0 163.
3. वही, भाग 2, पृ0 197.
4. वही, भाग 1, पृ0 138

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जैसे —

"मेरा भाग्य उदय है तेरी ऊषा का वातायन,
अरुण किरण के शर हैं मेरे, तेरा हृदय तूणीर"[1]

"चाँद हँसिया सा न जाने"[2]

"प्रेमी की छाती सा फला क्षितिज"[3]

"मानसर किया हुआ है पर प्रतिघा के मुखर-सा
मौन औ" गम्भीर बन कर"[4]

कवि पौराणिक आख्यानों से भी परिचित है । इसके बाद कहीं-कहीं पौराणिक कथाओं से भी नये संदर्भ प्रस्तुत करता है जैसे -

"गज को ग्राह मिला करते हैं लेकिन इससे मत घबराये [5]

"भारद्वाज मुनि जहाँ बसे थे उसी जगह पर आते जाते",[6]

"हे पशुओं पर दया के प्रचारक अहिंसा के अवतार [7]

"क्या यही यमराज का लेखा-भवन"[8]

"मिट्टी का द्रोणाचार्य" [9]

"देवतागण सर्प का मुख भाग पकड़ेंगे [10]

---

1. रचनावली भाग 2, पृ० 100.
2. वही, पृ० 112.
3. वही, पृ० 114.
4. वही, पृ० 120.
5. वही, पृ० 191.
6. वही, पृ० 221.
7. वही, पृ० 353.
8. वही, पृ० 420.
9. वही, पृ० 435.
10. वही, पृ० 462.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मंदिराचल मूल का यह कठिन
ठोस स्थूल भारत"
"मैंने गरुड़ देखा, गगन का अभिमान" ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बच्चन का भाव पक्ष जितना प्रौढ़ है कला पक्ष भी उतना ही समृद्ध है । छायावादोत्तर हिन्दी को जन सुलभ बनाने तथा उसे प्रखर रूप देने में बच्चन के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता ।

---

1. रचनावली भाग 2, पृ0 560.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छटा अध्याय

"बच्चन की गीति योजना"

"गीति" का अर्थ गायन योग्य पद से है । जो किसी भी छन्द के माध्यम से सम्भव हो सकता है क्योंकि प्रत्येक मात्रिक या वर्णिक छन्द में लय होती है और लय ही छन्द की आत्मा है । यूं तो काव्य और गीत दोनों ही ध्वनि के स्वरूप है । गीत में संगीतात्मक नाद और सौन्दर्य विशेष रूप से पाया जाता है।गायन विद्या चौंसठ विद्याओं में से एक है । इसे पंचम वेद भी कहा जाता है । यह गायन विद्या सामवेद का उपवेद है जिसमें साहित्य, स्वर, ताल और रस यह चार प्रधान अंग होते हैं ।

संगीत शास्त्र अपनी स्वतन्त्र सत्ता रखता है । उसके विस्तृत विवेचन से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं । यहां तो केवल इतना ही ध्यातव्य है कि बहुत सी देसी रागिनियों और शास्त्रीय रागों की लय के आधार पर भी आधुनिक हिन्दी साहित्य में अनेक गीत-गीतिकाओं की रचना हुई है । गीत काव्य की परम्परा, परिभाषा और तत्व को परिभाषित करते हुए स्वयं बच्चन जी ने कहा है कि -- "ऐसा आदमी शायद ही मिले जिसने कभी गीत सुना न हो । या गीत गाया न हो । गाने का वरदान प्रकृति बड़े मुक्त हस्त से लुटाती है । जो औरों के सामने गाते हुए शरमाते हैं वे गुसलखाने में गाते हैं । मूक संगीत भी होता है । जैसे अनहद नाद बिना कान के सुना जाता है उसी तरह यह मूक संगीत बिना कण्ठ के गाया जाता है ।..... गाने की तबीयत जब ध्वनि शब्द का आधार लेती है तब वह गीत का रूप लेती है ..... हमारे देश का तो सारा जीवन ही गीतमय है । ..... गीतों का आदि खोजने का अर्थ है जीवन का आदि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कोयना । गीत हजारों वर्षों से गाये जा रहे हैं परन्तु उनका मूल रूप जो आरम्भ में रहा होगा वह आज भी है । भावों की तीव्रता, उनकी एकता और उनकी गेयता । गीत शब्द का अर्थ ही है गाया हुआ ।"[1] जैसा कि हम पूर्व भी कह चुके हैं कि संस्कृत साहित्य में तो गीतों की परम्परा वैदिक काल से ही मानी जाती है -- "गाथा शब्द मूलत: वैदिक है तथा इसका सम्बन्ध "गा" धातु से है । ऋग्वेद में इसका ठीक वही अर्थ है जो "गातु" शब्द का, अर्थात गेय शब्द ।"[2]

श्री मद्भागवत गीता के दसवें स्कन्ध में गोपियों द्वारा गाया हुआ "वेणु" गीत भी बड़ा सरस और मार्मिक है ।" .... गीता का भी तो अर्थ यही है कि जो गाया गया हो ।"[3]

आधुनिक संस्कृत साहित्य में जयदेव कवि कृत "गीत गोविन्द" का अनुपम खजाना है ।

हिन्दी के साहित्यिक गीतों का उद्भव "गीत गोविन्द" शैली में विद्यापति कवि से हुआ । भक्ति काल में यह शैली में कबीर, सूर, तुलसी ने गीतों की रचना की और मीरा ने तो हृदय की पीड़ा को गीतों में साकार ही कर दिया । मीरा में सूर की तीव्रता है, कबीर की मस्ती, तुलसी की सात्विकता तो है ही पर उसकी अपनी जो उन्मत्तता है वह अद्वितीय है । आधुनिक हिन्दी साहित्य में छायावाद की स्वच्छन्दता से गीति काव्य को नवीन दिशा मिली -- "अपने साहित्यिक रूप में छायावाद के गीतों में ग्राम गीतों की सी भावप्रवणता न थी किन्तु ये साहित्य का सर्वोत्तम प्रकाशन थे ।..... छायावाद ने भी मीरा से माधुरी ली, कबीर से रहस्यवाद ।"[4]

---

1. बच्चन रचनावली भाग 6, पृ0 206-207.
2. डा0 भोलाशंकर व्यास, प्राकृत पैंगलम्, भाग 2, पृ0 411.
3. गुलाबराय, काव्य के रूप, पृ0 127.
4. डा0 प्रेमशंकर - प्रसाद का काव्य, प्रथम संस्करण, पृ0 213-214.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"काव्य की दृष्टि से आधुनिक गीतिकाव्य का प्रारम्भ सम्भवतः गावों में प्रचलित लोक गीतों से होता है। संयुक्त प्रान्त के पश्चिमी प्रान्तों में "लावणी" का बहुत प्रचार है। साधारणतया "लावनी बाजी" के दो अखाड़ों में बड़ा-बड़ी हुआ करती है। इसी प्रकार कव्वाली, कजली, चिरहा इत्यादि अन्य लोक गीत देश के भिन्न-भिन्न भागों में प्रचलित हैं। आधुनिक गीति काव्य-रूप पर इन लोक गीतों का बहुत प्रभाव पड़ा है, विशेषकर लावनी का।"[1] बच्चन के गीतों पर भी "लावनी" का प्रभाव है। उन्होंने टेक्नीक ही नहीं अपितु "लावनी" छन्दों को भी अपनाया है। जिसमें उनके निजत्व का प्रस्फुटन भी हुआ है। जैसे –

"मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना।
मैं फूट पड़ा तुम कहते हो छन्द बनाना।"[2]

इन पंक्तियों में बाईस मात्रा का "लावनी" छन्द है। जिसे "राधिका", "वशीकरण" और "छोटी रंगत" भी कहते हैं।

गीतों में भावात्मक ऐक्य, संगीतात्मकता और वैयक्तिकता परमावश्यक है। बच्चन जी की कविताएं गीत की इस कसौटी पर खरी उतरती हैं। गीतों के माध्यम से उन्होंने कविता को सुक्ष्म अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनका काव्य उनके जीवन की स्थितियों के परिवेश से प्रस्फुटित हुआ है। काव्य के जितने भी रूप हैं, विधाएँ हैं उन सबमें बच्चन जी ने गीत को सर्वोच्च कोटि प्रदान की है।"[3]

मनुष्य के हृदय में जीवन और जगत से सम्पृक्त होकर या वैयक्तिक सुख दुखों की अनुभूति में डूबकर तीव्रतर भावनाएं उत्पन्न होती हैं तो वाल्मीकि के समान उसके मुख से कोई न कोई छन्द फूट पड़ता है, जोकि काव्य जगत का श्रेष्ठतम गीत कहलाता है। इस विषय में स्वयं बच्चन जी

---

1. डा० श्रीकृष्ण लाल, आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास, तृतीय संस्करण, पृ० 107.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 112.
3. द्रष्टव्य - बच्चन रचनावली, भाग 1, पृ० 128.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का कथन है कि - "जब मनुष्य की भावनाएं तीव्र होती हैं, तब वे उसे सहज ही लय मय कर लेती है ।

शब्दों के माध्यम से यदि उनकी अभिव्यक्ति हुई तो वह स्वाभाविक ही छन्दोबद्ध, संगीतात्मक तथा रागोद्बोधक होती है । ऐसी अभिव्यक्ति को गीत की संज्ञा दी जाती है ।

गीतों में भावना की तीव्रता और एकता होती है, इसी कारण गीत अपने आकार में लघु होता है, पर उसमें भी वह एक भाव को जगा, उसे विकास तथा गति दे एक तीव्रतम स्थिति पर पहुंचा देता है ।

प्रत्येक गीत की अपनी स्वतन्त्र इकाई होती है । उसे किसी सन्दर्भ की आवश्यकता नहीं होती ।

उसकी पहली ही पंक्ति मानव-हृदय का किसी न किसी भावना से साथ अपना निकट सम्बन्ध बना लेती है । अच्छे गीत की पहचान ही यह है कि उसकी प्रतिध्वनि भावना-श्रोता या पाठक- के हृदय से आये ।

कुछ गीत शास्त्रीय संगीत में बांधे जा सकते हैं और उन्हें शुद्ध रूप से केवल संगीतज्ञ ही गा सकते हैं, कुछ गीत, भाषा, लय, तुक का सहारा लेकर तरन्नुम के साथ मुखरित किये जा सकते हैं, गीतों में शब्द, और अर्थ का भी, अपना आन्तरिक संगीत भी इतना होता है कि उन्हें मन्वर पढ़ा जाये तो भी उनका आनन्द लिया जा सकता है । गीत शब्द के अर्थ ही हैं, गाया हुआ ।"[1]

गीति और गीत का अन्तर --

यूं तो गीत और गीति काव्य लगभग समानार्थक ही हैं और मुक्तक काव्य की परिधि में आते हैं । क्योंकि गीति या गीत रस-वर्षा में पूर्ण

---

1. बच्चन रचनावली भाग 6, पृ0 483.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर गीतों की अपेक्षा नहीं रखते हैं ।"[1] परन्तु तो भी दोनों में अत्यन्त सूक्ष्म अन्तर यह है कि गीत गीति की अपेक्षा अधिक गेय होते हैं । उनमें लय और संगीत पर विशेष ध्यान दिया जाता है ।

गीति के प्रमुख तत्व --

1. रागात्मक अन्विति अर्थात् संगीत से पूर्व अभिव्यक्ति ।
2. हार्दिकता अर्थात् अन्तर्जगत का चित्रण ।
3. वैयक्तिकता अर्थात् संक्षेप में अभिव्यक्ति जिसे संक्षिप्तता भी कह सकते हैं ।
4. प्रवाह अर्थात् कोमलकान्त पदावली ।
5. आवेग दीप्ति अर्थात् प्रबल मनोवेग की अभिव्यक्ति ।

बच्चन की रचनावली का गम्भीर अध्ययन करने के उपरान्त बच्चन "गीतिकाव्य" में उपर्युक्त पांचों ही तत्व उपलब्ध होते हैं ।

हिन्दी साहित्य के आकाश में मधुशाला के साथ ही बच्चन जी का उदय माना जाता है ।"मधु" शब्द के यों तो अनेकों अर्थ हैं परन्तु जब"शाला" के साथ यह शब्द जुड़ता है तो इससे मद्य अर्थ ही ध्वनित होता है । बच्चन जी ने मधु शब्द को सांस्कृतिक स्वरूप प्रदान करने के हेतु "मधुशाला" को "ऋग्वेद" के इस मंत्र से सम्बद्ध किया है --

"मधुवाता ऋतायते
मधु क्षरन्ति सिन्धव:
माध्वीर्न: सन्त्वोषधी: ।"[2]

इस सूक्त में ऋषि ने अपने लिये सम्पूर्ण सृष्टि के मधुमय होने की कामना की है । किन्तु इसमें वर्णित मधु का तथाकथित मद्य से दूर का भी

---

1. मुक्तक श्लोक एवैव-2 चमत्कार क्षम : सताम् ।अग्नि पुराण ।.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्बन्ध नहीं है ।

वस्तुत: कवि बच्चन न तो स्वयं मधुपायी हैं और ना ही लोगों को मधुशाला के द्वारा मध्यान करते हैं । इस वास्तविकता को उन्होंने मधुशाला के परिशिष्ट में यों व्यक्त किया है -- "मधुशाला" के बहुत से पाठक और श्रोता एक समय समझा करते थे, कुछ शायद अब भी समझते हों, कि इसका लेखक दिन-रात मदिरा के नशे में चूर रहता है । वास्तविकता यह है कि "मदिरा" नामधारी द्रव से मेरा परिचय अधिकतर बराबर नाम है । नशे से इंकार नहीं करूंगा । जिन्दगी ही एक नशा है । कविता भी एक नशा है । और भी बहुत से नशे हैं । अपने प्रेमियों का भ्रम दूर करने के लिए मैंने एक समय एक रुबाई लिखी थी -

"स्वयं नहीं पीता, औरों को किन्तु पिला देता हाला,
स्वयं नहीं छूता, औरों को पर पकड़ा देता प्याला,
पर-उपदेश-कुशल बहुतेरों से मैंने यह सीखा,
स्वयं नहीं जाता, औरों को पहुंचा देता मधुशाला।"[1]

कवि पर यह तुकी काव्य का भी प्रभाव है । वह रहस्यवादी कबीर के समान राम की बहुरिया बनकर अपने प्रियतम को रिझाना चाहता है । वह कहता है कि --

"मेरे प्यारे, देख, अग्नि प्रकृति मधुशाला बन कर खड़ी है आ, तुझे पुरुष बनाकर मैं मायारूपिणी चंचला साकी बाला बनूं । मैं अपने हाथों से प्याला भर-भर कर तेरे अधरों से लगाऊं और तू अनन्तकाल तक अनन्त पिपासा से इसे पीता चला जाए । न मैं पिलाने से थकूं और न तू पीने से।"[2]

मधुशाला में कवि ने फारसी और उर्दू में प्रचलित बहुत से प्रतीकों के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं । जैसे प्याले को उन्होंने कहीं हृदय,

---

1. बच्चन रचनावली भाग 7, पृ0 65.
2. वही, पृ0 41.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहीं नश्वरता और कहीं भाव विचार के प्रतीक के रूप में ग्रहण किया है। और इसी प्रकार "साकी" को कहीं ईश्वर का कहीं मानव का और कहीं कवि का प्रतीक बनाया है। स्वयं हाला को मधुर भाव या कल्पना या प्रेम या कठोर काल या ईश्वरीय प्रेम के रूप में चित्रित किया है। इस सम्बन्ध में मधुशाला के ग्यारहवें संस्करण की भूमिका में बच्चन जी ने स्वयं कहा है--

"कुछ प्रतीकों को लेकर मैंने अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं। ये प्रतीक फारसी, उर्दू में बहुत दिनों से प्रयुक्त हो रहे थे।"[1]।

कहने का तात्पर्य यह है कि मधुशाला के समस्त मुक्तकों में गीति के प्रमुख तत्व "प्रबल मनोवेग" की अभिव्यक्ति हुई है।

कवि ने काव्य प्रेमियों की रुचि को परख कर साहित्य का सृजन किया है। उनकी गीतियों की प्रतिध्वनियां सजीव धड़कते हुए हृदयों से सुनाई पड़ी हैं। जीवन और जगत से जुड़े इस कवि ने अपनी स्थिति स्वयं स्पष्ट की है -

"मेरा दावा इसके अलावा कुछ नहीं है कि मैं एक जीवित, जागृत, संवेदनशील जन समूह के साथ हूं, कवि अपने अन्तःस्वर से उसे मुखरित करते, कभी उसके अन्तः स्वर स्वयं मुखरित होते।"[2] इसीलिये जनता ने बच्चन जी के गीत पढ़े, सुने और अपनाये हैं।

कवि ने मानव हृदय को परखा है। उनकी कविता के मुख्य उपादान दुःख-सुख, आशा, निराशा, विजय और सौंदर्य आदि रहे हैं। उनके गीतों में मानव के मन और प्राणों का मन्थन है। उनकी कविता में प्रकृति, रूपक, प्रतीक और उपकरणों के रूप में बिम्बित हुई है परन्तु उनका प्रतिपाद्य केवल मानव और उसकी मानवता उसका भाग्य और उसकी प्रकृति ही सर्वोपरि है।

प्रतीक-योजना में शब्द "लहरा" ने कहीं भी अपने अर्थ का परित्याग

---

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 37.
2. वही, पृ0 70-71.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं किया है । इस तथ्य को समझे बिना बच्चन के गीतिकाव्य को समझना दुरूह ही नहीं असम्भव भी है । अपनी कविता के इस मुख्य मंत्र का प्रतिपादन कवि ने स्वयं इस प्रकार किया है --

"अपनी कविता में प्रतीकों का उपयोग करने में मैंने एक "लक्षणा" का भी ध्यान रखा है । जिसे अजहत्--स्वार्थ । " कहते हैं । इसमें "लक्षक" शब्द अपने वाच्यार्थ को न छोड़कर कुछ भिन्न या अतिरिक्त भी प्रकट करता है । यह मेरी कविता का मुख्य मन्त्र है । "मधुशाला" से लेकर आज तक के मेरे सारे काव्य में मैं इसे नहीं भूला । इसे न समझने का ही परिणाम है कि "मधुशाला" पढ़कर कुछ लोग मुझे पियक्कड़ समझते रहे, और "मधुरी" कुछ वैसे ही लोग मुझे प्रकृति का कवि समझते हैं ।"[1]

यूं तो बच्चन जी ने अनेक रंग ढंग के छन्द गीत और गीतिकायें लिखीं है । परन्तु सर्वाधिक सफलता उन्हें "मुक्तक" गीतिकाव्य में प्राप्त हुई है --

"मुझे अपनी जीवन परिस्थिति की सीमाओं में प्राय: "मुक्तक यानी छोटी कवितायें -- गीत लिखने का ही अवसर मिला है ।"[2]

रुबाई की परिभाषा --

"रुबाई- अ० स्त्री० उर्दू और फारसी का एक छन्द विशेष जिसका मूल वजन एक तगण एक यगण एक सगण और एक मगण होता है । SSI, ISS, IIS, SSS । इसके पहले दूसरे और चौथे पद में काफ़िया होता है कभी-कभी चारों ही अनुप्रास होते हैं ।"[3]

"रुबाई" में चार मिसरों का होना अनिवार्य है । इस तरह के छन्द संस्कृत में चतुष्पद कहलाते हैं --

---

1. बच्चन रचनावली भाग 7, पृ० 315-316.
2. वही, भाग 1, पृ० 316
3. उर्दू हिन्दी शब्द कोश ।सम्पादक - मुहम्मद मुस्तफ़ा खाँ "मद्दाह" चतुर्थ , पृ० 581.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"अर्थ नास्त्याद्यभीभूता: कथ्यन्तेषु चतुष्पदा: ।
शृंगार रस सम्पन्ना: . . . .।"

"आजकल कवि सम्मेलनों में रुबाइयात के ढंग पर पढ़े जाने वाले दोपदों या चतुष्पदियों ने "चतुष्पद" का स्थान ले लिया है । जिनमें चार पंक्तियाँ ही पर्याप्त समझी जाती हैं ।"[1] जैसे चतुष्पद का अर्थ चार पद है । बच्चन जी ने भी "मधुशाला" की रुबाइयात को उपर्युक्त अर्थ ग्रहण करते हुए चतुष्पदी की ही संज्ञा दी है --

"अख़बार की बिक्री भी मेरे प्रयत्नों से न बढ़ी । दिन भर काम की दौड़ धूप में रहता, रात को होटल में लौट कर "रुबाइयात" के अनुवाद को स्वच्छन्द अक्षरों में लिखता, या दिन की दबी हुई किसी प्रेरणा को "मधुशाला" की चतुष्पदी में उभारता । अख़बार का एजेंट कुछ देर के लिये अनुभूतियों का कवि बन जाता ।"[2]

"रुबाई" का शब्दार्थ और उसका हिन्दी में प्रचलन --

अरबी भाषा में फलों के पकाये हुए रस को "रुब" कहते हैं ।[3] यदि उसमें "आई" प्रत्यय लगाकर "रुबाई" शब्द सिद्ध करें तो इसका अर्थ "आसव" के बहुत कुछ संनिकट होगा । फ़ारसी में "रुबा" उड़ा ले जाने वाले को कहते हैं, जैसे "दिलरुबा" दिल उड़ा ले जाने वाला अर्थात माशूक ।[4] इन दोनों अर्थों के परिप्रेक्ष्य में "रुबाई" छन्द मदिरा और प्रेम की तासीर वाला सिद्ध होता है । यही कारण है कि आजकल इस छन्द में यही दो विषय विशेषत: वर्णित हुए हैं । उमर खैयाम और बच्चन की रुबाइयात का प्रतिपाद्य मुख्य-रूप से मद्य ही है । बच्चन जी ने रुबाई छन्द की केवल चार मिसरों वाली प्रक्रिया तो ग्रहण की है परन्तु वजन को अंगीकार नहीं किया है । क्योंकि

---

1. डा० सत्यव्रत शर्मा, कानपुर का मालवी साहित्य।३०। ,पृ० 10.
2. डा० बच्चन, संदर्भित-बच्चन : एक व्याख्या, पृ० 62
3. द्रष्टव्य : उर्दू हिन्दी शब्द कोश, पृ० 501.
4. वही.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गणों से निबद्ध छन्दों में हिन्दी भाषा में रचना करना अधिक सुकर नहीं है । अतः उन्होंने वर्णिक वृत्तों की अपेक्षा मात्रिक छन्दों के रत्नाकर में अवगाहन कर अपने भावानुरूप छन्द का अन्वेषण किया । उन्होंने "ताटंक" में "रुबाई" छन्द की मदिर गंधि का आभास हुआ । "ताटंक" कान के आभूषण विशेष को कहते हैं । जिसका वर्णन रीति-कालीन कवियों ने स्त्रियों के नख-शिख वर्णन में बहुशः किया है । सुकवियों को मंडित करने वाले "ताटंक" कामदेव की ड्योढ़ी पर फहराते हुए मिले हैं । और यह मुनियों का भी मन हर लेते हैं । इसलिये "ताटंक" शृंगार का विशेष उपादान होने के कारण फारसी के "रुबा" शब्द के अर्थ की गहराई लिये हुए है । अतएव बच्चन जी ने "मधुशाला" के लिये योग्य छन्द का चयन करते समय सम्भवतः इसी अर्थ सौन्दर्य के कारण "ताटंक" को वरीयता दी होगा । हुँ भी हिन्दी साहित्य में बच्चन जी के पूर्ववर्ती या समकालीन कवि प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त आदि "ताटंक" को "कामायनी" और "पंचवटी" आदि में प्रतिष्ठित कर उसके नाद-सौन्दर्य की प्रगल्भता को सहृदयों तक पहुँचा चुके थे ।

यहाँ सर्वप्रथम हम मधुशाला की "गीति-योजना" प्रस्तुत कर रहे हैं । कवि ने "रुबाइयात उमर खैयाम" की समता पर मधुशाला का "ताटंक" छन्द में सृजन किया था जिसमें से ६० रुबाइयाँ "सरस्वती" में उस समय प्रकाशित हुई थीं ।

उमर खैयाम की रिंदाना मस्ती आजतक किसी दूसरे शायर को नसीब नहीं हुई है । उसने जिन्दगी के अनेक मधुर और कटु अनुभवों को इन पद-प्यालों में ढाला है । उसी धरातल पर जीवन और जगत् से जूझकर और भावों की गहराई में डूबकर बच्चन जी ने भी उन्नीसवीं सदी में फिर से हालावाद का चयनाद किया । कवि अपने आसपास घटने वाली सामाजिक घटनाओं को अनुभूति के रंग में डुबोकर चित्रित किया करता है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवि बच्चन ने इतनी तन्मयता के साथ मधुशाला लिखी कि घेरा में ही नहीं घिरेरा में भी उनके मादक स्वर मुखरित हो उठे । उन्होंने मधु शब्द की बहुअर्थता का प्रयोग कर उसके दार्शनिक अर्थों को रेखांकित किया है । उसमें संसार की नश्वरता, क्षण भंगुरता, सामाजिक और आर्थिक उत्पीड़न और अन्याय के प्रतिरोध के स्वर मुखरित हो उठे । और 1935 में "मधुशाला" के प्रकाशन से हिन्दी साहित्य में "हालावाद" का प्रवर्तन हुआ । यद्यपि इनसे पूर्व भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और नवीन जी हाला सम्बन्धी कतिपय रचनाएँ प्रस्तुत कर चुके थे ।[1] परन्तु हालावाद के सार्वधिक प्रचारक एवं सबल समर्थक बच्चन जी ही हैं । बच्चन जी ने प्याला, साकी और सुरा के प्रतीक उमर खैयाम से ग्रहण किये हैं । बिम्ब-विधान में भी कोई नया अर्थ कवि के द्वारा ग्रहण नहीं किया गया है । परन्तु मूल भाव में सादृश्य होने के बावजूद भी बच्चन जी का तर्ज बयाँ अपना है । एक उदाहरण प्रस्तुत है –

"हर रोज़ हर आनम कि खुनम बाद तौबः ,
अज जामे पियालए लबालब तौबः ।
अकनूं कि रसीद बख़्ते गुल बर्बुम देह,
हर मौसमे गुल बे तौबः : बा रब तौबः ।।[2]

शब्दार्थ - - - मैं प्रतिदिन इस पियाले में रक्त (सुरा) से पूर्ण पात्र से तोबा कर लूंगा परन्तु अब जबकि बसन्त ऋतु आ गई (मेरे ऊपर) छोड़ दे, हे ईश्वर बसन्त में मैं तोबा से भी तोबा करता हूं।

"कोई भी हो शेख़ नमाजी या पण्डित जपता माला ।
बैर-भाव चाहे जितना हो,मदिरा से रखने वाला ।।
एकबार बस मधुशाला के आगे से होकर निकले
देखूं कैसे थाम न लेती, दामन उसका मधुशाला ।।[3]

---

1. द्रष्टव्य - कवि के मुख से : मधुशाला, बच्चन रचनावली, भाग 9, पृ0 16.
2. उमर खैयाम, रुबाई- महामनीषी जगदम्बा प्रसाद हितैषी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ0 84-85.
3. बच्चन, मधुशाला, बच्चन रचनावली - 1, पृ0 52.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पूर्ण बच्चन काव्य के अध्ययन से सिद्ध होता है कि बच्चन जी ने पदपादाकुलक, हरिगीतिका, सार राधिका, तरंगी तथा चौपाई आदि कतिपय प्रचलित छन्दों के योग से विभिन्न गीतियों की योजना की है। यथा--

"तुमको मेरे प्राण निमन्त्रण देते।
अन्तस्तल के भाव बदलते कण्ठस्थल के स्वर में,
लो, मेरी वाणी उठती है धरती से अम्बर में,
अर्थ और आखर के बल का कुछ मैं भी अधिकारी,
तुमको मेरे मधुप्रात निमन्त्रण देते,
तुमको मेरे प्रिय प्राण निमन्त्रण देते।"[1]

"मैं छिन-छिन पी-पी रटूं, फिरूं बौरानी।
सीख आई ऋतु बरसात, छोड़ गये साथ,
हमारी बात न पीने मानी।"[2]

बच्चन की छन्द सम्बन्धी मान्यताएं --

"छदि" आच्छादने संवरणे वा धातु में असुन् प्रत्यय लगाकर "छन्द" शब्द बनता है, जिसका अर्थ है - प्रसन्न करना, आच्छादन करना या बांधना आदि। छन्द काव्य के प्रेषणीय भाव को उसके अनुरूप लय में अभिव्यक्त करता है। इसीलिये विश्व के काव्य साहित्य का अधिकतर भाग छन्दोबद्ध है। छन्दों की तरंगें पाठक और परमात्मा के बीच तादात्म्य-भाव उत्पन्न करती है। इसीलिये छन्द को वेद का एक अंग माना जाता है। और इसीलिये विश्व के काव्य साहित्य का अधिकतम भाग छन्दोबद्ध ही है।

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 55.
2. गहर, लावणी का इतिहास, पृ0 145.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रुति, स्मृति, शास्त्र पुराण आदि सभी छन्दोबद्ध हैं। साहित्य के अतिरिक्त आयुर्वेद तथा ज्योतिष शास्त्र आदि के समस्त ग्रन्थ भी छन्दोबद्ध ही पाये जाते हैं। इसका मूल कारण यह है कि कोई भी विषय छन्दोबद्ध होने से शीघ्र ही कण्ठस्थ हो जाता है।

यद्यपि "छन्दों की दृष्टि से आलोच्यकाल में कविता के नये आन्दोलन के फलस्वरूप कोई विशेष महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं पाया जाता। दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया, रोला, तोरठा, छप्पय, मालिनी, द्रुतविलम्बित आदि मात्रिक और वार्णिक छन्दों का प्रधान रूप से प्रयोग होता रहा।"[1]

बच्चन जी ने भी मात्रा, लय और तुक में बंधे हुए पद को ही छन्द माना है। "भगवान पाणिनि ने कहा है--'छन्दः पादौ तु वेदस्य' अर्थात छन्द वेद के चरण हैं, उनके बल पर चलता है, आगे बढ़ता है। "हरिवंश पुराण" में जहाँ बाराह भगवान के विराट रूप का वर्णन किया गया है वहाँ भी उनके चरणों को छन्द कहा गया है, एक स्थान पर छन्द ही उनके मार्ग हैं, ऐसा भी है। छन्द वास्तव में सब प्रकार की शब्दाभिव्यक्ति के चरण हैं, लय उनकी गति है। तुक को उनका विश्राम कह सकते हैं। तुकान्त छन्द जैसे भावनाओं का नृत्य है, जिनमें चरण निश्चित स्थ पर उठते-गिरते और तुक के सम पर पहुँचकर रुक जाते हैं, अतुकान्त छन्द प्रयोजनार्थ कहीं जाने के समान है। जब तक ध्येय न प्राप्त कर लिया जाय तब तक रुकने की कोई जगह नहीं, बराबर चले जाओ। मुक्त छन्द किसी आपाती स्थिति में किसी अज्ञात प्रदेश को पार करना सा है, जहाँ मनुष्य कभी तेज चलता है, कभी धीमे, कभी दायें देखता है, कभी बायें, और कभी मुड़ कर पीछे। उसे रास्ते की खोज भी करनी होती है, रास्ते पर बढ़ना भी होता है। उसे पता नहीं रहता कि वह कहाँ जा निकलेगा। जीवन भावनाओं का सामंजस्य पूर्ण क्षण भर नहीं, और न ऐसा स्थान ही जहाँ

---

1. डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, आधुनिक हिन्दी साहित्य, तृतीय, पृ० 305.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हर लक्ष्य स्पष्ट दिखलाई देता है, जिसकी ओर आदमी बस अपना कदम बढ़ाता चला जाय । बहुत सी आपाती स्थितियों का सामना भी वहां करना पड़ता है । यदि काव्य जीवन का प्रतिबिम्ब है तो इसमें तुकान्त छन्द, अतुकान्त छन्द और मुक्त छन्द सबकी सार्थकता है ।"[1]

बच्चन जी जन्मजात कवि हैं वह जो कुछ अनुभव करते हैं या सोचते हैं वह सब छन्दोमय होता है । "लड़कपन में मुक्त छन्द लिखने का दुःसाहस मैंने अवश्य किया था, पर 1929 से 42 तक का मेरा लिखा जो कुछ प्रकाशित हुआ था वह सब तुकान्त छन्दों में था । "मधुशाला" लिखने के समय से मुझे ऐसा लगता था कि मेरी भावनाएं छन्दों में ही उठती हैं । उससे पहले अवश्य मैं जो कुछ सोचता या अनुभव करता था, उसे छन्दों में बांधने का प्रयास करता था।"[2]

आधुनिक काल में कुछ लोग शिल्प की दृष्टि से कविता में छन्द बन्ध को आवश्यक नहीं मानते । परन्तु बच्चन जी कविता में भाव-पक्ष के साथ-साथ कला-पक्ष अर्थात छन्द आदि को भी महत्व प्रदान करते हैं । "छन्द, तुक, लय, गीत के भावबोध को जीवन्त और उजागर करने में सहायक होते हैं । पर भाव बोध दुर्बल हो तो ये उसे चलने की शक्ति नहीं देते— उसकी बैसाखी बन सकते हैं ।"[3]

बच्चन की छन्द-योजना --

बच्चन जी के काव्य में छन्दों की परम्परा थोड़ी सी नवीनता के साथ यथावत बनी रही है । उनके रचना-शिल्प में वस्तु तत्व की तुलना

---

1. बच्चन, अपने पाठकों से, तुक और नावयर, बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 267.
2. बच्चन अपने पाठकों से, बंगाल का काल, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 407.
3. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 31.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में इस तत्व में अपेक्षानुरूप परिवर्तन नहीं हुआ है। उन्होंने कहीं-कहीं तो पिंगल शास्त्रानुसार विधि विधान पूर्वक छन्दों को ग्रहण किया है और कहीं एक ही छन्द को घटाकर या बढ़ाकर नयी लय का निर्माण किया है तथा कहीं-कहीं दो मिलती जुलती लय वाले छन्दों का सम्मिश्रण कर नवीन गीतों की रचना की है। उन्होंने अपने काव्य में यथार्थ को चित्रित करने के लिये अनुकान्त छन्दों का भी प्रयोग किया है। जहां उन्होंने मुक्त छन्द में रचना की है वहां यति का क्रम तो टूट ही गया है पूर्व निर्धारित नियम भी शिथिल हो गया है।

बच्चन के सम्पूर्ण काव्य का अवगाहन करने पर उनके द्वारा अपनाये गये छन्दों का विवरण प्रस्तुत है।

(1) <u>ताटंक</u>--

इसमें 30 मात्रायें होती हैं 16 और 14 पर क्रमशः यति तथा विराम होता है। "लावनी।लावणी। इसी के अन्तर्गत है।"[1] बच्चन जी ने अपनी प्रसिद्ध रचना "मधुशाला" की लगभग 135 रुबाइयों में ताटंक छन्द का ही प्रयोग किया है। यथा --

"शुद्ध भावों के अंगूरों की आज बना लाया हाला,
प्रियतम अपने ही हाथों से आज पिलाऊंगा प्याला,
पहले भोग लगालूं तेरा फिर प्रसाद जग पायेगा,
सबसे पहले तेरा स्वागत करती मेरी मधुशाला"।[2]

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित रचनाओं में ताटंक का प्रयोग हुआ है--

"<u>मधुशाला</u>--"हुक्का, "<u>आकुल अन्तर</u>" गीत सं. 14, "<u>सतरंगिनी</u>" गीत सं. 3,

---

1. छन्द, प्रभाकर (भानु) सं0 पांडे, पृ0 70.
2. मधुशाला, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 45.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"सूत की माला" गीत सं0 9 तथा 13 तथा 61, "धार के इधर उधर" का 18वां गीत कवि का दीपक, "आरती और अंगारे" गीत सं. 8, 98 "त्रिभंगिमा" में माटी की महक, "गंगा की लहर", "स्वागत गान", के जन्म दिन पर शीर्षक रचनाएं,

चार खेमे चौंसठ खूंटे -- "चलने की मजबूरी है" नामक रचना,

अतीत की प्रतिध्वनियां" के "मरघट" नामक 13 रुबाइयां

"प्रारम्भिक रचनाएं" भाग 1 संकलन की "इंडा", मधुकर, "आदर्श प्रेम", तुमसे, "मधुर स्मृति", तथा "प्रारम्भिक रचनाएं भाग - 2" -"यदि", "सच्ची कविता," "हंसी और आंसू", "क्रान्तिशान्ति", "आकर्षण", "दिवाली" ।

"चौंसठ रूसी कविताएं - "पैगम्बर", "भावों की चिनगारी", "सुन्दरता की शक्ति तथा कविता संख्या 26, 54, 59, 60

"मरकत द्वीप का स्वर" में "भारतीय का ईश्वर", "एक द्वीप मेरे सपनों का, "बाला गीत",

भाषा अपनी भाव पराये की "पंछी उड़ रहा है", "सखी गीत", "श्रावण की गगन लक्ष्मी", "मेला", "मरसिया", "सोता है संसार नहीं" ग़ज़ल.

2. "चौपाई" --

इस छन्द में 16 मात्राएं होती हैं । अन्त में जगण और तगण नहीं होने चाहिये । अर्थात् अन्त में गुरु और लघु न हों -

यथा--

"मैं मधु विक्रेता की प्यारी,-
मधु के घट मुझ पर बलिहारी,"[1]

---

1. मधुबाला, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 81.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निम्नलिखित काव्य संकलनों में "चौपाई" छन्द से निर्मित गीतिकाओं के नाम तथा गीत संख्या प्रस्तुत है --

मधुबाला --

"मधुबाला" , "जीवन तरुवर" इनमें चौपाई का दुगना 32 मात्रा है

निशा निमन्त्रण --

इस संकलन में कवि ने "चौपाई" छन्द को लेकर कई प्रकार की नवीन गीतिकाओं की परिकल्पना की है । कुछ गीतिकाओं की उड़ान में तो "चौपाई" को दुगना कर दिया है जैसे --

"साथी अन्त दिवस का आया !
तरु पर लौट रहे हैं नभचर,
लौट रहीं नौकाएं तट पर,

पश्चिम की गोदी में रवि की क्लान्त किरण ने आश्रय पाया ।[1]

एवं कतिपय गीतिकाओं में "पदपादाकुलक" तथा कतिपय में "गीतिका" छन्द के आधार पर उड़ान की पंक्ति को चिना है ।[2] इस संकलन में चौपाई" छन्द से निर्मित गीतिकाओं की संख्या इस प्रकार है -

गीत सं0 - 2, 3, 5, 8, 10, 13, 14, 16, 19, 23 से 25 से 28, 30, 32, 33, 35, 37, 38, 39, 41, 45, 46, 47, 49, 50, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 63, 64, 65, 66, 68, 69, 70, 72, 75, 76, 78, 79, 80, 83, 85, 86, 87, 88, 91, 92, 94, 95, 96, 97, 98, 99;

एकान्त संगीत --

गीत सं. 2, 6, 8, 9, 10, 11, 27, 40, 57, 72, 79, 87, 90, 91, 94.

---

1. निशा निमन्त्रण, बच्चन रचनावली भाग 9, पृ0 161.
2. द्रष्टव्य , बच्चन रचनावली भाग 9, गीत सं 4 और 6.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बंगाल का काल --

"जिस पर छाये सजल घनों से" लेकर अन्त तक "चौपाई" छन्द पर आधारित गद्य गीत है ।

सूत की माला -

गीत सं0 85.

बुद्ध और नाचघर -

"शोणित की प्यास" तथा "तीन विषयों पर एक रचना में "चौपाई" छन्द की लय है ।

त्रिभंगिमा --

"नैया" चौपाई छन्द पर आधारित लोक धुन, "सोन मछरी" चौपाई से विस्तृत लय ।

चार खेमें चौंसठ खूंटे -

"मानुषावतार" "नभमण्डल भय त्राता है", "बरस-तरस" चौपाई छन्द से परिवर्द्धित ।

कुछ चौपाई अन्य छन्दों ।पदपादाकुलक" तथा अभिनव गीतिका आदि। के योग से भी निर्मित हैं ।

3. "पदपादाकुलक" --

इसमें 16 मात्राएं होती हैं -

"पदपादाकुलक कला सोला
सम विषम विषम गति अनमोला ."[1]

---

1. द्रष्टव्य - छन्द प्रभाकर , पृ0 51.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उदाहरण--

"मैं ही मधुशाला का मालिक
मैं ही मालिक - मधुशाला !
मधु पात्र, सुरा, साकी, लाया,
प्याली बाँकी-बाँकी लाया,
मदिरालय की झाँकी लाया,
मधुपान कराने वाला हूं ।
मैं ही मालिक-मधुशाला हूं।[1]

ऐसा जान पड़ता है कि कवि बच्चन को "पदपादाकुलक" छन्द बहुत प्रिय है । विभिन्न काव्य संकलनों की अधिकांश गीतिकाएं इसी छन्द में हैं । उन गीतों के नाम अथवा क्रम संख्या निम्नलिखित रचनाओं में मिलती है जिनमें "पदपादाकुलक" छन्द विद्यमान है ।

मधुशाला - में "मालिक-मधुशाला"

निशा निमन्त्रण -

गीत सं. 1, 4, 12, 84.

एकान्त संगीत -

कहीं कहीं उड़ान की पंक्ति में "पदपादाकुलक" का सुनना है ।
गीत सं. 1, 4, 5, 7, 21, 23, 24, 26, 33, 34, 37, 39, 49, 51, 52, 54, 69, 78, 98.

आकुल अन्तर -

गीत सं. 3, 10, 28, 29.

---

1. मधुशाला, बच्चन रचनावली , भाग 1, पृ0 84.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सतरंगिनी — ।दूसरा रंग।

गीत सं. 6.

खादी के फूल— ।छन्द का दुगना।

गीत सं. 10,11,13,14,15,16,17,18,19,20,21,22,23,24, 25,26,27,28,29,30,31,32,33,34,35,36,37,38,39,40,41,42, 44,46,47,48,49,50,53,54,86,87,88,89,90,91,93.

आरती और अंगारे —

गीत सं. 80.

त्रिभंगिमा —

रचनाओं के नाम -- "धीमर की घरनी"

प्रारम्भिक रचनाएं भाग 2 —

"उपवन," "ग्रीष्म बयार"

चौंसठ रूसी कविताएं —

गीत सं. 22,23,24,25,35,36,37,38,46,53,56,61,62,63,64.

मरकत द्वीप का स्वर —

"पतझड़", "क्षण भंगुर", "दुनिया का गुलाब", "परी का गीत", "हनिसफिरी का द्वीप", "लोरी", "प्रेम की दयनीयता", "प्रेम का विषाद", "जब तुम बूढ़ी होना", "रजत पक्षी", "वृद्ध पैशनर का विलाप", "चित्त-वृत्तियां", "प्रेमी कहता है कि उसके दिल में एक गुलाब ", "मछली", "नारी का हृदय", "सहेली की विदा", "प्रेयसी के लिये कुछ पंक्तियां", "प्रेमियों की घाटी", "अनिंद्य सौन्दर्य", "प्रेयसी के निंदक", "पुराने गीतों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को न भुलाने की प्रार्थना," "काश प्रेयसी मर गई होती", "स्वर्गिक चादर की याद", "बाण" , "धैर्य बंधाने की निरर्थकता", "पुरानी याद", "पुरे दिल से प्यार न करना", "नंगी डालें", "आदम का शाप", "बूढ़ों से सुनी", "बीहड़ वन", "ज्यादा दिन मत नेह लगाना", "नारी जिसका गीत बुद्ध होमर ने गाया", "शब्द", "दूसरा दु:ख नहीं था", "पुनर्मिलन", "जो कठिन है उसके लिये आकर्षण", "यह बादल है", "एक मित्र की बीमारी", "सब चीजें मुझे प्रलोभन दे सकती हैं", "पराजित मित्र", "जब हेलेन जीती थी," "मोर", "हवा में नाचता हुआ बच्चा", "यौवन की याद", "बीता वैभव", "कि रात आये", "गुड़िया", "एक जामा", "जंगली हंस", "संग मरमर का मत्स्य पुरुष", "सजीव सौन्दर्य", "बुद्ध मन", "साहित्यावार्यगण", "उसकी प्रशंसा", "प्राण प्रतिष्ठा", "गिलहरी के प्रति", "बुद्ध सम्बन्धी कविताओं की मांग पर", "गुलाब का पेड़", "एक राजनीतिक बन्दी", "पुनरागमन", "चक", "जवानी और बुढ़ापा", "आदमी जवान और बूढ़ा", "आदमी जवान और बूढ़ा" ।प्रथम प्रेम । ।मानव गरिमा।

"आदमी जवान और बूढ़ा", "आदमी जवान और बूढ़ा", "आदमी जवान और बूढ़ा" , "आदमी जवान और बूढ़ा", "मृत्यु", "रस और रक्त", "गिरा दुध", ।मत्स्य कन्या। । खाली प्याला । ।उसके यौवन के साथी। ।पतझर और बसन्त।

"उन्नीसवीं सदी और उसके बाद", "तीन गतियां", "संघर्ष- 1, 2, 3", "बुद्ध की प्रार्थना", "जापानी कविता का अनुकरण", "महान पर्व", "पारलेख", "जो हार गया", "प्रेरक", "राज कवि को उलाहना", "पुराने पत्थर का सलीब", "राजनीति", "छाया से कुछ पंक्तियां" ।

<u>भाषा अपनी भाव पराये</u> –

"स्काउटों का विश्व संगीत", "राम का वनवास"

<u>अलंकृत काव्यानुवाद</u> –

"बाहर भीतर", "बिलखित पुष्प", "जवान और किसान", "बिचलित चिड़िया" ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

4. "सार्द्ध पदपादाकुलक" छन्द -

इसमें 24 मात्रायें होती हैं। 16 और 8 मात्राओं पर क्रमशः यति तथा विराम होता है। पहली 16 मात्रायें पदपादाकुलक की हैं। तत्पश्चात 8 मात्रायें पदपादाकुलक के आधे भाग की जोड़ दी जाती हैं। इस प्रकार यह पंक्ति पदपादाकुलक से विस्तार पाकर डयोढ़ी हो जाती है और सार्द्ध पदपादाकुलक कहलाती है। यह विधान संगीत की विधान पद्धति से प्रेरित है-- "..... विश्व के समस्त स्पन्दन और संगीत विधान सूक्ष्म रूप से आत्मा में सन्निहित हैं, इसीलिए आत्मा की प्रेरणा से विविध छन्दों की सृष्टि होती है।"[1] आधुनिक हिन्दी काव्य में कवियों ने इसी आधार पर जिन अनेक छन्दों को विस्तार प्रदान किया उनमें से एक यह पदपादाकुलक भी है।

डा० पुत्तू लाल ने निराला जी की "राम की शक्ति पूजा" नामक कविता में कहीं-कहीं प्रयुक्त इस तीन अष्टक वाले 8 - 8 - 8 = 24 छन्द को "शक्ति पूजा छन्द" नाम दिया है"।[2] जो छन्द के लक्षण से मेल न खाकर व्यक्तिपरक और अति रंजित सा प्रतीत होता है। अतः "पदपादाकुलक" से विस्तार पाया हुआ यह छन्द "सार्द्ध पद पादाकुलक" नाम से ही अभिहित किया जाना अधिक समीचीन है। बच्चन जी ने इस छन्द को अपूर्ण के रूप में भी लिखा है, तथा पद पादाकुलक के डयोढ़े के रूप में भी, निम्नांकित उदाहरण में दोनों स्वरूप दृष्टव्य हैं -

उदाहरण- "दुःसमाचार यह कौन कहाँ से लाया है,
गांधी जी को गोली से गया उड़ाया है,
यह मनगढ़न्त कल्पना किसी दीवाने की
जा कहो उसे, है उचित नहीं, ऐसा मजाक।"[3]

---

1. डा० पुत्तू लाल शुक्ल, आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द योजना, पृ० 70
2. द्रष्टव्य- आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द योजना, पृ० 290.
3. दूत की माला, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 504.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बच्चन जी ने इस छन्द को अपनी अधिकांश कविताओं में अपनाया है, जिनका विवरण इस प्रकार है –

खादी के फूल –

गीत संख्या 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 52, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85.

सूत की माला–

गीत सं. 2, 4, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 15, 16, 18, 19, 20, 22, 23, 27, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 48, 49, 50, 51, 52, 56, 58, 59, 60, 62, 63, 66, 70, 71, 78, 83, 84, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 97, 98, 99, 100, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108.

मिलन यामिनी -- (मध्य भाग)

गीत सं. 1, 4, 32, 33.

धार के इधर-उधर –

"देश के नाविकों से", "आजादी की पहली वर्षगांठ".

आरती और अंगारे –

गीत सं. 21, 22, 43, 45, 60, 64, 77, 91, 92, 94.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निशानिमा—

"फिर चुनौती", "मिट्टी से हाथ लगाये रहे"

दो चट्टानें—

"विक्रमादित्य का सिंहासन"

असंकलित रचनाएं —

"पचहत्तरवीं वर्ष गांठ पर"[1]

चौंसठ नयी कविताएं —

11-"तालियाना का पत्र", 28,47,48,52,57.

5. "वीर छन्द"—

इसमें 31 मात्राएं होती हैं 16 और 15 पर यति और विराम क्रमशः होते हैं। अन्त में SI आवश्यक है।[2] इसे "आल्हा" छन्द भी कहते हैं।

उदाहरण—

"पश्चिम से घन अन्धकार ले उतर पड़ी है काली रात,
कहती, मेरा राज अकंटक होता जब तक नहीं प्रभात।[3]

यह छन्द बच्चन जी की निम्नांकित रचनाओं में भी प्रयुक्त हुआ है—

---

1. द्रष्टव्य, बच्चन रचनावली भाग 3, असंकलित रचनाएं, पृ0 429,430.
2. द्रष्टव्य, छन्द-प्रभाकर, पृ0 72.
3. धार के इधर-उधर, बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 148.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आकुल अन्तर –

गीत सं. 40

धार के इधर-उधर –

"क्रान्ति दीप", "आप किनके साथ है", "खोया दीपक",

प्रारम्भिक रचनाएं –।

"मंगलारम्भ"

चौंसठ रसी कवितायें –

गीत सं. 16, 18.

इस छन्द का प्रयोग कवि ने बड़े सुन्दर ढंग से ताटंक छन्द के तथा चौपाई छन्द के साथ प्रस्तुत काव्य संकलन की प्राय: सभी रचनाओं में किया है ।

मरकत द्वीप का स्वर –

"कपड़ा नौका औ" पटत्राण", "पुराना बच्चा"

उभरते प्रतिमानों के रूप –

"छल युग का कोरस"

6. चौपाई छन्द"–

इसमें 15 मात्राएं होती हैं । "अन्त में SI • ।

---

1. द्रष्टव्य छन्द प्रभाकर – पृ0 47.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उदाहरण–

"रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित– पावन सीताराम ।"[1]

इस छन्द का प्रयोग कवि ने स्वतन्त्र रूप से बहुत कम किया है । "चौपई" छन्द के साथ अन्य छन्द भी मिले हैं तब गीतिका निर्मित हुई है–

प्रारम्भिक रचनाएं भाग । –

इस संकलन में "चौपई" छन्द का प्रयोग बार–बार गीतों में आया है । "दुखिया का प्यार", "उपहार", "मेरा धर्म", "संकोच", "प्रेम का आरम्भ" "आत्म सन्देह", "बांसुरी", "चित्र समर्पण", "रिहाई", "हेम की मृत्यु", "पत्रोत्तर", "गुदगुदी", "सजीव कविता", "पागल", "तितली", "प्रेम", "भूला", काव्य अकाशन", "अरमान", "बाहु पाश", "ईश्वर और प्रेम", "रक्षाबन्धन", "जेल में रक्षा बन्धन", "तेरा प्यार", "कलंक", "मृत्यु" और आत्म दीप नामक रचनाओं में चौपई – चौपाई और सरसी छन्द है । प्रत्येक रचना की प्रथम पंक्ति में चौपई, शेष में चौपाई, अवसान में सरसी छन्द है ।

"पद्धरि छन्द"–

इसमें 16 मात्राएं होती हैं । अन्त में जगण ISI [2]

उदाहरण–

"है अभी पहर भर शेष रात,
है पड़ी भूमि हो शिथिलगात,"[3]

---

1. खादी के फूल – बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 458.
2. द्रष्टव्य – छन्द : प्रभाकर, पृ0 48.
3. निशा निमन्त्रण – बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 190.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

""पद्धरि" छन्द से निर्मित गीतिकायें निम्नलिखित काव्य-संकलनों में मिलती हैं –

मधुबाला –

"पग ध्वनि", "हाला" इसमें "पद्धरि" छन्द का हुआ है।

एकान्त संगीत –

गीत संख्या 12, 35, 83.

आकुल अन्तर –

गीत संख्या 22, 60.

प्रारम्भिक रचनाएं – 1 -- "कीर"

7. "समान सवैया" --

इसमें 32 मात्रायें होती हैं। 16,16 पर क्रमशः यति तथा विराम होता है – "सोरह सोरह मत्त धरौ पु, छंद समान सवैया सोभत।"[1]

उदाहरण–

"इस जगती के रंगमंच पर आऊं मैं कैसे, क्या बनकर।
आऊं मैं कैसे, क्या बनकर- सोचा, यत्न किया भी जी भर।"[2]

कवि के विभिन्न काव्य संकलनों में निम्नलिखित रचनाओं में "समान सवैया" छन्द प्रयुक्त हुआ है -

---

1. छन्द प्रभाकर, पृ० 73.
2. आकुल अन्तर, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 270.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आकुल अन्तर -

गीत सं. 19,21,23,43,44,45,47,48,53,54, "आत्म भ्रम"

सतरंगिनी -

गीत सं. 5 दूसरा रंग, 5 सातवां रंग,

मिलन यामिनी - (मध्य भाग) गीत सं. 3,21,24,27,28,29.

प्रणय पत्रिका -

गीत सं. 4,7,8,9,10,11,12,16,17,27,35,36,44,49,50, 52,53,54,55,56,57,58,59.

धार के इधर उधर -

गीत सं0 14 "मनुष्य की मूर्ति", 19 "घायल हिन्दुस्तान", 27 "आजादी का नया वर्ष", "गणतन्त्र दिवस" ।

आरती और अंगारे -

गीत संख्या 1,2,9,10,12,13,15,17,18,25,26,28,29,30,33, 34,35,37,41,44,46,47,48,49,51,57,62,63,66,67,70,81,84, 89,93.

त्रिभंगिमा -

"ढाई अक्षर", गीत शेष,

दो चट्टानें - "

"भिगाए जा रे"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बहुत दिन बीते –

"बदली दुनिया"

बैंसठ सखी कविताएँ –

गीत सं० 27.

मरकत द्वीप का स्वर –

"ये प्रतिमाएं"

8. "मत्त सवैया" –

"पदपादाकुलक छन्द के दो चरणों का एक चरण मानकर "मत्त सवैया" छन्द बनता है।"[1] इसमें 32 मात्रा होती हैं। 16,16 पर क्रमश: यति और विराम होता है।

उदाहरण–

"मिट्टी से मधु का पात्र बनूं-जिस कुम्भकार का यह निश्चय 9
मिट्टी का तन, मस्ती का मन, क्षण भर जीवन-मेरा परिचय।"[2]

कवि के विभिन्न काव्य-संकलनों की निम्नलिखित कविताओं में "मत्त सवैया" छन्द विद्यमान है –

मधुकलश –

"मधुकलश"

आकुल अन्तर –

गीत सं. 24, 26, 32, 46, 52, "नियति नियम है", 55, 56, 57, 66.

---

1. द्रष्टव्य - छन्द प्रभाकर, पृ० 74.
2. मधुबाला - बच्चन रचनावली, पृ० 95.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सतरंगिनी –

गीत सं० 6, (दूसरा भाग) 7, 7, (पांचवां भाग) 6,

मिलन यामिनी –

[मध्य भाग] 5,7,10,11,12,13,14,15,16.

प्रणय पत्रिका –

गीत सं. 38.

आरती और अंगारे –

गीत सं. 32, 99.

भाषा अपनी भाव पराये –

"सागर गीत", 2,3,4.

9. "सखी" छन्द –

इसमें 14 मात्राएं होती हैं। अन्त में तीन गुरु अथवा SSS या ISS

"कल भुवन सखी रचि माया।"[1]

उदाहरण–

"मैं एक जगत को भूला,
मैं भूला एक जमाना।
कितने घटना चक्रों में,
भूला मैं आना जाना।"[2]

---

1. छन्द: प्रभाकर, पृ० 45.
2. प्रारम्भिक रचनाएं भाग 2, बच्चन रचनावली भाग 3, पृ० 555.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवि की अन्य रचनाओं में भी सखी" छन्द प्रयुक्त हुआ है। सखी छन्द के योग से निर्मित गीतिकायें हैं कहीं-2 कवि ने सखी छन्द का दुगना भी कर दिया है।

प्रणय पत्रिका -

गीत सं0 37

प्रारम्भिक रचनाएं भाग 1 - "स्वीकृत"

प्रारम्भिक रचनाएं भाग 2 -

"रजतम" "तीन रुबाइयां" सखी छन्द का दुगना।

10. "निसि छन्द" -

इसमें एक भगण और एक लघु होता है।[1] हिन्दी में इसे पंच मात्रिक छन्द भी कह सकते हैं। बच्चन जी ने इसके एक पद को तिगुणा कर गीतिका की प्रथम पंक्ति निर्मित की जैसे -

"अग्नि-पथ ! अग्नि-पथ ! अग्नि-पथ ![2]

आकुल अन्तर -

65 वां गीत निसि तथा समानिका छन्द के योग से बना है।

11. "समानिका छन्द" -

इसमें एक रगण, एक जगण और एक गुरु होता है -

"रोजगा समानिका"।[3]

---

1. द्रष्टव्य - छन्द प्रभाकर, पृ0 121.
2. एकान्त संगीत, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 246.
3. छन्द: प्रभाकर, पृ0125.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उदाहरण -

"यह महान दृश्य है -
चल रहा मनुष्य है ।"[1]

त्रिभंगिमा-

मे "प्रणय गीत" नामक गीत "समानिका छन्द" पर आधारित है।

"हाकलि"-

इसमें 14 मात्राएं होती हैं अन्त में 5 होता है ।[2]

उदाहरण-

"मुझको प्यार न करो, डरो,"[3]

12. "श्रंगार छन्द" -

इसमें 16 मात्राएं होती है । अन्त में 51 अथवा 15 होने से लय में माधुर्य रहता है ।[4]

उदाहरण-

"निराशा-पतझड़ का हो अन्त,
हृदय में छाता पुनः बसन्त,"[5]

कवि के विभिन्न काव्य संकलनों में श्रंगार छन्द से निर्मित गीतिकायें उपलब्ध हैं । अधिकांश गीतिकाओं में श्रंगार से दुगना है ।

---

1. बच्चन रचनावली ,पृ0 246.
2. द्रष्टव्य-छन्द : प्रभाकर,पृ0 46.
3. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 255.
4. द्रष्टव्य -छन्द : प्रभाकर, पृ0 51.
5. प्रारम्भिक रचनाएं, बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 458.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मधुबाला–

"बुलबुल" में अंगार से हुगना है ।

हलाहल–

हलाहल की सारी कविताये अंगार छन्द पर आधारित हैं । कवि ने प्रत्येक पंक्ति में "अंगार" की दो पंक्तियां, रखी हैं । प्रत्येक पंक्ति में 32 मात्राएं हैं और लय"अंगार" छन्द के समान है ।

प्रणय पत्रिका–

गीत नं॰ 39 अंगार छन्द का हुगना ।

आरती और अंगारे –

गीत 20,

प्रारम्भिक रचनाएं भाग 1 –

"संबोधन " "आरो ।"

प्रारम्भिक रचनाएं भाग 2 –

"गांधी जी के विलाप जाने पर" तथा "गांधी जी के जन्म दिन पर भारत माता की बधाई" में "अंगार" छन्द का हुगना है । प्रस्तुत काव्य संकलन की अधिकांश रचनाओं में कवि ने अंगार छन्द का प्रयोग किया है परन्तु वह स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त न होकर "सरसी", "चौपाई", "मार" आदि छन्दों के साथ है । जैसे – "बतना" अंगार - सरसी, "विडम्बना" अंगार - चौपाई - सरसी ।

खैयाम की मधुशाला –

इस काव्य संकलन की 1 से 75 तक समस्त रचनाओं में अंगार का हुगना है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

13. "सार" –

इसमें 28 मात्राएं होती हैं। 16 और 12 पर क्रमशः यति और विराम होता है।

"सोरह रवि कल अंत कर्ण, सार छन्द अति नीको।"[1]

उदाहरण–

"जब जब कुटिल हुई भारत की भाग्य विधायक रेखा,
हमने ले आशा नयनों में बापू का रूख देखा,[2]

प्रस्तुत छन्द का प्रयोग कवि ने निम्नलिखित काव्य संकलनों की इन गीतिकाओं में किया है –

एकान्त संगीत –

गीत नं. 17, 18, 56, 80

आकुल अन्तर –

गीत नं. 7, सार तथा चौपाई के योग से गीत।

सतरंगिनी –

इस काव्य संकलन का दूसरे रंग का गीत नं. 6 तथा पांचवें रंग का गीत नं. 4, सार के योग से निर्मित हुआ है।

खादी के फूल –

गीत नं. 57,

सूत की माला –

गीत नं. 17, 53.

---

1. छन्द : प्रभाकर, पृ0 66.
2. सूत की माला, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 525.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रणय पत्रिका–

इसमें लावणी तथा सार छन्द के योग से गीतिकाएं रची गई है। गीत नं. 2, 3, 13, 26.

धार के इधर उधर –

"अमित के जन्म दिन पर", "गणतन्त्र पताका".

आरती और अंगारे –

गीत नं. 3, 16, 19, 59, 65, 79 में लावणी तथा सार छन्द के योग से रची गई गीतिकायें है। इसके अतिरिक्त गीत नं. 31, 88 में भी सार छन्द है।

त्रिभंगिमा –

"लाठी और बांसुरी"

धार कैसे पैनी हुई –

"मैं कैसे हट जाउं"

प्रारम्भिक रचनाएं भाग 1 –

"मैराथन", "दुखों का स्वागत",

प्रारम्भिक रचनाएं भाग 2 –

"कवि और देशभक्त"

भाषा अपनी भाव पराये –

"सुन्दरता और जिंदगी".

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

14."लावणी (राधिका) -

इसमें 22 मात्राएं होती हैं। 13 और 9 पर क्रमशः यति तथा विराम होता है -

"तेरा पर सज नव कला राधिका रानी।"[1]

उदाहरण-

"मैं जग-जीवन का भार लिये फिरता हूं,
फिर भी जीवन में प्यार लिये फिरता हूं,
कर दिया किसी ने इंगित जिसको छूकर
मैं सांसों के दो तार लिये फिरता हूं।"[2] ..

निम्नलिखित काव्य संकलनों के गीतों में "लावणी" (राधिका) छन्द प्रयुक्त हुआ है -

मधुबाला -

"आत्म-परिचय",

बाटी के फूल -

गीत सं. 51, 92.

फूल की माला -

गीत सं. 14,24,26,46,55,57,64,65,67,68,69,73,74, 75,76,77,79,81,82,95,96,111.

धार के इधर उधर -

"आजादी की नयी वर्ष गांठ"

---

1. छन्द: प्रभाकर, पृ0 58.
2. मधुबाला, बच्चन रचनावली, भाग 1, पृ0 111.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निभंगिमा –

"जादूगर का जादू"

चार ऐसे चौंक छूटे –

"चलते रहने" तथा "धरती कभी न धोखा देगी" में लावणी का परिवर्तित रूप है ।

आधा अपनी आप पराये –

"सतत हमारा मन भावना है" परिवर्तित लावणी ।

मरकत द्वीप का स्वर –

"भारतीय की प्रेमिका" परिवर्तित लावणी

15. प्रमाणिका–

इसमें क्रमशः जगण, रगण तथा लघु और गुरु होते हैं ।" ।

उदाहरण–

"पिता गिरे, गरे, मगर,
न राम नाम पर अगर ।"[2]

निम्न लिखित काव्य संकलनों की रचनाओं में "प्रमाणिका" छन्द है

गुरु की माला–

गीत सं. 72.

16. सार्द्ध प्रमाणिका –

कवि ने "प्रमाणिका" छन्द में 4 वर्ण और जोड़ कर इसको दुगेड़ा कर दिया है ।

---

1. द्रष्टव्य - छन्द: प्रभाकर, पृ0 128.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 534.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जैसे –

"अनेक बार रेडियो हुना चुका,
स्वा अनेक बार सिर धुना चुका ।"[1]

निम्न काव्य संकलनों की विभिन्न रचनाओं में "सार्द्ध प्रमाणिका" छन्द का प्रयोग हुआ है –

सूत की माला –

गीत सं. 3,

मिलन यामिनी –

"मिलन यामिनी के उत्तर भाग में गीत सं. 1 से लेकर 33 तक के गीतों में कवि ने इन आठ अक्षरों के संस्कृत वृत्त में चार वर्ण और जोड़कर इसे डुयोढ़ा कर दिया है । कहीं कहीं उर्दू शायरी के पढ़ने के ढंग के अनुसार दो लघु वर्णों को एक गुरु वर्ण के समान मान लिया है जैसे –

"किरण दिवी तड़ाग अंतराल में"

इसमें किरण का "रण" एक गुरु वर्ण के समान है ।

धार के इधर उधर –

"नवीन वर्ष", "कामना", "स्वदेश की आवश्यकता", "अभी विलम्ब है", "चेतावनी-1", "नया वर्ष", "चेतावनी-2", "पटेल के प्रति", "राष्ट्रध्वजा", "देश विभाजन-1", "हमें देश की स्वतन्त्रता पर", "देश के सैनिकों से", "देश पर आक्रमण", "देश के युवकों से", "आजादी के बाद", "देश विभाजन-2", "देश के लेखकों से", "नव विहान", "देश के कवियों से", "देश विभाजन" तथा "देश के नेताओं से" "शहीदों की याद में" नामक रचनाओं में "सार्द्ध प्रमाणिका" वृत्त है ।

1. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 505.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

17. "विधाता"-

इसमें 28 मात्रायें होती हैं। 14,14, मात्रा पर क्रमशः यति और विराम होता है। "यह छन्द उर्दू की इस बहर से मिलता है -

"मफ़ाईं तुन, मफ़ाईं तुन, मफ़ाईं तुन, मफ़ाईं तुन"[1]

उदाहरण -

"तुम्हारी रागिनी का, प्रियतम, नहीं मैं जानता दूजा,
हृदय मन्दिर की तुम प्रतिमा बनो तो मैं करूं पूजा"।[2]

18. "हरिगीतिका"-

इसमें 28 मात्रायें होती हैं। 16 और 12 पर क्रमशः यति और विराम।" अन्त में लघु गुरु IS "[3] इसकी 5वीं, 12वीं, 19वीं और 26वीं मात्रा लघु होनी चाहिये।" सरल नियम यह है कि इसमें मात्रिक । SSIS । की चार आवृत्तियाँ होती हैं।"[4]

"कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं डर, मैं चलता प्यार था।"[5]

निम्न काव्य संकलनों की इन गीतिकाओं में "हरिगीतिका छन्द प्रयुक्त हुआ है -

एकान्त संगीत-

गीत सं. 15, 20, 22, 25, 28, 30, 31, 32, 100.

सतरंगिनी-

गीत सं. 4.

जनगीता- में भी "हरिगीतिका" छन्द प्रयुक्त हुआ है।

---

1. छन्द : प्रभाकर, पृ0 68.
2. भाषा अपनी भाव पराये, बच्चन रचनावली भाग 4, पृ0 411.
3. द्रष्टव्य - छन्द : प्रभाकर, पृ0 67.
4. डा0 पुत्तू लाल, आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द योजना, पृ0297-298.
5. एकान्त संगीत- बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 224.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

19. "गीतिका छन्द" -

इसमें 26 मात्राएं होती है । 14,12 मात्राओं पर क्रमश: यति और विराम होती है । अन्त में लघु गुरु IS ।[1] लय, हरिगीतिका के सदृश होती है -चरचरी या विबुध प्रिया नामक छन्द की लय भी इसी के समान है।[2]

उदाहरण-

"जब कि भारत भूमि थी भीषण तिमिर में आवृता,
जब कि अपनी शक्ति का भी था नहीं हमको पता।"[3]

निम्न काव्य संकलनों की गीतिकाओं में "गीतिका छन्द" प्रयुक्त हुआ है-

प्रणय पत्रिका-

इसमें "गीतिका" छन्द से विवृद्ध 135 मात्राओं की सब गीतिकाएं हैं । जिनकी क्रम संख्या इस प्रकार है - 29,33,42,46,48.

आरती और अंगारे -

गीत नं. 24,36,39,42,50,53,54,55,58,61,68,73,75,83, 87,90,100 इन सभी गीतों में 35 मात्राएं हैं । अत: गीतिका छन्द का विवृद्ध रूप है ।

त्रिभंगिमा -

"मैंने ही न देखा", "ये काम पर जाने वाले", "गीत-निष्ठा" आदि रचनाएं "गीतिका छन्द" पर आधारित है । "नभ का निमन्त्रण" गीतिका पर आधारित लय ।

दो चट्टानें -

"आभास", "शब्द-शर"

---

1. द्रष्टव्य- छन्द:प्रभाकर पृ0 65.
2. वही, पृ0 187 तथा आधुनिक हि.का.छ.यो., पृ0 293.
3. खादी के फूल- बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 486.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

20. "अभिनव गीतिका" --

बच्चन जी ने अपने काव्य में कतिपय मात्रिक छन्दों के अभिनव प्रयोग किये हैं । जिनके नामकरण की एक समस्या है । इसलिये छन्द के प्राचीन नाम को आधार मानते हुए हमने नवीन छन्दों का नामकरण किया है । इस प्रकार के छन्दों में "गीतिका" प्रमुख है । "गीतिका" की लय से उन्होंने छोटे बड़े अनेक पद्य बनाये हैं, उनमें से "अभिनव गीतिका" भी एक है । इसमें "गीतिका" छन्द के समान लय तथा प्रवाह है परन्तु कवि ने इसके प्रत्येक पद के अन्त में दो मात्राएं अतिरिक्त रख कर थोड़ा सा परिवर्तन कर दिया है । जिसे हम इस युग के छन्द-क्षेत्र में कवि द्वारा किया अभिनव प्रयोग मानते हैं । इस प्रकार इसमें 14, 14 मात्राओं पर क्रमशः यति और विराम होने चाहिये, यदि अन्त की दो मात्राओं को प्रारम्भ में रख दिया जाये तो यह 28 मात्रा का हरिगीतिका छन्द बन जायेगा । जैसे कवि की मूल पंक्ति लीजिये --

"ध्यान वारिधि से बुलाकर पी रहा अतृप्त हूं मैं "

को

"मैं ध्यान वारिधि से बुला कर पी रहा अतृप्त हूं "

कर दिया जाये तो हरिगीतिका छन्द बन जाता है । इसीलिये इस छन्द को हमारी दृष्टि से लय साम्य के कारण "अभिनव गीतिका" छन्द के नाम से अभिहित किया जाना चाहिये क्योंकि अभी तक किसी भी समीक्षक ने इस छन्द को नामकरण नहीं दिया है ।

उदाहरण--

"सृष्टि के आरम्भ में मैंने उषा के गान चूमे,
बाल रवि के भाग्य वाले दीप्त भाल विशाल चूमे" ।[1]

कवि के निम्नलिखित काव्य संकलनों की कविताओं में "अभिनव गीतिका" छन्द प्रयुक्त हुआ है –

---

1. मधुकलश, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 127.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मधुकलश –

इस संकलन की कविता "मधुकलश" तथा "सुषमा" को छोड़कर अन्य सभी कविताओं में ।

निशा निमन्त्रण –

अभिनव गीतिकाओं के योग से निर्मित की गई गीतिकाएं हैं जैसे –

गीत संख्या 7, 9, 11, 15, 17, 18, 24, 34, 40, 42, 43, 44, 48, 62, 67, 71, 77, 81, 82, 93, 100.

एकान्त संगीत –

गीत सं. 3, 13, 16, 19, 29, 36, 38, 42, 47, 50, 58, 63, 67, 71, 82, 84.

आकुल अन्तर–

गीत सं. 1, 6, 15, 16, 25, 27, 62, 64.

सतरंगिनी – दूसरा भाग –

गीत नं. 1, 2, 4, तीसरा रंग 7, चौथा रंग 1, 2, 3, 4, 6, 7, पांचवा रंग 2, 3, 5, सातवां रंग 6, 7.

खादी के फूल – 74.

मिलन यामिनी – (मध्य भाग)

17वां गीत.

प्रणय पत्रिका –

गीत सं. 6, 24.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धार के इधर उधर –

युद्ध की ज्वाला.

आरती और अंगारे –

1281 मात्रा, लय पर आधारित गीत सं. 74, 82, 85.

दो चट्टानें –

"जीवन परीक्षा"

अनूदित काव्यानुवाद –

"आंसू", "सरोवर", "कूप", "नदी", "सागर"

21. "लघु गीतिका" छन्द–

यह "गीतिका" छन्द की लय से निर्मित 21 मात्राओं का छन्द है। आकार में लघु होने के कारण इसे लघु गीतिका के नाम से अभिहित करना चाहिये।

उदाहरण–

"स्वप्न में तुम हो, तुम्हीं हो जागरण में।
कब उजाले में मुझे तुम और भाया,
कब अंधेरे में तुम्हें मुझ से छिपाया,
तुम निशा में औ' तुम्हीं प्रातः किरण में,
स्वप्न में तुम हो, तुम्हीं हो जागरण में।[1]

डा० गुलाबराय गुप्त ने इस छन्द का नाम "सिन्धु" दिया है और जो लक्षण और उदाहरण दिया है वह अभिनव गीतिका के ही सदृश है यथा–

---

1. मिलन यामिनी, बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 33.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"क्या नहीं नर ने इसे रौरव बनाया,
क्या न तुमने स्वर्ग है इस पर बसाया ।"[1]

परन्तु शुक्ल जी का दिया हुआ यह सिन्धु छन्द का लक्षण और उदाहरण छन्द शास्त्र के अनुकूल नहीं है - क्योंकि साहित्याचार्य बाबू जगन्नाथ प्रसाद "भानु" ने इस छन्द का लक्षण यह दिया है - "इस छन्द में तीन सप्तक होते हैं प्रत्येक सप्तक का आरम्भ लघु से होता है इसकी लय इस प्रकार है -

"दयाशंकर, दया शंकर, दयाशंकर"

उर्दू तर्ज यों है-

"मुफ़ाई लुन, मुफ़ाई लुन, मुफ़ाई लुन ।"[1]

अतः इसे "सिन्धु" छन्द न मानकर लघु गीतिका मानना ही समीचीन निम्नांकित काव्य संकलनों में "लघु गीतिका" छन्द पाया जाता है -

सूत की माला-

गीत नं. 28, 47.

मिलन यामिनी -

गीत नं. 1 से 33 तक, (मध्य भाग) 19.

प्रणय पत्रिका -

इस काव्य संकलन में "लघु गीतिका" छन्द की दुगनी मात्राओं से बनी गीतिकायें हैं । उनकी क्रम संख्या इस प्रकार है - 31,45, इसके अतिरिक्त 21 मात्राओं के गीतों की संख्या इस प्रकार है - 32,43,47.

---

1. सोहन लाल द्विवेदी, वासन्ती, पृ0 50 संदर्भांकित आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द योजना, पृ0 281.
2. छन्द: प्रभाकर , पृ0 57.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आरती और अंगारे –

लघु गीतिका । 21 मात्रा। का दुगना छन्द,गीत सं. 11,23,52, 56,76,86, इसके अतिरिक्त 38वां गीत लघुगीतिका 21 मात्रा। का है । 71 और 72वें गीत में "लघुगीतिका" छन्द की टेक और बोल में "गीतिका" छन्द से निबद्ध । 35 मात्रा । हैं ।

अतीत की प्रतिध्वनियां –

इस संकलन में लघुगीतिका छन्द । 19 मात्रा। का है । । से लेकर 48 तक के समस्त पदों में यही छन्द है । यह खुम्पदियां मुक्तक की प्रक्रिया में लिखी गई हैं ।

22. "गोपी" –

इसमें 15 मात्राएं होती हैं । अन्त में गुरु होता है ।[1]
"शृंगार छन्द" की अन्तिम लघु मात्रा को कम करने से यह छन्द बनता है ।[2]

उदाहरण –

"दुर्दशा मिट्टी की होती ।"[3]

"गोपी" छन्द का प्रयोग बहुत कम गीतिकाओं में हुआ है । जिन काव्य संकलनों की गीतिकाओं में हुआ है उनका नाम तथा गीतों की क्रम संख्या नीचे दी गई है –

एकान्त संगीत –

53, 55 यहां पर गोपी + तरसी के मिश्रण से गीतिका निर्मित हुई है । 66, 70 में गोपी + चौपाई + विष्णु पद से निर्मित गीत है ।

आकुल अन्तर –

49वें गीत में प्रथम पंक्ति गोपी, अंतरा, चौपाई,उड़ान में विष्णु पद गीत है।

त्रिभंगिमा – "के जन्म दिन पर" ।

---

1. द्रष्टव्य- छन्द प्रभाकर, पृ0 47.
2. आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द योजना, पृ0 257.
3. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 237.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

23. "सरसी छन्द" –

इसमें 27 मात्रायें होती हैं। 16 और 11 पर क्रमशः यति और विराम होता है। अन्त में SI होता है "[1]

उदाहरण–

"कर आशा, विचार, स्वप्नों से, भावों से अंगार,
देख निमिष भर लेता कोई सब अंगार उतार।"[2]

"सरसी छन्द" का प्रयोग कवि की निम्नांकित रचनाओं में हुआ है। अधिकांशतः स्वतन्त्र प्रयोग न होकर किसी अन्य छन्द के योग से ही गीतिका बनी है –

एकान्त संगीत–

53 और 55 यहाँ गोपी↓ सरसी के योग से छन्द निर्मित हुआ है 65वें गीत में पहली पंक्ति पद्धरि अन्तरा चौपाई तथा उड़ान में सरसी है।

धार के इधर उधर –

"इंसान की भूल" चौपई"↓ चौपाई=↓ "सरसी" है। "भारतीय सैनिकों का प्रणय गीत" में विशुद्ध "सरसी" 29 मात्रा↓ ताटंक है।

प्रारम्भिक रचनायें भाग 1 और 2 –

इस काव्य संकलन की अधिकांश गीतिकायें चौपई↓चौपाई↓ सरसी के योग से निर्मित हैं। प्रथम पंक्ति चौपई", शेष चौपाई उड़ान में "सरसी" छन्द है। कहीं कहीं अंगार↓सरसी के योग से निर्मित अगीतिकायें भी हैं।

24. "पंच चामर छन्द"–

इसमें 15 क्रम से 16 अक्षर होते हैं "– अर्थात् ।ज र ज ज ग ।[3]

---

1. द्रष्टव्य– छन्द प्रभाकर, पृ0 66.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 237.
3. छन्द प्रभाकर, पृ0 177.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उदाहरण-

"न मंज़िलें मिलीं कभी न मुश्किलें हिलीं कभी ।
मगर कदम थमे नहीं, करार-क़ौल जो ठना"।[1]

सतरंगिनी-

तीसरा रंग में "पंच चामर" छन्द से निर्मित गीतिका नं० ३,
पांचवां रंग में " " " " " १.

25. "पंचला छन्द" -

रगण, जगण, रगण, जगण, रगण, लघु[2]

उदाहरण-

"नो अगत्त ! नो अगत्त ! नो अगत्त ।
निर्विलम्ब देश एक हो खड़ा हुआ समस्त ।[3]

26. "लीला छन्द"-

इसमें 12 मात्राएं होती हैं । अन्त में जगण ISI [4]

उदाहरण-

"जीवन की रीति नवल,
जीवन की प्रीति नवल,
जीवन की जीत नवल ।"[5]

---

1. सतरंगिनी, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ० 346.
2. द्रष्टव्य-छन्द : प्रभाकर, पृ० 177.
3. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 147.
4. द्रष्टव्य- छन्द: प्रभाकर, पृ० 44.
5. सतरंगिनी, बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 359.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

27. "हित" - अन्त में IS ।

इस छन्द में 12 मात्रायें होती हैं ।[1]

उदाहरण-

"भूल नहीं, शूल नहीं,
बिना की भूल नहीं ।"[2]

28. "रूपमाला" छन्द -

इसमें 24 मात्रायें होती हैं । 14 और 10 पर क्रमश: यति और विराम होता है, अन्त में गुरु और लघु SI ।"[3] इसका अन्य नाम "मदन" भी है ।

उदाहरण-

"आज अधरों से अपरिचित हो गई मुस्कान" [4]

"रूपमाला" छन्द निम्नलिखित काव्य संकलनों के निम्न गीतों में प्रयुक्त हुआ है -

एकान्त संगीत -

गीत नं. 14, 41, 43, 44, 45, 46, 48, 60, 61, 62, 64, 68, 74, 75, 76, 77, 81, 86, 96.

आकुल अन्तर -

गीत नं. 2 , 5, 9, 20, 33, 71.

सतरंगिनी-

पाँचवाँ रंग, गीत नं. 7.

---

1. द्रष्टव्य- छन्द : प्रभाकर पृ0 45.
2. बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 361.
3. द्रष्टव्य - छन्द : प्रभाकर, पृ0 62.
4. एकान्त संगीत, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 235.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धार के इधर-उधर -

सृष्टिकार से प्रश्न, मानव रक्त, व्याकुल संसार, मनुष्य की निर्ममता।

29. "विष्णुपद छन्द" -

इसमें 26 मात्राएं होती हैं। 16 तथा 10 पर क्रमशः यति और विराम होते हैं अन्त में गुरु।[1]

उदाहरण-

"चांदी, सोने, हीरे, मोती से सजती गुड़ियां,
इनसे आतंकित करने की बीत गई घड़ियां,[2]

एकान्त संगीत-

गीत सं. 66, 70 गोपी और चौपाई के योग से निर्मित गीत प्रथम पंक्ति गोपी", अन्तरा में चौपाई", उड़ान में विष्णुपद।

आकुल अन्तर -

गीत सं. 11 पद पादाकुल + चौपाई + विष्णुपद छन्दों के योग से बनी गीतिका, 18वां "गोपी" + "चौपाई" तथा "विष्णुपद" छन्दों के योग से निर्मित गीत।

धार के इधर उधर -

"आजादी का गीत", "होली" ताटंक + विष्णुपद के योग से बनी गीतिका।

---

1. द्रष्टव्य- छन्द : प्रभाकर, पृ0 64.
2. बच्चन रचनावली भाग 2, 152.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

30. "कज्जलि छन्द" –

इसमें 14 मात्राएं होती हैं । अन्त में ऽ। ।[1]

उदाहरण–

करुण पुकार ! करुण पुकार !![2]

31. "दोहा" छन्द –

इसमें 24 मात्राएं होती हैं । 13 और 11 पर क्रमशः यति और विराम होता है ।[3]

उदाहरण–

"चन्दि गजानन-लेखनी, व्यास वचन दोहराय,
करउं लेखनी बन्द जन गीता मुक्ति-प्रदाय ।"[4]

खादी के फूल –

45वें गीत में दोहा+ चौपाई,छन्द के योग से बनी गीतिका,

जनगीता में अनेक स्थानों पर "दोहा" छन्द का प्रयोग किया है ।

भाषा अपनी भाव पराये –

"नया सवेरा" नामक रचना में "दोहा" छन्द है ।

32. "ताण्डव छन्दु"–

इसमें 12 मात्रा होती हैं । अन्तिम वर्ण लघु होता है ।[5]

---

1. द्रष्टव्य - छन्द :प्रभाकर , पृ0 45.
2. बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 145.
3. द्रष्टव्य - छन्द : प्रभाकर, पृ0 82.
4. जन गीता- बच्चन रचनावली भाग 4, पृ0 89.
5. द्रष्टव्य - छन्द : प्रभाकर,पृ0 44.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उदाहरण–

"गीत मेरे छन बाल
रहा मैं मुखिछन बाल ।"[1]

प्रारम्भिक रचनाएं भाग 2 –

"गीत पिहंग", "बाल गान" इन दोनों रचनाओं में "ताण्डव" तथा "श्रृंगार" छन्द के योग से गीतिका निर्मित हुई है ।

33. "भुजंग प्रयात छन्द"–

इसमें चार चरण 155 होते हैं ।

आरती और अंगारे–

"चकारैः चतुर्भिः भुजंगप्रयातम् ।[2]

उदाहरण–

"न तुम सो रही हो, न मैं सो रहा हूं,
मगर यामिनी बीच में छल रही है ।"[3]

34. "सोरठा" –

इस मात्रिक अर्द्धसम छन्द में पहले और तीसरे चरण में ग्यारह, और दूसरे तथा चौथे चरण में तेरह मात्रायें होती हैं । यह दोहे का बिल्कुल विपरीत होता है । इसका सूत्र यह है –

"तेरह सम विषमेया दोहा उल्टा सोरठा ।।[4]

।भारतीय समीक्षा के सिद्धान्त द्वितीय भाग , पृ0 13.।

---

1. बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 541.
2. छन्द विधान, पृ0 43.
3. बच्चन र. पृ0 237.
4. त्रिभंगिमा, बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 369.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उदाहरण-

"सुन हरि कर आख्यान, ध्यान-मगन अरजुन भयउ,
बोले पुनि भगवान, ज्ञान-ध्येय तुहुं एक महुं"

पूरी जनगीता में स्थान-स्थान पर सोरठा छन्द प्रयुक्त है ।

। जनगीता, रचनावली भाग 4, पृ0 124।

"बुद्ध और नाचघर"-

इस काव्य संकलन में यद्यपि छन्द-मुक्त रचनायें अधिक हैं लेकिन कुछ रचनाओं में गीतिका, चौपाई तथा पदपादाकुलक की लय है । इसी प्रकार "त्रिभंगिमा" - काव्य संकलन में भी कुछ रचनायें चौपाई, ताटंक, सरसी, पदपादाकुलक, सार, आदि पर आधारित लोक-धुनें हैं "त्रिभंगिमा" काव्य संकलन की कवितायें तीन प्रकार की हैं - 1. छन्दोबद्ध, 2. मुक्त छन्द, 3. लोकधुनों पर आधारित । इसलिये इस पुस्तक का नाम "त्रिभंगिमा" सार्थक है । लोक धुनों पर आधारित गीतों में मात्रादि का बन्धन नहीं है । वहाँ लय को ही प्राथमिकता दी जाती है । जिनका सम्बन्ध उत्तर प्रदेश के लोक-गीतों से है ।

मुक्त छन्दों में भी कोई न कोई लय कवि के द्वारा अपनायी गई है । "सोन मछरी"[1], "लाठी और बांसुरी"[2], "अन्तनार बिरवा"[3] "गोरी नागिन"[4], "मैना दूत"[5] शीर्षक रचनायें उत्तर प्रदेश की जो लोक-धुन कवि द्वारा अपनायी गई है उसे "टिटिया" कहते हैं ।[6]

---

1. त्रिभंगिमा, बच्चन रचनावली भाग 2, पृ. 368.
2. वही, पृ0 370.
3. वही, पृ0 375.
4. वही, पृ0 385.
5. वही, पृ0 386.
6. द्रष्टव्य, बच्चन रचनावली भाग 2, "सोन मछरी" कविता पर कोष्ठक में दी गई कवि की टिप्पणी, पृ0 368.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"चार खेमें चौंसठ खूटे" --

"इस काव्य संकलन में 64 कविताएँ संकलित हैं। यह चार प्रकार की है जिनमें से प्रथम प्रकार का वर्णन हम ऊपर कर चुके हैं। चौथे प्रकार की कविताओं के "मंथ गान" का नाम दिया गया है।"[1] इस काव्य संकलन में भी उपर्युक्त संकलनों की भाँति छन्द मुक्त तथा लोक धुनों पर आधारित कविताएँ हैं। कहीं चौपाई तथा ताटंक से मिश्रित गीत है तो किसी में "राधिका" तथा चौपाई" छन्द का परिवर्तित रूप है। "वर्षा मंगल" "मंथ गान", "धुनों" की धुनोती" रचनाएं मंथ गान पर आधारित हैं मुक्त छन्द भी भिन्न भिन्न लयों पर आधारित हैं जिनको छन्द शास्त्र सहित गुनगुनाकर समझ सकते हैं। जहां तक मैं समझ पाई हूं कवि की आत्मा को गीतिका, चौपाई और पदपादाकुलक छन्दों की लय ने अत्यधिक मोहित किया है।

"दो चट्टानें" -

इस काव्य संकलन में भी मुक्त छन्द के साथ गीतिका, चौपाई, पदपादाकुलक छन्द की लय का अधिक साम्राज्य है। "बहुत दिन बीते" "कटती प्रतिमाओं की आवाज", "उभरते प्रतिमानों के रूप", में भी उपर्युक्त छन्दों की लय की ही तरह ही लय की प्रधानता है। वां "उभरते प्रतिमानों के रूप में "पद्धरि" की लय पर आधारित कविताएँ भी हैं। "सीपर किनारे प्रतिध्वनियां" में गजल की प्रक्रिया पर आधारित गीत है जिसमें लघुगीतिका की लय है। "दोहा मुक्त", "पेरोडी परक" रचना में दोहा छन्द है।

"जाल समेटा" में कवि ने छन्द से नाता तोड़ लिया है और अकविता से नाता जोड़ लिया है। इस काव्य संकलन का समर्पण भी कवि ने उस

---

1. द्रष्टव्य- बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 477.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अकविता को किया है जिसमें कविता लय हो जाती है । प्रस्तुत संकलन के अध्ययन से तो ऐसा अनुभव हुआ है कि इन अकविताओं में कविता तो लय नहीं हुई पर कविता की लय अवश्य लय हो गई है । केवल मेरा सम्बल जैसी एकाध रचना को छोड़कर जिसमें पद्मपादाकुलक की ध्वनि है । "अंकलित कविताओं में भी "पचहत्तरवीं वर्ष गांठ" शीर्षक कविता को छोड़कर अन्य सभी कवितायें अकविता के सदृश ही लय हीन हैं ।

"नागर गीता" में पहले अध्याय से लेकर अट्ठारह अध्याय तक कवि ने अनुप्रास छंग से "पद्मपादाकुलक" छन्द की लय में श्रीमद्भगवद् गीता" का भव्य अनुवाद किया है ।

"जनगीता" में दोहा, चौपाई, सोरठा, हरिगीतिका छन्दोमय पद्धति आगत-पद्धति पर आधारित है । भाषा भी अवधी है, अट्ठारह अध्याय है ।

"लय योजना- नियम भंग तथा अभिनव प्रयोग" -

लय योजना -

नाद की सुसंगति और सुषमामय अभिव्यक्ति ही लय है। नाद ब्रह्म का पर्यायवाची है । इसीलिये नाद का हमारी आत्मा के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है । जीवन और जगत की कुछ घटनायें हमारी आत्मा के भावात्मक रूप वृत्ति कोष पर कभी-कभी ऐसा आघात करती हैं कि जिससे सहसा कोई न कोई लय फूट निकलती है । आदि कवि वाल्मीकि की आत्मा जब शोकाघात से आहत हुई तो उनके मुख से जो लयबद्ध शब्द प्रस्फुटित हुए उन्हें अनुष्टुप छन्द कहा गया । अतः यह सुनिश्चित है कि - "कवि की आत्मा का नाद ही लय रूप में छन्दों में प्रतिष्ठित मिलता है ।"[1]

---

1. डा० गोविन्द त्रिगुणायत: शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त द्वितीय भाग 1959 का संस्करण ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"लय छन्द की ही नहीं स्वयं काव्य की आत्मा है । यही कारण है कि लय रहित काव्य की कल्पना करना असम्भव है । कुछ नये हिन्दी कवियों ने छन्दोबन्धन से मुक्ति पाने का ज़िद्दाद छोड़ते वक्त इस बात का ख्याल नहीं रखा कि काव्य सब कुछ बरदाश्त कर सकता है, लयात्मक अराजकता नहीं ।"[1]

बच्चन जी ने लय के उपर्युक्त मन्तव्य को अपने काव्य में बहुत कुछ निबाहा है । वह पद्य और गद्य में तो क्या बात चीत में भी लय के दर्शन करते हैं –

"छन्द वास्तव में सब प्रकार की शब्दाभिव्यक्ति के चरण हैं लय उनकी गति है । कुछ को उनका विश्राम कह सकते हैं, पद्य में ही नहीं, गद्य में भी एक प्रकार की लय होती है और विभिन्न लेखकों के गद्य की लय अलग होती है । सेन्टसबरी ने अंग्रेजी में गद्य की लय पर एक विस्तृत पुस्तक ही लिखी है । हमारी बात-चीत में भी लय होती है, हम विभिन्न भाव विचारों के लिये विभिन्न लयों का उपयोग करते हैं -- बिना उसके प्रति सचेत हुए ही ।"[2]

बच्चन जी ने लय योजना में संगीत और काव्य दोनों का सम्मिश्रण किया है । उन्होंने यति, आघात विराम और दीर्घ और स्वर ध्वनियों के अन्तर्सामञ्जस्य से पेड़ों के समान उक्त छन्दों में लय सत्ता को बांधा है । यद्यपि उनमें कहीं छन्द नहीं भी है तो भी उनमें अन्तः ध्वनियों का सूक्ष्म सामंजस्य है वास्तव में लय का छन्दों के बाहरी ढांचे से इतना सम्बन्ध नहीं जितना सार्थक ध्वनि युक्त शब्दों की एक दूसरे में प्रवेश करने वाली श्रुतियों के मिश्रण से है । अर्थात् लयत्ता आवृत्ति में छन्द से नहीं अपितु नाद के प्रतिसंक्रम की गति से उत्पन्न होती है । लय के संदर्भ में यह भी

---

1. डा० भोलाशंकर व्यास, प्राकृत पैंगलम द्वितीय भाग, पृ० 297, 298.
2. पन्त और नागर, बच्चन रचनावली भाग 2, पृ० 267.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ध्यातव्य है कि बच्चन जी की तत्सम पाठशैली ने हिन्दी काव्य में प्रचलित प्रगीत और गीत के भेद को ही समाप्त कर दिया है ।

"बच्चन जी की कृतियों के बाद से तो प्रगीत और "गीत" का अन्तर ही लगभग मिट गया । बच्चन ने दोनों विधाओं । संगीत स्वयं काव्य। की एक मिली-जुली विधा का उपयोग किया था । "निशा-निमंत्रण" और "एकान्त संगीत" में प्रखर अनुभूति के कारण उनका काव्य-तत्व कम नहीं हुआ । किन्तु उनकी शैली का अनुकरण करने वालों में मात्र पद-बद्ध पाठ-शैली (Recitation) ही रह गई । आज भी मंचीय कविता में वही मौखिक परम्परा वाली तत्सम पाठ प्रणाली प्रचलित है ।[1]

बच्चन जी ने लोक गीतों की धुनों को आधार बनाकर लोक-गीतों का आभास उत्पन्न करने वाले कुछ गीत भी लिखे हैं । जिनको देखने से ऐसा लगता है कि वह आधुनिक संवेदना के अधिक निकट आये हैं –

"निशिगंधा की विशेषतायें दो हैं । एक तो लोक धुनों पर आधारित लोक गीतों जैसी रचनाएं जिनमें बच्चन अपनी कविता को आधुनिकता के निकट लाने का प्रयास करते प्रतीत होते हैं । "प्रगीत" की विधा में बच्चन ने उत्कृष्ट रचनाएं हमें दी हैं । इनमें भी निशा निमन्त्रण का पलड़ा भारी है । यदि छायावाद से आज तक की शीर्षस्थ पुस्तकों की संक्षिप्त नामावली लिखी जाये, तो निशा निमन्त्रण का नाम अनिवार्यत: उसमें रहेगा । किन्तु बच्चन की प्रतिभा जिन अन्य दिशाओं में "एकान्त संगीत" तक प्रवाहित हुई थीं, लगता है जैसे वे दिशाएं आगे चलकर सहसा ही कहीं लोप हो गईं । आज उनके प्रगीतों में स्वाद्य पंक्ति के साथ पिछली सुर ध्वनियां कभी-कभी लौटती प्रतीत होती हैं, पर वह खोया हुआ संपूर्ण संगीत और उनकी जादुई श्रुति नहीं लौटती । लोक धुनों पर आधारित "निशिगंधा" के गीतों की कुछ

---

1. गिरजा कुमार माथुर, नयी कविता सीमाएं और सम्भावनाएं पृ0 37, प्रथम। 1966.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पंक्तियाँ उस विगत नाद तथा तन्मयता की सृष्टि दिलाती है किन्तु कुल मिलाकर "बच्चन" का यह प्रयोग सर्वथा चिंत्य है। यह सत्य है कि कवि सदा अपनी अभिव्यक्ति के लिए नये क्षेत्रों की खोज करता है। "बच्चन" के अपने इस प्रयोग के लिये जो क्षेत्र, चुना वह निश्चय ही काव्य के लिये नये उपकरण दे सकता है।"[1]

बच्चन जी ने इसी लय सिद्धान्त को अपनाकर कुछ मुक्त छन्द भी लिखे हैं इनके मुक्त छन्द छन्द की भूमि में ही हैं। उनमें छन्द के बन्धन तो नहीं परन्तु छन्द की लय कहीं भी तिरोहित नहीं हुई है। उन्होंने अपनी संगीत तथा संगीत प्रियता के कारण शब्द और ध्वनि की योजना को स्वाभाविक महत्व दिया है - क्योंकि -- "जिस प्रकार मुक्त छन्द में कवि छन्द के निश्चित रूप को तोड़कर भी लयादर्श और छन्द की भूमि को नहीं छोड़ता, उसी प्रकार वह अन्त्यानुप्रास का बन्धन तोड़कर भी उसकी माधुरी को स्वाभाविक मूल्य प्रदान करता है।[2]

बच्चन जी ने "मैकबेथ" और "ओथेलो" के अनुवाद में अतुकान्त छन्दों का प्रयोग किया है जिनकी पंक्तियों में लय और लय की समता तो है पर तुक नहीं मिलती - यथा -

"तब फिर वह था मर्द कहाँ तुममें जिसने
मुझ से ऐसी साहस वाली बात कही थी ?
जब तुम में वह करने की हिम्मत थी तब तुम
असली मर्द थे, जो तुम थे उससे ज्यादा कर
दिखलाने में मर्द और ज्यादा तुम बनो।
तब न बेबी ही औ' न काम ही मेल खा रहे
थे, पर उनका मेल बिठाने को तुम दृढ़ थे,

---

1. गिरजा कुमार माथुर, नयी कविता सीमाएं और सम्भावनाएं, पृ० 104.
2. आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द योजना, पृ० 409.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अब ये अपने आप मिले हैं और उनके छूट
जाने पर तुम बिछड़ गये हो । दूध पिलाया
है मैंने भी" खूब जानती हूं । पीते शिशु
को दुलारना कैसा ममतामय होता है,
लेकिन कल्पना कर लेती, जैसा तुमने
यह करने के लिये किया, तो जब वह मेरी
ओर देख मुस्कराता होगा, उसके दंत-
रहित मुख में मैं अपनी छाती झटक हटाती,
और पटक उसका भेजा बाहर कर देती ।"[1]

अथवा

"गुणागार को विनम्रता से
धन्यवाद है । यह अपराधी है, यह हठधर्मी,
जो, मैंने ऐसा सुन रक्खा, किसी जरूरी
राज-काज से, संत की विशेष आज्ञा से,
यहाँ उपस्थित किया गया है ।"[2]

मुक्त छन्द का प्रयोग बच्चन जी ने सन् 1943 में लिखित और सन् 46 में प्रकाशित "बंगाल का काल" में प्रथम बार किया था । यह उनकी एक सफल रचना है । उसकी कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं –

इंग्लैंड में स्वाध्याय करते समय बच्चन जी के मन में यह बात बैठ गई थी कि मुक्त छन्द में ही विचार सुन्दर ढंग से व्यक्त किये जा सकते हैं और इस प्रकार सन् 44 से 57 तक लगभग 28 कविताएं बच्चन जी ने मुक्त छन्द में लिखी हैं जो "बुद्ध और नाचघर" में संग्रहीत हैं । मुक्त छन्द के विषय

---

1. मैकबेथ, बच्चन रचनावली भाग 5, पृ0 48.
2. ओथैलो, बच्चन रचनावली भाग 5, पृ0 142.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में बच्चन जी की धारणा है कि मुक्त लय का कहीं अवसान नहीं और - "मुक्त छन्द के द्वारा गद्य और काव्य की भाषा का विपर्यय भी घटाया जा सकता है।"[1]

बच्चन जी की ऐसी अतुकान्त और मुक्त छन्द रचनाओं में भी लय सुरक्षित है -

"चन्दिनी की प्रीति बन्दी हो गयी,
लय रीति बन्दी हो गयी,
सब गीत बन्दी हो गये,
ये बन गये केवल नाद,
केवल प्रतिध्वनि,
उन स्वरों के,
जो कि उठते सब घरों से,
बोलते सब लोग जिनमें,
डोलते सब लोग जिन पर,
डूबते सब लोग जिनके बीच
जो* जिनसे उभरने का
नहीं है नाम लेते ।"[2]

"नियम अंग" -

काव्य शास्त्र के मनीषी आचार्यों के मत से कविता, कविता और मित्र में रंचक दोष भी सह्य नहीं होता । उत्तम से उत्तम काव्य भी शास्त्रीय नियम अंग के कारण विरत हो जाता है । अतएव कहा गया है कि -

"रसापकर्षका: दोषा:"[3]

---

1. बुद्ध और नाकघर, बच्चन रचनावली, भाग 2, पृ0 273.
2. वही, पृ0 322.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्थात् काव्यगत दोष रस के आपकर्षक होते हैं । बच्चन जी की रचनाएं भी इस प्रकार के दोषों से सर्वथा मुक्त नहीं हैं । कहीं-कहीं वाक्य-विन्यास की असावधानी से कृच्छ्रार्थ दोष आ गया है । जैसे –

"क्रूरताएं सब समय की माफ कर दूं
पर क्षमा हरगिज़ नहीं मैं कर सकूंगा ।
उस निशा का व्यंग उसका ला तुम्हें
मेरे निकट भी दूर भी मुझ से बुलाना ।"[1]

इस पद्य की तीसरी पंक्ति में "उसका ला" प्रयोग वाक्य-विन्यास सम्बन्धी कृच्छ्रार्थ दोष ही है इसी प्रकार कुछ अन्य दोष समीक्षा के धर्म का निर्वाह करने की दृष्टि से यहां प्रदर्शित किये जा रहे हैं –

हतवृत्तत्व दोष –

हतवृत्तत्व दोष वहां होता है जहां पंक्ति के अन्त का लघु वर्ण गुरु नहीं हो पाता अथवा निर्धारित वर्ण या मात्रा न्यून हो । यथा–

वृक्ष हों भले खड़े,
हों घने, हों बड़े ।"[2]

इस पद्य में सात अक्षरों का "समानिका छन्द है, जिसके अनुसार दोनों पंक्तियों में 7, 7 वर्ण होने चाहिये परन्तु दूसरी पंक्ति में 6 वर्ण ही रह गये हैं। तथा –

इसी कुन्दन के डले का नाम जग में प्यार ।"[3]

---

1. बच्चन प्रणय पत्रिका , गीत 38.
2. एकान्त संगीत, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 246.
3. वही, " " " " पृ0 249.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस पंक्ति में "स्रग्विनी" छन्द है । जिसकी लय के अनुसार पहला अक्षर दीर्घ होना आवश्यक है । अतः उक्त पंक्ति में "इसी" इसी शब्द के स्थान पर लघु गुरु की अपेक्षा गुरु लघु होना चाहिए ।

अतिरिक्त शब्द प्रयोग –

"फिर भी बार-बार आकर के स्वप्न मुझे निशि दिन छलता है।"[1]

इस पंक्ति में छन्द के बन्धन के कारण मात्राओं की पूर्ति के लिये "कर" के स्थान पर "करके" शब्द का प्रयोग किया है । यहाँ "के" अतिरिक्त निरर्थक शब्द है ।

स्वराघात –

"पतझर से डरे जिसके उर में नव यौवन का उन्माद न हो।"[2]

इसमें "मत्त मतंगा" छन्द है । जिसके अनुसार इसमें 32 मात्राएं होनी चाहिये । परन्तु इस पंक्ति में 33 मात्राएं हैं । लय में "से" को गिराकर "स" के समान पढ़ा जायेगा ।

अश्लीलत्व –

"उस समय
कितना बड़ा मैं घुतिया था ।"[3]

इस पंक्ति में "घुतिया" ग्राम्य शब्द है । जिसे पढ़कर लज्जा आती है ।

---

1. एकान्त संगीत, बच्चन रचनावली भाग 1, पृ0 252.
2. निशा यामिनी, बच्चन रचनावली भाग 2, पृ0 44.
3. कटती प्रतिमाओं की आवाज, बच्चन रचनावली भाग 3, पृ0 275.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यद्यपि दोष तो दोष ही होते हैं, परन्तु गुणों के समूह में वह दिखलाई नहीं पड़ते, इतना ही नहीं कभी कभी तो वह गुणों की गरिमा को और भी ज्यादा बढ़ा देते हैं, जैसे कि गौर कपोल पर काला तिल । अतः थोड़े बहुत दोषों से किसी कवि की सत्ता या महत्ता न्यून नहीं होती है ।

"अभिनव प्रयोग"-

बच्चन जी ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा द्वारा कई छन्दों को नवीन रूप प्रदान किया है । वह अपनी रचनाओं के निर्माण में सर्वत्र स्वाधीन दृष्टिगत होते हैं । उन्होंने "मधुशाला" मधुबाला और मधुकलश आदि कतिपय अपने प्रिय छन्दों को जोड़-तोड़ कर अपनी इच्छा के अनुरूप घटाया-बढ़ाया है । जिनमें कवि की अनुभूति बड़ी सुन्दरता और सुकुमारता के साथ मूर्तिमती हुई है साथ ही छन्दों ने भी अपने अन्तःस्वरूप लय का कहीं विलय नहीं होने दिया । यह बच्चन जी की साहित्य साधना की चरमोत्कर्षता का द्योतक है । इस प्रकार बच्चन जी के काव्य में निर्धारित छन्दःशास्त्रीय और शिल्प-विधि के नियमों के साथ अभिनव प्रयोग परिलक्षित हुये हैं । जिनका दिग्दर्शन बच्चन जी की छन्द सम्बन्धी मान्यतायें एवं छन्द-योजना के अन्तर्गत कराया जा चुका है । वास्तव में रायर और सिंह लीक छोड़कर ही चला करते हैं, वह अपनी सृष्टि में सर्वथा स्वतन्त्र होते हैं , उन पर कोई अंकुश नहीं होता है । इसीलिये किसी ने ठीक ही कहा है कि -

"लीक छाँड़ि तीनों चलैं, सायर, सिंह, सपूत ।"

निष्कर्ष -

बच्चन की गीति-योजना को उनके अन्तःकरण की तीव्र भावनाओं के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परिप्रेक्ष्य में देखने पर प्रतीत होता है कि उनका प्रत्येक गीत उनकी आत्मा की आवाज है और गीत की प्रत्येक पंक्ति उनके तन-मन-प्राण से प्रस्फुटित हुई है, इसीलिये उनकी लय भी अलग है । और तान भी अलग है । कतिपय गीत तो उन्होंने लोक-गीतों की धुन पर ही रच डाले हैं, उनका सौकुमार्य मिट्टी की सोंधी सोंधी महक के समान अद्भुत ही है । सच तो यह है कि उन्होंने गीत नहीं लिखे, अपितु गीतों ने ही उन्हें लिख दिया है, गीतों में उनका सम्पूर्ण जीवन प्रतिबिम्बित हुआ है । उनमें रागात्मक अन्विति, हार्दिकता , वैयक्तिकता, आवेग का कोमलकान्त पदावली में प्रस्फुरण हुआ है । मधुशाला के मुक्तक रस वर्षणा में पूर्वा पर पदों की अपेक्षा न रखते हुये सहृदयों को रस-सिक्त करते हैं । जो अनवद्य मादकता उनके पदों में झलकी है वह अन्य में कहां । उन्होंने मधु शब्द की बहुअर्थता का प्रयोग कर उसके दार्शनिक अर्थों को रेखांकित किया है ।

बच्चन जी छन्द-बन्ध को मानने वाले शास्त्रीय परम्परा के कवि हैं, उनके छन्द, मुक्त और मिश्रित छन्द लय और तुक में बंधे हुये हैं । उनका काव्य इसीलिये जीवन का प्रतिबिम्ब कहलाने का अधिकारी है कि उसमें तुकान्त छन्द, अतुकान्त छन्द और मुक्त छन्द सबकी सार्थकता है । उन्होंने जिन छन्दों को अपनाया है उनमें तांटक, चौपाई, वीर, पद, पादाकुलक, चौपई, पद्धरि, समान सवैया, मत्त सवैया, श्रृंगार, निसि, समानिका, हाकलि , सार, राधिका, प्रमाणिका, विधाता, हरि-गीतिका, गोपी, सरसी, पंच चामर, स्रगमाला, विष्णुपद, दोहा, तोरठा और भुजंग प्रयात आदि प्रमुख हैं ।

बच्चन जी की लय योजना में संगीत और काव्य दोनों का सम्मिश्रण है । उन्होंने प्रगीत और गीत के बीच के भेद को मिटाकर एकात्मता प्रदान की है । विचारों को मुखर अभिव्यक्ति प्रदान करने की दिशा में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उन्होंने इंगलैंड से प्रेरणा लेकर मुक्त छन्दों को भी अपनाया है ।

उनके काव्य में कहीं-कहीं शास्त्रीय नियमों का भी थोड़ा-बहुत उल्लंघन हुआ है, जो दोषपूर्ण नहीं । छन्द के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गये अभिनव प्रयोगों में भी छन्द की आत्मा सुरक्षित है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सप्तम अध्याय

उपसंहार

हिन्दी की स्वच्छन्द काव्यधारा में बच्चन रुक रुके उन्मेष के साथ आए जो भाषा और भाव दोनों की दृष्टियों से जनजीवन के अधिक निकट था तथा छायावादी काव्य से जिसका प्रस्थान अलग दिखाई पड़ता था। जीवन के प्रेम और साहस जैसे दो अपराजेय तत्वों को लेकर उन्होंने काव्य की भूमि तैयार की तथा संघर्ष की राह से गुजरते हुए, समस्याओं और विपरीत परिस्थितियों से घिर कर भी वह अमृत, मधु और गरल के पान के लिये तत्पर रहे। मधुशाला, आकुल अन्तर तथा सतरंगिनी में मधु, गरल और अमृत के प्रतीकों से उन्होंने अपनी जीवन-यात्रा पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। "जो भोगा सो गाया" के अनुसार उनका जीवन उनकी रचनाओं में घुला मिला है। उनकी आत्मकथा के माध्यम से हमने उनकी रचनाओं की प्रेरक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करते हुए यह बताया है कि उनकी काव्य-चेतना उनके जीवन के परिवर्तनों और पड़ावों में प्रतिबिम्बित है। जीवन के प्रति निराशा, ऊब, विरक्ति आदि त्रासद और पलायनवादी भावों की जो छाया बच्चन के काव्य में- आरम्भिक काव्य में मिलती है, वह कल्पित नहीं, स्वाभाविक है। बौद्धवाद, भाग्यवाद की प्रवृत्ति का आगमन आलोचक योरप से मानते रहे हैं, फारस से मानते रहे हैं वह दो महायुद्धों से गुजरते हुए भारत के अवसाद और निराशा-पूर्ण जीवन में निराशावाद अन्दर से उपजा। मधु-विहार की कामना इसी अभाव की उपज थी। परिस्थितियों के सामने सिर झुकाकर कंधे डाल देना बच्चन के काव्य में है पर उनके जीवन में नहीं। निशा निमंत्रण में अवसाद चरम सीमा पर है पर भोर के आगमन के साथ उस रचना की समाप्ति से कवि यह सूचित करते हैं कि वह आशावान है तथा जीवन को समग्रता में देखना चाहते है। दीपक के प्रतीक से उन्होंने अपनी जीवनास्था को बार-बार व्यक्त किया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पारिवारिक दृष्टि से मृत्यु-भय उन्होंने निकट से देखा । अत: एकाकीपन की अनुभूति का उनसे अधिक सटीक चित्रण इस धारा के किसी अन्य कवि ने नहीं किया । अरमणीय भावों की व्यंजना में बच्चन सिद्ध हस्त हैं । उनकी शोकगीतियाँ उनकी काव्यात्मक आत्मकथा है, छोटे से छोटे जीवन के भोगे हुए क्षण को उन्होंने शोकगीतियों में व्यक्त किया है । भावों की तीव्रता, उनकी एकता और उनकी गेयता की समन्वित कसौटी पर बच्चन के गीत खरे उतरते हैं ।

एक बात यह भी लक्षित करने योग्य है कि बच्चन से पूर्व भारतेन्दु, बालकृष्ण शर्मा नवीन तथा भगवतीचरण वर्मा ने मदिरा, ज्वाला के प्रतीकों का उपयोग कविता में किया था पर जीवन के प्रति विद्रोह की व्यंजना इन प्रतीकों के माध्यम से पहले बच्चन ने ही की । संसार की अपूर्णता का बोध करवा कर काव्य और कला से उसकी पूर्णता का प्रयत्न कवि का लक्ष्य है, कलाकार का प्रयोजन है, यह धारणा बच्चन की है और इसीलिये संचित वेदना और अंधकार से लड़ते हुए कवि टूट कर नष्ट नहीं होता वह प्रकाश की ओर मुड़ मुड़ कर जीवन के जीतने की घोषणा करता रहता है । वह जलने को वरदान मानता है तथा ठोकर की कसौटी भी स्वीकार करता है । बच्चन के काव्य का यह सही दर्शन है, उसके कर्म-योग को अनदेखा कर उस पर निराशा और पलायन का आरोप लगाना तर्क संगत नहीं । वह तो साहित्य का लक्ष्य मनुष्य को मानते हैं । अपनी अपूर्णताओं और पूर्णताओं से घिरे हुए मनुष्य को उसकी सच्चाई के साथ कवि ने कविता का विषय बनाया है अत: कवि का जीवन दर्शन मानवतावादी कहा जा सकता है । बच्चन कहते भी हैं –

मैंने जीवन देखा जीवन का गान किया ।

इस अध्ययन में हमने बच्चन पर लगाये गये उस आरोप को भी निराधार बताया है कि वह व्यक्तिवादी कवि हैं । सामाजिक चेतना से उनका कोई सरोकार नहीं है । हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष, छुआछूत, नारी मुक्ति, सत्याग्रह, सांस्कृतिक विघटन, समाजवाद, मानव मूल्यों की स्थापना, पाश्चात्य संस्कृति का खोखलापन, स्तर वैषम्य, नास्तिकता, पलायन, सांस्कृतिक समन्वय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तथा सर्वोदय के स्वर भी बच्चन की कविता में मिलते हैं । क्या भूलूं क्या याद करूं , कटती प्रतिमाओं की आवाज, बुद्ध और नाचघर, धार के इधर उधर , त्रिभंगिमा, दो चट्टानें तथा आरती और अंगारे के उद्धरण देकर हमने बच्चन की सामाजिक चेतना का उद्घाटन किया है । कांग्रेस आन्दोलन तथा गांधी के साथ उनका कवि कितना चल सका है ? इसका विवरण भी दिया गया है । इससे सिद्ध होता है कि बच्चन ने भारतीय इतिहास को विस्मृत नहीं किया । वह बराबर भारतीय समाज, संस्कृति और राष्ट्रोत्थान के आन्दोलनों के साथ प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से कविताओं के माध्यम से जुड़े रहे ।

बच्चन की रचना-प्रक्रिया के सूत्रों को पकड़कर उनके नये-पुराने झरोखे तथा टूटी छूटी कड़ियां जैसी रचनाओं के माध्यम से प्राप्त वार्ताओं और साक्षात्कार सम्बन्धी टिप्पणियों के जरिये बच्चन के काव्य-सिद्धान्तों को स्पष्ट किया है तथा उसी कसौटी पर उनकी रचनाओं का मूल्यांकन किया है । क्षिप्रगामी और दूरगामी स्मृतियों, गीत की शैलियों, भाव की तीव्रताओं तथा आध्यात्मिक-दार्शनिक विचारों के आधार पर उनकी परिपूर्ण कृतियों का विवेचन सही हो सकता है -- इस सोच के आधार पर बच्चन के काव्य की समीक्षा ने सिद्ध कर दिया है कि बच्चन के काव्य भाव तथा विचार दोनों ही दृष्टियों से प्रौढ़ हैं । बच्चन की भाषा, शैली, बिम्ब योजना, प्रतीक योजना, रस योजना तथा मनोभाव योजना का विवेचन कर हमने यह पाया है कि बच्चन उत्कृष्ट कोटि के कवि और गीतकार हैं । भाव घनता और संगीतात्मकता की उन्हें सही परख है । संगीत के पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग से वह भाव की सूक्ष्मता और तीव्रता को व्यक्त करते हैं तथा सिद्ध करते हैं कि छायावादोत्तर प्रगीतकारों में राग-रसिकता तथा शब्दयोजना, वर्ण मैत्री, एवं पदावली का गठन बच्चन में अधिक कलात्मक और प्रभावक रूप में उपलब्ध है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"चार खेमें और चौंसठ खूंटों" की भूमिका में बच्चन ने प्रकारान्तर से लिखा है कि उनके कवि का जीवन तथा विविध आयामी है अत: उनके काव्य में जीवन के विविध रूप और अनुभव मिलते हैं। लोकधुनों पर आधारित गीत भाव और शिल्प की दृष्टि से सर्वसाधारण के मन में अधिक गहराई के साथ उतर सकता है, इसलिये बच्चन ने लोकधुनों पर आधारित साहित्यिक गीतों की रचना की। प्रयोगवादी काव्यान्दोलन के उत्तर में कविता के तकनीक को जनजीवन के साथ सहज रूप से उतार देने का यह मौलिक प्रयास था। साहित्य के लिए यह नई देन है। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार तथा मध्य प्रदेश के लोक गीतों की प्रचलित धुनों पर साहित्यिक शैली के गीत उनसे पूर्व इतने प्रौढ़ और प्रचुर रूप में नहीं लिखे गए। बच्चन का परवर्ती काव्य लोक धुनों की रक्षा, मुक्त लयबद्ध लघु रचना तथा लय लालित्य की दृष्टि से बेजोड़ है।

बच्चन ने अपने काव्य में छोटे-बड़े छन्दों के इतने विविध प्रयोग किए हैं कि अब तक के अध्ययनों में उन पर कोई विचार नहीं किया गया। पहलीबार इस प्रबन्ध में विस्तार के साथ बच्चन की छंद-योजना पर प्रकाश डाला गया है। भविष्य में केवल इसी विषय पर शोध कार्य सम्पन्न हो सकता है। बच्चन ने शुद्ध और मिश्रित छन्दों के प्रयोग किए हैं। विषय, भाव और रूप की दृष्टि से यदि उनका विवेचन किया जाय तो पता चलेगा कि बच्चन की छंद-योजना की मौलिकता क्या है?

बच्चन का सर्जक गीतकार जहां प्रथम सोपान में इतिवृत्तात्मक प्रणय-गीत लिखता है, अवसाद, मधु और वायुप परिवेश मूलक रचनाएं निर्मित करता है, वहां द्वितीय सोपान पर समकालीन जीवन और राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा दार्शनिक संदर्भों को लक्ष्य करके तत्कालीन इतिहास की प्रक्रियाओं को भी स्वर देता है। बच्चन लगभग 50 वर्ष तक हिन्दी में अनवरत लिखते रहे हैं। विभिन्न काव्यान्दोलनों के बीच उनकी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कविता फूटती रही है । तुलन से वह कभी संतुष्ट नहीं हुए । यही बोध उनसे निरन्तर लिखवाता रहा । उनका कथन है –

आह, रोना और पछताना इसी का
एक भी विश्वास को, पूरी तरह मैं जी न पाया
जिया जिसको जान भी उसको न पाया ।

बच्चन के काव्य का बड़ा प्रेय यह है कि मानव मन के आस्था-अनास्था के सूक्ष्म से सूक्ष्म स्तर उनकी कविता में व्यक्त हुए है, कल्पना से यथार्थ तक, विश्वास से अविश्वास तक, भाव से अभाव तक, तम से विषय तक जीवन का हर पहलू बच्चन के काव्य में है । बच्चन की लोकप्रियता का यही रहस्य है । इसीलिये बच्चन ने आत्मकथा के चार खण्ड 'नीड़ का निर्माण फिर, क्या भूलूं क्या याद करूं, बसेरे से दूर तथा दशद्वार से सोपान तक' लिखकर जब बताया कि उनकी कविता और उनकी जीवन-यात्रा में पूर्ण समानता है तो आलोचकों के अनुमान धराशायी हो गये । हमने बच्चन की कविता का मूल्यांकन उनकी आत्मकथा के संदर्भों में कर बच्चन की कविता के साथ न्याय किया है । बच्चन की आत्मकथा भी उनकी कविता के समान लोकप्रिय हुई । इसका कारण यह कि बच्चन ने अपनी पहचान आत्मकथा में बताई और पाठकों ने इस पहचान से एक बार फिर उनकी कविता को पहचाना । उनकी कविता के तीन स्वर हैं – (1) जिजीविषा और निर्माण मानव-स्वभाव के अनिवार्य अंग है । (2) काल के प्रवाह में दृष्टि बदलती है और दृश्य भी । (3) हर प्राप्ति में निराशा है और कामना में उल्लास । रीति और काव्य-योजना के बदलाव का अध्ययन इन्हीं तीन दिशाओं में होना चाहिए । विचार का जैसा प्रचार कला या कविता के माध्यम से स्थायी रूप में हो सकता है, वैसा अन्य साधनों से नहीं ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निष्कर्ष यह कि अनुभूति और अभिव्यक्ति - दोनों ही दृष्टियों से बच्चन के काव्य का स्थायी महत्व है और तात्विक तथा गवेषणात्मक विश्लेषण से यह सिद्ध हो गया है कि वह स्वच्छन्दतावाद के व्यक्ति प्रधान गीतकार ही नहीं है, उनकी सामाजिक चेतना बड़ी प्रखर है तथा राष्ट्रीय काव्यधारा और गांधीवादी काव्य धारा में भी उनकी रचनाओं को रखा जा सकता है। भाषा की अकृत्रिमता तथा भाव की सघनता उनकी अन्य विशेषता है। बच्चन के काव्य की यह महत्तर उपलब्धि है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सहायक पुस्तक सूची

1. बच्चन : एक व्याख्या - श्री अलेक्सान्द्र निकोलायेविच वेवेदिव
गरिमा श्री प्रकाशन, 1983.

2. शिवमंगल सिंह सुमन - डा० आनन्द प्रकाश दीक्षित
राजपाल एंड संस, 1979 ई०.

3. बच्चन अनुभूति और अभिव्यक्ति - डा० इन्दुबाला दीवान
सूर्य प्रकाश, दिल्ली, 1984.

4. साहित्य का वैज्ञानिक विवेचन - डा० गणपति चन्द्र गुप्त,
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1971.

5. नयी कविता सीमाएं और सम्भावनाएं. - श्री गिरजा कुमार माथुर,
अक्षर प्रकाशन, प्राइवेट, लिमि०
अंसारी रोड, दिल्ली. 1966.

6. भारतीय समीक्षा के सिद्धान्त (द्वितीय भाग) - डा० गोविन्द त्रिगुणायत
भारतीय साहित्य मन्दिर,
फुव्वारा, दिल्ली, 1959.

7. आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रतीकवाद. - डा० चन्द्र कला - मंगल प्रकाशन,
जयपुर, 1974.

8. काव्य प्रभाकर - श्री जगन्नाथ प्रसाद भानु,
नागरी प्रचारणी सभा - सम्पादक
सुधाकर पाण्डेय-संवत् 2028, 1931ई०

9. छन्द प्रभाकर - श्री जगन्नाथ प्रसाद भानु,
वेंकटेश्वर प्रेस.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

10. बच्चन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डा० जीवन प्रकाश जोशी.

11. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डा० नगेन्द्र - नेशनल पब्लिशिंग हाउस, तृ० सं.

12. आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ. - " "

13. हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 10. डा० नगेन्द्र, नागरी प्रचारिणी सभा, सं० 2028.

14. भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका- डा० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1974 ई०.

15. प्रगीतकार बच्चन और अंचल - डा० नरेन्द्र देव वर्मा, रचना प्रकाशन 1979.

16. प्रवासी के गीत - श्री नरेन्द्र शर्मा, किताब महल, इलाहाबाद, सन् 1953.

17. बच्चन जीवन और काव्य - डा० नवल किशोर भाम्हा

18. कविता के नये प्रतिमान - डा० नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1982.

19. आधुनिक साहित्य - आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी, भारती भण्डार, प्रयाग वि.सं. सं० 2013.

20. लावणी का इतिहास - स्वामी श्री नारायणानन्द सरस्वती ज्ञान मन्दिर, कानपुर प्र.सं. 1943 ई०.

21. आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रतीक विधान. - डा० नित्यानन्द शर्मा, साहित्य सदन देहरादून, सं० 2023.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

22. आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द योजना. - डा० पुत्तू लाल शुक्ल, लखनऊ विश्वविद्यालय, प्र.सं. स. 1914 वि.

23. आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द. - डा० बच्चन सिंह - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1983.

24. प्रेमघन सर्वस्व - श्री बदरी नारायण चौधरी हिन्दी साहित्य सम्मेलन- 2018 वि.

25. कुंकुम - श्री बालकृष्ण शर्मा "नवीन" विद्यार्थी प्रकाशन, कानपुर, 1939.

26. छन्द विज्ञान - श्री बुलाकीराम शास्त्री, हाफिजाबाद गुजरांवाला पंजाब सं. 1941 ई०.

27. मानव - श्री भगवतीचरण वर्मा, विशाल भारत बुक डिपो, कलकत्ता, टि.सं. 1948.

28. प्राकृत पैंगलम् - डा० भोला शंकर व्यास, प्राकृत ग्रन्थ परिषद् 1962.

29. कांग्रेस के सौ वर्ष - श्री मन्मथ नाथ गुप्त - राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1985.

30. उर्दू-हिन्दी शब्द कोश - श्री मुहम्मद मुस्तफा खाँ, सम्पादक - मदुदाह चतुर्थ संस्करण.

31. हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ - डा० रघुवंश, राजकमल प्रकाशन लि० प्रथम संस्करण.

32. छायावादोत्तर हिन्दी कविता - डा रमाकान्त शर्मा, साहित्य सदन, देहरादून, 1970.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

33. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल -
नागरी प्रचारिणी सभा, अठारहवां
मुद्रण सं. 2035.

34. हुंकार - श्री रामधारी सिंह "दिनकर"
उदयाचल, पटना, नवम् सं. 1952.

35. चक्रवाल - " प्रथम सं० 1956.

36. सामधेनी - "

37. कुरुक्षेत्र - "

38. रेणुका - " छात्रोपयोगी सं. तृ. सं. 1956.

39. हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा - डा० लक्ष्मीनारायण दुबे -
विंध्याचल प्रकाशन, छतरपुर, 1967.

40. जन कवि - श्री विजय बहादुर सिंह -
राधाकृष्ण प्रकाशन, 1984

41. विमर्श के क्षण - डा० विजयेन्द्र स्नातक,
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1979 ई०.

42. साहित्य दर्पण - श्री विश्वनाथ, चौखम्बा विद्या भवन,
वाराणसी, सं. 1963.

43. काव्यांग कौमुदी तृतीय भाग - आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र,
नन्द किशोर एंड ब्रादर्स,
वाराणसी, 1972.

44. बच्चन का परवर्ती काव्य - डा० श्याम सुन्दर घोष.

45. हल्दी घाटी - श्री श्यामनारायण पाण्डेय,
इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, 1959.

46. हिल्लोल - श्री शिवमंगल सिंह सुमन.
सुमन सरस्वती प्रेस, बनारस, प्र. सं. 1946.

47. प्रलय सृजन - श्री शिवमंगल सिंह सुमन, प्रदीप कार्यालय,
मुरादाबाद, सन 1944.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

48. आधुनिक हिन्दी का विकास - डा० श्रीकृष्ण लाल

49. ग्राम्या - श्री सुमित्रानन्दन पंत -भारती भंडार, प्रयाग - वि० सं० 1999.

50. चिदम्बरा - श्री सुमित्रानन्द पंत - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1973 ई०.

51. मुकुल - श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद 1959 ई०.

52. परिमल - श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, गंगा ग्रन्थागार, लखनऊ, पंचम संस्करण 2007.

53. भैरवी - श्री सोहनलाल द्विवेदी - इण्डियन प्रेस, 1951.

54. प्रभाती - " "

55. हिन्दी साहित्य की भूमिका - डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी - हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, 1950.

56. बच्चन का परवर्ती काव्य - श्री हरवंश पारीक - मंगल प्रकाशन राजियों का रास्ता, जयपुर 1974.

57. क्या भूलूं क्या याद करूं - डा० हरिवंशराय बच्चन - राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1982.

58. नीड़ का निर्माण फिर - " "

59. बसेरे से दूर - " "

60. प्रवास की डायरी - " 1971.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

61. बच्चन रचनावली भाग 1 - डा० हरिवंशराय बच्चन -
राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०,
नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, 1983.

62. " भाग 2 - " "

63. " भाग 3 - " "

64. " भाग 4 - " "

65. " भाग 5 - " "

66. " भाग 6 - " "

67. " भाग 7 - " "

68. " भाग 8 - " "

69. " भाग 9 - " "

70. दश द्वार से सोपान तक - डा० हरिवंशराय बच्चन,
राजपाल एंड संज, 1985.

71. हिन्दी साहित्य का विकास - डा० हरिश्चन्द्र वर्मा -
ग्रंथन पब्लिकेशन, रोहतक, 1982.

72. हिन्दी साहित्य - डा० त्रिभुवन सिंह-हिन्दी प्रचारक
संस्थान, वाराणसी, 1982.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Acces on		
Class on		
Cat on		
Tag etc		
Filing		
E A R.		
Any other		
Checked		

Th93,ohj
5135

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Compiled
1999-2000

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA